In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वैद्य ताराचन्द शर्मा
प्रधान सम्पादक, आयुर्वेद महासम्मेलन पत्रिका
द्वारा
वैद्यराज झण्डू भट्ट जी मेमोरियल आयुर्वेदिक पुस्तकालय
के लिए उपहार स्वरूप प्राप्त।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पत्रिका
पुस्तकालय

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No..LX3
Book No.
Acc. No.. 000061

क

विवेच्य विषय

द्रव्य गुण विज्ञान—

वह विज्ञान है जिस में द्रव्यों के गुण बताए जाते हैं। यहाँ पर 'गुण' शब्द व्यापक अर्थ का बोधक है, इससे गुण एवं कर्म दोनों का अर्थ ग्रहण करना चाहिए। गुण एवं कर्म का ग्रहण करते समय भी इस 'गुण' में द्रव्यगत पंचपदार्थ का बोध किया जाता है। जैसा कि आगे चलकर स्पष्ट हो जाएगा कि रस, गुण, वीर्य, विपाक एवं प्रभाव द्रव्य के पंचपदार्थ होते हैं। अतः यह कहा जाएगा कि "द्रव्यगुण विज्ञान वह विज्ञान है जिस में द्रव्य का तथा उसमें निहित रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव एवं कर्म का विस्तार से वर्णन किया जाता है।"[1]

आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में इसे मेटिरिया मेडिका (Materia Medica) कहा जाता है, और इसी का संक्षिप्त आयुर्वेदीय नाम 'निघंटु' है।

वर्गीकरण—

किसी भी विज्ञान का अध्ययन करने के लिए सुविधा की दृष्टि से विषय के अनुसार उसे कई विभागों में विभक्त कर लिया जाता है। द्रव्यगुण विज्ञान के भी विभाग बनाकर उनका क्रमशः अध्ययन करना सुविधाजनक होता है। अतः द्रव्य गुण विज्ञान का विभाजन निम्न तालिका द्वारा किया है—

---

1 द्रव्याणां गुण कर्माणि प्रयोगा विविधास्तथा।
सर्वशो यत्र वर्ण्यन्ते शास्त्रं द्रव्यगुणं हि तत्॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

- द्रव्य गुण विज्ञान
  - पदार्थ विज्ञान
  - द्रव्य विज्ञान
    - नाम रूप विज्ञान (Materia medicaProper or pharmacognosy)
    - योग विज्ञान (Administration)
      - गुण कर्म विज्ञान
        - गुण विज्ञान
        - कर्म विज्ञान
      - प्रयोग विज्ञान (Priscription)
    - कल्प विज्ञान (Pharmacy)

पदार्थ विज्ञान—

किसी विज्ञान के विवेच्य विषय को 'पदार्थ' कहा जाता है। द्रव्य में पांच पदार्थ निहित रहते हैं :—

रस, गुण, वीर्य, विपाक एवं प्रभाव नामक पांच पदार्थ हैं।[1] उनका वर्णन द्रव्यगुण विज्ञान के पदार्थ विज्ञान में किया जाता है। इनके अतिरिक्त विवेच्य विषय में 'द्रव्य' के तथा 'कर्म' के सम्बन्ध में सभी तत्वों की चर्चा भी की जाती है। इस प्रकार पदार्थ विज्ञान में निम्न सात प्रकरणों का समावेश किया जा सकता है—

१. द्रव्य (Drug)—रसादि पंच पदार्थों का तथा कर्म का आश्रयभूत जो पांचभौतिक विकार है—वह 'द्रव्य' कहलाता है यथा—हरड़, बहेड़ा, आंवला।

1. द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च।
पदार्थाः पंच तिष्ठन्ति स्वं स्वं कुर्वन्ति कर्म च॥ (भा० प्र०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२. रस (Taste)—जिह्वा के द्वारा जिस विषय का ज्ञान होता है, वह रस कहलाता है, जैसे मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय।

३. गुण (Property)—द्रव्य के अन्दर रहने वाले शीत, उष्ण, लघु आदि भौतिक धर्मों को गुण कहा जाता है।

४. वीर्य (Dynamic Property)—द्रव्यगत क्रिया करने वाला धर्म वीर्य कहा जाता है। शीत, उष्ण भेद से य दो प्रकार का बताया है—कुछ लोग आठ प्रकार का भी मानते हैं।

५. विपाक (Final taste after digestion)—जठराग्नि के योग से पाचन के परिणाम स्वरूप जो रसान्तर उत्पन्न होता है, वह विपाक कहलाता है।

६. प्रभाव (Specific property)—रसादि में समानता रहने पर भी द्रव्य में सहज विशिष्ट शक्ति होती है, वह प्रभाव कहलाती है जैसे—सहदेवी जटा को सिर पर बांधने से ज्वर उतर जाना।

७. कर्म (Action)—रसादि के द्वारा द्रव्य जो जो परिवर्तन शरीर में करता हैं वह कर्म कहलाते हैं। यथा—वमन, विरेचन, वृंहण आदि।

द्रव्य विज्ञान—

द्रव्य विज्ञान के उपविभागों में से कल्प विज्ञान 'भैषज्य कल्पना' के अन्तर्गत पढ़ाया जाता है—प्रयोग विज्ञान 'काय चिकित्सा' के साथ सीखना होगा। अतः इस प्रसंग में निम्न बातें बताई जायेंगी।

१. नाम रूप विज्ञान (Pharmacognosy)—इसमें द्रव्य का नाम, जाति, स्वरूप, उत्पत्ति स्थान आदि का विस्तार से वर्णन किया जाता है।

२. गुण विज्ञान—इसमें द्रव्य गत रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव का वर्णन किया जाता है।

३. कर्म विज्ञान—विभिन्न प्रकार के शरीर पर हाने वाले कर्मों का वर्णन किया जाता है।

किसी भी द्रव्य का वर्णन करते समय हम उपर्युक्त तीन विषयों का नाति-संक्षिप्त विस्तार से वर्णन करेंगे।

पदार्थ विज्ञान एवं द्रव्यों का वर्णन करने से पूर्व यह आवश्यक है कि यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बात स्पष्ट हो जाए कि चिकित्सा शास्त्र में द्रव्य गुण विज्ञान का क्या महत्व है।

महत्व—

चिकित्सा शास्त्र में द्रव्यगुण विज्ञान अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। एतदर्थ शास्त्रों में अनेक उक्तियां देखने को मिलती हैं। उनका अवलोकन करने से विदित हो जाता है कि द्रव्यगुण विज्ञान का अध्ययन चिकित्सा शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए बहुत ही आवश्यक है।

१. आयुर्वेद के दो प्रयोजन होते हैं। (क) स्वस्थ मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा करना और (ख) आतुर के रोग को शान्त करना। स्वस्थ मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा तभी की जा सकती है जब कि शारीरिक धातुओं को समावस्था में रक्खा जा सके। संसार में सभी कुछ पाञ्चभौतिक हैं। आत्मा के संयोग से पञ्चमहाभूतों के द्वारा पुरुष बनता है और द्रव्य में भी पञ्चमहाभूत का विकार पाया जाता है। इस प्रकार शरीर और द्रव्य एक समान माने जा सकते हैं, उस शरीर के धारको को समावस्था में रखने के लिए या उन में विषमता उत्पन्न होने पर उन्हें समानता में लाने के लिये उपयुक्त द्रव्यों का प्रयोग कराया जाता है।[1] और द्रव्यों के विषय में तथा उन की अवस्थानुसार उपयुक्तता के विषय में ज्ञान तभी हो सकता है जब द्रव्यगुण विज्ञान् का अध्ययन किया गया हो।

२. आतुर के विकार को शान्त करना दूसरा प्रयोजन है। इसे चिकित्सा कहा जाता है और चिकित्सा के चार पाद हुआ करते हैं (१) चिकित्सक (२) द्रव्य (३) उपस्थाता (४) रोगी। इन में चिकित्सक प्रधान है और उसका साधन है द्रव्य। यों कहा जा सकता है कि 'कर्ता' चिकित्सक है और उसका करण 'भैषज' है। बिना करण के कार्य हो पाना सम्भव नहीं। अतः द्रव्य के बिना चिकित्सक कुछ नहीं कर सकता और द्रव्य के विषय में सभी ज्ञान द्रव्यगुण विज्ञान द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

३. वह चिकित्सक जिसे द्रव्यों का ज्ञान नहीं यदि चिकित्सा करता है तो

---

1. गुण या उक्ता द्रव्येषु शरीरेष्वापि ते तथा।
स्थान वृद्धि क्षयास्तस्माद् देहिनो द्रव्यहेतुका।। (सु. सू. अ. ४२.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उसे दुर्मति समझना चाहिए। उसके साथ बात करने वाला भी नरकगामी होता है। क्योंकि बिना जाने-हुए द्रव्य का प्रयाग उतना ही हानिकारक होता है जितना कि विष, अग्नि, शस्त्र एवं वज्र का प्रयोग और यदि पूर्ण रूप से जान कर प्रयोग किया जाए तो वह उतना ही लाभकारी होता है जितना 'अमृत' का सेवन। अत: नाम से, रूप से एवं गुणों से औषध को जान कर ही चिकित्सा की जा सकती हैं।[1]

४. जिस प्रकार व्याकरण का ज्ञान किए बिना विद्वान का तथा बिना अभ्यास किए धनुषधारी का समाज में उपहास होता है, उसी प्रकार बिना द्रव्यगुण विज्ञान जाने हुए चिकित्सक भी उपहास के पात्र होते हैं।[2]

५. आयुर्वेद की परिभाषा बताते हुए कहा गया है कि जिस शास्त्र में आयुष्य एवं अनायुष्य द्रव्यों के गुण एवं कर्म का वर्णन होता है—वह आयुर्वेद कहा जाता है। इसका अर्थ हुआ कि द्रव्य-गुण विज्ञान ही आयुर्वेद है। यह बात भी इसके महत्व को बताने वाली है।[3]

इन सभी बातों को देखते हुए यह समझ लेना बहुत सरल है कि एक आयुर्वेदज्ञ बनने के लिए आवश्यक है कि द्रव्य-गुण विज्ञान का ज्ञाता होवे और इसी से यह सिद्ध हो जाता है कि द्रव्य-गुण विज्ञान एक महत्वपूर्ण विषय है।

---

1. चरक सूत्र स्थान अध्याय १ के सूत्रों पर आधारित।
2. निघंटुना बिना वैद्यो विद्वान व्याकरणं बिना।
   अभ्यासे न च धानुष्कस्त्रयो हासस्य भाजनम्। (र० नि०)
3. यतश्चायुष्यानायुष्याणि, च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतो ऽप्यायुर्वेदः।
   (च० सू० ४०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पदार्थ-विज्ञान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्य-रस-गुण-वीर्य-विपाक-प्रभाव-कर्म
की
विवेचना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्य

द्रव्य किसे कहते हैं ? यह है सर्वप्रथम शंका जो प्रत्येक अनभिज्ञ के मन में उत्पन्न होती है। इसका समाधान है द्रव्य की परिभाषा बताना। और द्रव्य की परिभाषा हम मुख्यतः दो प्रकार से बता सकते हैं :—(क) दार्शनिकता युक्त (ख) द्रव्यगुण उपयोगी।

चरक एवं सुश्रुत में द्रव्य की परिभाषा करते हुए लिखा है—"जिसमें कर्म और गुण आश्रित हों तथा जो अपने कार्य-द्रव्यों का समवायिकारण हो, वह द्रव्य कहलाता है।"[1] यह परिभाषा कारण द्रव्य एवं कार्य द्रव्य सभी पर लागू हो सकती है। पञ्चभूत-आत्मा-मन-काल और दशा के लिए इस परिभाषा के अनुसार द्रव्य कहना उपयुक्त है क्योंकि इनमें गुण एवं कर्म आश्रित रहते हैं और अपने कार्य द्रव्य के लिए यह समवायिकारण भी हैं। इसी प्रकार कार्य द्रव्यों के लिए भी यह बात है—'हरीतकी' में गुण एवं कर्म होते हैं तथा यह अपने कार्यद्रव्य 'अभयारिष्ट' के लिए समवायि कारण है। इस प्रकार द्रव्य की उपर्युक्त परिभाषा एक व्यापक अर्थ में प्रयोग की जा सकती है।

यहाँ पर समवायिकारण को समझ लेना भी आवश्यक है। साधारण रूप से कारण तीन प्रकार के हुआ करते हैं—समवायाकारण, असमवायीकारण, निमित्तकारण। इनमें प्रधान समवायिकारण है क्योंकि वह समवाय सम्बन्ध से कार्य का घटक होता है। और समवाय सम्बन्ध उसे कहते हैं जो कभी अलग नहीं हो सकता।

---

1. यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायियत्। तद् द्रव्यम् (च० सू० अ० १)
द्रव्य लक्षणन्तु क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति। (सु० सू० ४०)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्य गुण उपयोगी परिभाषा इस प्रकार की गई है कि 'द्रव्य' उसे कहते हैं जिसमें रसादि (रस-गुण-वीर्य-विपाक व प्रभाव) पांच निहित रहते हैं अथवा जो इन पांच का आश्रय है।"[1] यहाँ पर इन पाँचों से जो क्रिया शरीर पर होती है, अर्थात् कर्म भी ग्रहण करने होंगे। यह परिभाषा केवल द्रव्य गुण तक ही सीमित रह सकती हैं, क्योंकि इसमें कार्य-द्रव्य समवायीकारण होना आवश्यक नहीं बताया गया। इस प्रकार हमें द्रव्य गुण विज्ञान के लिए दोनों ही परिभाषाएँ मान्य हैं—

द्रव्य का पञ्चभौतिकत्व—

संसार में सभी द्रव्य पाञ्चभौतिक हैं। द्रव्य गुण विज्ञान में कारण द्रव्यों का उपयोग नहीं किया जाता, अतः द्रव्य शब्द से केवल कार्य-द्रव्य ही ग्रहण किए जाते हैं। चिकित्सार्थ जो भी द्रव्य प्रयोग में लाए जाते हैं, वह सभी निर्जीवावस्था में होते हैं। अतः इस अवस्था में उनमें आत्मा एवं मन की स्थिति नहीं होती और काल एवं दिशा भी द्रव्य की उत्पत्ति में समवायीकरण नहीं है, केवल निमित्त मात्र है। अतः 'द्रव्य' को पाञ्चभौतिक कहा जाता है।

इस प्रसंग में यह जान लेना भी आवश्यक है कि द्रव्य पञ्चमहाभूतों के विकार समुदाय हैं। इनकी उत्पत्ति का स्वरूप देखना हो तो इनकी तीन अवस्थाओं के विषय में विचार करना होगा। वे तीन अवस्थाएँ हैं—

१. भूत, २. महाभूत, ३. दृश्यभूत।

महाप्रलय में भी परमाणुरूप में 'आकाश' आदि भूतों की स्थिति रहती है, क्योंकि यह नित्य हैं और इस अवस्था में इनके 'शब्द' आदि गुण अव्यक्तावस्था में रहते हैं। फिर सर्व प्रथम आकाश के त्रिसरेणु का महत परिमाण होने से 'आकाश' महाभूत बनता है और फिर आकाश का वायु के त्रिसरेणु के साथ संयोग होता है तब वायु की उत्पत्ति होती है जो 'वायु' महाभूत कहलाता है इस अनुप्रवेशक्रम से पाँचों महाभूतों की उत्पत्ति होती है और इस अवस्था में आकाश में एक गुण तथा पृथ्वी में पाँचों गुण विद्यमान रहते हैं। इस अवस्था तक भी यह महाभूत 'द्रव्य' की रचना में समर्थ नहीं होते। अब पाँचों महाभूत आपस में मिलते हैं और इस क्रिया को 'अन्योन्यानुप्रवेश' कहा जाता है। इस मिलने से 'दृश्यभूत' की उत्पत्ति होती है। इन पञ्चीकृत महाभूतों से ही संसार के सभी द्रव्यों की उत्पत्ति होती है। इसीलिए 'सभी द्रव्य पाञ्चाभौतिक

---

1. रसादीनां पञ्चानां यदाश्रयभूतं तद् द्रव्यम्। (भा)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हैं'[1] ऐसा कहा जाता है। पाञ्चाभौतिक होते हुए भी पार्थिव द्रव्य, आप्य द्रव्य आदि कहना विशिष्ट महाभूत के अनुसार होता है।

द्रव्य का औषधत्व—

यहाँ यह बात भी स्पष्ट हो जानी चाहिए कि संसार के सभी द्रव्य औषध होते हैं। क्योंकि जो द्रव्य में गुण होते हैं वही हमारे शरीर में होते हैं। द्रव्य के द्वारा ही हम उनकी क्षय-वृद्धि को दूर कर समान अवस्था में रख सकते हैं। और यही चिकित्सा है जो औषध के द्वारा हो सकती है। अतः मानना होगा कि सभी द्रव्य औषध हैं। सामान्य और विशेष के आधार पर वह शरीर में क्षय हुए गुणों को बढ़ाकर तथा बढ़े हुए को घटाकर समावास्था में लाकर स्वास्थ्य लाभ कराते हैं।

द्रव्य का वर्गीकरण—

द्रव्य कितने प्रकार के होते हैं—यह बताते समय यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण से द्रव्य के भिन्न २ भेद हुआ करते हैं। हमने यहाँ आयुर्वेदीय शास्त्रों में वर्णित प्रमुख दृष्टिकोणों के अनुसार द्रव्य के जितने भेद बताए हैं, उन का क्रमशः अवलोकन कराएगें।

(अ) **कार्यकारण भेद से**—दो प्रकार के द्रव्य होते हैं—१. कारण द्रव्य जो ६ होते हैं और सृष्टि के मौलिक तत्व कहे जाते हैं। २. कार्य द्रव्य—जो असंख्य हैं और कारण द्रव्यों से उत्पन्न होते हैं। द्रव्य गुण में केवल 'कार्य द्रव्यों' का ही प्रयोग होता है।

(आ) **चेतनाचेतन भेद से**—दो प्रकार के होते हैं—

१. **चेतन**—जिन में चेतना (आत्मा) का निवास हो जैसे जन्तु आदि। यह दो प्रकार का होता है—

(क) **बहिरन्तश्चेतन**—जङ्गम सृष्टि। (ख) **अन्तश्चेतन**—औद्भिद् सृष्टि।

२. **अचेतन**—में आत्मा की स्थिति एवं अभिव्यक्ति नहीं होती। यह पार्थिव तत्व हैं। जैसे लोहा, सोना आदि।

(इ) **योनि-भेद से**—चरक एवं सुश्रुत दोनों ही संहिताएं आयुर्वेद में अपना प्रमुख स्थान रखती हैं। योनि भेद से द्रव्य कितने प्रकार के हैं—यह निम्न तालिका से स्पष्ट है—

---

1. "सर्वं द्रव्यं पांचभौतिकमस्मिन्नर्थे।" (च० सू० अ० २६)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

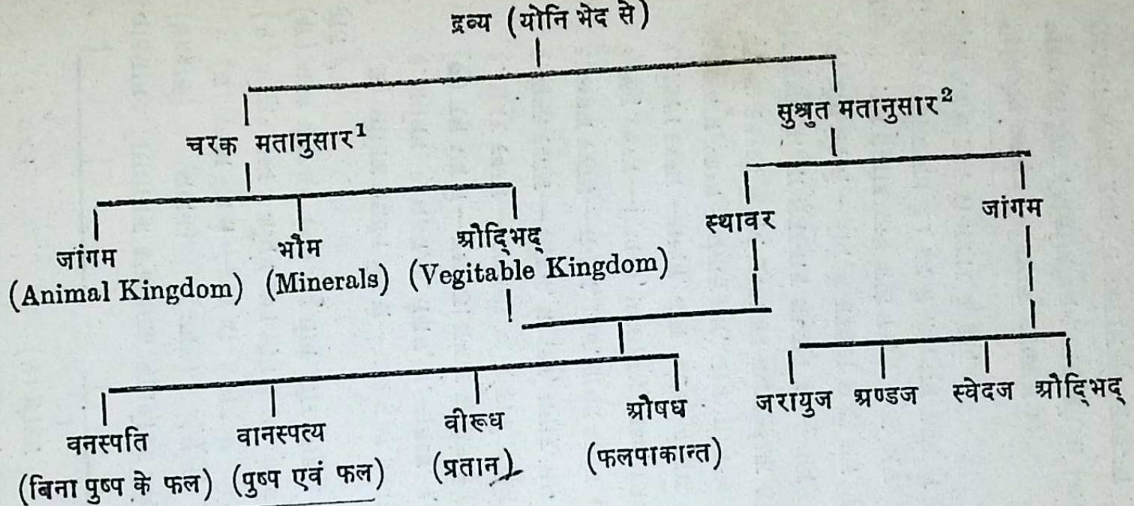

1. तत्पुनस्त्रिविधं ज्ञेयं जाँगमं भौममौद्भिदम् ।
औद्भिदं तु चतुर्विधम् । वनस्पतिस्तथा वीरूद्वानस्पत्यस्तथौषधि ॥
फलैर्वनस्पतिः पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैरपि ।
औषध्यः फलपाकान्ताः प्रतानैर्वीरूधः स्मृताः ॥ (च० सू० अ० १)

2. द्रव्याणि पुनरोषधयस्ताः द्विविधाः स्थावर जगंमाश्च ।
तासां स्थावराश्चतुर्विधाः, वनस्पतयो वृक्षा वीरूध औषधय इति ।
जंगमास्त्वापि चतुर्विधाः जरायुजाण्डज स्वेदजोद्भिजाः ॥ (सु० सू० अ० १)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(ई) दोष कर्म भेद से—द्रव्य तीन प्रकार के होते हैं।[1]

(१) शमन — वातशामक (देवदारू), पित्तशामक (चन्दन), कफशामक (अगर)

(२) कोपन — वातकोपक (मूंग), पित्तकोपक (तिल), कफकोपक (दुग्ध)

(३) स्वस्थवृतहितकर (सैन्धव)

(उ) प्रयोग भेद से—द्रव्य दो प्रकार के होते हैं[2]—(१) औषध द्रव्य, (२) आहार द्रव्य। औषध द्रव्य तीन प्रकार के होते हैं—(क) तीक्ष्ण वीर्य, (ख) मध्य वीर्य एवं (ग) मृदु वीर्य, और आहार द्रव्य छः रसों के अनुसार होते हैं।

(ऊ) भौतिक संघठन भेद से—द्रव्य पाँच प्रकार के हैं।

१. पार्थिव, २. आप्य, ३. तैजस, ४. वायव्य, ५. आकाशीय।

(ए) रस भेद से—द्रव्य छः प्रकार के होते हैं।

१. मधुर स्कन्ध—काकोली, क्षीर काकोली, मेदा, महामेदा आदि।

२. अम्ल स्कन्ध—दाड़िम, आंवला, अनार, नीम्बु आदि।

३. लवण स्कन्ध—सैन्धव, विड़, सामुद्र आदि।

४. कटु स्कन्ध—पिप्पली, पिप्लामूल, चव्य, चित्रक, सौंठ आदि।

५. तिक्त स्कन्ध—चन्दन, नीम, कुटज, गोखरू आदि।

६. कषाय स्कन्ध—अनन्त मूल, लोध, मोचरस, पाठा आदि।

इन छः स्कन्धों के पूर्ण द्रव्यों का वर्णन चरक संहिता विमानस्थान अध्याय ८ और सुश्रुत संहिता सूत्रस्थान अध्याय ४२ में अवलोकन कर सकते हैं।

(ऐ) वीर्य भेद से—वीर्य के सम्बन्ध में दो मत हैं—कुछ शीत, उष्ण दो प्रकार से मानते हैं और अन्य आठ प्रकार (गुरू, लघु, शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष, मृदु, तीक्ष्ण) का मानते हैं। इन में शीत एवं उष्ण ही प्रमुख एवं सर्वमान्य हैं। अतः वीर्य भेद से द्रव्य दो प्रकार के होंगे।

---

1. किंचिद्दोष प्रशमनं किंचिद्धातु प्रदूषणम्।
स्वस्थवृतो हितं किंचित्त्रिविधं द्रव्यमुच्यते ॥ (च० सू० अ० १)

2. वीर्यप्रधानमौषध द्रव्यं रस प्रधानमाहार द्रव्यञ्च। (च० सू० अ० २)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१. शीत वीर्य द्रव्य—आंवला, चन्दन, पद्म आदि।

२. उष्ण वीर्य द्रव्य—अगरू, तगर, कुष्ठ एवं एला आदि।

इन की गणना चरक चिकित्सास्थान अध्याय ३ में की गई है। इच्छुक सज्जन वहीं अवलोकन करें।

(ओ) विपाक भेद से—तीन प्रकार के द्रव्य हैं।

१. मधुर विपाकी द्रव्य—सोंठ, पीपल, हरड़, आँवला आदि।

२. अम्ल विपाकी द्रव्य—कुलत्थ आदि

३. कटु विपाकी द्रव्य—चित्रक, चव्य आदि।

(औ) रचनात्मक दृष्टिकोण से—आयुर्वेद के प्राचीन संहिता ग्रन्थ चरक सुश्रुत एवं वाग्भट्ट में द्रव्यों को रचना के अनुसार भी विभक्त किया हैं। वे निम्न प्रकार हैं—

चरकसंहिता—द्रव्य (आहार द्रव्य) १२ वर्गों के विभाजित किए हुए हैं—

१. शूकधान्य वर्ग	: गेहूँ, जौ आदि	२. शमीधान्य वर्ग	: मूँग, माष आदि
३. मांस वर्ग	: आनूप आदि मांस	४. शाक वर्ग	: बथुआ, चौलाई आदि
५. फल वर्ग	: अंगर, अनार,	६. हरित वर्ग	: नीम्बु, मूली आदि
७. मद्य वर्ग	: सुरा, आसव,	८. जल वर्ग	: दिव्य, भौम आदि
९. गोरस वर्ग	: गाय, भैंस का दूध-दही आदि	१०. इक्षु वर्ग	: गन्ना, शक्कर, गुड़
११. कृतान्न वर्ग	: मण्ड, पेया आदि	१२. आहार वर्ग	: तेल, लवण आदि

इनका अवलोकन चरक सूत्रस्थान अध्याय २७ में किया जा सकता है।

सुश्रुत संहिता—द्रव्य मुख्य रूप से दो प्रकार के हैं—

(क) द्रव द्रव्य—१० वर्ग

१. जल वर्ग	२. क्षीर वर्ग
३. दधि वर्ग	४. तक्र वर्ग
५. घृत वर्ग	६. तैल वर्ग
७. मधु वर्ग	८. इक्षु वर्ग
९. मद्य वर्ग	१०. मूत्र वर्ग

(ख) अन्य द्रव्य—१३ वर्ग

१. शालि वर्ग	२. कुधान्य वर्ग
३. वैदल वर्ग	४. मांस वर्ग
५. फल वर्ग	६. शाक वर्ग
७. पुष्प वर्ग	८. कन्द वर्ग
९. लवण वर्ग	१०. क्षार वर्ग
११. धातु वर्ग	१२. रत्न वर्ग
१३. कृतान्त वर्ग	

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इनका विस्तार से वर्णन सुश्रुत सूत्रस्थान अध्याय ४५ और ४६ में देखा जा सकता है।

अष्टांग संग्रह—रचनानुसार द्रव्य दो प्रकार के हैं—

(क) द्रव द्रव्य—६ वर्ग

१. जल वर्ग २. क्षीर वर्ग
३. इक्षु वर्ग ४. तैल वर्ग
५. मद्य वर्ग ६. मूत्र वर्ग

(ख) अन्न द्रव्य—६ वर्ग

१. शूकधान्य वर्ग २. शिम्बीधान्य वर्ग
३. कृतान्त वर्ग ४. मांस वर्ग
५. शाक वर्ग ६. फल वर्ग

इनका विस्तार से वर्णन अष्टांग संग्रह सूत्रस्थान अध्याय ६ और ७ में देख सकते हैं।

अष्टांग हृदय में द्रव द्रव्यों के ६ वर्गों में से मूत्र वर्ग को छोड़ दिया गया। तथा अन्न द्रव्यों के ६ वर्गों के साथ औषध वर्ग नामक एक और वर्ग भी बताया गया। इनका वर्णन अष्टांग हृदय सूत्रस्थान अध्याय ५ और ६ में आपको मिलेगा।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने द्रव्यों को इनकी रचनानुसार विभक्त किया है और औद्भिद् सृष्टि के कुलानुसार द्रव्यों का विभाजन किया गया है। आयुर्वेदीय द्रव्यगुण विज्ञान में द्रव्यों का वर्णन करते समय वर्गीकरण इसी आधार पर किया गया है।

(अं) **कर्मानुसार वर्गीकरण**—द्रव्यों का वर्गीकरण कर्मों के अनुसार भी किया गया है। चरक आदि संहिता ग्रन्थों में तथा वाग्भट्ट के संग्रह ग्रन्थों में इस प्रकार का वर्गीकरण देखने को मिलता है, हम यहाँ उसकी रूपरेखा मात्र बताना चाहते हैं।

चरक ने द्रव्यों को कर्मों के अनुसार विभक्त किया है। उसके प्रमाण निम्न हैं—

१. चरक सूत्रस्थान अध्याय ४ में जीवनीय आदि ५० वर्ग।
२. चरक विमानस्थान अध्याय ८ में और सूत्रस्थान अध्याय २ में वामकवर्ग।
३. चरक सूत्रस्थान अध्याय ५ में मुखशोधन वर्ग आदि।
४. चरक सूत्रस्थान अध्याय २१ में लघंन-वृंहण आदि।
५. चरक सूत्रस्थान अध्याय २३ में संतपर्ण, अपतर्पण आदि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६. चरक सूत्रस्थान अध्याय २४ में संज्ञाप्रबोधक आदि।
७. चरक सूत्रस्थान अध्याय २५ में हिततम, अहिततम आदि।
८. चरक विमानस्थान अध्याय ६ में वातवर्धक, पित्तवर्धक आदि।
९. चरक शारीरस्थान अध्याय ८ में गर्भवृद्धिकर आदि।
१०. चरक चिकित्सास्थान अध्याय १, २ में रसायन वाजीकरण आदि।

यह सब उद्धरण इस बात को स्पष्ट करने वाले हैं कि चरक ने कर्मों के अनुसार द्रव्यों का विभाजन किया था।

सुश्रुत संहिता ४ में भी कर्मों के अनुसार द्रव्यों का वर्गीकरण किया गया है। जिस के प्रमाण निम्न हैं—

१. सुश्रुत सूत्रस्थान अध्याय ३८ में विदारीगन्धादि ३६ वर्गों का वर्णन।
२. सुश्रुत सूत्रस्थान अध्याय ३९ में उर्ध्वभागहर आदि वर्गों का वर्णन।
३. सुश्रुत सूत्रस्थान अध्याय ३९ में पाचन, दारण आदि वर्गों का वर्णन।
४. सुश्रुत चिकित्सास्थान अध्याय २६ में वाजीकरण आदि वर्गों का वर्णन।
५. सुश्रुत कल्पस्थान अध्याय २५ में विष आदि वर्गों का वर्णन।

वाग्भट्ट में भी कर्मों के अनुसार द्रव्यों का विभाजन किया है। अष्टांग संग्रह में सूत्रस्थान अध्याय १४—१५—१६ में इनका विस्तार से वर्णन है और अष्टांग हृदय में सूत्रस्थान अध्याय १५ में ३३ गणों का वर्णन किया गया है जो कर्मों के अनुसार है।

इस प्रकार हम प्राचीन साहित्य में द्रव्यों का कर्मानुसार वर्गीकरण पाते हैं और आधुनिक विज्ञान में भी कर्मों के अनुसार द्रव्यों का विभाग किया गया है। जैसे नाड़ी संस्थान पर उत्तेजना लाने वाले द्रव्य आदि।

(अ:) उपलब्ध निघंटु मतानुसार—द्रव्य वर्गीकरण पूर्ण करते समय हमें यह न भूलना चाहिए कि आज द्रव्यों के प्रमुख ग्रंथ निघंटु हैं। उन में भी द्रव्यों का विभाजन में सर्वप्रथम श्रेय धन्वन्तरि निघंटु को है जिस में सभी द्रव्यों को सात वर्गों में विभक्त किया। वे वर्ग हैं—

१. गुडूच्यादि वर्ग
२. शतपुष्पादि वर्ग
३. चन्दनादि वर्ग
४. करवीरादि वर्ग
५. आम्रादि वर्ग
६. सुवर्णादि वर्ग
७. मिश्रकादि वर्ग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह विभाजन द्रव्यों के कर्मों के अनुसार ही किया गया और एक समान कर्म करने वाले द्रव्यों का वर्णन एक ही वर्ग में हुआ। यह परिपाटी चरक आदि से ग्रहण की गई।

इस के पश्चात और निघंटु बने, जिन्होंने अपना आदर्श चरक आदि को न मानकर धन्वन्तरि निघंटु को माना और इसी प्रकार द्रव्यों के नाम पर वर्गों का वर्णन किया किन्तु उन में इस बात का ध्यान नहीं रक्खा गया कि वर्ग में समान कर्म करने वाले द्रव्यों का वर्णन होना चाहिए।

भावप्रकाश निघंटु इन में प्रसिद्ध है। उसमें सभी द्रव्यों के २२ वर्गों में विभक्त किया हुआ है किन्तु उसमें भी यह नहीं कहा जा सकता कि वह द्रव्यों की रचना के अनुसार वर्गीकरण है कि उनके कर्म सामान्य के आधार पर। इन में से कोई भी बात दृष्टिगोचर नहीं होती। कहा जाता है कि प्रयोज्य अंग फल या कन्द हों उन द्रव्यों का वर्णन हरीतक्यादि वर्ग में किया गया है। किन्तु वहाँ पर हम पाते हैं कि सैन्धव का भी वर्णन किया गया है। इस प्रकार यह कहना कि इन वर्गों का आधार क्या है कठिन सा प्रतीत होता है।

इस प्रकार भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से द्रव्य के भेदों के विषय में चर्चा की है। यद्यपि यह बहुत विस्तृत विषय है जिसका एक ग्रंथ अलग से ही बन सकता है तो भी इतना अवश्य है कि पाठ्यक्रम की दृष्टि से इतना जान लेना ही पर्याप्त है क्योंकि इन में दिए गए संदर्भों की सहायता से मूल चरक संहिता आदि में सभी बातों की जानकारी की जा सकती है।

द्रव्यों के सुश्रुतोक्त गण—

गण	द्रव्य	प्रमुख गुण-कर्म
विदारीगन्धादि	शालपर्णी, विदारी, महाबला, नागबला, गोक्षुर, प्रश्निपर्णी, शतावरी, सारिवा, कृष्ण सारिवा, जीवक, ऋषभक, माषपर्णी, मुग्दपर्णी, वृहतीद्वय, पुनर्नवा, एरण्ड, हंसपदी, वृश्चिकाली, कपिकच्छु।	वृहंण, अंगमर्द प्रशमन, श्वास, कास, शोष, गुल्म नाशक।
आरग्वधादि	आरग्वध, मदनफल, कर्कोटकी,	कफ, कुष्ठ, ज्वर, छर्दि,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गण	द्रव्य	प्रमुख गुण-कर्म
	कुटज, पाठा, कुटकी, पाटला, मूर्वा, इन्द्रयव, सप्तपर्ण, निम्ब, पीत सैरेयक, नील सैरेयक, गुडूची, चित्रक, काकजंघा, करञ्ज, लताकरञ्ज, पटोल, चिरायता, करैला।	विष, कण्डू, प्रमेह नाशक।
वरूणादि	वरूण, अतिर्गल, शोभांजन, मधुशिग्रु, टेकार, मेषशृंगी, चिरबिल्व, नक्तमाल, मोरट, अग्निमन्थ, रक्त-पीत सैरेयक, बिम्बी, अर्क, अपामार्ग, चित्रक, शतावरी, बिल्व, कर्कट शृंगी, दर्भ, वहतीद्वय।	कफ नाशक, मेद नाशक, शिरःशूल, गुल्म नाशक।
वीरतर्वादि	वीरतरू, नील-रक्त पीत सैरेयक, दर्भ, बन्दाक, जलज दर्भ, नल, कुश, काश, पाषाणभेद, अग्निमन्थ, मूर्वा, राजार्क, अपामार्ग श्योनाक, इन्दीवर, ब्राह्मी, गोक्षुर।	वातहर, मूत्रजनन, अश्मरीभेदन, वातव्याधि नाशक।
सालसारादि	सालसार, सर्ज, खदिर, सोमवल्क, अरिमेद, क्रमुक, भूर्जपत्र, मेषशृंगा, तिनिश, चन्दन, कुचन्दन, शिंशपा, शिरीस, असन, धव, अर्जुन, ताल, शाक, नक्तमाल, चिरबिल्व, अश्वकर्ण, अगर, पीतचन्दन।	कफ, मेद, कुष्ठ, प्रमेह, पाण्डु नाशक।
रोध्रादि	रोध्र, शाबररोध्र, पलाश, श्योनाक, अशोक, फंजी, कटफल, एलवालुक, शल्लकी, जिंगिणी, कदम्ब, शाल, कदली।	कफ, मेद, विष एवं योनिविकार नाशक, स्तम्भन व वर्ण कारक।
अर्कादि	अर्क, अलर्क करंज, लताकरंज, नागदन्ती, अपामार्ग, भार्गी, रास्ना, कलिहारी, श्वेत अपराजिता, नील अपराजिता, वृश्चिकाली।	कफ, मेद, विष, कुष्ठ, कृमि नाशक, व्रण शोधक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गण	द्रव्य	प्रमुख गुण-कर्म
सुरसादि	सुरसा, श्वेत तुलसी, मरूवक, क्षुद्र तुलसी, रोहिष, गन्धतृण, राजिका, वर्वरी, कासमर्द, छिक्किका, खरपुष्प, विडंग, कटफल, निगुंडी, श्वेत निगुंडी, मुण्डी, मूषाकर्णी, काकजंघा, काकमाची, विषमुष्ठी।	कफ, कास, श्वा प्रतिश्याय, कृमि नाश व्रण शोधक।
मुष्ककादि	मुष्कक, पलाश, धव, चित्रक, मदनपाल, शिंशपा, स्नुही, त्रिफला।	मेदहर, शुक्र शोध एवं अश्मरी नाशक।
पिप्पल्यादि	पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च, गजपीपल, हरेणुका, एला, अजमोद, इन्द्रयव, पाठा, जीरा, सर्षप, महानिम्बफल, हिंगु, भार्ङ्गी, मूर्वा, अतिविषा, वचा।	कफघ्न, वातनाश दीपन, पाचन, शूल नाशक, प्रतिश्याय, गु नाशक।
एलादि	एला, तगर, कुष्ठ, मांसी, रोहिष, त्वक्, पत्र, नागपुष्प, प्रियङ्गु, हरेणुका, नखी, चोरपुष्पी, श्रीवेष्टक, तज, ग्रन्थि पर्ण, एलवालुक, गुग्गुल, सर्जरस, तुरुष्क, कुन्दरू, अगरू, स्पृक्का, उशीर, देवदारू, केशर, नागचम्पक, कमलकेशर।	वात कफ नाशक, वि नाशक, कण्डू-कु नाशक, वर्ण कारक।
वचादि	वचा, मुस्ता, अतिविषा, हरीतकी, देवदारू, नागकेशर।	स्तन्य शोधन, दोष पाचन।
हरिद्रादि	हरिद्रा, दारूहरिद्रा, पृश्नपर्णी, इन्द्रयव, मुलहठी।	,, ,,
श्यामादि	त्रिबृत, विधारा, दन्ती, शंखिनी, तिल्वक, कम्पिल्लक, महानिम्ब, क्रमुक, द्रवन्ती, इन्द्रायण, आरग्वध, करञ्ज, लताकरञ्ज, गुडूची,	भेदन, अनुलोमन, विषघ्न।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गण	द्रव्य	प्रमुख गुण-कर्म
	सप्तला, वृद्धदारुकभेद, स्नुही, स्वर्णक्षीरी ।	
वृहत्यादि	वृहती, कंटकारी, इन्द्रयव, पाठा, मुलेठी ।	त्रिदोषहर, पाचन, मूत्रजनन ।
पटोलादि	पटोल, चन्दन, रक्तचन्दन, मूर्वा, गुडूची, पाठा, कुटकी ।	कफपित्त शामक, ज्वर नाशक, विषनाशक ।
काकोल्यादि	काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, मुग्दपर्णी, माषपर्णी, मेदा, महामेदा, गुडूची, कर्कट-श्रृंगी, वंशलोचत, पद्मक, प्रपौण्ड-रीक, ऋद्धि, वृद्धि, मृद्वीका ।	वातपित्तहर, रक्तशामक, वृहंण, वृष्य, कफ-कारक, स्तन्यजनन ।
ऊषकादि	ऊषक (क्षारविशेष), सैन्धव, शिलाजतु, कासीस, हिंगु, तुत्थ ।	कफमेदहर, मूत्रजन, रक्तपित्तशामक, तृष्णा-नाशक ।
सारिवादि	सारिवा, मुलेठी, चन्दन, रक्त-चन्दन, पद्मक, गम्भारीफल; मधूक पुष्प, उशीर ।	दाहशामक, ज्वर-नाशक ।
अञ्जनादि	सौवीराञ्जन, रसाञ्जन, नाग-केशर, प्रियंगु, नीलोत्पल, नलक, पद्मकेशर, मुलेठी ।	रक्तपित्त, विष, दाह नाशक ।
परूषकादि	परूषक, द्राक्षा, दाडिम, राजादन, कतकफलक, शाकफल, त्रिफला ।	वातहर, हृद्य, तृष्णा-हर, मूत्रजनन ।
प्रियंग्वादि	प्रियंगु, लज्जालु, धातकी, पुन्नाग, नागकेशर, चन्दन, रक्तचन्दन, मोचरस, रसांजन, कुम्भीक, स्रोतोञ्जन, पद्मकेशर, मञ्जिष्ठा ।	पित्तहर, स्तम्भन, संधानीय, व्रणरोपण ।
अम्बष्ठादि	पाठा, धातकीपुष्प, लज्जालु, श्योनक, मुलेठी, बिल्व, शाबर-	,, ,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गण	द्रव्य	प्रधान गुण-कर्म
	रोघ्न, पलाश, नन्दीवृक्ष।	
न्यग्रोधादि	न्यग्रोध, उदुम्बर, अश्वत्थ, प्लक्ष, मधूक, आम्रातक, अर्जुन, आम्र, कोशाम्र, लाक्षावृक्ष, जम्बूद्वय, प्रियाल, मुलेठी, कट्फल, वेतस, कदम्ब, बदरी, तिन्दुक, शल्लकी, रोध्र, शाबररोध्र, भल्लातक।	ग्राही, सन्धानीय, रक्तपित्त शामक, दाह-शामक।
गुडूच्यादि	गुडूची, निम्ब, धान्यक चन्दन, पद्मक।	ज्वरनाशक, दीपन, तृष्णानाशक, दाह-नाशक।
उत्पलादि	नीलोत्पल, रक्तोत्पल, श्वेतोत्पल, सौगन्धिक, कुवलय, पुण्डरीक, मधुक।	दाहशामक, रक्तपित्त-शामक, तृष्णा विष-नाशक।
मुस्तादि	मुस्ता, हरिद्रा, दारूहरिद्रा, हरीतकी, आमलकी, विभीतक, कुष्ठ, श्वेत वचा, वचा, पाठा, कुटकी, काकजंघा, अतिविषा, एला, भल्लातक, चित्रक।	कफहर, मेदहर, दीपन, कुष्ठनाशक।
त्रिफला	हरीतकी, विभीतक, आमलकी।	कुष्ठ, प्रमेह, विष, ज्वर नाशक।
त्रिकटु	शुण्ठी, पिप्पली, मरिच।	कफ, मेद, कुष्ठ, गुल्म नाशक।
आमलक्यादि	आमलकी, हरीतकी, पिप्पली, चित्रक।	कफ नाशक, रोचन, दीपन, वृष्य।
त्रप्वादि	वंग, नाग, ताम्र, रजत, लोह, सुवर्ण, मण्डूर।	कृमिनाशक, विष-नाशक।
लाक्षादि	लाक्षा, आरग्वध, कुटज, करवीर, कट्फल, हरिद्रा, दारूहरिद्रा, निम्ब, सप्तपर्ण, चमेली।	कफ पित्तनाशक, कुष्ठ कृमिनाशक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गण	द्रव्य	प्रधान गुण-कर्म
लघुपंचमूल	गोक्षुर, बृहती, कंटकारी, पृश्निपर्णी, शालपर्णी।	वातपित्तहर, बृहंण, बल्य।
बृहत् पंचमूल	बिल्व, अग्निमन्थ, श्योनाक, पाटला, गभारी।	वातहर, दीपन कफनाशक।
वल्ली पञ्चमूल	विदारी, सारिवा, श्यामसारिवा, गुडूची; मेषशृंगी।	कफ नाशक, रक्तपित्त शामक, शुक्रशोधक।
कंटक पञ्चमूल	करमर्द, गोक्षुर, सैरेयक शतावरी।	,, ,,
तृणपञ्चमूल	कुश, काश, नल, शर, दर्भ।	रक्तपित्त नाशक।

इस प्रसंग में यह बात स्मरणीय है कि सुश्रुतसंहिता के इन गणों में जो द्रव्य हैं—उनमें से कुछ ऐसे द्रव्य हैं जिनके विषय में निश्चितता से नहीं कहा जा सकता। यह अभी मतभेद का विषय है। चरक संहिता के पचास वर्ग 'कर्म' के प्रकरण में दिये जायेंगे।

द्रव्यों के कुछ प्रसिद्ध गुण—

गण	द्रव्य
१. अष्टवर्ग	काकोली, क्षीर काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि।
२. अम्लपंचक	अम्लवेतस, जम्बीर, मातुलुंग, नारंग, निम्बुक।
३. अम्लवर्ग	जंबीर, निम्बुक, अम्लवेतस, इमली, नारंग, दाड़िम, वृक्षाम्ल, बीज़पूर, चाँगेरी, चणकाम्ल, कर्कन्धु, करमर्द, चुक्रिका।
४. उपविष	अर्कक्षीर, स्नुहीक्षीर, लाँगली, करवीर, गुञ्जा, अहिफेन, धतूर।
५. चतुरूष्ण	सोंठ, मिर्च, पिप्पली, पिप्पलामूल।
६. चतुर्जात	दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेसर।
७. चतुर्बीज	मेथी, चन्द्रशूर, कालाजाजी, अजवायन।
८. जीवनीय	अष्टवर्ग, मुगद्पर्णी, मासपर्णी, जीवन्ती और मुलहठी।
९. त्रिमद	बायविडंग, नागरमोथा, चित्रक।
१०. त्रिजात	दालचीनी, इलायची, तेजपात।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

११.	त्रिगन्धक	गन्धक, हरताल और मनः शिला।
१२.	त्रिवृत	घृत, तैल, वसा।
१३.	त्रिकटंक	वृहती, कटंकारी धन्वयास।
१४.	दशमूल	बिल्व, अग्निमन्थ, श्योनाक, पाटला, गम्भारी, शालपर्णी, प्रश्निपर्णी, वृहती, कटंकारी, गोक्षुर।
१५.	पञ्चसुगंधिक	कपूर, कंकोल, लौंग, गुवाक, जातिफल।
१६.	पञ्चकोल	पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ।
१७.	पञ्चवल्कल	वट, उदुम्बर, अश्वथ, पारीस, प्लक्ष की छालें।
१८.	पञ्चतृण	कुश, काश, शर, दाभ, इक्षु।
१९.	पञ्चगव्य	गाय के दधि, दूध, घृत, मूत्र, पुरीष
२०.	पञ्चलवण	सैन्धव, सौर्वचल, विड़, सामुद्र, सांभर।
२१.	पञ्चपल्लव	आम, जामुन, कपित्थ, बीजपूर, बिल्व के पत्ते।
२२.	पञ्चतिक्त	गिलोय, नीम की जड़ की छाल, वासा, कटंकारी, पटोलपत्र।
२३.	पञ्चामृत	गिलोय, गोखरू, मूसली, मुण्डी, शतावरी।
२४.	बलाचतुष्टय	बला (खरेंटी), अतिबला (कंघी), महाबला (सहदेई), नागबला (गंगेरन)।
२५.	महास्नेह	घृत, तैल, वसा, मज्जा।
२६.	मधुरत्रयम्	खांड, गुड़, और शहद।
२७.	मूत्राष्टक	गाय, बकरी, भेड़, भैंस, हाथी, घोड़ा, ऊंट, गधा का मूत्र।
२८.	यमक	घृत, तैल।
२९.	षडूषण	पिप्पली, पिप्लामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिर्च।
३०.	क्षाराष्टक	पलाश, सेहुण्ड, चिरचिटा, इमली, आक, तिलका क्षार और जवाखार और सज्जीखार।
३१.	क्षारपञ्चक	यव, मुष्कक, सर्ज, पलाश, तिल का क्षार।
३२.	क्षारत्रय	सज्जीखार, जवाखार और टकंण।
३३.	क्षीराष्टक	गाय, भैंस, बकरी, ऊँटनी, स्त्री, भेड़, हथिनी, घोड़ी का दुध।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२

रस

द्रव्य के पाँच पदार्थों में सर्व प्रथम पदार्थ है 'रस'। रस किसे कहते हैं ? इस प्रश्न को यदि आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से देखें तो हम पाते हैं कि मुख्यतः चार अर्थों में यह शब्द प्रयोग में आया है—

१. रस (धातु) शरीर की सप्तधातुओं में से प्रथम धातु रस का ग्रहण होता है क्योंकि वह निरन्तर गतिशील रहता है।[1]

२. रस (पारद) स्वर्ण आदि कभी लोहों को अपने में विलीन करने के कारण रस कहलाता है।[2]

३. रस (कल्पना) वनस्पतियों को पीस कर, निचोड़ कर जो द्रव भाग निकाला जाता है वह रस या स्वरस कहलाता है क्योंकि यह सर्व शरीर में शीघ्रता से व्याप्त हो जाता है।[3]

४. रस (इन्द्रियार्थ) रसनेन्द्रिय के द्वारा जिस विषय का ग्रहण होता है उसे रस कहते हैं। यही द्रव्यगुण विज्ञान का रस है।[4]

ऊपर रस शब्द की चारों निरूक्तियों को बताया गया है। हमारा प्रयोजन केवल चतुर्थ प्रकार के रस से ही है जिस में बताया गया है कि रसनेन्द्रिय के ग्राह्य विषय को रस कहते हैं। अतः उस के लक्षण आदि का वर्णन हम आगे करेंगे।

---

1. "रसति अहरहर्गच्छतीति रसः।"
2. रसति भक्षयति सर्वान् लोहान् इति रसः।
3. रसति शरीरे आशु प्रसरति इति रसः।
4. रस्यते अस्वाद्यते रसनेन इति रसः।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रस-लक्षण—जैसा कि उपर्युक्त निरुक्ति से ही स्पष्ट हो जाता है कि रस उसे कहते हैं जो रसनेन्द्रिय का ग्राह्य विषय है। चरक में रस की परिभाषा बताते हुए लिखा भी है—"रसना का विषय रस कहा जाता है।[1] मधुर आदि जो भी रस हो; यद्यपि उन में अपनी-अपनी विशिष्टता होगी तो भी वह सभी होंगे रसना द्वारा ग्रहण करने योग्य। अतः रस वही है जो रसनेन्द्रिय द्वारा ग्रहण किया जाता है।"

अनुरस—रस के लक्षण के साथ ही यदि यह भी स्पष्ट हो जाए कि अनुरस क्या है तो बहुत ही सुविधाजनक रहे। यहाँ यह बात तो बताई ही जा चुकी है कि रस व्यक्त होता है, क्योंकि वह जिह्वा के द्वारा जाना जाता है—अनुरस इससे कम शक्ति वाला होता है। इसमें मुख्य रूप से तीन विशेषताएं होती हैं—

१. अव्यक्त अथवा ईषत् व्यक्त—यथा हरीतकी में मधुररस—अनुरस है।

२. अवस्था विशेष में व्यक्त—यथा पिप्पली की आर्द्र अवस्था में मधुररस अनुरस है।

३. रसाभिभूत (अन्त-व्यक्त)—रस का आरम्भ में बोध होता है और उससे दबे रहने के कारण अनुरस उस के बाद जाना जाता है। यथा-छाछ में आरम्भ में अम्ल रस की प्रतीति होती है और उससे अभिभूत तिक्त रस का ज्ञान अन्त में होता है।

यहा तीन विशेषताएं अनुरस का लक्षण स्पष्ट करने वाली हैं कि "अनुरस वह है जा रस से अभिभूत होने के कारण अव्यक्त रहता है अथवा अन्त में किंचित् व्यक्त रहता है।[2]

रस संख्या—आयुर्वेद के ग्रन्थों में द्रव्य गत रसों की संख्या ६ बताई गई है। चरक ने रसों का संख्या का संग्रह करते समय बताया है कि मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय छः रस होते हैं।[3]

---

1. "रसनार्थो रसः" (चरक सू० अ० १)
2. अनुरसस्तु रसेनभि भूतत्वादव्यक्तो व्यक्तो वा किंचिदन्ते। (अ. सं. सू. १७)
3. स्वदुरम्ला ऽथ लवणः कटुकस्तिक्त एव च।
   कषायश्चेतिषट्कोऽयं रसानां संग्रह स्मृतः॥ (च. सू. अ. १)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चरक की इसी प्रतीज्ञा की पूर्ति के लिए एक गोष्ठी का वर्णन चरक सूत्र-स्थान अध्याय २६ में किया गया है। जिस में वहाँ पर उपस्थित ऋषियों के रस की संख्या के विषय में मत बताए गए हैं और उन सब के मतों को जान कर प्रत्येक की आलोचना करते हुए महर्षि पुर्नवसु आत्रेय ने सिद्ध किया है कि जैसा कि कहा भी गया है कि रस छः ही प्रकार के होते हैं। उन ऋषियों का मत तथा पुनर्वसु का उत्तर निम्न कोष्ठक द्वारा स्पष्ट हो जाता है।

ऋषि	रस संख्या	रस नाम	आत्रय द्वारा समाधान
भद्रकाप्य	१	जल ही रस है	जल आधार है और रस आधेय हैं और आधार आधेय एक नहीं। अतः जल रस नहीं।
शाकुन्तेय ब्राह्मण	२	१. छेदनीय २. उपशमनीय	यह दोनों कर्म होते हैं और रस है कारण। कारण एवं कर्म अलग-अलग होते हैं, अतः यह रस नहीं है।
पूर्णाक्ष मौद्गल्य	३	उपर्युक्त दो और ३. साधारण	,,
हिरण्याक्ष-कौशिक	४	१. स्वादु हितकारी २. स्वादु अहितकारी ३. अस्वादु हितकारी ४. अस्वादु अहित-कारी	स्वादु एवं अस्वादु व्यक्ति विशेष की रुचि के अनुसार हैं—ये रस नहीं होते और इसी प्रकार हितकारी तथा अहितकारी रस के प्रभाव हुआ करते हैं—अतः इनको रस नहीं मान सकते।
कुमार शिरा-भारद्वाज	५	१. पार्थिव २. आप्य ३. आग्नेय ४. वायव्य ५. आकाशीय	यह पांच भेद द्रव्यों के हुआ करते हैं किन्तु रस तो द्रव्यों के आश्रित हैं, अतः इन्हें रस नहीं मान सकते।
राजर्षि वायुर्विद	६	१. गुरू, २. लघु ३. शीत ४. उष्ण	यह छः द्रव्यगत गुण हैं—इन को रस नहीं माना जा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऋषि	रस संख्या	रस नाम	आत्रेय द्वारा समाधान
		५. स्निग्ध	सकता क्योंकि यह रसनेन्द्रिय
		६. उष्ण	द्वारा ग्रहण नहीं हो सकते।
वैदेह निमि	७	१. मधुर	इनमें प्रथम छः तो मान्य हैं
		२. अम्ल	क्षार एक द्रव्य है जो विशेष
		३. लवण	क्रिया द्वारा निर्मित होता है
		४. कटु	और न केवल रसनेन्द्रिय द्वारा
		५. तिक्त	अपितु अन्य इन्द्रियों द्वारा
		६. कषाय	ग्रहण होता है। इसमें कई रसों
		७. क्षार	का समिश्रण रहता है। अतः क्षार रस नहीं।
बडिश धर्मार्गव	८	उपर्युक्त सात तथा ८. अव्यक्त	अव्यक्त और व्यक्त होना तो रस की अवस्थाएँ होती हैं। हरीतकी आदि में रस व्यक्त होता है और जल में अव्यक्त रहता है अतः इसे रस नहीं मान सकते।
कांकायन	असंख्य	इक्षु, गुड़, दुग्ध सभी मधुर रस हैं किन्तु भिन्न २ स्वाद देते हैं।	रसों के आश्रय, कर्म एवं स्वाद आदि भिन्न होने पर भी रस की संख्या में कोई अन्तर नहीं आता। यह तो इनका अनेक प्रकार के संसर्ग होने पर बना स्वरूप होता है।

और इन सब के मतों का खण्डन कर पुनर्वसु आत्रेय ने सिद्धान्त स्थापित किया कि रस छः प्रकार के हैं।[1]

पांचभौतिकत्व—

द्रव्यों की भान्ति रस भी पांचभौतिक हैं। यह बात हम दो प्रमाणों के द्वारा स्वीकार करते हैं—

1. षडेव रसा इत्युवाच भगवानात्रेय पुनर्वसुः
मधुराम्ल लवण कटुतिक्त कषायाः।" (च० सू० अ० २६)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१. आप्तोपदेश द्वारा
२. अनुमान द्वारा

आप्त पुरुषों ने तो बताया है कि रस पांचभौतिक हैं और उनको अनुमान द्वारा भी हम जान सकते हैं और अनुमान लगाते हैं उन के कार्यों को देखकर, उदाहरण के रूप में देखिये—लवण रस कफ एवं पित्तवर्धक होता है। इनमें कफ जल से बढ़ता है, और पित्त अग्नि से बढ़ता है, अतः स्पष्ट हो जाता है कि लवण रस में दो महाभूत बहुलता से होते हैं—अग्नि एवं जल। इसी प्रकार अन्य रसों के विषय में भी जानना चाहिये।

यह रस यद्यपि पंचमहाभूतों से ही उत्पन्न होता है तो भी प्रत्येक रस में दो-दो महाभूतों की अधिकता होती है। यहाँ उन्हीं दो महाभूतों की अधिकता होना ऋतु पर निर्भर करता है। उस ऋतु विशेष में ही इन दो महाभूतों की बाहुल्यता पाई जाती है जिस में कि उस रस की उत्पत्ति होती है। यह बात निम्न कोष्ठक द्वारा स्पष्ट हो जाती है—

रस	महाभूत	ऋतु
मधुर	पृथ्वी + जल	हेमन्त
अम्ल	पृथ्वी + अग्नि	वर्षा
लवण	जल + अग्नि	शरद्
कटु	वायु + अग्नि	ग्रीष्म
तिक्त	वायु + आकाश	शिशिर
कषाय	वायु + पृथ्वी	वसन्त

रस वर्गीकरण—जगत आग्नेय एवं सौम्य है, अतः इन छः रसों में से कुछ आग्नेय हैं और कुछ सौम्य। आग्नेय उष्ण होते हैं और सौम्य शीतल। छः रसों में से आग्नेय एवं सौम्य रस निम्नवत् हैं—

आग्नेय रस	सौम्य रस
१. अम्ल	१. मधुर
२. लवण	२. तिक्त
३. कटु	३. कषाय

आग्नेय पित्तवर्धक होते हैं और सौम्य पित्त शामक होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसों के लक्षण-गुणकर्म[1] —

रस	लक्षण	गुण	कर्म
मधुर	स्नेहन, तपर्ण, आह्लादक, मृदुताकारक, मुखलेप कर्ता, कफजनक तथा षट्पद पिपीलिका आदि को प्रिय	स्निग्ध, गुरू,शीत,	सप्तधातु वर्धक, आयुष्य, षड़िन्द्रिय प्रसादक, बलवर्णकारक, वात-पित्त-विष नाशक, तृष्णा-दाहप्रशामक त्वचा को हितकारक, केश्य एवं कंठ के लिए हितकारक, जीवनीय, तर्पक एवं वृंहण, मूर्च्छा नाशक तथा शुक्र स्तन्यवर्धक ।
अम्ल	दन्तहर्षकर, प्रस्रावण, स्वेदन, रोचन, मुख-शोधन, नेत्रभ्रूनिकोचन, रोमांचकर तथा हृद्य	स्निग्ध, लघु, उष्ण	रोचक, अग्निदीपक, पाचक, वृहंण, मन प्रसादक, इन्द्रिय दृढ़कारक,बलकारक, वातानु-लोमक, हृदयतर्पक, लालास्रावक, क्लेदक, मूत्रल, शुक्रघ्न ।
लवण	आशुविलयन, क्लेदन, मार्दवकर, रोचन, मुख, गल-कंठ तथा कपोल विदाहजनक	स्निग्ध उष्ण गुरू	क्लेदन, दीपन, पाचन, भेदन, रोचन, लाला-स्रावजनक, रक्तकोपक, मूत्रल, कफनिःसारक, शुक्रघ्न, धातुनाशन

1. रसों के लक्षण एवं कर्म आदि का विवरण चरक सूत्रस्थान अध्याय २६ पर आधारित है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

रस			
कटु	जिह्वा से लगते ही उद्वेजक और तादकः मुख, नासा और नेत्र से विदाह सहित स्राव कराता	रूक्ष उष्ण लघु	मुखशोधक, अग्निदीपक, पाचक, नाक-आँख से जल स्रावक। इन्द्रियों को उत्तेजित करने वाला, अलसक, शोथ, उपचय, उदर्द, अभिष्यन्द, स्नेह, स्वेद, क्लेद, मल शोषक, रोचक, कण्डू नाशक, व्रण अवसादक, क्रिमिनाशक, मांस का लेखन करने वाला, मार्ग खोलने वाला और कफ नाशक, अवृष्य एवं धातु नाशक।
तिक्त	जिह्वा से लगते ही अन्य आस्वादों को नष्ट कर्ता, स्वयं अप्रिय किन्तु रूचिकारक, मुख शोधक एवं शोषक, कंठशोधक, शैत्यकर	रूक्ष शीत लघु	रोचन, विषघ्न, कृमिघ्न, मूर्च्छा, दाह, कण्डू, कुष्ठ, तृष्णा शामक, त्वचामांस स्थिरकर्ता, ज्वरघ्न, दीपन, पाचन, स्तन्य शोधन, लेखन, क्लेद, मेद, वसा, मज्जा, लसीका, पूय स्वेद मूत्र, पुरीष, पित्त एवं कफ शोषक।
कषाय	जिह्वा में वैशद्य, स्तम्भ एवं जड़ता तथा कण्ठ में स्तम्भकारक	रूक्ष शीत गुरू	संशमन, संग्राही, सन्धानकरः, पीडन, रोपण शोषण, स्तम्भन, कफ, पित्तरक्त शामक, शरीर क्लेद को शुष्क करता, लेखन।

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दोषों पर प्रभाव[1]—

	शमन		कोपण
वात	मधुर, अम्ल, लवण	वात	कटु, तिक्त, कषाय
पित्त	कषाय, तिक्त, मधुर	पित्त	कटु, अम्ल, लवण
कफ	कटु, तिक्त, कषाय	कफ	मधुर, अम्ल, लवण

रसों के गुण कर्म आदि का जो वर्णन किया है उस विषय में दो बातें ज्ञातव्य हैं।

(क) रस के जो लक्षण अथवा गुण कर्म बताए हैं वह उस द्रव्य के लक्षण अथवा गुण कर्म मानने चाहिए, जिसमें उस रस की प्रधानता हो। कारण यह कि रस तो आश्रित है उसका आश्रय द्रव्य ही है। अतः वे सब द्रव्य के ही लक्षणादि है तो भी क्योंकि यह सब द्रव्याश्रित रस के द्वारा होता है, अतः उन्हें रस के लक्षण, गुण, कर्म आदि कहा जाता है।

(ख) उपर्युक्त गुण कर्म आदि साधारण सिद्धांत हैं। कुछ स्थानों पर इन सिद्धान्तों से विपरीत बातें भी मिलती हैं। यहाँ पर उदाहरण के लिए कुछ अपवाद नीचे देते हैं—

(१) आंवला 'अम्ल' (रसवाला) है। अतः उष्ण गुण होना चाहिए किन्तु शीत है।

(२) हरड़ 'कषाय' (रसवाली) है। अतः शीत गुण होना चाहिए किन्तु उष्ण है।

(३) मधुररस कफवर्धक होना बताया है किन्तु शहद 'मधुर' होते हुए भी कफ नहीं बढ़ाता।

(४) कटुरस वातवर्धक होना बताया है किन्तु सोंठ 'कटु' होते हुए भी वातवर्धक नहीं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रसों के जो भी गुण आदि कहे गए हैं वह सब उन के आश्रय द्रव्य के गुण होते हैं तथा कुछ स्थानों पर इस सिद्धान्त के अपवाद भी दृष्टिगोचर होते हैं।

रस अतियोगज विकार[2]—

यदि इन रसों में से किसी का भी अतियोग होगा तो वह अनेक विकार

1. चरक सूत्रस्थान अध्याय १ के आधार पर।
2. चरक सूत्र स्थान अध्याय २६ के अनुसार।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्पादक हो जाएगा। उन विकारों का वर्णन करने से पूर्व यह बात पुनः स्मरण करानी है कि यहाँ पर 'रस' शब्द से उसके आश्रय भूत द्रव्य का ही ग्रहण करना चाहिए, जैसा कि पहले लिख भी आए हैं।

रस	अतियोगज विकार
मधुर	स्थूलता, मृदुता, आलस्य, अतिनिद्रा, गोरव, अरुचि, अग्निमन्दता, मुख एवं कण्ठ में मांस वृद्धि, श्वास, कास, प्रतिश्याय, अलसक, शीतज्वर, आनाह, मुखमाधुर्य, वमन, संज्ञानाश, स्वरभंग, कृमि, गलगण्ड, गण्डमाला, अर्बुद, श्लीपद, गलशोफ, बास्ति, धमनी, गले में चिकनाहट, अभिष्यन्द, नेत्र रोग एवं कफज रोग।
अम्ल	दन्तहर्ष, तृष्णा, अक्षिनिमीलन, रोमाञ्च, कफ पतला करने वाला, पित्त वृद्धि, रक्तदोष, मांस विदाह, शरीर शिथिलता, शोथ, क्षत, पाक, कण्ठ-वक्ष-हृदय में दाह तथा पित्तज रोग।
लवण	पित्त प्रकोप, रक्त प्रकोप, तृष्णा, मूर्च्छा, सन्ताप, विदार, मांसकोप, कुष्ठ, विष, शोथ, दन्तच्युति, नपुंसकता, इन्द्रिय नाश, पालित्य, रक्तपित्त, अम्लपित्त, विसर्प, वात-रक्त, विर्चचिका, इन्द्रलुप्त।
कटु	नपुंसकता, मूर्च्छा, ग्लानि, कृशता, भ्रम, दाह, दुर्बलता, तृष्णा, कम्प, अंगशूल एवं वात विकार।
तिक्त	धातु शोष, स्रोतों में खरता, दुर्बलता, कृशता, ग्लानि, मूर्च्छा, भ्रम, मुख शोष एवं वातिक विकार।
कषाय	मुख शोष, हृच्छुल, आध्मान, स्वरभेद, स्रोतावरोध, श्यामवता, नपुंसकता, विष्टम्भ, वात-मल-मूत्र-शुक्र का अवरोध, कृश, ग्लानि, तृष्णा, स्तम्भ, पक्षाघात, अपतानक, अर्दित एवं वात रोग।

रसान्तर में कारण·—

कुछ विशिष्ट कारणों से द्रव्याश्रित एक रस दूसरे रस में बदल जाता है। वे कारण निम्न हैं—

१. **काल स्थिति**—द्रव्य पुराना होने पर रस में परिवर्तन आ जाता है। यथा चावल का भात मधुर है किन्तु कुछ समय तक रखा रहे तो अम्ल हो जाता है।

२. **पात्र स्थिति**—यथा काँसी के पात्र में दधि कटु हो जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३, संयोग—यथा चूने के संयोग से इमली मधुर हो जाती है।

४. पाक—यथा जामुन पकाने से मधुर हो जाता हैं।

५. आतप—यथा तुम्बरू फल कषाय रस है, उसे धूप में सुखाया जाए तो मधुर हो जाता है।

६. भावना—यथा कषाय रस प्रधान तिल मुलहठी की भावना से मधुर हो जाते हैं।

७. परिणाम—यथा दूध-दधि में परिणित हो कर अम्ल हो जाता है।

८. उपसर्ग—यथा मधुर गन्ने में कृमि लगने से अम्लता या तिक्तता आ जाती है।

९. देश—यथा कुछ प्रदेशों का आंवला अम्ल न हो कर मधुर होता है।

१०. विक्रिया—यथा कटहल का फल कुछ देर तक हाथ से मला जाए तो अम्ल हो जाता है।

रस उपलब्धी—

ज्ञान प्राप्ति के प्रमुख तीन ही साधन होते हैं और उनसे ही रस उपलब्धी भी सम्भव है। वे तीन हैं—

(क) प्रत्यक्ष (ख) अनुमान (ग) आप्तोपदेश।

रस उपलब्धी में प्रत्यक्ष ही सर्व प्रमुख माना जाता है क्योंकि जिह्वा से प्रत्यक्ष होने वाला गुण ही रस होता है। अतः किसी द्रव्य का रस जानते हुए प्रत्यक्ष ही साधन है।[1] तो भी कुछ द्रव्यों के रसों की उपलब्धी अनुमान तथा आप्तोपदेश से होती है। यथा अव्यक्तावस्था में स्थित रस का ज्ञान आप्तोपदेश से अथवा उसके कर्म देख कर अनुमान द्वारा किया जाता है। सोना कषाय-मधुर रस है, यह भी जिह्वा नहीं बता सकती, अतः आप्तोपदेश एवं अनुमान से जाना जाता है।

रस भेद विकल्प[2]—

द्रव्यों में देश-काल भेद से भूतों की न्यूनता- अधिकता के अनुसार एक-दो अथवा अधिक रस रहा करते हैं। उन के संयोग के अनुसार कल्पना करने से मुख्य रूप से ६३ भेद होते हैं। यद्यपि यह असंख्य हो सकते हैं। इसी प्रकार का

1. रसो निपाते द्रव्याणाम् (च० सू० २६)
2. विकल्पों के उदाहरण द्रव्य गुण विज्ञान के आधार पर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विकल्प वात-पित्त-कफ का भी है वे भी ६३ हैं। शास्त्रों में बताया गया है कि जिस दोष विकल्प में जो रस विकल्प उपयुक्त हो वहाँ उस विकल्प वाले द्रव्यों का प्रयोग कराया जाए। नीचे उन ६३ भेदों को उदाहरण सहित बताते हैं—

एक रस वाले विकल्प—६

मधुर	गाय का दूध	अम्ल	कच्चा करौंदा
लवण	सैन्धव	कटु	पिप्पली
तिक्त	नीम	कषाय	पद्म

दो रस वाले विकल्प—१५

मधुर-अम्ल	बेर	मधुर-लवण	ऊंटनी का दूध
मधुर कटु	कुत्ते का मांस	मधुर तिक्त	गन्धा बिरोजा
मधुर कषाय	तिल तैल	अम्ल लवण	क्षार मृतिका
अम्ल कटु	चुक्र	अम्ल तिक्त	सुरा
अम्ल कषाय	हथिनी की दही	लवण कटु	गोमूत्र
लवण तिक्त	शीशा	लवण कषाय	समुद्र फेन
कटुतिक्त	कपूर	कटुकषाय	भिलावा
तिक्त कषाय	हस्तिनी घृत		

तीन रस वाले विकल्प—२०

मधुर अम्ल लवण	हाथी का मांस
मधुर अम्ल कटु	शल्यक मांस
मधुर अम्ल तिक्त	गोधूम सुरा
मधुर अम्ल कषाय	तक्र
मधुर लवण कटु	जंगली कबूतर का मांस
मधुर लवण तिक्त	घोघा का मांस
मधुर लवण कषाय	गुड़ युक्त कमल कंद
मधुर कटु तिक्त	सूखा धनिया
मधुर कटु कषाय	एरण्ड तैल
मधुर तिक्त कषाय	गुडूची
अम्ल लवण कटु	चांदी
अम्ल लवण तिक्त	हाथी का मूत्र
अम्ल लवण कषाय	हस्तिनी के दही में सांभर नमक
अम्ल कटु तिक्त	मरिचयुक्त सुरा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अम्ल कटु कषाय	अम्ल बेंत
अम्ल तिक्त कषाय	शुक मांसयुक्त सुरा
लवण कटु तिक्त	भेड़ का मूत्र
लवण कटु कषाय	भिलावे में सांभर नमक
लवण तिक्त कषाय	समुद्र फेन
कटु तिक्त कषाय	काला अगर

चार रस वाले विकल्प—१५

मधुर अम्ल लवण कटु	गोमूत्र युक्त शिलाजीत
मधुर अम्ल लवण तिक्त	गोमूत्र मिला घोड़ी का दूध
मधुर अम्ल लवण कषाय	सैन्धव युक्त तक्र
मधुर अम्ल कटु तिक्त	लशुन युक्त सुरा
मधुर अम्ल कटु कषाय	कांजीयुक्त एरण्ड तैल
मधुर अम्ल तिक्त कषाय	तुरंजबीन मिला गलर का दूध
मधुर लवण कटु तिक्त	बैंगन
मधुर लवण कटु कषाय	गोमूत्र युक्त तिल तैल
मधुर लवण तिक्त कषाय	समुद्र फेन
मधुर कटु तिक्त कषाय	गुग्गुल
अम्ल लवण कटु तिक्त	हथिनी की दही की बनी सुरा में सोंचल
अम्ल लवण कटु कषाय	हथिनी के दही में सोंचल
अम्ल लवण तिक्त कषाय	शुक मांस में रेह
अम्ल कटु तिक्त कषाय	हस्तिनी दधि
लवण कटु तिक्त कषाय	कच्चे बेल फल में सांभर मिला

पांच रस वाले विकल्प—६

मधुर अम्ल लवण कटु तिक्त	कच्चे करौंदे में मिला हुआ भुना बैंगन
मधुर अम्ल लवण कटु कषाय	त्रिकटु और यवक्षार मिला तक्र
मधुर अम्ल लवण तिक्त कषाय	औद्भिद लवण मिला तक्र
मधुर अम्ल कटु तिक्त कषाय	हरड़
मधुर लवण कटु तिक्त कषाय	रसोन
अम्ल लवण कटु तिक्त कषाय	भिलावा

छः रसों का विकल्प—१

मधुर अम्ल लवण कटु तिक्त कषाय	काले हरिण का मांस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३

गुण

गुण-निरूक्ति—

यदि गुण निरूक्ति का विचार क्रिया जाय तो हम पाते हैं कि इसका गुण संज्ञा इसके 'गोण' होने के कारण है। इसके 'गोण' होने के दो प्रमाण हैं—

(क) चिकित्सा शास्त्र में चिकित्सक कर्त्ता हैं औरउसका 'करण' द्रव्य है। द्रव्य शरीर पर तभी कोई कर्म कर सकता है जबकि उसमें गुण होवें। गुण द्रव्य के आश्रित रहते हैं। इस तरह द्रव्य आधार है और गुण आधेय। आधार सदैव प्रधान होता है और आधेय गौण। गोण होने पर इन्हें गुण कहा जाता है।

(ख) द्रव्य में कर्म एवं गुण आश्रित होते हैं। इन में से कर्म चेष्टावान होता है जब कि गुण निश्चेष्ट। चेष्टावान प्रधान और निश्चेष्ट 'गौण' होता है। अतः इसे गुण कहा जाता है।

गुण लक्षण—

जो समवाय सम्बन्ध से द्रव्य में आश्रित हो तथा चेष्टा रहित हो वह कारण 'गुण' कहलाता है।[1] इस के लक्षण के विषय में और भी कई मत हैं किन्तु उपयुक्त यही है। रस वैशेषिककार ने लिखा है—"जिन पदार्थों में अनेकविध लक्षग मिलते हैं, वह गुण कहलाते है।" अनेक विध की व्याख्या इस प्रकार की जाती है कि रस केवल रसनेन्द्रिय से ग्रहण होता है, परिणाम लक्षण वाला विपाक है और कर्म लक्षण वाला वीर्य होता है किन्तु शीत उष्ण गुण स्पर्श द्वारा जाने जाते हैं और गुरु-लघु भार द्वारा जाने जाते हैं। इसी प्रकार दूसरे गुणों के विषय में भी जानना चाहिए।

---

1. समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः। (च. सू० अ० १.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वर्गीकरण—

गुणों का वर्गीकरण करते हुए चरक का यह आधार मान्य है जिसमें लिखा है—"सार्था, गुरु आदि, बुद्धि-प्रयत्नान्ता एवं परादि गुण होते हैं।"[1] इन में 'सार्था' गुण वे हैं जो पञ्चमहाभूतों के गुण हैं—इन्हें विशिष्ट गुण कहा जाता है। गुरु आदि गुण द्रव्यगत रहने वाले गुण हैं, इन्हें शारीर गुण कहा जाता है। बुद्धि प्रयत्न आदि जो गुण हैं वह आध्यात्मिक गुण कहलाते हैं। परादि गुण सामान्य गुण होते हैं—

(१) विशिष्ट गुण—५
(२) गुर्वादि गुण—२०
(३) आध्यात्मिक गुण —६
(४) परादि गुण—१०

विशिष्ट गुण—

यह पञ्चमहाभूतों में से प्रत्येक के एक-एक गुण हैं जो एक-एक इन्द्रिय के द्वारा ग्रहण किए जाते हैं— उन का सम्बन्ध निम्न कोष्ठक से स्पष्ट हो जाता है।

गुण	महाभूत	गुण ग्राह्य इन्द्रिय
शब्द	आकाश	श्रोत्र
स्पर्श	वायु	स्पर्शेन्द्रिय
रूप	अग्नि	चक्षु
रस	जल	रसना
गन्ध	पृथ्वी	घ्राण

इन में 'रस' द्रव्यगुण विज्ञान का विषय है जिस का विस्तार से वर्णन हम ने कर दिया है। शेष चार मनोविज्ञान अथवा शरीर क्रिया विज्ञान से सम्बन्ध रखते हैं—अतः उनकी व्याख्या हमें अपेक्षित नहीं।

आध्यात्मिक गुण—

इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख प्रयत्न और बुद्धिइन्हें आत्मगुण या आध्यात्मिक गुण कहा जाता है।[2] यह पदार्थ विज्ञान का विषय है। अतः इनकी व्याख्या हमें अपेक्षित नहीं।

---

1. सार्थाः गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नन्ताः परादय। गुणा प्रोक्ताः—(च० सू० १.)
2. इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं प्रयत्नश्चेतना धृतिः। (च० शा० अ० १)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुर्वादि गुण—

यह शारीर गुण कहे जाते हैं। वास्तव में देखा जाय तो 'द्रव्य गुण विज्ञान' में गुण शब्द से इन का ही ग्रहण होता है। 'द्रव्य' चिकित्सक का 'करण' है। अतः इनके द्वारा ही शरीर के रोगों को दूर किया जाता है। यह बात यहाँ स्मरणीय है कि हमारे शरीर में यही गुण हैं और द्रव्यों में भी यही बीस गुण होते हैं, अतः सामान्य वृद्धि कर्ता और विशेष ह्रास कर्ता होता है।[1] इस सिद्धान्त के अनुसार हम कहेंगे कि क्षीण हुए गुण को समानावस्था में लाने के लिए उस के समान गुणसामान्य वाले द्रव्यों का प्रयोग कराया जाए और वृद्धि को प्राप्त हुए गुण को घटा कर समानावस्था में लाने के लिए उससे विपरीत गुण (विशेष) वाले द्रव्यों का प्रयोग कराया जाय। इस तरह शरीरस्थ गुणों को समानता में रख कर स्वास्थ्य लाभ कराएँ।

ये बीस गुण तथा इन का भौतिक स्वरुप, पञ्चभूतात्मक संघठन, दोषों पर प्रभाव तथा कर्म आदि का विवरण निम्न कोष्ठक से स्पष्ट हो जायगा, तथा प्रत्येक के उदाहरण भी साथ में मिल जाएँगे।

---

1. 'सर्वदा सर्वभावानां सामान्यं वृद्धिकारणम्।
ह्रास हेतुर्विशेषश्च·········॥ (च० सू० अ० १६)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण	प्रसिद्ध नाम	आँगल भाषा	दोषों पर प्रभाव	'प्रधान' कर्म	'अन्य' कर्म	उदाहरण
गुरू	भारीपन	Heaviness	कफकारक; वातहारक	वृहंण	गुरूताकारक, गुरुपाकी	माष, मूशली आदि
लघु	हलकापन	Lightness	वातकारक कफहारक	लंघन	दुर्बलता, कृशताकारक लघुपाकी	मूंग, लाजा आदि
शीत	ठण्ढ़क	Cold	वातकफकारक पित्त हारक	स्तम्भन	मूर्छा-तृषा, दाह, स्वेद नाशक	चन्दन आदि
उष्ण	गर्मी	Heat	पित्तकारक वातकफहारक	स्वेदन	पाचक, मूर्च्छा, एवं दाहकारक	चित्रक आदि
स्निग्ध	चिकनाहट	Soothing-ness	कफकारक वातहारक	क्लेदन	बल्य-वाजीकर, स्नेह-मार्दवकर	घृत आदि
रूक्ष	रूखापन	Dryingness	वातकारक कफहारक	शोषण	रूक्षता, कठिनता करनेवाला	यव आदि
मन्द	सुस्ती	Dullness	कफकारक पित्तहारक	शमन	कम कार्य करना और देर में कार्य करना	अमृता आदि
तीक्ष्ण	तेजी	Sharpness	पित्तकारक कफहारक	शोधन	लेखन, दाह, पाक-स्रावकर्ता	जमालगोटा आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्थिर	गतिहीनता	Immobility	कफकारक	धारण	स्तम्भन	जायफल
सर	गतिशीलता	Mobility	कफहारक	प्ररण	वात-मल प्रवंतक	अमलतास आदि
मृदु	मुलायमियत	Softness	कफकारक	श्लथन	दाह-पाक स्रावनाशक	एरण्ड तेल आदि
कठिन	कड़ापन	Hardness	वातकारक	दृढ़ीकरण	मलशोषक	प्रवाल आदि
विशद	स्वच्छता	Clarity	वातकारक	क्षालन	क्लेदशोषक एवं व्रण रोपक-	क्षार आदि
पिच्छिल	लुआब	Sliminess	कफकारक	लेपन	जीवनीय, बलकारक	इसबगोल आदि
श्लक्ष्ण	चिकनापन	Smoothness	पित्तकारक	रोपण	धातुवर्धक, मल प्रवर्तक	दुग्धपाषाण
खर	खुरदरापन	Roughness	वातकारक	लेखन	मलशोषक एवं धातु ह्रासकारक	करञ्जफल आदि
सूक्ष्म	छोटापन	Minuteness	वातकारक	विवरण	लघुपाकी, धातुह्रास कारक एवं मलशोषक	मद्य आदि
स्थूल	मोटापन	Bulkiness	कफकारक	संवरण	स्थूलताकारक, स्रोतरोधक एवं गुरुपाकी	दधि आदि
सान्द्र	गाढ़ापन	Solidity	कफकारक	प्रसादन	धातुवर्धक, स्थूलता कारक	मक्खन आदि
द्रव	पतलापन	Fluidity	कफपित्तवर्धक	विलोड़न	क्लेदकर, प्रसारी	जल आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परादि गुण १०—

परादि गुण यद्यपि द्रव्यगुण विज्ञान में विशेष महत्व नहीं रखते तो भी चिकित्सा में सफलता प्राप्त करने के लिए इनका जानना आवश्यक है, अतः संक्षेप में इनके विषय में लिखा जाता है।

१. **पर**—किसी भी जाति में, रस-गुण वीर्य-विपाक में प्रधान को अथवा हितकारक को 'पर' गुण कहा जाता है।

२. **अपर**—पर से विपरीत है। यह निकृष्ट अथवा अहितकारक होता है।

३. **युक्ति**—दोष आदि का विचारकर द्रव्य का विचारकर उसे उचित ढंग से प्रयोग करना युक्ति कहलाता है। जो व्यक्ति द्रव्य के नाम रूप को जानता हो किन्तु उसका प्रयोग करने की युक्ति न जानता हो वह योग्य नहीं कहलाता।

४. **संख्या**—गणना के द्वारा—एक-दो-तीन को 'संख्या' कहा जाता है। द्रव्य कितने प्रकार के हैं— रस कितने हैं यह 'संख्या' द्वारा जाने जाते हैं।

५. **संयोग**—दो द्रव्यों का परस्पर मिलन संयोग कहलाता है। इसके तीन भेद बताए जाते हैं।

६. **विभाग**—द्रव्य के विभाजन को विभाग कहते हैं। यथा किसी वृक्ष के फल को अलग कर लेना।

७. **पृथक्त्व**—दो चीजों के अलग २ होने को पृथक्त्व कहा जाता है।

८. **परिमाण**—माप-तौल आदि का जो कारणभूत गुण है उसे परिमाण कहा जाता है।

९. **संस्कार**—जिस गुण के द्वारा द्रव्यों के स्वाभाविक गुणों में परिवर्तन लाया जाए।

१०. **अभ्यास**—किसी द्रव्य को लगातार लेते रहना अभ्यास कहलाता है।

गुण-स्वरूप—

गुण का विषय सम्पूर्ण करने से पूर्व एक बात और विचारणीय है वह यह कि गुण का स्वरूप क्या है। आयुर्वेद में 'गुण' की जो व्याख्या की है वह इनके भौतिक स्वरूप मात्र को ही नहीं बताती अपितु इनके द्वारा शरीर पर हुई क्रियाओं के आधार पर भी बताती है। इसका अर्थ यह हुआ कि गुण "भौतिक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एवं कार्मुक गुण हैं।" डा० घाणेकर ने सुश्रुत संहिता की व्याख्या करते हुए इस पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। उसके अनुसार गुण न केवल भौतिक है न ही कर्म है, क्योंकि यदि इनको कर्म मान लिया जाए तो फिर दोनों को अलग करने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। अतः गुण से उनका भौतिक होना और साथ ही साथ कार्मुक होना-दोनों ही स्वीकार करना चाहिए। यथा 'उष्णोदक' उष्णगुण है, इसके भौतिक स्वरूप में स्पर्श द्वारा उष्णता पा सकते हैं और शरीर में जाकर यह उष्णता की वृद्धि भी करता है। कहीं-कहीं केवल उसके शरीर पर हुए कर्मों द्वारा अनुमान लगाया जाता है कि कौन गुण है?

●

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४

वीर्य

'वीर विक्रान्तौ' धातु से वीर्य शब्द की उत्पत्ति हुई है। इसकी निरूक्ति है, "जिस के द्वारा द्रव्य कर्म सम्पादन में समर्थ होता है वह वीर्य कहलाता है।[1] इसी से इस का लक्षण भी स्पष्ट हो जाता है कि 'वीर्य वह शक्ति है जिसके द्वारा द्रव्य कर्म करता है।"[2]

वीर्य क्या है इस विषय में यदि विचार करें तो मुख्य रूप से तीन प्रकार के विचार सम्मुख आते हैं—

१. गुण वीर्यवाद, २. कर्म वीर्यवाद, ३. द्रव्य वीर्यवाद।

गुण वीर्यवादियों में चरक का कहना है कि 'शक्ति मात्र' वीर्य है। और सुश्रुत का मत है कि जो गुण अधिक शक्तिसम्पन्न होते हैं वह वीर्य कहलाते हैं।

कर्म-वीर्यवाद के मानने वाले नागार्जुन हैं। वीर्य ही कर्म करता है, इसलिए वीर्य कर्मात्मक है।

द्रव्यवीर्यवाद के प्रवर्तक आधुनिक वैज्ञानिक हैं। उनका कहना है कि वीर्य के द्वारा जो भी कर्म होते हैं वह द्रव्य में स्थित उत्कृष्टांश से होते हैं जिसे 'ऐक्टिव प्रिंसिपल' (Active Principle) कहा जाता है और यह द्रव्य स्वरूप होता है।

यदि देखा जाए तो यह सभी मत अपने-अपने दृष्टिकोण से बिलकुल उचित हैं, क्योंकि—"वीर्य एक शक्ति है, शक्ति उत्कृष्ट गुण को कहा जाता है जो कम

---

1. वीरयते विक्रान्तः कर्मसमर्थो भवति अनेन इति वीर्यम्।"
2. येन कुर्वन्ति तद्वीर्यम्।" (च० सू० अ० २६)
   वीर्यं द्रव्यस्य तज्ज्ञेयं यद्योगात क्रियते क्रिया।
   नावीर्या कुरूते किञ्चित् सर्वाः वीर्य हि सा।' (अ० सं० सू० अ० १७)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को करने वाला होता है और यह द्रव्य के सार भाग में स्थित रहता है।" इस प्रकार विचार करने से स्पष्ट हो जाता है कि वीर्य शक्ति है, जिस का अधिष्ठान द्रव्य का सार भाग (Active Principle) होता है और यह शरीर में गुरुता, लघुता आदि गुणों को तथा छेदन-अनुलोमन आदि कर्मों को करने वाला है।"

संख्या—

जिस प्रकार वीर्य क्या है इस विषय में अनेक मत हैं, उसी प्रकार उस की संख्या के विषय में भी अनेक मत हैं। प्रमुखरूप से वह मत तीन हैं—

(१) अनेक विध वीर्य, (२) अष्ट विध वीर्य, (३) द्विविध वीर्य।

वीर्य एक शक्ति है। इस सिद्धान्त को मानने वालों का कहना है कि वीर्य की संख्या को सीमित नहीं किया जा सकता। इन का मत है कि जिस द्रव्य में जैसा कार्य करने की शक्ति है उस के अनुसार ही उस में वीर्य है और यह शक्तियाँ असंख्यविध हैं, अतः वीर्य भी असंख्य है, उन की संख्या निर्धारित नहीं हो सकती।

अष्ट विध वीर्य मानने वालों का मत है कि बीस गुणों में से केवल आठ उत्कृष्टता को प्राप्त होते हैं, अतः उन आठ को ही वीर्य मानना चाहिए। वे आठ निम्न हैं—

१. शीत, २. उष्ण, ३. स्निग्ध, ४. रूक्ष, ५. गुरु, ६. लघु, ७. मृदु, ८. तीक्ष्ण।

बीस में से यह आठ ही उत्कृष्ट क्यों है? इसके भी प्रमाण दिए गए हैं, वे निम्न प्रकार हैं—

१. **समग्रगुण ससृता**—यह सर्वाधिक सारवान होते हैं और ये गुण अधिक समय तक रह सकते हैं।

२. **शक्त्युत्कर्ष**—अन्य गुणों की अपेक्षा यह अधिक शक्तिशाली होते हैं।

३. **व्यवहारमुख्यता**—व्यवहार में भी इन गुणों की ही मुख्यता पाई जाती है, अन्य की नहीं। जैसा कि कहा जाता है, यह ठंडा है, गर्म है, भारी है, हलका है आदि।

४. **बहुलता**—द्रव्यों में जो गुण बताए गए हैं, उन गुणों में इन आठ की ही पुनरावृत्ति होती है। इसका अर्थ है कि यह आठ ही अधिक प्रयोजनीय हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

५. **उपयोगिता**—इन आठ की ही उपयोगिता भी अधिक है।

६. **प्रबलता**—यह रस विपाक अथवा अन्य गुणों को अभिभूत करने की शक्ति रखते हैं। अतः दूसरे गुणों की अपेक्षा प्रबल होते हैं।

इन छः युक्तियों को बताकर यह सिद्ध किया गया है कि अन्य गुणों की अपेक्षा केवल इन आठ में ही उत्कृष्टता है, अतः इन आठ को ही वीर्य माना जाता है।

द्विविध वीर्यवादियों का मत है कि यह जगत अग्निषोमीय है। अतः इसमें प्राप्त होने वाले सब द्रव्य भी दो प्रकार के ही हो सकते हैं—

१. आग्नेय जिन्हें 'उष्ण' कहा जाता है।

२. सोम्य जिन्हें 'शीत' कहा जाता है।

अतः दो ही प्रकार के वीर्य हैं—

(क) उष्ण वीर्य, (ख) शीत वीर्य।

वीर्यों का भौतिक संगठन—

'वीर्य' भी पाञ्चभौतिक हैं। अतः यह जानना आवश्यक है कि किस महाभूत की अधिकता से किस वीर्य की उत्पत्ति होती है। आठों प्रकार के वीर्यों में भूतोत्कर्ष निम्न प्रकार से बताया गया है:—

वीर्य	**भूतोत्कर्ष**	**वीर्य**	**भूतोत्कर्ष**
शीत	पृथ्वी + जल	उष्ण	अग्नि
स्निग्ध	जल	रूक्ष	वायु
गुरू	पृथ्वी + जल	लघु	अग्नि + वायु + आकाश
मृदु	जल + आकाश	तीक्ष्ण	अग्नि

कर्म—

१. शीत वीर्य	सुखद, स्रावों को रोकना, स्थिरीकरण, प्रसादन, क्लेदन, जीवन, स्तम्भन, कफ वात कारक, गुरू, बल्य।
२. उष्ण वीर्य	दहन, पाचन, मूर्च्छन, स्वेदन, वमन, विरेचन, विलयन, वात कफ शमन, पित्त जनन, भ्रम उत्पन्न करना, तृष्णा, ग्लानि, लघु, अवृष्य।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३. स्निग्ध वीर्य स्नेहन, वृहंण, संतर्पण, वाजीकरण, वयःस्थापन, वातहर।
४. रूक्षवीर्य संग्राही, पीड़न, विरूक्षण, उपरोपण, वातवर्धन, कफ शमन।
५. गुरू वीर्य उपलेप, वृहंण, वातहर, वाजीकरण।
६. लघु वीर्य लेखन, कफहर, विरूक्षण।
७. मृदु वीर्य प्रसादन, पित्त शमन।
८. तीक्ष्ण वीर्य संग्रहा चूषण, अवदारण, स्रावण, कफहर।

वीर्य उपलब्धि—

वीर्य का ज्ञान प्राप्त करने के दो साधन हैं। प्रत्यक्ष और अनुमान। कुछ द्रव्यों का वीर्य बोध प्रत्यक्ष से (स्पर्श द्वारा शीत-उष्ण-मृदु का ज्ञान होना आदि) और इस क्रिया को निपात कहते हैं जो द्रव्य इन्द्रिय के साथ सम्पर्क करता है।

दूसरा साधन है अनुमान। इसमें देखा गया है कि वीर्य का शरीर में जो कर्म होता है उस को देख कर अनुमान लगाया जाता है कि वीर्य क्या है? इस क्रिया को अधिवास कहते हैं।

कुछ द्रव्यों के वीर्य जानने के लिए दोनों साधन उपयोग में लाए जाते हैं।

इन तीनों क्रियाओं के उदाहरण निम्न हैं—

क्रिया	प्रमाण	उदाहरण
१. निपात	प्रत्यक्ष	मरिच का तीक्ष्ण वी
२. अधिवास	अनुमान	आनूप माँस उष्ण वी
३. निपात+अधिवास	प्रत्यक्ष+अनुमान	मरिच का उष्ण वीर्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

५

विपाक

आयुर्वेद में द्रव्यों का सेवन करने के पश्चात् पाचन के समय दो प्रकार के पाकों का वर्णन किया है—

(क) अवस्थापाक (ख) विपाक

'अवस्थापाक' वह है जिसमें ग्रहण किए गए द्रव्यों का पाचन होते समय पाचन तन्त्र में अवस्थानुसार परिवर्तन आता है। महास्रोत में ज्यों २ द्रव्य आगे जाता है त्यों २ उसमें उसके स्वरूप में भिन्नता आती है। यथा प्रथमावस्था का पाक मधुर होता है। मधुर रस का प्रयोग किया गया तो यहाँ अधिकता से मधुर पाक होगा यदि कटु रस का सेवन किया है तो भी मधुर तो अवश्य होगा किन्तु रस की कमी होगी और पूर्णता अथवा अल्पता का ज्ञान होगा उस अवस्था में बने मलभूत श्लेष्मा की मात्रा द्वारा। मधुर मलभूत कफ अधिक बनता है रस के सेवन से और कटु रस के सेवन से यह कम बनता है।

दूसरी अवस्था में सभी रस प्रधान द्रव्य अम्ल भाव को प्राप्त होते हैं और इसे अम्लपाक कहते हैं—इस अवस्था में मलभूत पित्त की उत्पत्ति होती है।

तीसरी अवस्था में सभी रस वाले द्रव्य कटु भाव को प्राप्त होते हैं और उस अवस्था को कटु पाक कहते हैं। इस अवस्था में मलभूत वायु की उत्पत्ति होती है।

इन तीनों अवस्थाओं को पार कर जाने के पश्चात् द्रव्यों का रसानुसार एक परिणाम होता है। यह परिणाम ही 'विपाक' कहलाता है। और क्योंकि यह पाचन के निष्ठा (अन्तिम) काल में होता है--इसलिए इसे निष्ठा पाक भी कहते हैं। यह भिन्न २ रसों के अनुसार अलग २ होता है। तथा द्रव्य के चरम परिणत स्वरूप रस में आश्रित रहता है। जैसे २ रस शरीर में परिभ्रमण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करता है उसके साथ ही साथ उस द्रव्य का विपाक भी भ्रमण करता रह कर शरीर पर अपनी क्रिया करता है। और इसके द्वारा शरीर को धारण करने वाले धातु रूप कफ, पित्त, वायु की उत्पत्ति होती है, यह तीनों ही धातु स्वरूप हैं। अतः इन्हें प्रत्यक्ष नहीं देख सकते जबकि मलरूप वातादि का प्रत्यक्ष भी किया जा सकता है। यह धातु रूपवातादि तो अनुमान द्वारा ही जाने जा सकते हैं।

इस प्रकार देखने पर विपाक क्या है, यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि "जाठराग्नि की क्रिया होने के पश्चात् पाचन क्रिया के अन्त में जो रस विशेष उत्पन्न होता है, वह विपाक कहलाता है।"[1] इसी को और भी सरल करना हो तो कहा जाएगा कि परिणाम जिसका स्वरूप है वह विपाक है।[2]

विपाक भेद—

विपाक कितने प्रकार का होता है—इस विषय में कई मत हैं। मुख्य मत निम्न प्रकार हैं—

१. षड् विध विपाकवाद
२. पञ्चविधा विपाकवाद
३. त्रिविध विपाकवाद
४. द्विविध विपाकवाद

१. षडविध—षड्विध विपाकवादियों का कहना है कि रस छः प्रकार के होते हैं। अतः उनके विपाक भी छः ही तरह के होंगे। उनका प्रमाण यह है कि यदि कीकर का बीज बोया जाए तो उसके परिणाम स्वरूप कीकर का वृक्ष ही उत्पन्न होगा, आम का वृक्ष उत्पन्न नहीं हो सकता। इसी प्रकार मधुर रस खाया जाए तो मधुर विपाक और जो भी रस खाया जाए उसका वही विपाक होगा। इस तरह छः रसों के विपाक भी छः ही होंगे। किन्तु प्रमाणों द्वारा यह मत स्वीकार नहीं किया जा सकता। द्रव्यों के रस गुण आदि के विषय में दिए गए आप्तवचनों द्वारा सिद्ध होता है कि कटु रस वाले द्रव्य का विपाक मधुर होता है जैसे पिप्पली में, और अम्ल रस वाले द्रव्य का विपाक मधुर होता है जैसे आंवला में, और मधुर रसवाले तैल का विपाककटु होता है। इन उदाहरणों से रस विपाकवाद का खण्डन होता है और कहा जाता है कि विपाक रसानुसार छः प्रकार का नहीं हो सकता।

---

1. जाठरेणाग्निना योगाद्यदुदेति रसान्तरम्।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः। (अ० हृ० सु० अ० ६)
2. 'परिणाम् लक्षणौ विपाकः (र० वै० १)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२. **पञ्चविध**—सुश्रुत ने एक स्थान पर पञ्चमहाभूतों के अनुसार विपाक पांच प्रकार के बताए हैं। वे विपाक प्रत्येक भूत प्रधान द्रव्य के अनुसार एक २ होते हैं। इसका समाधान सुश्रुत के ही दूसरे वचन से हो जाता है। जिसमें बताया है कि इन पांच महाभूतों में से दो गुरू हैं (पृथ्वी+जल) तथा तीन लघु हैं। (तेज+वायु+आकाश) और इसी आधार पर सुश्रुत ने आगे केवल दो प्रकार का विपाक बताया है। इस लिए पञ्चविध विपाकवाद का अन्तर्धान द्विविध में हो जाता है।

३. **त्रिविध त्रिपाकवाद**—आत्रेय सम्प्रदाय के आचार्य विपाक तीन प्रकार का मानते हैं। वे हैं—

(क) मधुर विपाक (ख) अम्ल विपाक (ग) कटु विपाक।

इनका कहना है कि शरीर वात पित्त कफ पर ही आधारित है। इन की समता को आरोग्य और विषमता को रोग कहा जाता है। शरीर में इनको समावस्था में लाने के लिए द्रव्यों का प्रयोग कराया जाता है और उन द्रव्यों के विपाक द्वारा वातादि पर क्रिया होती है। इस प्रकार मधुर विपाक कफ वर्धक, अम्लविपाक पित्त वर्धक, कटु विपाक वातवर्धक होता है।

वह छः रसों से इन तीन का सम्बन्ध बताते हुए लिखते हैं[1]—

रस	विपाक
कटुतिक्त कषाय	कटु
अम्ल	अम्ल
मधुर लवण	मधुविपाक

इन का कहना है कि जिस प्रकार कफ को मधुर प्रधान, वात को कटुप्रधान और पित्त को अम्ल प्रधान माना जाता है उसी प्रकार इन तीनों के अनुसार ही तीन प्रकार का विपाक होता है। किन्तु सुश्रुत इस का खण्डन करते हैं और खण्डन का आधार यह है कि वह पित्त को 'कटु' ही मानता है। उसका कहना है कि पित्त स्वभाविक अवस्था में कटु होता है, यदि वह विदग्ध हो जाए तो अम्ल हो जाता है, अतः विदग्धावस्था को मानना उचित नहीं, ऐसा करने से तो और

1. कटुतिक्तकषाणां विपाकः प्रायशः कटुः।
अम्लो ऽम्लं पच्यते स्वादुर्मधुरं लवणास्तथा ॥ (च० सू० २६.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भी प्रकार का विपाक मानना पड़ेगा क्योंकि कफ भी विदग्ध हो कर लवण हो जाता ह।[1]

अतः अम्ल को न मान कर केवल मधुर और कटु ही विपाक होना चाहिए। और फिर चरक ने भी एक स्थान पर इन तीनों को दो में ही मान लिया है। वहाँ बताया है कि 'मधुर विपाक' गुरु' होता है और कटु व अम्ल विपाक 'लघु' होते हैं।[2] अतः इन तीन का भी अन्तर्भाव 'गुरु' एवं 'लघु' नामक दो प्रकार के विपाकों में हो जाता है जिसे सुश्रुत ने द्विविध विपाक वाद बतलाया है।

८. **द्विविध विपाकवाद**—धन्वन्तरि सम्प्रदाय वालों ने विपाक दो ही प्रकार का बताया है—

(क) गुरु विपाक (ख) लघु विपाक

इन का सिद्धान्त है कि चिकित्सा शास्त्र में पञ्चमहाभूतों के अतिरिक्त अन्य किसी विषय का चिन्तन करने की आवश्यकता नहीं,[3] अतः इस विषय में भी उसी सिद्धान्त पर चलना होगा और पृथ्वी तथा आप्य महाभूत क्योंकि गुरु होते है। अतः इनकी प्रधानता वाले द्रव्यों का विपाक गुरु विपाक होगा और तेज, वायु, आकाश, लघु हैं अतः इनकी अधिकता वाले द्रव्यों का विपाक लघु होगा। यह 'गुरु विपाक' एवं 'लघु विपाक' दोनों ही कर्मों के अनुसार जाने जाते हैं[4], अतः यह न मानना चाहिए कि गुरु विपाक वह कलाएगा जो देर में पचता हो और लघु विपाक का अर्थ हो जो शीघ्र पचे। शीघ्र पचना अथवा देर में पचना पाचन की अवस्था से सम्बन्ध रखते हैं जब कि विपाक पाचन के परिणाम का अन्त है। अतः गुरु का अर्थ होगा बृंहण और लघु का अर्थ होगा 'लंघन' क्रिया करने वाले विपाक।

जैसा कि हम चरक के वर्णन में बता आए हैं वहाँ इन दोनों को ही स्वीकार किया है। इधर सुश्रुत ने भी गुरु और लघु विपाक के नाम मधुर एवं कटु बताए हैं, एक स्थान पर लिखा है कि "विपाक दो प्रकार के होते हैं, मधुर और कटु।[5] यह शब्द गुरु और लघु के पर्यायवाची कहे जा सकते हैं।

---

1. पित्तं हि विदग्धमम्लतामुपैत्याग्नेयत्वात्। (सु० सू० ४०)
2. तेषां गुरुस्यान्मधुरः कटुकाम्लावतोऽन्यथा।। (च० सू० अ० २६.)
3. भूतेभ्यो हि परं यस्मान्नास्ति चिन्ता चिकित्सते (सु० शा० १.)
4. विपाकः कर्म निष्ठाया: (च० सू २६.)
5. द्विविध एव पाको मधुरः कटुश्च। (सु० सू० ४०.)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इस प्रकार सारे मतों को जान लेने के बाद हम कहेंगे कि विपाक दो प्रकार के ही मानने चाहिए—

(१) मधुर विपाक (गुरू विपाक) (२) कटु विपाक (लघु विपाक)।

(अम्ल विपाक का अन्तर्भाव लघु विपाक में ही हो जाता है जैसा कि हम पीछे सिद्ध कर आए हैं)।

गुण कर्म—

सुश्रुत ने दो प्रकार के विपाकों के गुण कर्म बताए हैं। वे निम्न प्रकार हैं—

विपाक	गुण	कर्म
गुरू विपाक	पृथ्वी-जल	वात पित्त नाशक, कफ वर्धक एवं मल-मूत्र प्रवर्तक।
लघु विपाक	तेज वायु-आकाश	श्लेष्म नाशक, वात कोपक, मल-मूत्र रोधक।

प्रसंगवश चरक में वर्णित ३ विपाकों के कर्म भी बताने उचित हैं। वहाँ निम्न प्रकार से वर्णन उपलब्ध होता है—

विपाक	कर्म
१. मधुर विपाक	कफ वर्धक, शुक्रल, मलमूत्र प्रवर्तक।
२. अम्ल विपाक	पित्त वर्धक, शुक्रनाशक, मलमूत्र प्रवर्तक।
३. कटु विपाक	वात वर्धक, शुक्रनाशक, मलमूत्र रोधक।

रस एवं विपाक में अन्तर—

विपाक का विषय सम्पूर्ण करने से पूर्व एक शंका का समाधान करना आवश्यक होता है कि रस और विपाक में क्या अन्तर है? यह शंका उत्पन्न इसलिए हुई कि कुछ का कहना है कि विपाक की आवश्यकता ही क्या है। रस से ही कार्य सम्पन्न हो सकता है। इसका उत्तर यह है कि रस एवं विपाक दोनों अलग २ हैं और उनमें निम्न भेद हैं—

१. **लक्षण भेद**—रस जिह्वा का ग्राह्य गुण है, परिणाम लक्षण गुण विपाक है।

२. **काल भेद**—रस की उपलब्धी आरम्भ काल में होती है जबकि विपाक की अन्तिम काल में।

३. **कर्म भेद**—रस का कर्म स्थानिक होता है जबकि विपाक का सार्वदेहिक।

४. **कर्माधिष्ठान भेद**—रस के कर्म के स्थान शारीरिक एवं मानस हैं जबकि विपाक का कर्माधिष्ठान केवल शारीर है।

५. **उपलब्ध भेद**—रस प्रत्यक्ष उपलब्ध होता है जबकि विपाक अनुमान द्वारा जाना जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभाव

द्रव्य में जो विशिष्ट शक्ति होती है वह प्रभाव कहलाती है। यह तो सर्व विदित ही है कि द्रव्य में रस गुण-वीर्य-विपाक एवं प्रभाव रहते हैं और यह शरीर पर अपनी क्रिया करते हैं। उस क्रिया के अनुसार हम दो प्रकार का विधान पाते हैं—

(१) जिसमें रस के अनुसार ही गुण वीर्य एवं विपाक होता है और तदनुरूप ही क्रिया होती है। जैसे मधुर रस, गुरू गुण, शीत वीर्य एवं मधुर विपाक द्रव्य है तो वह कफवर्धक एवं वातपित्तशामक होगा। इसमें कोई विशेष शक्ति नहीं।

(२) रसादि सब समान हैं किन्तु कुछ विशेष क्रिया होती है। जैसे दन्ती कटु रस एवं कटु विपाक है तथा उष्णा हैं,किन्तु इसके साधारण कर्म पित्तवर्धक होने के अतिरिक्त यह रेचन भी है। इसका यह रेचन गुण विशेष शक्ति है। यह ही प्रभाव कहलाता है।

प्रभाव की परिभाषा बताते हुए लिखा भी है—'रस-वीर्य-विपाक समान रहने पर भी जहां कर्म विशेष होता है जो एक विशेष शक्ति द्वारा होता है, वह शक्ति प्रभाव कहलाती है।'[1] ऐसे कुछ उदाहरण निम्न हैं—

(१) चित्रक व दन्ती दोनों कटु रस कटुविपाक तथा उष्ण वीर्य हैं किन्तु चित्रक रेचक नहीं जबकि दन्ती 'रेचक' हैं।

(२) तिल और मदनफल दोनों मधुर, तिक्त कषाय, स्निग्ध, पिच्छिल है किन्तु तिल वामक नहीं जबकि मदनफल वामक है।

---

1. रसवीर्य विपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते।
   विशेषः कर्मणो चैव प्रभावस्तस्य स स्मृतः॥ (च० सू० २६)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(३) मुन्नका एवं मुलहठी दोनों मधुर शीत हैं। इनमें मुन्नका रेचक है किन्तु मुलहठी नहीं।

इनमें रेचक अथवा वामक कर्म रसादि के द्वारा न होकर उनमें स्थित विशेष शक्ति द्वारा होता है और उसे ही प्रभाव कहा जाता है।

यह प्रभाव एक प्रकार से अचिन्त्य है।[1] इसके विषय में चिन्तन नहीं किया जा सकता है। क्योंकि रसादि सभी समान रहने पर एक द्रव्य रेचक है दूसरा नहीं। इसका अर्थ हुआ कि रेचक क्रिया उन रसादि से रहीं जानी जा सकती। इसीलिए उसे प्रभाव कहा जाता है।

जो कर्म चिन्त्य हैं वह वीर्यजन्य कर्म होते हैं और जो अचिन्त्य है वह प्रभावजन्य कर्म; ऐसा स्मरण रखना ठीक है।

1. सुश्रुत सूत्र स्थान अध्याय ४० के आधार पर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्म

जो किया जाए उसे कर्म कहते हैं।[1] इसका स्वरूप क्रिया है। यह संयोग और विभाग में स्वतन्त्र कारण होता है और द्रव्य के आश्रित होता है।[2] इस का अर्थ यह हुआ कि शरीर में क्रिया उत्पन्न करने वाले द्रव्यगत पदार्थ को कर्म कहा जाता है।

द्रव्यों के कर्म शरीर पर किस प्रकार होता है, यह एक विचारणीय विषय रहा है। इसके विषय में आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से विचार करें तो हम यही पाते हैं कि द्रव्य पाञ्चभौतिक है और शरीर भी पाञ्चभौतिक है, अतः द्रव्यों के कर्मों द्वारा इन की समता उत्पन्न हो जाती है जो कि शरीर को स्वस्थ बना देती है। अतः कहा जा सकता है कि द्रव्य के कर्म शरीर के पाञ्चभौतिक संघटन को ठीक करना है। इस की विस्तृत व्याख्या चरक चिकित्सास्थान अध्याय १५ में की गई है।

कर्म के विषय में जो दूसरा प्रश्न है वह यह कि द्रव्य में स्थित रस गुण आदि में कौन कर्म करने वाला है? एतदर्थ समाधान यह है कि "द्रव्य का कर्म कहीं रस द्वारा, कहीं गुण से, कहीं वीर्य, कहीं विपाक से और कहीं प्रभाव से होता है।"[3] और इन में भी रस को अभिभूत करने की शक्ति विपाक में है, विपाक को वीर्य अभिभूत करता है और वीर्य को प्रभाव। यह उस अवस्था में होता है जब कि रसादि सब समान बल वाले हों।[4]

1. यत् कुर्वन्ती तत् कर्म (च० सू० अ० २६)
2. संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम्।
   कर्तव्यस्य क्रिया कर्म, कर्म नान्यदपेक्षते (च० सू० अ० १)
3. किञ्चिद्रसेन कुरुते कर्म, वीर्येण चापरम्।
   द्रव्यं गुणेन, पाकेन, प्रभावेण च किंचन:।।
4. रसं विपाकस्तौ वीर्यं प्रभावस्तान्यपोहति।
   बल साम्ये रसादीनामिति नैसर्गिकं बलं।। (च० सू० अ० २६)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह दो सिद्धान्त इस विषय में शास्त्रों में वर्णित किये गए हैं।

प्रसिद्ध कर्म—

आयुर्वेद के पाठकों को शरीर पर होने वाले विभिन्न कर्मों की परिभाषा एवं उस कर्म को करने वाले द्रव्यों का उदाहरण रूप में जानना आवश्यक है। हम यहाँ प्रसिद्ध कर्मों की व्याख्या उदाहरण सहित करेंगे। इसका क्रम यह बनाया है कि सर्वप्रथम चरकोक्त पचास गणों के कर्मों की व्याख्या करेंगे तथा उनका उदाहरण चरकोक्त वह द्रव्य होंगे जो उन वर्गों में वहाँ हैं। ऐसा इस लिए कर रहे हैं कि एक साथ ही उन कर्मों की व्याख्या भी हो जाएगी और उन गणों के द्रव्यों का ज्ञान भी। इन के पश्चात दूसरे प्रसिद्ध कर्मों का वर्णन होगा।

कर्म	लक्षण	चरकोक्त वर्ग के द्रव्य
जीवन	प्राणों को धारण करने वाले (पृथ्वी एवं जल गुण बाहुल्य द्रव्य)	जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा काकोली, क्षीर काकोली, मुग्दपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती, मुलहठी
बृंहण	शरीर को बढ़ाना (मोटा करना) (गुरु, शीत, मृदु, स्निग्ध, स्थूल आदि गुण वाले, तथा पृथ्वी जल भूत बाहुल्य द्रव्यों द्वारा)	खिरनी, दुग्धिका, अश्वगन्धा, काकोली, क्षीरकाकोली, श्वेतबला पीतबला. जंगली कपास, बिदारी विधारा।
लेखन	धातुओं, मलों व देह को विशुष्क करना।	मुस्तक, कुष्ठ, हरिद्रा, दारुहरिद्रा, वचा, अतिविषा, कुटकी, चित्रक, चिरबिल्व, श्वेतवचा।
भेदन	मल को गाढ़ा अथवा पतला कर तोड़-फोड़ कर अधःमार्ग से बाहर निकालना।	त्रिवृत, अर्क, एरण्ड, लांगली, दन्ती, चित्रक, चिरबिल्व, शंखनी, कुटकी, स्वर्णक्षीरी।
सन्धान	टूटे-फटे को जोड़ना।	मुलहठी, गिलोय, पृश्निपर्णी, पाठा, लज्जालु, मोचरस, धातकी, लोध्र, प्रियंगु, कट्फल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दीपन	हज़म न करके केवल भूख को बढ़ाना (अग्नि बढ़ाना)	पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, अम्लवेतस, मिर्च अजमोद, भल्लातक, हिंगु।
बल्य	बलवर्धक, रोग प्रतिषेधक, शक्ति-वर्धक।	ऐन्द्रा, कपिकच्छु, मुलहठी, शतावरी, क्षीरविदारी, अश्वगन्धा, शालपर्णी, कुटकी, बला, अतिबला।
वर्ण्य	त्वचा की सुन्दरता वर्धक।	चन्दन, पुन्नाग, पद्माक, उशीर, मुलहठी, मंजिष्ठा, सारिवा, क्षीर विदारी, श्वेतदूर्वा, श्यामदूर्वा।
कण्ठ्य	गले की आवाज को हितकारक	सारिवा, इक्षुमूल, मुलहठी, पिप्पली, द्राक्षा, विदारी, कट्फल, हंसपदी, बृहती, कंटकारी।
हृद्य	हृदय को बलदायक।	आम्र, आम्रतक, लकुच, करमर्द, वृक्षाम्ल, अम्लवेतस, राजबदर, बदर, दाड़िम, मातुलुंग।
तृप्तिघ्न	तृप्तिनाशक।	सोंठ, चव्य, चित्रक, विडग, मूर्वा, गुडूची, वचा, मुस्तक, पिप्पली, पटोलपत्र।
अर्शोघ्न	बवासीर नाशक।	कुटज, बिल्व, चित्रक, सोंठ, अतिविषा, हरीतकी, धन्वयास, दारूहरिद्रा, वचा, चव्य।
कुष्ठघ्न	कुष्ठ नाशक।	खदिर, हरीतकी, हरिद्रा, भल्लातक, सप्तपर्ण, आरग्वध, करवीर, विडग, चमेली के पत्ते।
कण्डूघ्न	खारिश नाशक	चन्दन, उशीर, आरग्वध, करंज, निम्ब, कुटज, सर्षप, मुलहठी, दारूहरिद्रा, मुस्तक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कृमिघ्न	कृमि नाशक	शोभाजंन, मरिच, स्नुही, केवुक, बिडग, निर्गुण्डी, अपामार्ग, गोक्षुर, मूषाकर्णी, वृषपर्णी।
विषघ्न	विषनाशक	हरिद्रा, मंजिष्ठा, रास्ना, छोटी इलायचा, अनन्त मूल, चन्दन, निर्मली, सिरस, सिन्दुवार, लिसोड़ा।
स्तन्य-जनन	दुग्ध उत्पन्न करना।	वीरण, शाली, षष्ठिक, इक्षुवालिका, दर्भ, कुश, काश, जलजदर्भ, शर, रोहिष (सब के मूल)।
स्तन्य-शाधन	दुग्ध का शोधन	पाठा, सोंठ, देवादारू, मुस्तक, मूर्वा, गिलोय, इन्द्रयव, चिरायता, कुटकी, सारिवा।
शुक्रजनन	सप्तम शरीर धातु वीर्य उत्पन्न करना।	जीवक, ऋृषभक, काकोली, क्षीरकाकोली, मुग्दपर्णी, माषपर्णी, मेदा, शतावरी, जटामांसी, उच्चट्टा भेद।
शुक्रशोधन	वीर्य का शोधन करना।	कुष्ठ, एलवा, कट्फल, समुद्रफेन, कदम्बनिर्यास, इक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुरक, राजार्क, उशीर।
स्नेहापग	स्नेह द्रव्यों की शक्ति को बढ़ाने वाले द्रव्य और स्नेहद्रव्य के सहायक रूप में प्रयोग होने वाले।	मृद्विका, यष्टीमधु, गुडूची, मेदा, विदारी, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, जीवन्ती, शालपर्णी।
स्वेदोपग	स्वेदक द्रव्यों की शक्ति बढ़ाने और उनके सहायक रूप में प्रयोग किए जाने वाले द्रव्य।	शोभाञ्जन, एरण्ड, अर्क, श्वेतपुनर्नवा, रक्तपुनर्नवा, यव, तिल, कुल्थ, माष, बदर।
वमनोपग	वामक द्रव्यों की शक्ति बढ़ाने और सहायक रूप में प्रयोग होने वाले।	मधु, मधुयष्ठी, कोविदार, कर्बुदार, कदम्ब, समुद्रफल, बिम्बी, शणपुष्पी, अर्क, अपामार्ग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विरेचनो-पग	दस्तावर द्रव्यों की शक्ति बढ़ानेऔर सहायक रूप में प्रयोग होने वाले।	द्राक्षा, गम्भारी, फालसा, हरड़, बहेड़ा, आँवला, राजबदर, बदर, क्षुद्रबदर, पीलु।
आस्थाप-नोपग	आस्थापन के द्रव्यों की शक्ति बढ़ाने और उनके सहायक रूप में प्रयोग होने वाले।	रास्ना, देवदारू, बिल्व, मदनफल, शत-पुष्पा, श्वेत पुनर्नवा, रक्तपुनर्नवा, गोक्षुर, अग्निमन्थ, श्योनाक।
शिरोविरे-चनोपग	शिरोविरेचन के द्रव्यों की शक्ति बढ़ाने और सहायक रूप में प्रयोग होने वाले।	ज्योतिषमती, छिक्किका, मरिच, पिप्पली, विडंग, शिग्रु सर्षप, अपामार्ग बीज, श्वेत अपराजिता, नील अपराजिता।
छर्दि निग्रहण	उलटी मिटाने वाले द्रव्य।	जम्बुपल्लव, आम्रपल्लव, मातुलुंग, अम्लबदर, दाडिम, यव, मधुयष्टी, उशीर, मुलतानी, मिट्टी।
तृष्णा-निग्रहण	प्यास बुझाने वाले	सोंठ, धन्वयास, मुस्त, पर्पट, चन्दन, चिरायता, गुडूची, हाऊबेर, धान्यक, पटोल।
हिक्का-निग्रहण	हिचकी मिटाने वाले	शटी, पुष्करमूल, बदरबीज, कंटकारी, वृहती, बन्दाक, हरीतकी, पिप्पली, धन्वयास, कर्कटश्रृंगी।
पुरीष-संग्रहणीय (संग्राही)	जो पतले मल को बाँधें या जो द्रव्य दीपन, पाचन तथा उष्ण होने, से द्रव का शोषण करते हों।	प्रियंगु, अनन्त मूल, आम्रास्थि, श्यो-नाक, लोध्र, मोचरस, लज्जालु, धातकी पुष्प, भार्ङ्गी, पद्मकेशर।
पुरीष-विरजनीय	पुरीष के दोषों को दूर कर उसके रंग को स्व-भाविक करने वाले।	जम्बुत्वक, शल्लकीत्वक, धन्वयास, मधूक, शालमली, श्रीवेष्टक, भ्रष्टमृत, विदारी, उत्पल, तिल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूत्र संग्रहणीय	जो द्रव्य मूत्र कीप्रवृत्ति को कम करें।	जम्बु, आम, प्लक्ष, वट, आम्रतक, उदुम्बर, अश्वत्थ, भल्लातक, अश्मन्तक, सोमवल्क।
मूत्रविरजनीय	मूत्र के वर्ण को प्राकृत करने वाले द्रव्य।	पत्र, उत्पल, नलिन, कुमुद, सौगान्धिक, पुण्डरीक, शतपत्र, यष्टीमधु, प्रियंगु, धातकी।
मूत्र विरेचनीय (मूत्रल)	मूत्र को अधिक मात्रा में लाने वाले द्रव्य।	वन्दाक, गोक्षुर, राजार्क, सूर्यावर्त, पाषाणभेद, दर्भ, कुश, काश, जलदर्भ शर, (इनके मूल)।
कासहर	खाँसी मिटाने वाले द्रव्य।	द्राक्षा, हरीतकी, आँवला, पिप्पली, धन्वयास, कर्कटशृंगी, कटंकारी, श्वेत पुनर्नवा, रक्तपुनर्नवा, भू-आँवला।
श्वासहर	श्वास मिटाने वाले द्रव्य	शटी, पुष्करमूल, अम्लवेतस,एला, हिंगु, तुलसी, भूआंवल, जीवन्ती, चोरपुष्पी
श्वयथुहर	शोथ मिटाने वाले द्रव्य	पाटला, अग्नि मन्थ, श्योनाक, बिल्व, गंम्भारी कटंकारी, वृहती, शालपर्णी, पृश्नपर्णी गोक्षुर,।
ज्वरहर	बुखार हटाने वाले द्रव्य	सारिवा, शर्करा, पाठा, मञ्जिष्ठा, द्राक्षा, पीलु, परूषक,हरीतकी, विभीतक आमलक।
श्रमहर	थकावट मिटाने वाले द्रव्य	द्राक्षा, खर्जूर, प्रियाल, बदर, दाडिम, तूत, परूषक, इक्षु, यव, षष्टिक।
दाह प्रशमन	बाह्य एवं अभ्यान्तर दाह को शान्त करने वाले द्रव्य	लाजा, चन्दन, गम्भारीफल, मधूक, शर्करा, नीलोत्पल, उशीर सारिवा, गुडूची, हाऊवेर।
शीत प्रशमन	जो द्रव्य शीतको मिटावें	तगर, अगर, धान्यक, शृंगवेर, अजवायन वचा, कंटकारी, अग्निमन्थ, श्योनाक, पिप्पली।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उदर्द शमन	त्वचा पर उत्पन्न् हुए चकत्तों (उदर्द) को शान्त करने वाले	तिन्दुक, प्रियाल, बदर, खदिर, श्वेत खदिर, सप्तपर्ण, अश्वकर्ण अर्जुन, असन, अरिमेद ।
अंगमर्द-प्रशमन	मांस पेशियों की ऐंठन मिटाने वाले	शालपर्णी, पृश्निपर्णी वृहती, कंटकारी, एरण्ड, काकोली, चन्दन, उशीर, एला, मधुयष्टी ।
शूल प्रशमन	उदरशूल को मिटाने वाले	पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मरिच, अजमोद, बनयवानी, जीरक, गड़ीर ।
शोणित स्थापन	रक्त वढाने वाले द्रव्य और रक्तस्राव को रोकने वाले द्रव्य	मधु, मुलहठी, केसर, मोचरस, मृत्क-पाल, लोध, गैरिक, प्रियंगु, शर्करा, लाजा ।
वेदना-स्थापना	दुःखात्मक वेदना को दूर करने वाले द्रव्य	शाल, कटफल, कदम्ब, पद्मक, पुन्नाग मोचरस, शिरस, जलवेतस, एलवालुक, अशोक ।
संज्ञा स्थापन	संज्ञा (ज्ञान) को लाने वाले द्रव्य	हिंगु, कटफल, अरिमेद, वचा, चोर-पुष्पी, ब्राह्मी, भतकेशी, जटामांसी, गुग्गुल, कुटकी ।
प्रजा स्थापन	गर्भ कराने वाले द्रव्य	ऐन्द्री, ब्राह्मी, दूर्वा, दूर्वाभेद, लक्ष्मणा, हरीतकी, हरिद्रा नागबला, महाबला, वाराहीकन्द ।
वयः-स्थापना	आयु को स्थिर रखने वाले द्रव्य	गुडूची, हरीतकी, आमलक, रास्ना श्वेत अपराजिता, जीवन्ती, शतावरी, मण्डूकपर्णी, शालपर्णी, पुनर्नवा ।

उपर्युक्त चरक के दशेमानी का वर्णन हो गया, अब अन्य कर्मो का वर्णन करते हैं—

कर्म	व्याख्या	उदाहरण
मेध्य	बुद्धि को बढ़ाने वाले द्रव्य	शंखपुष्पी, गुडूची, यष्टि मधुक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मदकारी	जो द्रव्य बुद्धि को विकृत कर दें इन के गुण (तीक्ष्ण, लघु, उष्ण, सूक्ष्म, अम्ल, व्यवायी, आशु, रूक्ष, विकाशी, विशद) शरीर में स्थित ओज के गुणों के विपरीत होते हैं।	भांग, गांजा, आहिफेन, मद्य
निद्राजनन स्वापजनन	कफ एवं तम की अधिकता से नींद लाने वाले	विजया, अहिफेन, भैंस का दूध
स्वेदन	स्तम्भता, जोखता, शीतता दूर करने वाले एवं पसीना लाने वाले	चरक के त्रयोदशविध साग्नि स्वेद एवं दशविध निराग्नि स्वेद
स्वेद अपनयन	पसीने को रोकने वाले या कम करने वाले द्रव्य	उशीर
रोम संजनन	रोमों को पुनः उत्पन्न करने वाले	हाथीदन्त
रोमशातन	जो द्रव्य रोमों को साफ कर दें	शंखचूर्ण, हरताल का लेपन
केश्य	बालों को बढ़ाने वाले और उनका रंग निखारने वाले द्रव्य	लंका, भृंगराज, मेंहदी
पाचन	जो कच्चे रस को पचावे किन्तु अग्नि को न बढ़ावे	नाग केसर
रसायन	जो जरा और व्याधि को मिटाते हैं,	हरड़, गिलोय, गुग्गुल
वाजीकरण	जो स्त्री ग्रहण में घोड़े की सी ताकत दें, अधिक वीर्य प्रदान करावें	कौंच
शुक्रल (शुक्रजनन)	जो द्रव्य शुक्र की वृद्धि करने वाले हों	घृत, दुग्धादि सात्विक अन्न
लंघन	शरीर में लघुता लाने वाले	जो लघु, उष्ण, तीक्ष्ण, विशद, रूक्ष, सूक्ष्म खर, सर, कठिन गुण वाले तथा चारों प्रकार का संशोधन (वमन, विरेचन, आस्थापना, शिराविरेचन)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रूक्षण	शरीर में रूक्षता, खरता, वैशद्यता पैदा करने वाले द्रव्य	यह द्रव्य रूक्ष, लघु, खर उष्ण,कठिन गुणवाले तीक्ष्ण होते हैं। यव, लोभिया।
स्नेहन	चिकनाहट, मृदुता एवं क्लेद करने वाले द्रव्य	तैल, घृत आदि जिनमें द्रव, सूक्ष्म, सर स्निग्ध, पिच्छिल, गुरु, शीत, मंद एवं मृदु गुण होते हो।
स्तम्भन	रूक्षता, शीतता, कषायता, लघुपाकी होने से जो द्रव्य वातकारक होते हैं।	इन्द्रजौ, सोनापाठा आदि।
शमन	दुष्ट दोषों का जो शोधन न करें और समान दोषों को प्रकुपित न करें तथा विकृत दोषों को समावस्था में लावें।	गिलोय आदि।
संस्रन	कोष्ठ में चिपके हुए मल को पका हुआ या कच्चा ही अधःमार्ग से निकालने वाले द्रव्य।	अम्लतास आदि।
अनुलोमन	मल को पाक कर उसे अधो मार्ग से निकालने वाले।	हरीतकी आदि।
वमन	अपक्व कफ पित्त अन्न को बलपूर्वक उर्ध्व मार्ग से निकालने वाले द्रव्य।	मदनफल आदि।
शोधन	संचित मल को उस स्थान से हटा कर उर्ध्व अथवा अधः मार्ग से निकालना।	देवदाली फल आदि।
रेचन	पक्व अथवा अपक्व मल को पतला कर अधः मार्ग से निकालने वाले द्रव्य।	दन्तबीज आदि।
छेदन	चिपके हुए कफादि को जो बल पूर्वक उन्मूलित करें।	क्षार-मरिच, शिलाजीत
सूक्ष्म	शरीर से सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्रोतों में पहुँचने वाले।	मद्य, विष आदि।
योगवाही	जिन द्रव्यों के साथ मिलाया जाए उन के गुणों को बढ़ाने वाला।	घृत, तैल, शहद आदि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्यवापि	जो पहले सारे शरीर में व्याप्त हो जाए और फिर पाचन को प्राप्त हो, इसकी क्रिया पाचन से पूर्व ही होती है।	भाँग, मदिरा, अफीम।
विकाशी	जो शरीर के सन्धि बन्धनों को शिथिल करें तथा ओज एवं धातु का नाश करें।	सुपारी, कोदों आदि।
विष	जो द्रव्य विकाशी हों, सूक्ष्म हों, छेदी, मदकारी, आग्नेय जीवन कारक, योग-वाही हों वह विष कहलाते हैं।	विष।
अभिष्यन्दी	पिच्छिलता, गुरुता के कारण जो रस-वाही स्रोतों का अवरोध करने वाले हों जिन के द्वारा शरीर में गुरुता उत्पन्न होवें।	दधि आदि।
आशुकारी	उसीप्रकार शीघ्र क्रिया करने वाले द्रव्य जिसप्रकार पानी पर तैल फैल जाता है।	विष।
प्रमाथि	अपने वीर्य के द्वारा जो स्रोतों में संचित दोषों का हटा देवें।	मरिच तथा वचा आदि
विदाही	जो स्वभाव से ही गुरू हों तथा देर में पाक को प्राप्त होते हों और इस प्रकार पित्त प्रकोप करें।	उड़द।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्य-विज्ञान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

A

ACANTHACEAE FAMILY — वासादि वर्ग

स्वरूप— प्राय: द्रव्य क्षुप जाति के।

पत्र— अभिमुख, उपपत्र रहित।

पुष्प— व्याघ्रमुख के समान, पुष्प बाह्यकोश एवं पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ५-५

(क) **पुंकेशर**— २ या ४

(ख) **गर्भाशय**— दो खण्डों में विभक्त

१. अडूसा

आयुर्वेदीय पर्याय—वासक, वासा, वासिका, वाजिदन्त, वृष, आटरूषक।

यूनानी नाम—हूकारिन।

अंग्रेजी— Malabar Nut. **लैटिन**—*Adhatoda Vasica.*

विवरण—इस का पौधा ५ से १० फुट ऊंचा होता है। जिसमें आम के पत्तों के जैसे ४ से ८ इंच लम्बे पत्ते आते हैं। फूल सफेद रंग के और दूर से देखने पर खुले हुए फूल सिंहमुख की तरह लगते हैं। इसके बीज एक-एक कोष में चार २ होते हैं।

अडूसे का दूसरा भेद काला बांसा है। इसके पत्ते ज्यादा गहरे रंग के और फल ताम्बे के रंग के होते हैं। वैसे इसका पौधा भी कुछ अधिक बड़ा होता है। यह जाति ज्यादा फायदा करने वाली कही जाती है। बांसा सभी प्रान्तों में पैदा होता है, बर्मा और सिंगापुर में अधिक पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—जड़, पत्ते और फूल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—पत्ते का रस १ से २ तोला, फूल ५ से १० रत्ती, जड़ छाल २ से ५ रत्ती, जड़ का क्वाथ ४ से ८ तोला।

आयुर्वेदिक मत—यह तिक्तरस, लघु, रूक्ष गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक होता है। इसमें कषाय रस भी होता है। यह कफ पित्त शामक, हृद्य, रक्त स्तम्भक, श्लेष्महर, कासहर, कण्ठय, श्वासहर, मूत्रजनन, ज्वरघ्न है। आमवात, व्रणशोथ तथा नाड़ी शूल में इसके कल्क का प्रलेप करते हैं और चर्म रोगों में इसके पत्तों का लेप फायदा करता है। श्वास, कास, क्षय, रक्तपित्त के लिए श्रेष्ठ दवा है।

आयुर्वेदिक योग—वासावलेह, वासारिष्ट।

आधुनिक मत—विश्लेषण करने से इसमें एक क्षार तत्व 'वासिकिन (vasicine) और एक organicacid adhatodicacid प्राप्त हुए हैं। साथ ही साथ गन्ध युक्त उड़नशील तैल, चर्बी, राल, शर्करा, गोंद पाए गए हैं।

डा० देसाई का कहना है कि शरीर के अन्दर इसका क्रिया 'इपिकेकोना' की तरह होती है। यह एक बढ़िया तरह का उत्तेजक, संकोचायाम नियामक और कफ निःसारक होता है।

मेजर बसु और डा० कीर्त्तिकर का कहना है कि यह श्वास नालियों की सूजन में, कुष्ठ में, रक्त विकार में, हृदय रोग में, ज्वर में, प्यास में, क्षय, पालिया में लाभ करता है। मूत्रकष्ट और सफेदे की हालात में लाभ करता है।

इण्डियन मटेरिया मेड़िका के लेखक नाड़कर्णी ने लिखा है कि इसके पत्तों का रस साढ़े सात माशा लेकर उसमें अद्रक का रस और शहद मिलाकर पिलाने से पुरानी खांसी, श्वास और क्षय में लाभ होता है।

आधा तोला पत्तों का रस शहद के साथ दिया जाए और नीम के पत्तों के साथ अड़ूसे के पत्तों को भाप कर पेडू पर सेक करें तो गुर्दे का दर्द दूर हो जाता है।

आधुनिक चिकित्सक इसके द्वारा निर्मित कई दवाइयों का प्रयोग आज भी करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२. कालमेघ

आयुर्वेदीय पर्याय—यवतिक्ता, कल्पनाथ ।

अंग्रेजी—Kalmegh. **लैटिन**—*Andrographis Paniculata*.

विवरण—कालमेघ आज चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है किन्तु आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थों में इसका वर्णन प्राप्त नहीं होता है, केवल चरक में एक स्थान पर अवश्य यवतिक्त का वर्णन मिलता है जिसके पर्यायवाची नाम शंखिनी, अक्षिपीड़क आदि बताए हैं।

इसका क्षुप १ से ३ फुट तक ऊँचा होता है, जिसका तना चौकोर होता है। तने का निचला भाग चिकना होता है और ऊपर का भाग रोमश। इसके पत्ते २ से ३ इंच लम्बे होते हैं, अभिमुख एवं रेखाकार होते हैं। इस में फूल छोटे-छोटे सफेद और नीले रंग के होते हैं और दूर से देखने पर मच्छर के समान दिखाई देते हैं। फल यव के आकार के और तिक्त होते हैं। इस फल में अनेक चौकोर बीज होते हैं जो रोमश होते हैं। यह विशेष कर आसाम एवं बंगाल में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—पंचांग।

मात्रा—चूर्ण ५ से १० रत्ती, स्वरस २ से ४ माशा।

गुण कर्म—कफ पित्त नाशक, अग्नि बढ़ाने वाला, वलवर्धक, रक्त शोधक, रेचक, होता है। यह विशेष रूप से मलेरिया में प्रयोग किया जाता है। यह तिक्त एवं तीक्ष्ण होता है। यह गुल्म, हृदय रोग एवं कुष्ठ में लाभ करता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह चिरायता एवं कुनीन की तरह कर्म करता है। इसके ताजे पत्तों का रस बड़ी इलायची, जायफल, दालचीनी के साथ मिलाकर बालकों की कमजोरी, ज्वर की कमजोरी, पेट दर्द, अतिसार की पक्वावस्था में दिया जाता है।

इसके रासायनिक विश्लेषण में कुछ उड़नशील तैल मिले हैं। इस के पंचांग में सोडियम क्लोराइड और पोटाशियम क्लोराइड पाया जाता है। कालमेघ सत्व (Extract Kalmegh) के नाम इस का योग प्रयोग किया जाता है।

—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३. तालमखाना

आयुर्वेदीय पर्याय—कोकिलाक्ष, इक्षुरक **यूनानी**—तालीम खाना
अंग्रेजी—Long leave Barlaria; **लैटिन**—*Asteranth Longtfolia*

विवरण—इसका पौधा २ से ४ फुट ऊंचा होता है। जिसका तना ईख की तरह पौरों वाला और शाखा रहित चौकोर और पतला होता है। पोरी की गांठ पर चारों तरफ ५, ६ विना डंठल के लम्बे पत्ते होते हैं और १ इञ्च लम्बा पीले रंग का तेज काँटा होता है। पत्तों के ऊपर तने के चारों तरफ नीले और बैंगनी रंग के फूल निकलते हैं। इसमें गोल और कंटीला फल लगता है जिसमें ४ से ८ तक बीज निकलते हैं—इन बीजों को तालमखाना कहा जाता है। यह पानी की अधिकता में, तालाब या नहर के किनारे और धान के खेतों में, बंगाल, बिहार में खूब पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—बीज, पत्ते और जड़।

मात्रा—बीज चूर्ण १ से ३ माशा; पञ्चांग रस २ से ५ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर तिक्त रस; स्निग्ध पिच्छिल गुण, शीतवीर्य और मधुरपाक होता है। यह वात पित्त शामक, यकृदुत्तेजक, शोणितस्थापन और शोथहर है। इसके बीज बल्य; बृहंण और वृष्य होते हैं। यह मूत्रल होता है। वातव्याधि, आमवात, कलैव्य, नाड़ी दौर्बल्य, अश्मरी, मूत्रकृच्छ में लाभ करता है। रक्तपित्त, शोथ एवं वातरक्त में लाभ होता है।

आधुनिक मत—रासायनिक विश्लेषण करने से इसमें ३१% अलब्युमिनॉयड, कुछ क्षार तत्व और २१ से २३%एक पीला, मीठा, स्थिर तेल प्राप्त हुआ है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि इस की जड़ का काढा जिगर के रोगों को दूर करता है। जननेद्रिय (Genitory tract.) और मसाने के रोगों के लिए लाभप्रद है। यह पैसाब ज्यादा लाता है इस लिए जलोदर, गठिया और मूत्र के दूसरे रोगों में दिया जाता है। डा० नाडकर्णी भी इस के ऊपर लिखे गुणों का समर्थन करते हैं और उनका कहना है कि यह एक पौष्टिक पदार्थ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

AMARYLLIDACEAE FAMILY तालमूल्यादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: क्षुप जाति।

पत्र—लोमयुक्त।

पुष्प—बाह्यकोश के दल (Calyx,—६

पुंकेसर—(Androceum) ६

बीजकोष—त्रिकोष्ठी—अधःस्थ।

४. सुदर्शन

आयुर्वेदीय पर्याय—सुदर्शना, सोमवल्ली, चक्रांगी।

लैटिन—*Crinum Zeylanicum.*

विवरण—बागों में इसके पौधे दिखाई देते हैं जो बहुवर्षायु एवं २ से ३ हाथ ऊंचे होते हैं। इस में हरे रंग के २ से ३ इंच चौड़े पत्ते भूमि से ही निकलने शुरू होते हैं। सफेद रंग के फूल वर्षा में आते हैं और बाद में गोल सा फल लगता है। यह विशेष रूप से उड़ीसा, बंगाल में तथा कुछ-कुछ अन्य प्रांतों में भी पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—पत्र एवं कन्द।

मात्रा—पत्र स्वरस ३ से ६ माशा, कन्द चूर्ण ४ से ८ रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर—तिक्त रस, रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य एवं मधुर विपाक होता है। वातकफ शामक, वामक, रेचक, शोथ नाशक, ज्वरघ्न, रक्त विकार एवं कुष्ठ नाशक होता है। इसके पत्तों का रस कर्णस्राव, कर्ण शूल अन्य कानों के रोगों में लाभ करता है। इसके कन्द को पास कर गर्म लेप देने से बवासीर का दर्द मिट जाता है और इस को विद्रधि पर बांध दिया जाए तो वह पक कर फूट जाती है।

इस का रासायनिक विश्लेषण करने पर विदित हुआ कि इसमें लाइकोरिन नामक तत्व होता है।

——

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

AMARANA THACEAE FAMILY अपामार्गादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: क्षुप जाति

पत्र—सादे, उपपत्र रहित, अभिमुख या एकान्तर

पुष्प—गुच्छों में, शाखाग्र या पत्रकोण से उद्भुत

फल—शुष्क, स्थायी और कोष के भीतर आवृत

५. चिरचिटा

आयुर्वेदीय पर्याय—अपामार्ग, शिखरी, मयूरक, प्रत्यक् पुष्पा, खरमञ्जरी।

यूनानी—अल्कुम।

अंग्रेजी—Chaff Tree **लैटिन**—*Achyranthes Aspera*

विवरण—इसका पोधा १ से २ फुट तक ऊँचा होता है। यह वर्षा के शुरूआत होते ही उग आता है, जब तक वर्षा होती रहती है यह बढ़ता जाता है। इसकी शाखायें फैली हुई होती हैं। इसके पत्ते छोटे, अण्डे जैसे गोल ३ से ५ इंच लम्बे और २ से ३ इंच चौड़े, छोटे २ रोम वाले होते हैं। सर्दी में हरे सफेद रंग के फूल मंजरी की तरह निकलते हैं, जिनका डंठल लम्बा होता है। इसमें छोटे, लम्बे धूमल रंग के फल लगते हैं। यह फल गर्मियों में पक जाते हैं और फिर धूप की तेजी में यह पोधा भी खत्म हो जाता है।

इसकी एक जाति और होती है उसे लाल अपामार्ग कहते हैं और उसके पत्ते, फूल, फल आदि सफेद न हो कर लाल होते हैं। चिरचिटा सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़, बीज, पत्ते

मात्रा—रस १ से २ तोला; क्वाथ ५ से १० तोला, बीजपूर्ण १ से ३ माशा; क्षार ४ से ८ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक कहा है। कफवात शामक, कफपित्त संशोधक है। इसके बीज देर में पचते हैं और वह भूख को बन्द करते हैं। वैसे यह रोचन, दीपन, पाचन, पित्तसारक और कृमिनाशक हैं। हृद्य, रक्तशोधक रक्तवर्धक हैं। मूत्रल, अश्मरी नाशक और मूत्राम्लता नाशक हैं। पसीना लाता है और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खारिश दूर करता है। स्थानिक प्रयोग किया जाए तो व्रणशोधन करता है और शिरोविरेचन के लिए उपयुक्त है। आयुर्वेद में भस्मक रोग में इसके बीजों की खीर बना कर देने का विधान है।

आधुनिक मत—आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि इसके बीज और पंचांग में क्षार होता है जिसमें पोटाश अधिक होता है। उनका कहना है कि यह सिकुड़न (Astrngent) पैदा करता है, पेशाब ज्यादा लाता है; ताकतवर है। इसका प्रयोग Menorrhagia (मासिक स्राव अधिक आना) दस्त और पेचिश में किया जाता है। इसका क्षार सर्वांग शोथ; जलोदर में लाभ करता है और इसका खाने का प्रयोग और लगाने का प्रयोग कुत्तों के काटे और सांप कि काटे में लाभ करता है। इसका रस दर्द दान्त को दूर करता है और इसका अंजन (Corneal Opacity) फूला में लाभ करता है।

डा० नाड़करनी का कहना है कि इसके ताजे पत्तों को पीस कर काली मिर्च, लहसन और गुड़ के साथ मिला कर गोलियाँ बनाकर देने से कालाजार में फायदा करता है।

६. चौलाई

आयुर्वेदीय नाम—तण्डुलीय, मेघनाद, काण्डेर, **यूनानी**—बक्लए यमानिया
अंग्रेजी—Hermaphrodite Amaranth
लैटिन—*Amaranthus Spinosuslin*

विवरण—इसका पौधा मौसमी होता है। यह १, २ फुट ऊँचा और अनेक शाखाओं वाला, मुलायम, लम्बे, गोल पत्तों वाला होता है। इसमें फूल गुच्छों में लगते हैं और फल छोटे गुच्छेदार होते हैं। यह सारे भारत में पाया जाता है और वर्षा तथा सर्दी में रहता है।

प्रयोज्य अंग—पत्र, मूल, बीज।

मात्रा—रस १ से २ तोला चूर्ण ३ से ६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—रस एवं पाक में मधुर, लघु रूक्ष, गुण और शीत वीर्य है। पित्त, कफ तथा रक्त दोषों को दूर करने वाली, रोचन, दीपन, अनुलोमन, हृद्य, मूत्रल, पुरीषजनन है। इसके मूल का लेप दाह, व्रण और विषों को दूर करता है इसका साग लगातार खाने से पत्थरी नहीं रह पाती।

——

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ANACARDIACEAE FAMILY आम्रादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः वृक्ष जाति

पत्र— एकान्तर—(Alternate) कभी २ अभिमुख (Opposite) एकाकी—(Simple) अथवा संयुक्त (Compound) उप-पत्र रहित

पुष्प— सपुष्प; पुष्प बाह्यकोश एवं पुष्प आभ्यन्तर कोष केदल—४-५

पुंकेशर—३-५

फल—अण्डाकार, गोल, मांसल

७. आम

आयुर्वेदीय पर्याय—आम्र, रसाल, सहकार, अतिसौरभ, **यूनानी**—अंबज

अंग्रेजी—Mango **लैटिन**—*Mangifera Indica*

विवरण—आम एक प्रसिद्ध चीज है, जिसका वृक्ष ३०-४० फुट ऊँचा होता है। इसके पत्ते ५-६ इंच लम्बे १-२ इंच चौड़ और आगे के हिस्से में नौकीले होते हैं। इसके फूल हरी पीली मंजरी के रूप में होते हैं जिसमें से नशीली गन्ध आती है। यह मंजरी वसन्त में लगती है। इसमें गर्मी-वर्षा में फल लगते हैं जो २ से ४ इंच लम्बे, गोल, कच्चे में हरे और पकने पर पीले हो जाते हैं। फल के भीतर गुठली और गुठली के भीतर गिरी होती है। आम की बहुत जातियाँ होती हैं। आम भारत के गरम इलाकों में प्रायः बिहार, बंगाल, मद्रास में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, पत्ते, फूल, फल, गुठली की गिरी।

मात्रा—रस १ से २ तोला, काढा ५-१० तोला, चूर्ण १-३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कच्चा फल अम्लरस, लघुरूक्ष गुण, शीत वीर्य तथा कटु विपाक होता है। यह त्रिदोषकारक है। पका फल मधुर रस, गुरू-स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक होता है। यह वात पित्त शामक होता है।

आम की छाल, पत्ते, फूल और गुठली कफ पित्त शामक होते हैं। इनका बाह्य प्रयोग रक्तरोधक और व्रण रोपक होता है। यह स्तम्भन करते हैं। कच्चे फल का पानक दाहप्रशामक है और लू लगने पर दिया जाता है। कच्चा फल रक्त पित्त प्रकुपित करता है। यह रोचन और दीपन होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पका आम स्नेहन, अनुलोमन, सारक, हृद्य, वृष्य, शोणितस्थापन, बल्य, वर्ण्य और बृंहण है। आम के पत्ते छर्दि (कै) दूर करते हैं। गुठली कृमिघ्न, गर्भाशय शोथहर, प्रमेह एवं पूयमेहहर, मूत्र संग्रहणीय कार्य करती है।

आधुनिक मत—विश्लेषण करने पर कच्चे फल में पोटाश, साइट्रिक एसिड, मैलिक एसिड प्राप्त हुए हैं। पके फल में कार्बन बाइसल्फाइड, बेंजोल गैलिक एसिड और साइट्रिक एसिड मिले हैं। आम के फल में विटामिन 'सी' और 'ए' होते हैं। इसकी छाल में टैनिन और इसकी गुठली में टेनिक एवं गैलिक एसिड प्राप्त हुए हैं।

डाक्टर आर० एन० क्षौरी का कहना है कि कच्चा आम स्कर्वी रोग को दूर करने वाला है।

कर्नल चोपड़ा इसके फल को विरेचक, अधिक पेशाब लाने वाला मानते हैं। यह बहते खून को रोकने वाला है। इसके पत्ते बिच्छु के काटने पर लाभ करते हैं।

डा० नाड़करनी ने लिखा है कि भुने हुए कच्चे आम के गूदे में शक्कर मिला कर तैयार की हुई चटनी हैजे और प्लेग के दिनों में प्रयोग करने से, इन से बचाव हो जाता है। इसके छिलके सहित फल का अर्क निकाल कर डिपथीरिया और कंठमाला में देने से फायदा करता है।

८. आमड़ा

आयुर्वेदीय पर्याय—आम्रातक, कपीतन, मर्कटाम्र
अंग्रेजी—Hog-plum लैटिन—*Spondias Mangifera*

विवरण—इसका वृक्ष ३०—४० फुट ऊँचा होता है। जिसका तना मोटा होता है और छाल सफेद रंग की चिकनी होती है। पत्ते पीले रंग के और चिकने होते हैं जो लम्बे डंठल से लगे रहते हैं। इसका फल $\frac{1}{2}$ से २ इंच लम्बा बड़े बेर के बराबर होते हैं। इनमें एक सख्त गुठली निकलती है यह सारे भारत में खास कर जंगलों में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, छाल, पत्र,

मात्रा— स्वरस १—२ तोला, क्वाथ ५ से १०तोला।

आयुर्वेदिक मत—कच्चा आमड़ा अम्ल रस एवं उष्णवीर्य होता है। पका हुआ कषाय-मधुर रस एवं शीतवीर्य होता है। गुण गुरु एवं स्निग्ध तथा विपाक मधुर होता है।

कच्चा फल कफपित्तवर्धक, वातशामक है। रुचिवर्धक एवं रेचक है। पका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फल वातपित्तशामक एवं कफवर्धक होता है। तृप्तिकारक, वीर्यवर्धक, विष्टम्भी बलकारक होता है। क्षत दाह, रुधिर विकार, क्षय नाशक है।

आधुनिक मत—कर्नल चोपड़ा का कहना है कि यह एक संकोचक सुगंधित व शान्तिदायक पदार्थ है। इस का प्रयोग पेचिश में किया जाता है।

इसकी छाल मूत्रमार्ग की शोथ को दूर करती है। इसकी छाल का सत्व अतिसार व रक्तातिसार में लाभ करता है। इसे गठिया की अच्छी दवा बताया जाता है और इसके पत्तों का रस कान के रोगों को दूर करता है।

९. काकड़ासिंघी

आयुर्वेदीय पर्याय—कर्कटशृंगी, शृंगी, वक्रा, अजाशृंगी **यूनानी**—काकरा
लैटिन—*Pistacia Integerima.*

विवरण—इस वृक्ष की ऊँचाई २५ से ३० फुट ऊँची होती है। जिसकी छाल मिटेले रंग की होती है। इसके पत्ते २ से ५ इंच लम्बे और १ से ३ इंच चौड़े होते हैं; पूरा पत्ता ६-८ इंच लम्बा होता है जो शाखाओं के आगे छत्ते की तरह लगे रहते हैं। इसके फूल छोटे, पीले-हरे रंग के होते हैं। यह फूल जनवरी और फरवरा के महीने में लगते हैं। मार्च में छोटे चपटे और पतले फल लगते हैं। इस की शक्ल जियापोता नामक वृक्ष से मिलती-जुलती है।

इस वृक्ष के शाखाओं, पत्तों पर एक कीड़े से, जिसे 'एफिस' कहा जाता है, सींग जैसी खेखली चीज बन जाती है। यही काकड़ा सिंघी कही जाती है। यह १ से २ इंच लम्बी और १/२ से १ इंच चौड़ी पुराने ईंटों के रंग की होती है। जोर से दवाने पर यह सहज ही टूट जाती है। इसके अन्दर धूल जैसी चीज निकलती है, जिसके विषय में ड़िमक ने लिखा है कि यह उस कीड़े का मरा हुआ चूरा होता है। यह वृक्ष कुमाऊँ, आसाम, बंगाल में पैदा होता है।

यह ध्यान रखना चाहिए कि इस पेड़ के अलावा कुछ पेड़ों पर बने सींगों को भी 'काकड़ा सिंघी' के नाम से बाजार में बेचा जाता है।

प्रयोज्य अंग—कीड़े से बना सींग।

मात्रा—६ से १२ रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—कषाय तिक्त रस, लघुरूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होती है। यह कफवातशामक, संग्राही, वातानुलोमक, हिक्का निग्रहण; ज्वरघ्न है। यह गर्भाशय के शोथ, प्रदर और पूयमेह के लिए लाभदायक है। क्षयरोग नाशक है। विशेष रूप से कास, श्वास, हिक्का में प्रयोग करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुश्रुत के मतानुसार यह अन्य औषधियों के साथ साँप और बिच्छु का जहर दूर करने के काम में ली जाती है।

आधुनिक मत—इसमें टैनिन ६०%, उड़नशील तैल और गोंद होते हैं। इसके तैल की गंध तारपीन के तैल जैसी होती है। इसमें Crystalline hydrocarbon होता है।

कर्नल चोपडा का कहना है कि यह कफ, क्षय और खाँसी की हालत में प्रयोग की जाती है।

डा० वामन गणेश देसाई ने इसे कफ रोगों के लिए बहुत उपयोगी बताया है। इसके प्रयोग से सांस नालिका का नवीन और प्राचीन शोथ दूर हो जाता है। जमा हुआ कफ निकल जाता है और नया कफ पैदा नहीं होता। श्वास नलिका की श्लेष्मिक कला पर (Mucus membrane) इसका प्रभाव 'इपिकोना' की अपेक्षा अधिक होता है।

१०. काजू

आयुर्वेदीय पर्याय—काजूत, काजूतक, वृतारूष्कट **यूनानी नाम**—बादामे फिरंगी

अंग्रेजी—*Cashew.* **लैटिन**—*Anacardium Occidentale*

विवरण—इसका पेड़ आम का जैसा होता है और हमेशा हरा रहता है। इसके पत्ते ४—८ इंच लम्बे और ३—५ इंच चौड़े होते हैं जिन पर १० जोड़ी धारियाँ होती हैं। इसके फूल पीले रंग के होते हैं जिन पर लाल निशान पड़े होते हैं। इसका फल गुर्दे (Kidney) की शकल का होता है और मैला रंग होता है जिसके अन्दर सफेद रंग की गिरी निकलती है, इसे काजू कहते हैं। इस की छाल से एक तरह का गोंद निकलता है।

प्रयोज्य अंग—गिरी

मात्रा—$\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिकमत—मधुर रस, लघु-स्निग्ध गुणा, उष्ण वीर्य, मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोष नाशक है किन्तु विशेष रूप से वातशामक है। यह दीपन, स्नेहन, अनुलोमन, रक्तशोधक, हृद्य वृष्य, मूत्रल, वाजीकरण, बल्य एवं वृहंण है। यह गुल्म, उदर रोग, ज्वर, कृमि, व्रण, कुष्ठ, स्वेत कुष्ठ अर्श एवं आनाह नाश करता ह।

अधुनिकमत— इसके छिलके से गाढ़े काले रंग का तेल निकलता है उसमें ९०% एनाकार्डिक एसिड हाता है। एक तेल होता है जो (Cardol) कार्डोल कहलाता है, यदि यह त्वचा पर लग जाए तो त्वचा पर छाला पड़ जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसकी गिरी से भी तेल निकलता है जो काजू का तेल कहलाता है। यह कृमि रोग की श्रेष्ठ दवा माना जाता है।

११. चिरोंजी

आयुर्वेदिय पर्याय—प्रियाल, खरस्कन्ध, राजादन यूनानी—हब्बुस्समाना
अंग्रेजी Cuddapa Almond लैटिन—*Bucharania Lactifolia.*

विवरण—इसका पेड़ ४० से ५० फुट ऊँचा होता है, जिस का तना सीधा और ऊँचा होता है और चारों तरफ शाखाएँ फैली रहती हैं। इसकी छाल धूमिल होती है और उसकी मोटाई १ इंच होती है। इसमें ६ से १० इंच लम्बे और ५ से ६ इंच चौड़े नोकदार पत्ते होते हैं जो देखने में सुन्दर चिकने और सख्त होते हैं। पत्ते के किनारे साधारण बिना कटे-फटे होते हैं। पत्ते का डंठल छोटा होता है। इसमें मञ्जरी लगती है जिन का ऊपरी भाग मन्दिर की चोटी की तरह का होता है। फूल शाखा के अगले भाग में लगते हैं जो नीले रंग के सफेद और छोटे होते हैं तथा बहुत संख्या में होते हैं। इस में करोंदें जैसे गोल, कुछ चपटे, साँवले रंग के, गूदे वाले और स्वाद में खट्टे-मिट्ठे फल लगते हैं, जिन के बीच में छोटी, मिटेले रंग की और चिकनी गिरी निकलती है जो 'चिरोंजी दाना' कहलाती है। इसका फल मार्च में लगता है।

यह पहाड़ों में होने वाला पेड़ है, जो हिमालय, सी० पी०, उड़ीसा, बर्मा में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, बीज की गिरी।

मात्रा—छाल का काढा ५ से १० तोला, गिरी चूर्ण १—२ तोला।

आयुर्वेदिक मत—मधुररस; स्निग्ध-गुरु सर गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक है। वात पित्तशामक, नाड़ियों के लिए बलप्रद; तृष्णाशामक; दुर्जर, विष्टम्भी, सारक, हृद्य, मूत्रल, वृष्य और वाजीकरण हैं. बल्य और बृहंण है। इसका लेप कुष्ठ, खारिश और दूसरे चर्म रोगों में लाभ करता है। इसका तेल पालित्य (बाल उड़ना) रोग में भी सिर पर लगाया जाता है।

आधुनिक मत—विश्लेषण करने पर इस में 28% मांस बढाने वाला तत्व, $2\frac{1}{2}$% स्टार्च और क्षार $3\frac{1}{2}$% पाए गए हैं। इसकी मींगी में 58% फिक्सड़ आयल मिलता है। इसी को चिरोंजी का तेल कहा जाता है।

इस तेल का प्रयोग बादाम के तेल की जगह किया जाता है। गोंद का प्रयोग दस्तों में लाभ पहुँचाता है।

डा० आर० एन० क्षौरी का कहना है कि चिरोंजी चिकनी, ताकत देने

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाली और कफनिःसारक है। कमजोरी में इसका प्रयोग किया जाता है। इस का तेल त्वचा के रोगों के लिए लाभदायक है।

१२. पिश्ता

आयुर्वेदीय पर्याय—मुकूलक यूनानी नाम—फुस्तुक

अंग्रेजी—Pistachio लैटिन—*Pistacia Vera*

विवरण—यह सीरिया और अफगानिस्तान में पैदा होने वाले एक वृक्ष के बीज की गिरी है जो पिस्ता के नाम से प्रयोग की जाती है। इसके वृक्ष के पत्तों पर भी काकड़ा सींगी की तरह कीड़ों का एक कोष सा बन जाता है, जो पिस्ते का फूल कहलाता है। इस का फूल एक तरफ से गुलाबी और दूसरी तरफ से पीताभश्वेत होता है।

प्रयोज्य अंग—बीज, मज्जा, फूल।

मात्रा—बीज मज्जा $\frac{1}{2}$ से १ तोला, फूल ३ से ६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, गुरुस्निग्धगुण, उष्णवीर्य, मधुर विपाक है। यह वातशामक है। बल्य, वृंहण एवं वृष्य है। कफपित्तवर्धक होता है।

इसका फूल स्तम्भक है और कास अतिसार आदि में प्रयोग किया जाता है। गलशोथ, मुख पाक में इस की गोलियाँ चूसते हैं।

आधुनिक मत—बीज मज्जा में सुगन्धित मधुर सा तैल होता है। पिस्ते के फूल में गैलोटैनिक एसिड के जैसा एक कषाय द्रव्य ४५% होता है। बीज मज्जा का तैल स्मरण शक्ति बढ़ाता है। खांसी मिटाता है, हृदय को बल देता है, पागलपन और रक्तदोष दूर करता है।

१३. भिलावा

आयुर्वेदीय पर्याय—भल्लातक, अरुष्कर, अग्निक, शोफकृत, अग्निमुख

यूनानी—हब्बुल कल्ब

अंग्रेजी—Marking Nut लैटिन—*Semecarps Anacardium*

विवरण—इसका पेड़ २५ से ३० फुट ऊँचा होता है। इसकी छाल एक इंच मोटी धूम्र वर्ण की होती है। यदि इनका रस निकाला जाए तो काले रंग का होता है। इसकी शाखाओं के अग्रभाग से पत्ते निकलते हैं जो लगभग ३ से ८ इंच लम्बे और ५ से १२ इंच चौड़े होते हैं। पत्तों का निचला हिस्सा हृदयाकृति होता है, ऊपरी हिस्से में छोटे-छोटे रोम होते हैं। पत्तों का अगला हिस्सा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुछ मोटा होता है। पत्ते के बीच की लकीरें (Veins) १५ से २५ तक होती हैं और सख्त होती हैं। यह पत्ते बसन्त में झड़ जाते हैं। गर्मियों में इसमें फूल लगते हैं जो पीलापन लिए होते हैं और यह एक वृक्ष में एक ही लिंग (Sex) के लगते हैं। किसी पेड़ में पुरुष लिंगी तो किसी में स्त्रीपुष्प होते हैं। फूलों का डंठल पत्ते के जितना लम्बा होता है। सर्दियों के दिनों में इसमें फल लगते हैं जो काजू से मिलते-जुलते होते हैं। यह १ इंच लम्बे और दिल की शक्ल के होते हैं। कच्चा फल हरा होता है और पकने पर चमकीले काले रंग का होता है। पके हुए फल का रस शहद के जैसा गाढ़ा और काला होता है। फल के भीतर बादाम के जैसा एक मीठा बीज होता है। फल के ऊपर एक टोपी लाल रंग की होती है जो पक जाने पर खाई जाती है।

यह भारत के गरम प्रदेशों में, हिमालय के निचले हिस्सों में विशेषकर बिहार, बंगाल, आसाम और उड़ीसा में उत्पन्न होता है।

प्रयोज्य अंग—फल।

मात्रा —रस $\frac{1}{2}$ से २ रत्ती। चटनी ३ से ६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर कषाय रस; लघुस्निग्ध तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक होता है। यह कफ वातशामक और पित्तसंशोधक है। मेध्य, दीपन, पाचन, भेदन, यकृदुत्तेजक और कृमिघ्न है। हृदय के लिए उत्तेजक और शोथ को दूर करता है। कफनिःसारक है। आरम्भ में मूत्र की मात्रा बढ़ती है किन्तु वृक्कों के पक जाने पर बाद में मात्रा कम हो जाती है और यदि फिर भी प्रयोग किया जाए तो मूत्र में खून जाने लगता है। कामोत्तेजक, वाजीकरण और गर्भाशयोत्तेजक है! स्वेदजनन और कुष्टघ्न है। रसायन है।

आधुनिक मत—इस के फल में ३२% एक ऐसा तैल होता है जो त्वचा पर छाला डाल देता है। यह तैल ईथर में घुल जाता है यह हवा में मिल कर काले रंग का होता जाता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि "भिलावे का गाढ़ा काले रंग का रस एक उत्तेजक औषध के रूप में प्रयोग किया जाता है। त्वचा पर लगाने से यह छाला बना देता है। गठिया की सूजन, कुष्ठ में, दर्द के स्थान पर इसका लेप किया जाता है। लेप से सूजन और जलन होती है।······भिलावा को तिल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तैल या मक्खन के साथ प्रयोग किया जाए तो यह गर्म, नशा करने वाला, पाचक रसायन और नाड़ियों को बल देने वाला है। यह संग्रहणी, पेट के कीड़े और श्वास और मृगी में प्रयोग किया जाता है। यह गण्डमाला, कुष्ठ और रक्त-दोषों में प्रयोग किया जाता है।

विशेष—भिलावा एक जहरीली चीज है। इसलिए इसे शुद्ध करके प्रयोग किया जाता है। अशुद्ध भिलावा ज्यादा मात्रा में प्रयोग करने से सबसे पहले गुदा और शिश्न के अगले हिस्से में खारिश और जलन होती है। पसीना बहुत आता है, प्यास बहुत लगती है। पेशाब कम आता है और उसका रंग धूम्र या लाल होता है। ऐसी हालत में इसका देना बन्द कर देना चाहिए। इसके लिए नारियल का रस चीनी मिला कर प्रयोग करना चाहिए।

भिलावा का प्रयोग करते समय धूप, स्त्री-सहवास और मांस भक्षण छोड़ देवें। नमक को छोड़ देने से ज्यादा लाभ होता है।

बच्चों, वृद्धों, पित्त प्रकृति वालों और गर्भवती स्त्रियों को भिलावे का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

१४. रूमी मस्तगी

यूनानी—अलकरूमी

अंग्रेजी—Mastich **लैटिन**—*Pistacia Lentiscus*

विवरण—पिश्ते की तरह एक हमेशा हरा रहने वाला पौधा होता है। यह रूम, दक्षिणी यूरोप, ईरान आदि में होता है। इसके तने और शाखाओं में चीरे लगाने से एक गाढ़ा जमा हुआ गोंद निकलता है। यही गोंद बाजारों में रूमी मस्तगी के नाम से प्रचलित है। यह पीलापन लिए हुए सफेद छोटे गोल दानों की शक्ल में होता है। यह सुगन्धित होता है और स्वाद कुछ मीठा होता है। अगर इसे खरल में डाल कर रगड़ें तो यह चिपक जाता है। बाजार में नकली चीजें भी इस में मिला कर वेच देते हैं।

प्रयोज्य अंश—गोंद।

मात्रा—३ माशे।

गुण—यह काबिज है। गरम व खुश्क है। सूजन व वायु दूर करती है। दिल, दिमाग, पेट, जिगर, वृक्क (Kidney) और हाजमे को ताकत देती है। दिमाग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

के दोषों और कफ को सुखाती या निकालती है। मुँह से खून आने को बन्द करती है। पुट्ठों की तमाम बिमारियों को दूर करती है। पेंचिश और मिचली को दूर करती है। यह पेशाब ज्यादा लाती है। यह आतर्व लाने वाली और वाजीकरण है।

इस में मेंस्टिकिक एसिड़ ६०% होता है। एक तत्व जिसे मस्टिकिन कहते हैं १०%होता है। इसमें एक उड़न शील तैल होता है।

कर्नल चोपड़ा का कहना है कि यह उत्तेजक (Stimulant) और मूत्रल (Dirutic) है। दाँतों के लिए लाभप्रद है।

१५. समाकदाना

आयुर्वेदीय पर्याय—तिन्तिड़ीक **यूनानी नाम**—सुमाक

लैटिन—*RhusParviflora.*

विवरण—इसके पेड़ मझले कद के होते हैं। इसके फल मसूर के दानों के बराबर होते हैं और उनके समान ही रंग होते हैं। यह उत्तर भारत में विशेषत: हिमालय में २—५ हजार फुट की ऊँचाई पर प्राप्त होते हैं। नैपाल और कुमाऊँ में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—फल

मात्रा—३—५ माशा

आयुर्वेदिक मत—वातशामक, कफ पित्तवर्धक होता है। रोचन, दीपन, ग्राही, हृद्य, ज्वरघ्न, दाहप्रशमन, शोथहर एवं रक्तविकार नाशक होते हैं। यह अरुचि, तृष्णा, वमन, अतिसार, प्रवाहिका में लाभ करता है। इसका लेप सूजन को दूर करता है। जुकाम में सिर पर इसका लेप किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

APOCYNACEAE FAMILY कुटजादि वर्ग

पत्र--सादे, अभिमुख (Opposite), अखंड, उपपत्ररहित ।

पुष्प—शाखाग्र उद्भूत ।

पुष्पब्राह्यकोश (Calyx) एवं पुष्प अभ्यन्तर कोश (Corolla) के दल ४-५

पुंकेसर (Androceum) ४-५

फल—सैम, गोल या लम्ब गोल, एक डंठल में दो सेम ।

१६. कनेर

आयुर्वेदीय नाम—श्वेत पुष्प, शतकुम्भ । **यूनानी नाम**—सम्मुल्हिमार ।

अंग्रेजी—Rose berry spurge. **लैटिन**—*Nerium odorum*.

विवरण—इसका पेड़ लगभग १० फुट से १५ फुट तक ऊँचा होता है। इस के मूल से ही और काण्ड से भी शाखाएँ निकलती हैं जिनसे यह झाड़ीदार पेड़ लगने लगता है। इसके पत्ते ४ से ६ इंच लम्बे, नौकीले होते हैं। पत्र के बीच की सिरा सख्त होती है। गर्मी और वर्षा में इस में फूल लगते हैं जो अलग-अलग जाति में अलग-अलग रंग के सफेद, लाल, नीले या पीले होते हैं। फूलों के झड़ जाने पर शीतकाल में ५ से ६ इंच तक लम्बी, पतली, चपटी, सख्त गोल फलियाँ लगती हैं। फलियों के पकने पर इनमें से छोटे-छोटे चक्राकार, सफेद रोएँदार भूरे रंग के बीज निकलते हैं।

कनेर के पत्ते या तने को काटा जाए तो सफेद दूध निकलता है। वृक्ष के आकार और गुणों के अनुसार सफेद और लाल कनेर एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं लेकिन पीली कनेर का पेड़ ज्यादा गहरा, पत्ते ज्यादा चमकीले, पतले और छोटे, फल गोल, पकने पर भूरे रंग के और फल में गुठली निकलती है। यह प्रायः जंगली कनेर कहलाती है।

प्रयोज्य अंग—मूल और मूलत्वक।

मात्रा—चूर्ण १/८ से १ रत्ती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। वात कफ शामक है, बाह्य प्रयोग में कुष्ठघ्न, व्रणशोधन, व्रणरोपन तथा शोथहर है। यह दीपन, विदाहि तथा भेदन है। मूत्रल होने से मूत्र कृच्छ और अश्मरी नाशक है, हृद्य है।

आधुनिक मत—जड़ में दो तेज जहरीले तत्व मिलते हैं (i) Neriodorin (ii) Neriodorein. इनका हृदय पर बुरा प्रभाव पड़ता है। एक ग्लुकोसाइड जिसे Rosaginine कहा जाता है; होता है। Neriene नामक एक तत्व डिजिटैलिन के जैसी प्रभाव दिखाता है।

पीली कनेर में एक मुख्य तत्व Thevetin होता है।

पीली कनेर का हृदय पर वही प्रभाव होता है जो 'डिजिटेलिस' का। एक रत्ती पीली कनेर की छाल नियतकालिक ज्वर प्रतिबन्धक रूप में वही कार्य करती है जितनी १५ रत्ती 'सिनकोना' की छाल। इस तरह विषम ज्वर में इसका प्रयोग लाभ पहुँचाता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि पत्तो का तत्व हृदय की गति को मन्द करता है, नाड़ी की गति को मन्द करता और श्वासावरोध करने वाला है। इसका मूल और मूलत्वक मूत्रकारक है। गर्भपात या आत्महत्या के लिए इसकी जड़ खा लेते हैं। इसकी जड़ की छाल का लेप फिरंग व्रण (Syphliticulcer) शिश्नक्षत और दाद पर लाभ करता है।

कनेर एक विष है। इसका विषावत प्रभाव होने पर उलटी, दस्त, नब्ज मन्दा होना, साँस शीघ्रता, बदन में जकड़ाहट और बेहोशी हो कर मौत तक हो सकती है। इसका यह प्रभाव २ घंटे में हो जाता है। इसमें इसबगोल मठ्ठे में भिगोकर पिलावें या कत्तीरा पानी में भिगोकर बादाम तैल में मिलाकर पिलाना चाहिए।

१७. करौंदा

आयुर्वेदीय पर्याय—करमंद, सुषेण, कृष्णपाक यूनानी—करूँदह

अंग्रेजी— Jasmine flowered Carrissa लैटिन—*Carissa Corandus.*

विवरण—इस का झाड़ीनुमा पौधा ४—६ फुट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते १ से ३ इंच लम्बे और १ से १½ इंच चौड़े गोलाई लिए हुए, चिकने और माँसल होते हैं। फूल छोटे सफेद रंग के और बहुत सुगंध वाले होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह फूल बसन्त ऋतु में लगते हैं। इस का फल गोल, सफेद एवं लाल रंग का होता है जो पकने पर काले रंग का हो जाता है। इसके भीतर तिकोने चार बीज होते हैं। वर्षा काल में फल आते हैं।

करौंदा की एक और जाति होती है जो करौंदी या जंगली करौंदा कहलाती है। इसकी ऊँचाई कम, पत्ते और फल छोटे होते हैं।

करौंदा भारत में रेतीली और खुश्क जमीन पर होता है। विशेष कर पंजाब बंगाल और वर्मा में होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, जड़ की छाल, पत्ते।

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला, क्वाथ ५ से १० तोला।

आयुर्वेदिक मत—कच्चा फल अम्लरस, गुरु स्निग्ध गुण, अम्ल विपाक और उष्ण वीर्य होता हैं। पका फल मधुराम्ल रस, गुरुस्निग्ध गुण, मधुर विपाक और शीतवीर्य होता है। इसकी जड़ तिक्त रस, उष्णवीर्य, गुरु स्निग्ध गुण और कटु विपाक होती है।

कच्चा फल वातनाशक, पित्तकफवर्धक, रक्तपित्तवर्धक, है। पका फल वात शामक, रूचिवर्धक, तृष्णाशामक, दीपन और ग्राही है। अतिसार और रक्त पित्त को दूर करने वाला होता है। चर्म रोग दूर करता है। इसका मूल कफवातशामक है। यह ज्वरघ्न भी है।

आधुनिक मत—इस में एक क्षार तत्व और सैलिसिलिक एसिड़ (Salicylic acid) पाया जाता है। कर्नल चौपड़ा आदि का कहना है कि इसका कच्चा फल संकोचक, पका फल शीतल, इसकी जड़ कड़वी, पेट को फायदा करने वाली और पेट के कीड़े मारने वाली होती है। विषम ज्वरों में इसके पत्तों का क्वाथ लाभ करता है।

कहीं २ इसकी जड़ को घोड़े के पेशाब, नीम्बु के रस और कपूर के साथ पीस कर खुजली की दवा के रूप में प्रयोग करते हैं।

१८. कुड़ा

आयुर्वेदीय पर्याय—कुटज; कुटिज; कौट; वत्सक, इन्द्रयवफल, गिरिमल्लिका।
यूनानी नाम—शज्रलिसानुल असाफीरूल मुर्र।
अंग्रेजी—**Kurchi** **लैटिन**—*Holarrhene Antidysentrica*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसके पेड़ २०-२५ फुट ऊँचे होते हैं जिनकी छाल पीले, मैले रंग की होती है और काण्ठ मुलायम और पाण्डु वर्ण होता है। इसके पत्ते कदम्ब के पत्तों के समान होते हैं और यदि पत्र एवं कोमल शाखा को तोड़ा जाए तो दूध निकलता है। पत्ते में १०-१६ जोड़ी उभरी हुई सिराएँ होती हैं। इसके फूल चमेली के फूल के समान श्वेत वर्ण एवं गंध वाले होते हैं। इस में ८-१६ इंच लम्बी फलियाँ लगी रहती हैं। यह डंठल के पास एक साथ दो लगी रहती हैं किन्तु दूसरे किनारे पर अलग रहती हैं। इन फलियों पर सफेद रंग के दाग होते हैं। इन फलियों में यव की आकृति के बीज निकलते हैं जिन पर रूई सी लगी रहती है, जैसे आक के बीजों पर होती है। इन बीजों को 'इन्द्र यव' कहते हैं। कुटज के श्वेत एवं कृष्ण दो भेद बताए हैं, इन में श्वेत कुटज उत्तम है उसके बीज तिक्त होते हैं। कृष्ण कुटज की छाल काली और बीज मधुर व कम गुणकारी हैं। इनके अतिरिक्त भी इस की कई जातियों का वर्णन प्राप्त होता है।

श्वेत कुटज हिमालय, बंगाल, आसाम तथा उड़ीसा में पाया जाता है। कृष्ण कुटज महाराष्ट्र में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, बीज।

मात्रा—छाल १ से २ तोला, बीज चूर्ण ४ से ८ रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त, कषाय रस, लघुरूक्ष गुण, शीतवीर्य, कटु विपाक है। यह कफपित्त शामक है। दीपन, स्तम्भन, अर्शोघ्न और कृमिघ्न है। रक्त-शोधक, रक्तस्तम्भक, ज्वरघ्न एवं लेखन है। इसका प्रयोग अग्निमान्द्य, अति-सार, प्रवाहिका, ज्वरातिसार, अर्श, उदरशूल एवं कृमि रोग में किया जाता है। यह ज्वर, रक्तविकार में लाभ करता है। इसका बाह्य प्रयोग व्रण रोपक है।

आधुनिक मत—इसकी छाल और बीजों में 'कुर्चिसिन' और 'कुर्चीन' नामक दो तत्व प्राप्त होते हैं।

डा० आर० एन० चौरी ने लिखा है कि सफेद कुटज के बीज और छाल विषम ज्वर में सिनकोना की तरह लाभ करते हैं। सिनकोना का प्रयोग बेचैनी जी मिचलाना, वमन, शिरः शूल कर देता है किन्तु यह नहीं करते। संग्रहणी, रक्तातिसार, कृमि, रक्तपित्त, श्वास, गुर्दे का दर्द, विसूचिका में लाभ करते हैं। प्रसव के बाद स्त्री जननेन्द्रिय दृढ़ करने के लिए इस का प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१९. सतौना

आयुर्वेदीय पर्याय—सप्तपर्ण, विशालत्वक, शारद, विषमच्छद

लैटिन—*Alstonia Scholaris*

विवरण—इसका हराभरा पेड़ ४०-५० फुट ऊँचा होता है। जिसकी छाल मोटी, सफेद और भंगुर होती है, इसे काटने पर दूध निकलता है। इसमें एक साथ छत्ताकार सात पत्ते लगे मिलते हैं। यह चिकने होते हैं। इसको तोड़ने से भी दूध निकलता है। शरदृतु में हरिताभ श्वेत फूल गुच्छों में लगते हैं जो सुगन्धित होते हैं। इसमें शीतकाल में १ फुट लम्बी, टेढ़ी, चपटी सी फली लगती है। फली पकने पर फट जाती है और उस में से सफेद रंग के रूई सी लगे हुए छोटे २ बीज निकलते हैं। यह हिमालय में ३ हजार फुट की ऊँचाई तक तथा बंगाल में ज्यादा होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, दूध, फूल।

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला; त्वक् चूर्ण ६से १२ रत्ती; दुग्ध ३ से ६ रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—यह तिक्त कषाय रस, लघुस्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाकी होता है। यह त्रिदोष नाशक है। यह दीपन, अनुलोमन एवं कृमि नाशक है। हृद्य एवं रक्तशोधक होता है।

इसका प्रयोग कुष्ठ, रक्तविकार, जन्तु नाशक रूप में किया जाता है। ज्वर में इसका प्रयोग लाभ करता है। व्रण एवं कुष्ठ पर इसका बाह्य प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—इसकी छाल में निम्न पदार्थ होते हैं—

डिटेमिन (Ditamine) एक्टिटेमिन (Echitamine)

एक्टिटेनिन (Echitanine) एकिकाँउचिन (Echicaoutchien)

एक्सिरीन (Echicerin) आदि;

इन में से डिटेमिन नामक तत्व की क्रिया ज्वर में उसी प्रकार होती है जैसे कुनीन की! इसकी छाल आमवात,वातरोग एवं चर्म रोगों में लाभ करती है। पाचक होने से पुराने उदर रोग एवं संग्रहणी में लाभ करती है।

२०. सर्पगन्धा

Rauwoljta Serpentina.

विवरण—इसका पौधा बहुत ऊँचा नहीं होता, लगभग ३ फुट तक होता है। इस की छाल सफेद रंग की रूएँदार होती है। पत्ते अण्डाकार होते हैं और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इनका रंग नीचे की ओर हल्का और ऊपर की तरफ गहरा हरा होता है। यह १/२ इंच के डंठल से लगे रहते हैं और ४ से १२ जोड़े सिराएं होती हैं। पुष्प दण्ड में अनेक पुष्प होते हैं और यह श्वेत गुलाबी या नीलाभ रक्त वर्ण के होते हैं। लाल रंग के मटर के बराबर के फल वर्षा काल में लगते हैं। इसकी जड़ अंगुली के बराबर मोटी और धूसर वर्ण की होती है। यह बिहार, बगाल उत्तरप्रदेश में मिलता है। बर्मा, लंका, अंडमान, जावा में भी मिलता है।

प्रयोज्य अग—मूल।

मात्रा—२ रत्ती से ६ माशा तक अवस्थानुसार।

गुण कर्म—आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थों में इसका विस्तार से वर्णन नहीं मिलता किन्तु आज इसका प्रयोग बहुत होता है। यह वातकफ शामक है। यह वेदना शामक एवं निद्राजनक होती है। उन्माद, अपस्मार एवं अनिद्रा में प्रयोग की जाती है। यह दीपन, पाचन, कृमि नाशक है। इससे हृदय पर अवसादक प्रभाव पड़ता है और रक्त वाहिनियों का प्रसार होता है। इस का प्रयोग रक्तभाराधिक्य में किया जाता है। यह आतर्वजनन एवं ज्वरघ्न है। सर्प विष में इसका प्रयोग किया जाता है।

इसके रस गुण आदि की परीक्षा कर बताया गया है कि इसमें तिक्त रस, रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक एवं निद्राजनन प्रभाव है।

हर्ष का विषय है कि आयुर्वेद एवं यूनानी तिब्बिया कालेज दिल्ली में १९३१ में सिदीकी महोदय ने इस पर अनुसन्धान किया और इसमें मुख्यत: ५ उपक्षार पाए—

अजमेलाइन, अजमेलीनाइन, अजमेलीसाइन, सर्पेराटाइन, सर्पेटिनाइन।

उनका कहना है कि प्रथम तीन हृदय अवसादक हैं। यह तीनों सफेद रंग के पदार्थ हैं। दूसरे दोनों पीले रंग के पदार्थ हैं, यह हृदय उत्तेजक है किन्तु स्नायु मण्डल और श्वासोच्छ्वास की क्रिया को निष्क्रिय करते हैं।

आज का चिकित्सक समाज इस औषध का बहुत प्रयोग कर रहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ARACEAE FAMILY सूरणादि वर्ग

स्वरूप— प्राय: क्षुप जाति के।

पत्र— एकान्तर (Alternate), विभिन्न रंग के, प्राय: साधारण (Simple) कभी विभक्त (Compound)

पुष्प— अवृन्त, छोटे, एक लिंगी।
बीज कोष—१ से ३ खंड वाला।

फल— मांसल, सरस।

बीज अनेक।

मूल— प्राय: कन्द मूल (Bulbous Root).

२१. जमीकन्द

आयुर्वेदीय पर्याय—सूरण, ओल, कन्द, अर्शोघ्न यूनानी—ओल

अंग्रेजी—Elephant's Foot

लैटिन—*Amorphophallus Campanulatus*

विवरण—यह वर्षायु, १ से ३ फुट ऊंचा छोटा पौधा होता है। काण्ड के ऊपरी भाग में फीके, हरे एवं नीचे के भाग में तीन भागों में त्रिभक्त १ से ३ फुट लम्बे छत्राकार पत्ते लगे होते हैं। इसमें लाल या बैंगनी रंग के फूल आते हैं जो बरसात में लगते हैं। बाद में फल लगता है जो लाल रंग का होता है। और इसमें २-३ बीज निकलते हैं। इसका कन्द ऊपर से दबा हुआ, चपटा, गोल होता है।

जमीकन्द की दूसरी जाति जंगली होती है जो बिना बोये ही वनों में पैदा हो जाती है। *Amorphophallus Sylvaticus* कहते हैं।

यह सारे भारत में पैदा होता है।
प्रयोज्य अंग—कन्द।
मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—यह कटु कषाय रस, लघु तीक्ष्ण एवं रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक और अर्शोघ्न प्रभाव वाला होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह कफवात शामक, दीपन, पाचन, अनुलोमन, यकृदुत्तेजक; शूल प्रशमन; कृमिघ्न है। यह कफघ्न; वृष्य, आर्तवजनन, बल्य और रसायन है। इसका स्थानिक प्रयोग सन्धिशोथ, श्लीपद और अर्बुद पर मधु और घृत के साथ पीसकर करना चाहिए। अर्श के लिए सूरणमोदक इससे बनाया जाता है।

आधुनिक मत--इसमें Calcium Oxilate होता है। तथा एक कटु, तीक्ष्ण और दाहक रस होता है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि यह भूख को बढ़ाता है। ताकत देता है और पेट के अफारे को दूर करता है। बवासीर के लिए यह बहुत लाभप्रद है।

२२. जलकुम्भी

आयुर्वेदीय पर्याय—कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूली, खमूलिका।

अंग्रेजी—Tropical Duck weed. **लैटिन**—*Pistia Stratiotes.*

विवरण—यह एक जलाशयों में होने वाला पौधा है। इसमें ३ से ४ पत्ते निकलते हैं, पत्ते निकलने से पहले इसकी डाली नलिकाकार बीच में फूली हुई मोटी होती है जिसका आकार घड़े से मिलता-जुलता होता है, इसलिए उसे 'कुम्भी' कहते हैं। इसके पत्ते १ से ४ इंच लम्बे मांसल, गोलाकार और गाढ़े नीले रंग के होते हैं। ग्रीष्म ऋतु में इसके बीच में से एक डंडी निकलती है जिस में एकलिंगी फूल गुच्छों मे लगते हैं। इनका गर्भाशय झिल्ली युक्त होता है जिसमें लम्बे-लम्बे बीज निकलते हैं। यह भारत, एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में पैदा होता है।

प्रयोज्यांग—पंचांग।

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला।

आयुर्वेदिक मत—यह तिक्त, मधुर रस, लघु, रूक्ष गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोष शामक है। यह मृदु रेचन, शोणित-स्थापन, कफ निःसारक, मूत्रल तथा ज्वरदाह नाशक है। बल्य है। यह रक्त विकार, ज्वर, मूत्र कृच्छ, दुर्बलता एवं कास-श्वास में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—इसमें सोडियम, पोटाशियम, मैगनीशियम, चूना, लोहा, सिलिकिक एसिड एवं अल्युमिनियम होता है।

कोमान ने बताया है कि इसके पत्तों द्वारा नारियल का तैल सिद्ध कर चर्म रोगों में प्रयोग किया जाता है। उपदंश व मूत्र रोगों में लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२३. मानकन्द

आयुर्वेदीय पर्याय—मानक, महापत्र

अंग्रेजी—Great Leaved Caledium **लैटिन**—*AlocasiaIndica*

विवरण—इसका पौधा जमीकन्द के जैसा होता है जिसका तना ३-८ फुट लम्बा होता है। इसके पत्ते २, ३ फुट लम्बे, हरे रंग के चमकीले होते हैं। जिनके डंठल सख्त और लम्बे होते हैं। इसके फूल यदि पुरुष जाति के हों तो सफेद रंग के होते हैं और यदि स्त्री जाति के हो तो पीले होते हैं। इसकी जड़ में एक कन्द निकलता है। यह बंगाल और बिहार में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—कन्द, काण्ड एवं पत्र

मात्रा—कन्द चूर्ण १/२ से १ तोला; स्वरस; १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर रस, गुरु, स्निग्धगुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक होता है। वातपित्त शामक, अनुलोमक, शूलप्रशमक, रक्तशोधक मूत्रल, बलवर्धक है। इसका प्रयोग वातव्याधि प्रदर रोग, अर्श, शोथ, रक्तपित्त, ग्रहणी पाण्डु में किया जाता है।

आधुनिक मत—इसके कन्द में पोटाशियम ऑक्जलेट, चूना तथा स्टार्च होता है।

कर्नल चोपड़ा ने बताया है कि इसके पत्ते रक्तस्राव रोधक एवं संकोचक होते हैं। अर्श, शोथ एवं सन्धिवात में लाभ करता है।

इसके पत्तों को या कन्द को गर्म कर सन्धिवात, आमवात आदि स्थानों पर बांधने से शोथ एवं शूल दूर हो जाती है। इसका स्वरस कर्णशूल, कर्णस्राव में लाभ करता है।

२४. वच

आयुर्वेदीय पर्याय—वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका, लोमशा।

यूनानी—अगरे तुर्की।

अंग्रेजी—Sweetflag. **लैटिन**—*Acoras Clammus*

विवरण—इस का पौधा ३ से ४ हाथ ऊंचा होता है। जिस में ईख के जैसे हरे, चमकीले, नोकदार, लम्बे पत्ते लगते हैं। इस पौधे में सुगंध आती रहती है। विशेषकर जड़ में यह गंध अधिक होती है। इसकी जड़ दूसरे साधारण पौधों की तरह सीधी नहीं होती बल्कि बहुत सी शाखाओं में चारों तरफ को फैली हुई

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रहती है। जड़ की मोटाई हाथ की मध्यमा उंगली के समान होती है। इसमें गाँठें होती हैं जिसमें रोम लगे रहते हैं।

वच आसाम, मणिपुर, नागा लैंड आदि प्रदेश में जहाँ पानी की अधिकता हो वहाँ पैदा होती है। इसकी प्रायः दो जातियाँ बताई जाती हैं—घोड़ा वच और दूसरी खुरासानी वच। खुरासानी वच सफेद रंग लिए होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़।

मात्रा- १ से २ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कटुतिक्त रस, लघु तीक्ष्ण सर गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक और मेध्य प्रभाव वाला है। यह वातकफ शामक एवं पित्त वर्धक होता है। यह मेध्य, वेदना स्थापन, संज्ञास्थापन, हृदयोत्तेजक, श्वासहर, कण्ठ्य, मूत्रजनन, स्वेदजनन एवं ज्वरघ्न है। इसका विशेष प्रयोग मानस रोग, उन्माद, अपस्मार आदि को दूर करता है। कष्टार्तव एवं कष्ट प्रसव में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—इसकी जड़ की छाल में १·५ से ३·५ प्रतिशत उड़नशील तैल होता है जिस में मुख्यतः Asarylaldehyde, Acorin, Eugenol, Asarone और Caffeine नामक तत्व पाये जाते हैं।

इन्डियन मेंड़िरिया मेंड़िका में वच को ज्वर और मृगी को दूर करने वाला कहा गया है। यह गठिया और पक्षाघात (Paralysis) में दिया जाता है। मूत्रल होने से यह पथरी और शर्करा में लाभ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ARISTOLOCHIACEAE FAMILY ईश्वर्यादि वर्ग

पत्र— सादा, एकान्तर (Alternate), अवृन्त, उपपत्ररहित

पुष्प— पुंकेशर (Androceum)—६

स्त्रीकेशर—नलिका के नीचे चक्राकार में लगे।

गर्भाशय-(Ovary)—६ भागों में विभक्त।

फल— निरस—६ खंडों वाला।

बीज— प्रत्येक खण्ड में अनेक बीज।

२५. ईश्वरमूल

आयुर्वेदीय पर्याय—ईश्वरी, नाकुली। **यूनानी नाम**—जरावन्द हिन्दी।

अंग्रेजी—Indian Birth wort. **लैटिन**—*Aristolochia Indica.*

विवरण—इसकी लता होती है जिसका जड़ के पास का भाग अधिक मोटा और ऊपर का काण्ड मुलायम और नलिकाकार होता है। इसके पत्ते २ से ४ इंच लम्बे १ इंच चौड़े और ३ से ५ सिराओं वाले होते हैं। यह सिराएं (veins) हथेली में फैली हुई लाइनों की तरह होती है। इसमें हरापन लिए हुए सफेद फूल निकलते हैं जो १ से ३ इंच लम्बे होते हैं। इसमें फल लगभग गोल होते हैं। जिसमें तिकोने बीज निकलते हैं। इसकी जड़ पीताभरक्त वर्ण की होती हैं और इसमें तेज गन्ध होती है।

यह नेपाल, बंगाल, सिलोन और समुद्र के किनारों पर पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़ और पत्ते।

मात्रा—जड़ का चूर्ण ५ से १० रत्ती, रस पत्तों का १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—यह रस म कटु, तिक्त, कषाय, गुण में लघु रूक्ष, तीक्ष्ण, वीर्य में उष्ण और विपाक में कटु है। यह विशेष कर कफ वात शामक है। इसका स्थानिक बाह्य प्रयोग व्रण शोधक, शोथ एवं वेदना दूर करता है। यह दीपन, अनुलोमन, संग्राही, कृमिघ्न एवं शूल प्रशमन है। हृदयोत्तेजक, शोथहर एवं रक्त शोधक है। कफ निःसारक. गर्भाशय संकोचक, मूत्रल और स्वेदजनन है। यह ज्वर एवं विषम ज्वर को भी दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसकी जड़ में एक उड़नशील तैल, रंजक द्रव्य और एक क्षार तत्व पाये गए हैं।

डा० नाड़कर्नी का कहना है कि इसकी जड़ पुष्टाई करती, उत्तेजक, मासिक स्राव लाती और जोड़ों के रोगों को दूर करती है। इसकी जड़ सांप बिच्छु और दूसरे विषैले जानवरों के विष को दूर करने वाली है। हैजा और दस्तों में इसे काली मिर्च के साथ देते हैं। इसके पत्ते पाचक और ताकतवर होते हैं।

डा० चोपड़ा ने यह भी लिखा है कि यह खूनी दस्त, आंतों की दूसरी खराबी और पेट के अफारे को दूर करने के लिए काली मिर्च और सोंठ के साथ दी जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ASCLEPIADACEAE अर्कादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: क्षुप अथवा लता

पत्र— अभिमुख, अखण्ड, मोटे, उपपत्र रहित

पुष्प— पुष्प बाह्य कोश एवं पुष्प आभ्यन्तर कोश के दल ५-५
पुंकेशर—५

फल— बीज युक्त एवं रोम युक्त

विशेष—इस वर्ग के हरे द्रव्यों को तोड़ने से दूध निकलना है।

२६. अनन्तमूल

आयुर्वेदीय पर्याय—(कृष्ण सारिवा)—सारिवा, श्यामा, गोपी, गोपवधू।
(श्वेत सारिवा)—धवला, सारिवा, गोपकन्या।

अंग्रेजी—Indian sarsaparilla.

लैटिन—(श्वेत) *Hemidesmus Indicus.*
(कृष्ण) *Cryptolepis Buchanani.*

विवरण—अनन्तमूल (श्वेत) की पतली-सी लता होती है जो ५-१५ फुट लम्बी होती है। इसके पत्ते अनार के पत्तों जैसे होते हैं। यह १ से ४ इंच लम्बे और १/४ से १$\frac{1}{2}$ इंच चौड़े होते हैं। इनके ऊपर के पृष्ठ पर सफेद रेखाएँ होती हैं और निचला पृष्ठ हलके रंग का होता है। पुष्प गुच्छों में निकलते हैं जो नीलाभ हरे होते हैं। शृंगाकार फल होते हैं। जो एक साथ दो २ होते हैं इनके भीतर रुई निकलती है। इसकी जड़ तने की तरह ही ऊपर से लाल रंग की और भीतर से सफेद होती है।

काली अनन्तमूल का रंग गहरा काला होता है। इसके पत्ते जामुन के पत्तों जैसे होते हैं और तोड़ने से दूध निकलता है।

अनन्तमूल विशेषकर बिहार, बंगाल, बम्बई, लंका में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल।

मात्रा—फाण्ट ५-१० तोला, कल्क ३-६ माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—मधुर तिक्त रस, गुरूस्निग्धगुण, शीतवीर्य एवं मधुर विपाक है। यह त्रिदोषशामक होता है। यह रेचन, दीपन, पाचन, अनुलोमन तथा स्तम्भन होता है। रक्तशोधक, शोथहर है। कण्डू-कुष्ठ-ज्वर का नाश करता है। श्वास-कास-विष नाशक है। प्रदर, अतिसार, रक्तपित्तनाशक है। दाह में एवं शोथ में इसका लेप किया जाता है। यह शुक्रल होता है।

आधुनिक मत—रासायनिक विश्लेषण करने पर विदित हुआ कि इसमें कौमारिन (Coumarine) होता है, दूसरा हेमिड़ेस्मिन (Hemidesmine) होता है। स्माइलैस्परिक एसिड (Smilaspericacid) होता है।

कर्नल चोपड़ा इसे पोषक मानते हैं। यह रक्तशोधक है। उपदंश, गठिया में लाभ करता है।

डा० क्षौरी ने रसायन, स्वेदक, मूत्रल एवं रेचक बताया है और बताया है कि सारसापेरिला के स्थान पर प्रयोग कर सकते हैं।

यह क्षुधा वर्धक भी होता, ऐसा पाया गया है।

२७. गुड़मार

Gymnema Sylvestre

विवरण—इसकी लता कोमल, लम्बी, अनेक शाखाओं वाली एवं रोमश होती है। पत्ते रोमश, अण्डाकार, अभिमुख होते हैं। इसके फूल पीले रंग के होते हैं जो शिखर के स्वरूप के तथा गुच्छों में होते हैं। १$\frac{1}{2}$-२ इंच लम्बे भाले की शक्ल के फूल लगते हैं। $\frac{1}{2}$ इंच लम्बे, चपटे, पक्षसहित बीज होते हैं। यह कोंकण, त्रावणकोर, गोवा और मध्यभारत में पैदा होता है। विन्ध्य प्रदेश के वनांचलों में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—पत्र-मूल-बीज।

मात्रा—पत्र १-२ माशा, बीजचूर्ण १-३ माशा।

गुणकर्म—आयुर्वेद के प्राचीन साहित्य में सम्भवतः इसका वर्णन कहीं पर नहीं आया किन्तु चिकित्सा में आज इस द्रव्य का प्रयोग खूब कराया जाता है। इसके पत्ते को चबाने से जिह्वा की रस जानने की शक्ति नष्ट हो जाती है। यह कफवात शामक है। दीपन, ग्राही और यकृदुत्तेजक है। हृदय को उत्तेजित करती और मूत्रल होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका विशेष प्रयोग मधुमेह रोग में किया जाता है। महस्कर और केस ने इस पर अनुसन्धान किया। इसके चूर्ण, क्वाथ, एक्सट्रेक्ट और इसमें पाए जाने वाले विशेष तत्व 'जिम्नेमिक एसिड' का प्रयोग खरगोश, मेंढक आदि पर किया और पाया कि रक्तगत शक्कर की मात्रा कम हो गई है।

ऐसा ख्याल किया जाता है कि यह द्रव्य सीधा शक्कर को कम न करके शरीर में उत्पन्न होने वाले इन्स्युलिन के निर्माण में सहायक होता है और इन्स्युलिन के द्वारा मधुमेह में लाभ होता है।

निश्चित रूप से यह कह पाना कि यह मधुमेह की अचूक औषध है, अभी वैज्ञानिक स्वीकार नहीं करते हैं। भविष्य के गर्भ में इसका फलाफल छिपा हुआ है जो अनुसन्धानों द्वारा जाना जा सकेगा।

आयुर्वेदज्ञों ने परीक्षण कर इसमें कषाय कटु रस, लघुरूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक बताया है।

२८. जीवन्ती

आयुर्वेदीय पर्याय—जीवन्ती, जीवनी, जीवा, मधुस्रावा, शाकश्रेष्ठा।

लैटिन—*Leptadenia Reticulata.*

विवरण—यह लता जाति की वनस्पति है जो वर्षा में उत्पन्न होती है। इसके पत्ते सफेद रंग, मांसल एवं हृदयाकार होते हैं। फूल नीले, सफेद रंग के होते हैं। इसमें सींग जैसी फली लगती हैं जो २-४ इंच लम्बी होती है। कच्ची फलियों का शाक बनाते हैं। इसके दो भेद होते हैं—जीवन्ती, जिसकी फली में सफेद दूध निकलता है और दूसरे स्वर्ण जीवन्ती जिसमें पीला दूध होता है। यह दक्षिण भारत में होती है।

प्रयोज्य अंग—मूल।

मात्रा—चूर्ण १-३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, लघु-स्निग्ध-गुण, शीतवीर्य एवं मधुर विपाक होता है। वातपित्तनाशक है। यह रसायन, बल्य, ग्राही एवं चक्षुष्य हैं। वीर्यवर्धक, कफनिःसारक एवं मूत्रल है।

इसका प्रयोग रक्तपित्त, कास, ग्रहणी, ज्वर, दाह, मूत्रकृच्छ, क्षय, शोष, यक्ष्मा में किया जाता है। नेत्रों के रोगों को दूर कर तेज बढ़ाती है।

आधुनिक वैज्ञानिकों का कहना है कि शुक्रक्षीणता द्वारा हुई शारीरिक दुर्बलता में जीवन्ती अच्छा कार्य करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

B

BERERIDAE FAMILY दारू हरिद्रादिवर्ग

स्वरूप —प्राय: वीरुध

पत्र —प्राय: सादे कभी २ संयुक्त

पुष्प —बाह्य कोश (Calyx) और आभ्यन्तर कोश (Corolla) के दल दो चक्रों में

बीजकोष—एक व अध:स्थित

फल —मांसल

२९. दारुहल्दी

आयुर्वेदीय पर्याय—दारुहरिद्रा, दार्वी, पर्जन्या, कालीयक यूनानी—दारहल्द
अंग्रेजी— Ba.berry लैटिन—*Berberis Aristosta*

विवरण—इसका वृक्ष १० से १५ फुट तक ऊंचा होता है और सदा हरा भरा रहता है। यह कांटेदार हलके भूरे रंग की मुलायम छाल वाला होता है। इसके पत्ते २-३ इंच लम्बे अण्डे की तरह के और कंगुरेदार होते हैं। इसमें फूल चमकीले, पीले रंग के आते हैं और फल अण्डे की तरह गोल गुच्छों में लगते हैं, यूनानी हकीम इसके फल को 'जरेशक' कहते हैं। इसकी लकड़ी दारहल्दी कही जाती है जो पीली होती है। दारहल्दी की छः जातियाँ वनस्पति विशेषज्ञों ने बतलाई हैं। इनका उत्पत्ति स्थान हिमालय है।

दारहल्दी को दस गुने पानी में उबालें ६ हिस्से पानी बाकी रहने पर उतारें उसी के बराबर बकरी का दूध मिलाकर मन्दी आंच पर औटाने से काला रंग लिए हुए भूरे रंग की, गोंद जैसी मुलायम पानी में घुलने वाली चाटन (लेह) जैसी चीज रसौंत कहलाती है इसे अरबी में 'हुजज' कहा जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऐसा ख्याल है कि रसोंत दूसरी जाति जिसे B. Lyoium(चित्रा कहते हैं) से बनाई जाती है।

मात्रा—जड़, जड़ की छाल; लकड़ी १ से ३ माशा, रसौंत ५ से १५ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—रस में कटुतिक्त, रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह नेत्ररोग; कर्णरोग एवं मुख रोगों को दूर करने वाला होता है। यह प्रमेह, विसर्प, विष विकार, गर्भाशय के रोग एवं ज्वर के लिए हितकारक है।

रसौंत का प्रयोग ज्वर के लिए बहुत किया जाता है। यह मलेरिया और तिल्ली के रोगों को ठीक करती है। इसकी पूरी मात्रा १५ रत्ती की देने पर कभी २ रोगी को पसीना आने के बाद अधिक प्यास; जी घबराना और कम-जोरी आने लगती है। खूनी बवासीर के लिए बहुत लाभदायक है। रसौंत का लेप सूजन मिटाता है।

आधुनिक मत—दारूहल्दी के छिलके एवं जड़ में एक तत्व 'बरबेराइन' मिलता है। जिसके गुणों में कहा गया है कि यह पीले रंग का कड़वा विष रहित उपक्षार है। यह आंतों पर उत्तेजक प्रभाव करता है, रक्त की नालियों को फैलाता और ओरियन्टल सोअर नामक चर्म रोग को दूर करता तथा मलेरिया के लिए हितकारक है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि इसका प्रयोग ज्वरों में करते हैं परन्तु यह विशेष उपयोगी सिद्ध नहीं हुई उनका कहना है कि इसे कोढ़, पीलिया; सांप काटने एवं गर्भावस्था की उलटी में भी देते हैं। इसका फल (जरेशक) बच्चों के लिए हल्का दस्तावर है।

बसु और कीर्तिकार के अनुसार रसौंत को आधे ड्राम की मात्रा में ज्वर दूर करने के लिए देते हैं।

डाक्टर देसाई का कहना है कि दारुहल्दी का कार्य सिनकोना की तरह है। अन्तर यह है कि इससे सिनकोना की तरह हानि नहीं होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

BIXINAE FAMILY तुवरकादि वर्ग

स्वरूप —प्रायः वृक्ष

पत्र —एकान्तर (Alternate)

पुष्प —बाह्यकोश (Calyx) आभ्यन्तर कोश (Corolla) के दल ४-५

पुंकेसर —(Androceuim) ५.

बीज कोष—अधःस्थित

३० चालमोगरा

आयुर्वेदीय पर्याय— कुष्ठवैरी, तुवरक यूनानी—वूज मोगरा

लैटिन—*Hydnocarpus Wightiana.*

विवरण—इसका पेड़ ४० से ५० फुट ऊँचा होता है। इसमें ४ से ६ इंच लम्बे और ३ या ४ इंच चौड़े लट्टू की तरह या भाले की तरह के पत्त होते हैं। यह पत्ते शरीफे के जैसे चिकने लेकिन चमड़े की तरह सख्त और किनारे दाँत जैसे होते हैं। इसमें सफेद रंग के फूल गुच्छों की शक्ल में होते हैं जिसमें कई पीले रंग के बदाम जैसे बीज निकलते हैं। यह बीज ही चालमोगरा के नाम से बिकते हैं और प्रयोग किए जाते हैं। यह ट्रावनकोर और लंका मे बहुत पैदा होता है।

मात्रा—चूर्ण १ माशा से ३ माशा तक; तैल ५ से १० बूंद।

आयुर्वेदिक मत—यह तिक्त, कटु, कषाय रस; लघु तीक्ष्ण, स्निग्ध गुण, उष्ण-वीर्य और कटु विपाक होता है। यह वातकफ शामक होता है। बाह्य प्रयोग में कुष्ठघ्न, कण्डूघ्न, जन्तुघ्न, व्रणशोधनव्रणरोपण और लेखन है। आन्तरिक प्रयोग में वेदनास्थापक वामक रेचक कृमिघ्न एवं प्रमेहघ्न है। यह आमवात, वातरक्तज रोगों को दूर करने वाला है।

आधुनिक मत— सन् १८५६ ई० में पहले पहल यूरोप के वैज्ञानिकों ने इसके तैल का प्रयोग किया और फिर १८६८ ई० में ब्रिटिश फरमकोपिया के अन्दर दर्ज किया गया। इन बीजों में ४४ प्रतिशत स्थिर तैल होता है जिस में निम्न द्रव्य पाए जाते हैं—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(१) चाल मोगरिक एसिड़ ।
(२) हिड़नोकार्पिक एसिड़ ।
(३) पामिटिक एसिड़ ।

डाक्टर नाड़करनी ने लिखा है कि चालमोगरा का तैल कोढ़ और वातरक्त (Gout.) के लिए बहुत फायदा करता है। गले की गाँठें, चर्म रोग और जोड़ों के दर्द को दूर करता है। क्षय के रोग में भी इसके पीने और छाती में मालिश से बहुत फायदा होता है। दाद पर अगर १ महिने तक लगातार इसका तैल लगाया जाऐ तो पुराने दाद भी चले जाते हैं।

चालमोगरा का तैल पचने में भारी होता है। इस लिए जिस का हाजमा कमजोर हो उसे नहीं देना चाहिए। इसको अधिक मात्रा में देने से जी मिचलाना, उलटी, चक्कर आते हैं। उस हालत में इसका देना बन्द कर देना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

BURSERACEAE FAMILY (गुग्गुल्वादि वर्ग)

स्वरूप—प्राय: वृक्ष

पत्र— एकान्तर (Alternate) संयुक्त (Compound)

पुष्प— बाह्यकोष (Calyx) और आभ्यन्तर कोष (Corolla) में दल (Sepeles) ३-५, स्थायी

(क) पुंकेशर-दल(—Sepels) के बराबर या दूने

(ख) स्त्रीकेशर—(Gynoceum) १

(ग) गर्भाशय—उर्ध्वस्थित

फल— कठिन

इस वर्ग के वृक्षों से सुगन्धित निर्यास निकलता है जो औषध या धूप के काम आता है।

३१. गूगल

आयुर्वेदीय पर्याय—गुग्गुल, देवधूप, महिषाक्ष, कौशिक **यूनानी**—अफलेतन
अंग्रेजी—Indian Dellium **लैटिन**—*Balsamodendran Mukul*

विवरण— इसका पेड़ छोटा झाड़दार होता है। इसकी छाल हरापन लिए हुए पीली होती है और उस पर से कागज जैसे पतले चमकीले लम्बे परत उतरते हैं। इसके पत्ते अण्डे की शक्ल के और कंगूरेदार होते हैं। यह छोटी-बड़ी शाखाओं के आखिर में लगे रहते है। इसमें २-३ फूल एक साथ आते हैं और फल पकने पर लाल रंग के होते हैं।

इस पेड़ के गोंद को गूगल कहा जाता है। भाव प्रकाश ने रंग के अनुसार यह ५ तरह का बतलाया है, जिसमें सुनहरी रंग का बढ़िया कहा है।

यह सिंध, मारवाड़, काठियावाड़ में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—गोंद।

मात्रा—१ माशा से १ $\frac{1}{2}$ माशा तक।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त, कषाय और कटु रस युक्त, रूक्ष लघु, विशद गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह टूटी हुई हड्डी को जोड़ने वाली, पित्त-कारक, दस्तावर, वृष्य, सूक्ष्म, स्वर को उत्तम करने वाली, रसायन, अग्नि-दीपक, बलकारक, वात, कफ, व्रण, अपची, मेदोरोग, प्रमेह, पथरी, कुष्ठ, आमवात, बवासीर, गण्डमाला और कृमि रोगनाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नवीन गूगल बृंहण एवं पुराना लेखन गुण करता है।

आधुनिक मत—इसमें उड़नशील तैल, गोंद और रेजिन होते हैं। यह सिकुड़न करने वाली छूत नाशक, बलगम हटाने वाली, खून बढ़ाने वाली, साँप के काटने में फायदा करने वाली है।

डा० वामन गणेश देशाई का कहना है कि यह उत्तेजक, कीटाणु नाशक और कफनाशक है। यह कब्ज को हटाने वाली और भूख को बढ़ाने वाली है। गठिया, सुज़ाक और उपदंश में फायदा करती है। यह औरतों को महिना ठीक लाती और पीलिया रोग हटाती है। इसके लेप से जख्म साफ हो जाता और भर जाता है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि गूगल पेशाब अधिक लाने वाली, पसीना लाने वाली और खून के सफेद कणों को बढ़ाती है। यह आन्तरिक अंगों की सूजन को दूर करती है।

गूगल का खास प्रयोग दर्द दूर करने के लिए भी किया है। यह वायु के कारण होने वाले दर्दों को ठीक करती है।

३२. बोल

आयुर्वेदीय पर्याय—बोल, गंधरस, पिण्ड, गोपरस।

अंग्रेजी—Myrrh लैटिन—*Balsamodendron Myrrha.*

विवरण—इसका पेड गुग्गुल जैसा होता है। इस पेड़ में क्षत किया जाये तो एक निर्यास निकलता है जो बोल कहलाता है। इसके चिपकने वाले छोटे २ दाने होते हैं जो आपस में इकट्ठे हो जाते हैं। इनका रंग रक्ताभ पीत होता है। यह पहले अफ्रीका में ही होता था। अब अरब, फारस, श्याम में भी मिलता है।

प्रयोज्य अंग—निर्यास।

मात्रा—५-१० रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त-कटु कषाय रस, रूक्ष, लघु गुण, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाक है। त्रिदोष नाशक है। दीपन पाचन, अनुलोमन, कृमिनाशक है। रक्तशोधक, गर्भाशय शोधक है। मेध्य है। ज्वर, दाह, मृगी, एवं कुष्ठ रोगों में लाभ करता है। सन्धिवात, वातरक्त, गृध्रसी में इसका लेप किया जाता है।

आधुनिक मत—इसमें उड़नशील तैल होता है। जिसे मिर्रोल कहते हैं। इसमें कैल्शियम फास्टफेट और कार्बोनेट होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

BORAGINACEAE FAMILY श्लेष्मान्तक वर्ग

स्वरूप—प्रायः वृक्ष, शाख खुरदरी

पत्र—एकान्तर (Alternate) अखंड, मोटे, प्रायः लोमयुक्त, प्रायः उपपत्र रहित

पुष्प—बाह्यकोष (Clayx) आभ्यन्तरकोष (Corolla) ४-८ पुंकेशर—४-८

फल— बीज १-४

३३. लिसोड़ा

आयुर्वेदीय पर्याय—श्लेषमान्तक, बहुवार, पिच्छिल **यूनानी**—सपिस्ता

अंग्रेजी— Large sebestenplum. **लैटिन**—*Cordia Myxa.*

विवरण—इसका पेड़ ३०-४० फुट ऊँचा होता है। जिसका तना टेढ़ा-सा और छाल धूमल रंग की होती है। इसका पत्ता ३ से ५ इंच लम्बा और ३ से ५ धारियों वाला होता है। पत्ता अपने डंठल की तरफ हृदय जैसी शक्ल का होता है। इसमें सफेद रंग के छोटे फूल आते हैं। फल गोल, सुपारी की तरह, गुच्छों में लगे हुए होते हैं। कच्चा फल हरा और पका पीलापन लिए होता है। इस फल का गूदा चिपचिपा होता है और अन्दर एक गुठली निकलती है। इसके फूल वसन्त में खिलते और फल गर्मी के आखिर में आते हैं। यह सारे भारत में, मिश्र, कोचीन और आस्ट्रेलिया में पैदा होता है। एक इसकी छोटी जाति होती है जिसका फल कुछ छोटा होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, फूल।

मात्रा—छाल का काढ़ा ५ से १० तोला, फल का शर्बत १ से २ तोला।

आयुर्वेदिक मत—रस मे मधुर, गुण में स्निग्ध, गुरू पिच्छिल, शीत वीर्य, मधुर विपाक एवं विषघ्न प्रभाव इसके फल में होता है। इसकी छाल का रस कषाय और तिक्त होता है तथा पाक में कटु होता है। इसका फल वात पित्त-शामक तथा छाल कफ पित्तशामक होती है। इसका फल स्नेहन, तृष्णानिग्रहण, रक्तपित्तशामक, कफ निःसारक, मूत्र-जनन, वृष्य एवं ज्वरघ्न है। इसका छालसंग्राही, कृमिघ्न, विष नाशक एवं त्वक् दोष नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह वातिक कास, प्रतिश्याय, मूत्रकृच्छ, एवं रक्तपित्त में प्रयोग होता है। इसकी छाल प्रवाहिका और कृमि रोग में लाभ करती है।

आधुनिक मत—इसकी छाल में २० प्रतिशत टैनिन प्राप्त होती है। डा० आर० एम० क्षीरी ने लिखा है कि इसका फल खाँसी, मूत्रकृच्छ, बहुमूत्रता एवं पित्त विकारों को दूर करने वाला है। इसकी छाल शक्तिप्रद और दर्द हटाने वाली है। मुँह आने पर इसकी छाल के काढ़े से कुल्ले करते हैं।

जावा द्वीप के लोग इसे ताकत के लिए और बुखार को दूर करने के लिए प्रयोग करते हैं। इसके फल का गूदा दाद की बढ़िया दवा माना गया है। कर्नल चोपड़ा ने इसे तिल्ली के लिए भी हितकर लिखा है।

३४. गाजबाँ

आयुर्वेदीय पर्याय—गोजिह्वा यूनानी—लिसानुस्सौर

लैटिन—*Onosma Bracteatum.*

विवरण—इसका पौधा छोटा-सा होता है जिसमें पत्ते मोटे, माँस वाले, गाय की जीभ जैसी खुरदरे होते हैं और इन पर साबूदाने की तरह छोटे २ निशान होते हैं। इसमें फूल गुच्छों में लगते हैं जिनका रंग नीला होता है और जो पुराने होने पर लाल हो जाते हैं। इसके पत्तों में पानी में भिगोने पर लुआब पाया जाता है। गाजबाँ के पौधे हिमालय प्रदेश में काश्मीर से कुमाऊँ तक, ईरान तथा अफगानिस्तान में मिलते हैं।

प्रयोज्य अंग—पत्ते और फूल।

मात्रा—पत्ते ४-६ माशा और फूल ३-६ माशा।

आधुनिक मत—पत्तियों में चिपचिपा पदार्थ बहुत होता है। साथ ही साथ सोडियम, पोटाशियम, कैलशियम, मैगनीशियम और आयरन के नमक होते हैं।

कर्नल चोपड़ा इसे एक शक्तिसाली वस्तु मानते हैं। इसे गठिया, गर्मी और कोढ़ में लाभप्रद बताया है।

डा० देसाई इसे मलेरिया, हृदय की धड़कन और मूत्र कष्टता में लाभकर मानते हैं। उपदंश और सुजाक के कारण पैदा हुई जोड़ों की सूजन को दूर करने के लिए इसे चोपचीनी के साथ देने को कहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

BIGNONIACEAE FAMILY श्योनाकादि वर्ग

स्वरूप—वृक्ष

पत्र —अभिमुख (Opposite), अखंड, संयुक्त ।

पुष्प —पुष्प बाह्यकोष (Calyx)–५ दल घंटाकार

पुष्प आभ्यन्तरकोष—(Corolla)–५ दल नीचे से जुड़े हुए ।

पुंकेसर—(Androceum)–४ (दो छोटे, दो बड़े)

फल —लम्बी, चपटी फली ।

बीज —चपटे, पतले और पंखयुक्त ।

३५. अरलू (सोनापाठा)

आयुर्वेदीय पर्याय—श्योनाक, शोषण, टुण्टुक, शुकनास, दीर्घवृन्त ।

लैटिन—*Oroxylum Indicum.*

विवरण—इसका वृक्ष २५ से ३० फुट तक ऊँचा होता है इसका पत्ता संयुक्त होता है जो २ से ४ फुट लम्बा होता है और पक्षाकार होता है। एक पत्ते में कई पत्तियां लगती हैं जो ५ इंच लम्बी और ३ से ४ इंच चौड़ी होती है। गहरे कटे किनारे और कंगूरेदार होते हैं। ८ से १० इंच लम्बे डंठल पर अगले हिस्से में लाल बैंगनी रंग के फूल लगते हैं जो वर्षा में आते हैं। इसकी फली तलवार की तरह दो-तीन फुट लम्बी होती है। इसमें सेम के जैसे बीज निकलते हैं जिन पर रूई लगी रहती है। भारत के सभी प्रदेशों में एवं लंका में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, जड़ व फली ।

मात्रा—१ से ३ माशा, स्वरस १ से २ तोला ।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, शीत वीर्य, कटु विपाक होता है। यह त्रिदोष नाशक है। दीपन, पाचन, रोचन, कृमिघ्न एवं स्तम्भन होता है। शोथ नाशक, वेदनास्थापक, मूत्रल, ज्वर नाशक है। कास, श्वास, अतिसार, प्रवाहिका, बस्तिशोथ में लाभ करता है। सन्निपात ज्वर में लाभ होता है। इसके क्वाथ से स्नान करने पर आमवात एवं शोथ दूर हो जाते है। यह दशमूल का एक द्रव्य है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसमें एक ग्लुकोसाइड ओरोक्सिलिन (Oroxylin), एक तत्व पेक्टिन (Pectin) और क्रिटिक एसिड के अतिरिक्त फेट और वेक्स भी होता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि इसकी छाल द्वारा तिल तैल पका कर कान में डालने से पूय बहना बन्द हो जाता है। इसकी छाल का चूर्ण या क्वाथ अफीम के साथ मिलाकर प्रयोग कराया जाए तो डोवर्स पाउडर जितना पसीना लाता है। इसकी छाल के काढ़े से स्नान करना वात रोगियों के लिए हितकारक है।

जङ्गलनी जड़ी बूटी (गुजराती) पुस्तक में बताया गया है कि इसकी लकड़ी का एक प्याला बनवा लिया जाता है और उसमें पानी भर रात भर रख देते हैं। उस पानी को सवेरे पीने से हर तरह का विषम ज्वर दूर हो जाता है।

३६. पाटल

आयुर्वेदीय पर्याय—पाटली, पाटला, अमोघा, कृष्णवृन्ता, ताम्रपुष्पी, अम्बुवासिनी।

लैटिन—*Stereospermum Suaveolens.*

विवरण—इसके वृक्ष ३० से ६० फुट तक ऊँचे होते हैं जिसका तना धूसर होता है और उस पर काले दाग होते हैं। पत्ते अभिमुख एवं संयुक्त होते हैं। इसके फूल पीले, लाल रंग के या ताम्र वर्ण के होते हैं और सुगन्धित होते हैं। फली $1\frac{1}{2}$ फुट लम्बी होती है, इस पर रूएँ होते हैं और चार सिराएँ होती हैं। इनमें १२ से ६० तक बीज निकलते हैं। इसका एक भेद और भी होता है जिसका फूल सफेद रंग का होता है। यह बंगाल, बिहार एवं तराई के प्रान्तों में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—पुष्प, मूलत्वक्।

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, किंचित उष्ण होता है और विपाक कटु होता है। इसके पुष्प कषाय मधुर रस व शीत वीर्य होते हैं। त्रिदोष शामक है। रुचिवर्धक, ग्राही, शोथघ्न है। मूत्रल है। इसकी छाल अर्श, अतिसार, तृष्णा, कास, श्वास शोथ में प्रयोग की जाती है। इसके फूल शुक्रल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होते हैं, हृदय रोग, हिक्का नाशक होते है और ज्वर एवं दाह में लाभ करते हैं।

आधुनिक मत—इसके फूलों में अलब्युमिन, शर्करा, म्युसिलेज होता है। तथा मोम भी होता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है यह थकावट दूर करता है एवं मूत्रल होता है। ग्रहणी, ज्वर, काम, शोथ आदि में लाभ करता है। इसके फूल का चूर्ण शहद के साथ खाने से कठिन हिचकी भी मिट जाती है।

३७. रोहेड़ा

आयुर्वेदीय पर्याय—रोहितक, रोहिष, दाड़िमपुष्पक

लैटिन—*Tecomella undulata.*

विवरण—इसके पेड़ १५ से २० फुट ऊँचे होते हैं। इसके पत्ते एक डंठल में ४ से ८ जोड़ होते हैं और एक अग्रभाग में अकेला रहता है। नीचे के जोड़ों में पत्ते छोटे और ऊपर वाले बड़े होते हैं। इसमें छोटे २ फूलों के बड़े गुच्छे लगते हैं जो बिना डंठल के होते हैं और शाखाओं के अग्रभाग में लगे होते हैं। लगभग २ इंच लम्बी-पतली टेढ़ी सी फली लगती है जिसमें सपक्ष बीज निकलते हैं। यह राजपूताना, पंजाब, कच्छ आदि में होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल।

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा, क्वाथ ५ से १० तोला।

आयुर्वेदिक मत—कटु, तिक्त, कषाय रस, लघु-स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, कटु विपाक व भेदन प्रभाव होता है। कफ पित्त नाशक, दीपक, भेदक, कृमि-नाशक है। सारक एवं रक्तशोधक है। यह प्लीहा रोग, रक्त विकार, प्रमेह, मेद रोग, श्वेत प्रदर में उपयोगी है। कृमि रोग तथा नेत्र रोगों में लाभ करता है। व्रणों में इसका स्वरस लगाते हैं।

आधुनिक मत—इसमें दो तरह के पीले गोंद (Resins) स्टार्च, टैनिन और लवण पाए गए हैं।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि इसकी छाल रसायन, संकोचक व बल्य है। यकृत-प्लीहा वृद्धि एवं स्थूलता में प्रयोग करते हैं। यह दुर्बलता नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

C

CANNABINACAE FAMILY भांग वर्ग

स्वरूप—प्राय: क्षुप

पत्र --एकान्तर, उपपत्र सहित

पुष्प —गुच्छों में

फल —गोल, दानेदार

३८. भाँग

आयुर्वेदीय पर्याय—भाँग, मातुलानी, विजया, गञ्जा यूनानी—किनब

अंग्रेजी—Indian hemp लैटिन—*Cannabis Sativa*

विवरण—इसका पौधा हर साल पैदा होने वाला होता है जो आठ फुट तक ऊँचा होता है। इसकी शाखाएँ पतली और मुलायम होती हैं। इसके पत्ते नीम के पत्तों की तरह एक डंठल में तीन से सात तक लगे होते हैं। फूल गुच्छों में छोटे २ सफेद रंग के होते हैं। फल छोटे, गोल और दानेदार होते हैं। पौधे की राल युक्त फूल मंजरी को 'गाँजा' कहते हैं। शाखाओं और पत्तों पर चिपके हुए पदार्थ को 'चरस' कहा जाता है। यह हिन्दुस्तान, ईरान, ईराक और मिश्र में पैदा होती है।

प्रयोज्य अग - भाँग, गाँजा और चरस।

मात्रा—भांग १ से २ रत्ती, गाँजा $\frac{1}{2}$ से १ रत्ती, चरस $\frac{1}{4}$ रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु, तीक्ष्ण एवं रुक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होता है। इसका प्रभाव मादक होता है। यह वात कफ नाशक, दीपन, पाचन, रोचन, ग्राही और शूल प्रशमन है। मूत्र की मात्रा बढ़ाने वाली, शुक्र स्तम्भक और गर्भाशय संकोचक है। यह आरम्भिक अवस्था में सोमनस्य-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जनन, हृदय उत्तेजक, नाड़ी एवं श्वसन को तीव्र करने वाली है किन्तु बाद में प्रलापजनन एवं नाड़ी की गति को मन्द करती है। यह वेदना स्थापन है। बवासीर में इसका लेप और धूनी की जाती है। काली खाँसी, सांस, दस्त, पेचिश,पेट दर्द और संग्रहणी में लाभ करती है। इसका व्यवाई और विकाशी गुण शरीर की सभी धातुओं को और ओज का सुखाने वाले होते हैं।

आधुनिक मत—इसमें उड़नशील तैल, वसा, शर्करा, मोम और राल होते हैं। Potassium Nitrate और Cannobinane नामक क्षार तत्व पाया जाता है। डाक्टर आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि भाँग सुजाक और अग्नि मंदता में लाभ करती है। इसके पत्ते का क्वाथ विसर्प और वात नाड़ियों के दर्द को दूर करने के लिए उन स्थानों पर डाला जाता है। इसका लेप बवासीर के दर्द को और सिर दर्द को दूर करता है।

डा० डिमक ने लिखा है कि भाँग के ऊपर बहुत-से यूरोपियन डाक्टरों ने खोज की है। उनका कहना है कि डाक्टर ओशेनशी ने Tetanus(धनु स्तम्भ), Hydro-phobia (जल संत्रास), Rheumatism (आमवात), Convulsions of Children(बच्चों के आक्षेप)और Cholara(हैजा) में भाँग का अच्छा लाभ बताया है।

विष लक्षण—अधिक मात्रा में लेने से पहले पहल चक्कर, बिना सोचे बोलना, झुनझुनी, त्वचा में सुन्नता, पेशियों में दुर्बलता और बेहोशी हो जाती है। बेहोशी के बाद दूसरी अवस्था आती है जिसमें गहरी नींद आ जाती है। कभी २ सांस रुक जाने से मौत भी हो जाती है। विष के लक्षण होने पर आमाशय प्रच्छालन कर चिकनी चीजें देनी चाहिएँ। कुचले के सत्त का अन्तःक्षेप किया जाता है।

लगातार खाने से इसकी आदत पड़ जाती है जिससे भूख बन्द हो जाती है, नींद नहीं आती, स्मृति नाश होता है। कम्पन्न रहता है और पागलपन-सा हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CAPPARIDACEAE FAMILY वरूणादि वर्ग

स्वरूप— क्षुप अथवा वृक्ष

पत्र— एकाकी या संयुक्त, एकान्तर

पुष्प— पुष्प बाह्य कोश के दल—४

पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल—४

बीज कोश—अधःस्थ

३९. बरूना

आयुर्वेदीय पर्याय—वरुण, सेतु, कुमारक, तिक्तशाक।

अंग्रेजी —Three Leaved Caper. लैटिन—*Crataeva Religiosa.*

विवरण—इसके वृक्ष २५ से ३० फुट ऊँचे होते हैं जिसके तने की छाल का रंग धूसर होता है। एक डंठल में तीन-तीन पत्ते एक साथ लगे रहते हैं, प्रत्येक पत्ता अण्डाकार होता है और अगला हिस्सा नोकीला होता है। बसन्त में नीलाभ श्वेत रंग के सुगन्धित पुष्प आते हैं। फल नीम्बू के जैसे गोल होते हैं जिसमें छोटे २ बीज निकलते हैं। यह भारत में सर्वत्र पाया जाता है विशेषकर मध्य भारत, बंगाल, आसाम एवं मालाबार में होता है।

प्रयोज्य अंग —जड़, छाल, पत्ते।

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला, क्वाथ ५ से १० तोला।

आयुर्वेदिक मत—मधुर तिक्त कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य कटु-विपाक होता है। इसका प्रभाव भेदन होता है। यह वात कफ शामक एवं पित्त वर्धक होता हैं। दीपन, भेदन, कृमिघ्न है। रक्त शोधक, मूत्रल, ज्वरघ्न होता है।

यह अग्निमान्द्य, विबन्ध, शूल, गुल्म, गण्डमाला, अश्मरी, मूत्रकृच्छ, ज्वर, विद्रधि, रक्तज रोग एवं साधारण दुर्बलता में प्रयोग कराया जाता है।

व्रण शोथ, विद्रधि व गण्डमाला में इसकी छाल का लेप लगाने से लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत— इसकी छाल में सैपोनिन पाया जाता है। बल्य, मृदु-रेचक, अश्मरी नाशक है। क्षुधावर्धक, पित्तनिःसारक एवं मूत्र कारक होने से इसकी जड़ की छाल का काढ़ा मूत्र रोग एवं अश्मरी में प्रयोग कराया जाता है। शोथ पर इसके पत्तों का लेप लाभ करता है।

४०. हुलहुल

आयुर्वेदीय पर्याय—अजगन्धा, उग्रगन्धा, तिलपर्णी।

अंग्रेजी—DogMustard.

लैटिन—(सफेद फूल वाली) *Gynandropsis Pentaphylla.*
(पीले फूल वाली) *Cleome Viscosa.*

विवरण—इसका वर्षायु पौधा १ से ३ फुट तक होता है जिनके तने और शाखाओं पर रोम रहते हैं। इसके पत्ते के एक डंठल में कई पत्तियाँ होती हैं। पत्तियों को मसलने से तेज गन्ध आती है। फूल का रंग जाति पर निर्भर करता है, श्वेत या पित्त वर्ण के होते हैं। फली दो इंच लम्बी होती हैं, उनमें सरसों के जैसे काले रंग के बीज निकलते हैं। हुलहुल वर्षा में पैदा होती है और भारत के गर्म प्रदेशों में पाई जाती है।

प्रयोज्य अंग—बीज, पत्ते, जड़।

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा, स्वरस १/२ से १ तोला।

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, रूक्ष लघु तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक होती है। यह वातकफ शामक है। दीपन, पाचन, अनुलोमन, शूल-प्रशमन एवं कृमि नाशक है। यह स्वेद जनन एवं ज्वर नाशक है। यह विशेष रूप से गुल्म, उदर रोग, ज्वर, कृमि में लाभ करती है।

यदि यह ज्यादा प्रयोग कराई जाए तो पित्त प्रकुपित हो जाता है और रोग उत्पन्न करती है। उसमें पित्त शामक उपचार करना पड़ता है।

आधुनिक मत—डा० आर० एन० क्षीरी ने बताया है कि एक वायु शामक पदार्थ है। उदराध्मान, अतिसार एवं वृन्तकृमि नाशक है। इसके बीजों का क्वाथ क्षत रोपण एवं कीट नाशन के लिए उपयोगी है। कान के बहने में इसके पत्तों के रस में सैंधा नमक डाल कर बूंद २ डालते हैं। इसके पत्ते या बीज के लेप से त्वचा लाल हो जाती है एवं छाला पड़ जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CELASTRACEAE FAMILY ज्योतिष्मत्यादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: लता जाति

पत्र —एकान्तर क्वचित अभिमुख
एकाकी, उपपत्र प्राय: नहीं

पुष्प —पुष्प बाह्य कोश एवं पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४-५
पुंकेशर—३-५, दो कोशयुक्त, अण्डाकार या गोलाकार

४०. मालकांगनी

आयुर्वेदीय पर्याय—ज्योतिषमती, कटभी, परावतपदी, यूनानी—तैलान

अंग्रेजी—Staff tree लैटिन—*Celastrus Pannicclata*

विवरण—यह एक प्रकार की वृक्षारोही लता है जिसका तना सूत्रमय एवं मृदु होता है। इसके पत्ते अण्डाकार नोकीले और दन्तुधार होते हैं। गर्मियों में ३-४ अंगुल लम्बे डठंल पर गुच्छों में फूल लगते हैं जिनमें मीठी सी सुगंध आती है और वह रंग में नीलाभ पीत होता है। चने या मटर के जैसे गोल फल वर्षा में लगते हैं जो कच्चे रहने पर हरे रंग के और पक जाने पर पीले रंग के हो जाते हैं। इनमें तीन खण्ड होते हैं, हरेक खण्ड में एक तिकोना बीज निकलता है, जिसका रंग केसरीया होता है। इन फलों में से तैल निकलता है। यह भारत में पंजाब, काश्मीर आदि स्थानों पर होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज, तैल एवं पत्ते

मात्रा—बीज ५-१५ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, तीक्ष्ण स्निग्ध-सर गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक एवं प्रभाव में मेध्य होती है। यह वात कफ शामक है। वामक, अग्नि वर्धक होती है। यह बुद्धि एवं स्मृतिवर्धक है। इसके पत्तों का शाक प्रयोग में लाया जाए तो वह स्त्रियों के मासिक-स्राव को साफ करता है। यह वाजीकरण भी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसके बीजों में एक तरह का तिक्त तैल होता है। गोंद व टैनिन का कुछ भाग होता है। इसके बीजों का तैल दो प्रकार से निकालते हैं (१) कोल्हू में पीसकर—जिससे तैल का रंग पीला होता है। और (२) डिस्टिलेशन से—जिसमें तेल का रंग काला होता है। दूसरी विधि के तेल में 'क्रियोजोट' की मात्रा होता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि मालकंगनी के बीज रसायन, नाड़ियों को बलदायक एवं उत्तेजक होते हैं। अन्य सुगन्धित औषधियों के साथ यह आमवात, वातरक्त, वातव्याधि एवं कुष्ठ रोगों में प्रयोग किये जाते हैं। १ हिस्सा मालकंगनी का तेल और ७ भाग मक्खन मिलाकर पोमेटम बनाते हैं जो दिमाग के लिए ताकत देती है। इसका काले रंग का तैल बेरी २ के लिए उत्तम औषध है। तैल के प्रयोग से मूत्र की मात्रा बढ़ जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CHENOPODIACEAE FAMILY वास्तूकादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः क्षुप जाति के

पत्र —एकान्तर (Alternate) कभी २ अभिमुख, उपपत्र-रहित

पुष्प —छोटे, हरे रंग के

पुंकेशर—५

बीज कोष—अण्डाकार या गोलाकार, एक कोष्ठीय

४१. पालक

आयुर्वेदीय पर्याय—पलक्या, वास्तुकाकारा, छुरिका, चीरितच्छदा।

यूनानी नाम—स्पंज

अंग्रेजी—Spinage. लैटिन—*Spinasia OLeraceae.*

विवरण—पालक भारतवर्ष में पैदा होने वाला एक प्रसिद्ध शाक है। जिसका पौधा करीब एक फुट ऊंचा होता है। इसके पत्ते मोटे, मांसल और त्रिकोणाकृति के होते हैं। पत्तों के डंठल लम्बे २ होते हैं।

प्रयोज्य अंग—पत्ते।

आयुर्वेदिक मत—मधुर किञ्चित् कटु रस, शीत एवं गुरु गुण, शीतवीर्य एवं मधुर विपाक होता है। यह वातवर्धक एवं कफकारक होता है। भेदक, विष्टम्भी एवं विषघ्न होता है। यह श्वास, कास, मेद, पित्त एवं रक्त के रोगों को दूर करता है।

आधुनिक मत—पालक में एक तरह का क्षार पाया जाता है जो सोडा बाई कार्ब के समान कार्य करता है। इसमें बिटामिन सी, ए और आयरन होता है। यह खून को साफ करता है और बल देता है।

इसका हरा पौधा मूत्राशय की पथरी को दूर करता और जिगर की सूजन और पीलिया में लाभ करता है। कच्चे पालक को दही के साथ खाना बहुत लाभ करता है। इसके पत्तों को उबालकर गरमी के दर्द, गठिया और गर्मी की सूजन पर बांधते हैं। इसे ततैया के काटने के स्थान पर भी बांधते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४२. पोई

आयुर्वेदीय पर्याय—पोतकी, उपोदिका, मालवा, अमृत वल्लरी।

अंग्रेजी—Red Malabar Night Shade. लैटिन—*Basella Rubra.*

विवरण—यह एक लता जाति की वनस्पति है। जिसका रक्त वर्ण होता है। इसके पत्ते मोटे होते हैं और नए पत्तों का रंग हरा होता है जबकि पुराने पत्ते लाल निशानों से भरे होते हैं। इसमें गोल २ फल लगते हैं जो मटर के दाने के समान होते हैं। यह पकने पर काले रंग के हो जाते हैं और रसदार हो जाते हैं। तोड़ने पर इनमें लाल रंग का रस निकलता है। यह जलीय प्रान्त में ज्यादातर पाया जाता है। वर्षा एवं शिशिर में इसकी उत्पत्ति होती है।

प्रयोज्य अंग—विशेषकर पत्ते, पञ्चांग।

मात्रा—स्वरस $\frac{1}{2}$ से १ तोला।

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, गुरु-स्निग्ध, पिच्छिल गुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक होता है। यह वात पित्तशामक एवं कफवर्धक होता है। यह रुचिकारक, दाहशामक, अनुलोमन, रक्त पित्त शामक, मूत्रल एवं शुक्रल होता है। यह बृंहण एवं बल्य होता है।

विद्रधि, विस्फोट, शीतपित्त तथा अग्निदग्ध पर इसकी पत्तियों का लेप करते हैं।

आधुनिक मत—इसमें प्रचुर परिमाण में पिच्छिल द्रव्य एवं लौह पाया जाता है।

इसका प्रयोग मस्तिष्क दुर्बलता एवं अनिद्रा में किया जाता है।

४३. बथुआ

आयुर्वेदीय पर्याय—वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट्।

अंग्रेजी—Goose Foot. लैटिन—*Chenopodium Album.*

विवरण—इसका क्षुप १-३ फुट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते कटे हुए, स्थूल, स्निग्ध एवं हरे होते हैं। इसमें हरे रंग के छोटे २ फूल शीतकाल में लगते हैं। इनमें काले रंग के बीज निकलते हैं। यह गेहूँ के खेतों में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—पंचांग, बीज।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला, बीज चूर्ण ३ से ६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर रस, लघुस्निग्धगुण, शीतवीर्य एवं कटु विपाक है। यह त्रिदोषहर है। यह रेचन, दीपन, पाचन, अनुलोमन, पित्तसारक, कृमिनाशक है। मूत्रल, शुक्रल एवं वल्य है। ज्वर नाशक है।

रक्तपित्त, जीर्ण कास, श्वास, मूत्रकृच्छ, कामला, अर्श, विबन्ध, अग्निमांद्य में प्रयोग कराया जाता है।

आधुनिक मत—इसमें सुगन्धित तैल, खनिज द्रव्य विशेषकर पोटाश, एवं अल्ब्युमिनायड्ज़ होते हैं।

इसके पत्तों एवं बीजों का लेप शोथ एवं चर्म रोगों को दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

COMBRETACEAE FAMILY हरीतक्यादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: वृक्ष

पत्र —एकान्तर या अभिमुख, सादे (Simple), अखण्ड

पुष्प —छोटे, बाह्यकोष (Calyx) के दल ४, ५ नीचे जुड़े हुए

अभ्यान्तरकोष (Corolla) के दल ४, ५ अथवा सर्वथा नहीं

पुंकेसर—(Androceum) ४, ५ या ८, १०

गर्भाशय—(Overy)—अध:स्थ, एक खण्ड वाला

फल —अविदारो एवं एक बीज वाला

४४. अर्जुन

आयुर्वेदीय पर्याय—धवल, वीरवृक्ष; नदीसर्ज

अँग्रेजी—Arjuna लैटिन – *Terminalia Arjuna*

विवरण—इसके पेड़ ६०-८० फुट तक ऊँचे होते हैं जिनका तना सीधा होता है और छाल ऊपर से सफेद और चिकनी तथा भीतर से लाल रंग की होती है। पत्ता संयुक्त होता है और उसकी पत्तियाँ जिह्वाकार होती हैं यह पत्तियाँ १०-१५ जोड़ों में होती हैं और एक पत्ती शीर्ष भाग में होती है। फूल एक सफेद या पीले डंठल के चारों तरफ लगे रहते हैं। कमरख की शक्ल का छोटा फल होता है जिसमें ५-७ नोकदार हिस्से होते हैं। यह हिमालय की तराई, बंगाल, बिहार, मध्य प्रदेश एवं वर्मा में प्राप्त होता है।

प्रयोज्य अंग— छाल

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा, क्वाथ, ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत—कषाय रस, लघु रुक्ष गुण, शीत वीर्य एवं कटु विपाक होता है, इसका प्रभाव हृद्य है। यह पित्तकफ शामक, स्तम्भन; हृद्य, ज्वरघ्न होता है. यह रक्तातिसार; रक्तार्श; शोथ, हृदय रोग; प्रमेह, पूयमेह,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तप्रदर एवं मेद रोग में प्रयोग किया जाता है। यह जीर्ण ज्वर में उपयोगी होता है। इसकी छाल का चूर्ण व्रण का रोपण करता है। रक्त के बहाव को बन्द करता है।

आधुनिक मत—इसकी छाल में कैल्शियम कार्बोनेट ३४% होता है। टेनिनि होती है। अल्युमिनियम, मैंगनीशियम होता है।

यह हृदय का पोषक है, जिससे हृदय की पेशी में ताकत आती है। हृदय की धड़कन मजबूत होती हैं और गिनती भी कम होती है। इससे छोटी रक्तवाहिनियों में सिकुड़न होती है जिससे रक्तभार बढ़ता है। इससे हृदय में उत्तेजना होती है और शक्तिशाली भी होता है।

३९. बहेड़ा

आयुर्वेदीय पर्याय—विभीतक, अक्ष, कर्षफल, भूतवास यूनानी—बलीलज

अंग्रेजी—Bedda Nuts लैटिन—*Terminalia Belerica*

विवरण—इसका पेड़ लगभग ५० से १०० फीट ऊँचा होता है। जो सीधा लम्बा और गोल होता है। इसकी छाल आधा इंच मोटी धुंधले सफेद रंग की और ऊबड़-खाबड़ रहती है, इसके पत्ते बड़ के पत्तों से मिलते-जुलते ३ से ६ इंच लम्बे होते हैं। फूल छोटे, पीले रंग के होते हैं जो गर्मियों में आते हैं। इसका फल गोलाई लिए हुए धुंधले रंग का होता है। फल शीतकाल में आते हैं। यह प्रायः सारे भारत में खास कर पहाड़ी प्रान्तों में और बर्मा में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—फल

मात्रा—१ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—विभीतक कषाय रस; रूक्ष एवं लघु गुण; उष्ण वीर्य और मधुर विपाक होता हैं। यह त्रिदोष नाशक है। विशेष कर कफ का शमन करता है। इसका बाहरी लेप शोथ एवं दर्द को दूर करता है और रक्त स्तम्भन है त्वचा का रंग काला करता है।

बहेड़ा दीपन, अनुलोमन और कृमिघ्न है। यह तृष्णानिग्रहण एवं छर्दि निग्रहण है। ज्वरघ्न है। इसका आधा पका फल हलका दस्तावर और पका हुआ सूखा फल संग्राही होता है। यह चक्षुष्य है और धातुवर्धक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसकी माज्जा मादक है; वेदनास्थापन एवं वाजीकरण होती है।

आधुनिक मत—इसके फल में गैलोटैनिक एसिड; राल और एक रंगने वाला द्रव्य पाया गया है। जिसके बीजों में हरियाली लिए हुए पीले रंग का तेल २५% पाया जाता है।

इसे ताकतवर, विषैला और संकोचक कहा गया है। बुखार हटाने वाला, बवासीर, सूजन, अतिसार, कोढ़, पित्त के विकार दूर करता है। प्लीहा वृद्धि को दूर करता है।

डा० क्षोरी का कहना है कि इसे घी में भून कर चूसने से गल के घाव अच्छे हो जाते हैं। कफ रोग और आवाज बैठ जाने पर इसका प्रयोग लाभ करता है।

४६. हरड़

आयुर्वेदीय पर्याय—हरीतकी, अभया, अमृता, शिवा, **यूनानी**—हलीलज **अंग्रेजी**—Chebulic Myrobalan **लैटिन**—*Terminalia Chebula*

विवरण—हरड़ का पेड़ ८० से १०० फीट ऊँचा होता है। जिसका तना मजबूत और सख्त होता है। इसमें ३ से ८ इंच लम्बे २ से ४ इंच चौड़े पत्ते होते हैं जो नोकीले और ६ से ८ जोड़ी धारियों वाले होते हैं। बसन्त में इसमें फूल आते हैं और सर्दियों में मंजरी आती है जिसमें तेज गन्ध होती है और कातिक में फल दीख पड़ते हैं और बैशाख में फल काम के योग्य हो जाते हैं। यह फल १ से १॥ इंच लम्बे होते हैं जिसमें रेखाएँ होती हैं। यह फल कच्चे रहने पर हरे और पकने पर पीले धुंधले रंग के होते हैं। इनमें एक गुठली निकलती है। यह भारत में सभी तरफ पहाड़ी प्रदेशों में ५ हजार फुट की ऊँचाई पर होते हैं।

प्रयोज्य अंग—फल

मात्रा—रेचनार्थ ३ से ६ माशा, रसायनार्थ १ माशा,

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेद में हरीतकी सर्व प्रसिद्ध द्रव्य है। शास्त्रों में इसकी सात जातियों का वर्णन किया है जिसका नाम एवं रूप आदि निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट हो रहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाति	स्वरूप	प्रयोग	उत्पत्ति स्थान
१. विजया	अलाबुवृत्ता	सर्वरोग नाशक	विन्ध्य
२. रोहिणी	वृत्त	व्रणरोपण	झांसी
३. पूतना	सूक्ष्म अस्थिमय	प्रलेपनार्थ	सिन्ध
४. अमृता	मांसल	शोधक	मध्य प्रदेश
५. अभया	पंचरेखा युक्त	नेत्र रोग नाशक	चम्पारन
६. जीवन्ती	स्वर्णवर्ण	सर्व रोग नाशक	सोराष्ट्र
७. चेतकी	त्रिरेखा युक्त	रेचनार्थ	हिमालय

हरीतकी के गुण कर्म बताते हुए कहा गया है कि यह पांच रस वाली, लवण रहित होती है। इनमें कषाय रस प्रधान होता है। रूक्ष एवं लघु गुण उष्ण वीर्य, मधुर विपाक होती है। प्रभाव त्रिदोष नाशक है। विशेष कर वातशामक है।

हरीतकी का बाह्य लेप सूजन एवं दर्द को दूर करता है। व्रण को साफ करता एवं भरता है। मुंह और गले के रोगों में इसके काढ़े के कुल्ले किये जाते हैं।

हरीतकी बल्य, मेध्य, चक्षुष्य, दीपन, पाचन, अनुलोमन; मृदुरेचन, कृमिघ्न, हृद्य, शोणितस्थापन, कफघ्न, वृष्य, मूत्रल, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न एवं रसायन है।

आधुनिक मत—रासायनिक विश्लेषण करने पर इसमें चेबुलिनिक एसिड निकलता है जो जल में उबालने पर टैनिक एसिड और गैलिक एसिड में बंट जाता है। टैनिक एसिड ४५% होता है। डा० आर० एन० खोरी का कहना है कि हरड़ दस्तावर, कषाय रस और रसायन हैं। डा० अन्सली ने लिखा है कि यह मुख और कण्ठ की श्लेष्मधरा कला के जख्म को दूर करती है। डिजीजेज आफ बंगाल में इसे आमातिसार और रक्तातिसार के लिए लाभदायक कहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

COMPOSITAE FAMILY भृंगराजादि वर्ग

पत्र —एकान्तर (Alternate), कहीं २ अभिमुख (Opposite) उपपत्ररहित

पुष्प —स्वरूप में कंदुकाकार या प्यालाकार

(क) आभ्यन्तर कोष–(Corolla) में दल ४-५

(ख) पुंकेसर–(Androceum) ४-५

(ग) स्त्रीकेसर—(Gynoceum) १

फल —शुष्क, अविदारी

बीज —लम्बे, पतली त्वचा वाले

४७. अकरकरा

आयुर्वेदीय पर्याय—आकारकरभः, अकल्लक यूनानी—आकरकरहा

अंग्रेजी—Pellitory. लैटिन—*Anacyclus Pyrethrum.*

विवरण— इसके छोटे २ पौधे बरसात में पैदा होते हैं। इसके तने पर दूर दूर पर गांठे होती हैं और रूऐंदार धुंधले रंग की छाल होती है। इसमें पतले कंगूरेदार १ से २ इंच तक लम्बे पत्ते लगते हैं। डाली के ऊपर गेन्दा के फूल की तरह फूल निकलता है जिस की पंखड़ियाँ सफेद गुलाबी और बीच में पीले रंग की होती हैं। फूल गर्मियों में आते हैं। इस में चपटे और लम्बे फल लगते हैं। इसकी जड़ २ इंच से ४ इंच तक लम्बी और आधे से पौन इंच तक मोटी वजनदार होती है। जड़ की छाल मोटी, भूरी और झुर्रीदार होती है। अन्य वनस्पतियों के गुण १ वर्ष में खत्म हो जाया करते हैं परन्तु इस की जड़ में ७ वर्ष तक ज्यों के त्यो गुण पाए जाते हैं।

प्राचीन चरक आदि आयुर्वेदिक संहिताओं में इस का वर्णन नहीं मिलता। अतः अनुमान है कि भाव प्रकाश आदि ने यूनानी हकीमों से इसका ज्ञान प्राप्त किया। यह अफ्रीका, अरब और सीरिया में पैदा होता है, भारत के बंगाल प्रान्त में होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—जड़।

मात्रा—४ से ८ रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—कटुरस, रूक्ष एवं तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाक है। कफवातशामक; नाड़ियों के लिए बल्य और उत्तेजक, लालाप्रसेकजनन, तीव्र उत्तेजक, रक्तशोधक, शोथहर, कफघ्न कण्ठ्य और वाजीकरण है। यह प्रमेह नाशक है।

इसका बाह्य प्रयोग उत्तेजक, वेदनास्थापन शोथहर और जन्तुघ्न है।

आधुनिक मत—इसमें एक उड़नशील तैल तथा पाइरेथ्रीन (Pyrethrin) नामक एल्कलाइड पाया जाता है। इस में रेजिन या राल जैसा तत्व पाया जाता है।

इसके प्रयोग से जलन पैदा होती है, लालास्राव अधिक निकलता है, मज्जा-तन्तुओं को ताकत देता है, कामोत्तेजक और वातनाशक है।

इससे टिंचर आफ पाइरीथ्रम बनाया जाता है जो दांतों के दर्द, गढ़िया, अपस्मार, पक्षाघात, तोतलापन को दूर करता है।

४८ अफसन्तीन

अंग्रेजी—Mugwort **लैटिन**—*Artemisia Absinthium*

विवरण—इसका छोटा-सा पौधा होता है। जिसका तना सीधा और शाखाओं वाला होता है। शाखाएँ मुलायम और सफेद रोमयुक्त होती हैं और बहुत सी पत्तियों से ढकी रहती हैं। इसके पत्ते १ से २ इंच लम्बे सफेद और सफेद रूंटे वाले होते हैं। पीले रंग के छोटे फूल आते हैं जिन में बीज निकलते हैं। इस पौधे में तेज गन्ध आती है और बहुत तीखा स्वाद होता है। यह अफ्रीका, अमेरिका, साइबेरिया, खुरासान, नेपाल और भारत में काश्मीर में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग।

मात्रा—२ से ४ माशे।

डा० नाड़कर्णी ने लिखा है कि यह बुखार, अजीर्ण को दूर करती, पसीना लाती और कीड़ों का नाश करती है। यह दिमाग को ताकत देती है। छोटे बच्चों को चेचक में इसका काढ़ा दिया जाता है। यह मासिकस्राव को साफ करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्नल कीर्तिकार और बसु का कहना है कि यह पाचन क्रिया की कमजोरी और कृमि रोगों को दूर करती और विषम ज्वरों पर अच्छा काम करती है।

आधुनिक चिकित्सक "टिंचर एब्सिन्थिल" और "वाइनम एरोमेटिकम एब्सिन्थियम" नामक दो योग प्रयोग में लाते हैं जो अफसन्तीन से बनाए जाते हैं।

४९. आयापान

Eupatorinm Ayapaue

विवरण—इस का क्षुप २-४ फुट तक ऊँचा होता है। इस की शाखाएं सादी, लाल रंग की और किञ्चित रोमश होती हैं इस के पत्ते लाल रंग के मुलायम होते हैं। इन में तीन स्पष्ट सिराएं होती हैं। अगर पत्तों को मसला जाए तो तेज गन्ध निकलती है। इस में बैंगनी रंग के फूल लगते हैं। यह बंगाल में ज्यादा होता है, वैसे इसका मूल निवास अमेरिका कहा जाता है।

प्रयोज्य अङ्ग—पञ्चांग।

मात्रा—स्वरस २-४ तोला, चूर्ण २-४ माशा।

गुण-कर्म—आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थों में इस का कहीं वर्णन उपलब्ध नहीं होता। इस को उष्ण पदार्थ माना जाता है, यह कफपित्त शामक होता है। वामक एवं रेचक है। कफनिःसारक है। हृदय को उत्तेजित करता एवं रक्त को शुद्ध करता है। यह स्वेदजनन एवं विषघ्न है।

इसके रस का सेवन करने से रक्तातिसार, रक्तार्श, रक्तप्रदर एवं अन्य कहीं से भी बहने वाला रक्त बन्द हो जाता है। इसका लेप व्रणशोधक, व्रणरोपक एवं रक्तरोधक होता है।

इस में एक सुगन्धित उड़नशील तैल एवं आयापानिन नामक एक स्फटिकीय तत्व होता है। इनके अतिरिक्त प्रचुर कषाय द्रव्य होता है।

५०. ककरौंधा

आयुर्वेदीय पर्याय—कुकुन्दर **यूनानी**—करबसें रूमी
अंग्रेजी—Blume. **लैटिन**—*Blumealacera.*

विवरण—इसका पौधा १ से २ फुट ऊँचा होता है जिसके पत्ते कासनी के पत्तों जैसे कटे, फटे, मोटे रूएदार और तेज़ गन्ध वाले होते हैं। इसमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छोटे, पीले रंग के रोएंदार फूल आते हैं। इसके बीज छोटे और काले रंग के होते हैं। इस पौधे का ऊपरी हिस्सा ताम्बे के रंग का होता है। यह पौधे बरसात में पैदा होते हैं और गर्मियों में सूख जाते हैं। यह नम और ऊंची जमीन पर भारत के सभी हिस्सों में पाए जाते हैं। इसकी और भी कई जातियाँ हैं

प्रयोज्य अंग—जड़ और पत्ते।

मात्रा—रस १ तोला, चटनी १ से ६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कषाय, तिक्त, कटु रस, लघु रूक्ष एवं तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफ पित्त शामक, दीपन, अनुलोमन, कृमिघ्न है। शोणितस्थापन, शोथहर, ज्वरघ्न और विषघ्न है। इसका रस सूंघने से जुकाम, सिर दर्द दूर होता है। इसके पत्तों को गरम कर बांधने से सूजन दूर होती है। जख्मों पर इसे लगाया जाता है।

आधुनिक मत—इसमें एक उड़ने वाला तैल होता है और एक तरह का कपूर होता है जो भीमसेनी कपूर के जैसा होता है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि यह दवा पसीना लाती है, पेट का अफारा दूर करती है और बलगम बहार फेंकती है।

इसका स्वाद कड़वा होता है और यह बुखार को दूर करता है। इसके पत्तों का रस पेट के कीड़े मारता है। पेशाब साफ करता है।

५१. कुसुमा (कसूमा)

आयुर्वेदीय पर्याय—कुसुम्भ यूनानी—कर्तम्

अंग्रेजी—The Saofflower लैटिन—*Carthamus Tinctorius*

विवरण—इसका पौधा ३-४ फुट ऊंचा होता है। पत्ते लम्बे किनारों पर कटे हुए, नुकीले और कांटेदार होते हैं। इसकी डंडियां सफेद होती हैं। इसमें सुपारी की तरह नोकदार कांटे वाली डोडियां लगती हैं जो पीले, नारंगी, लाल रंग के केसरिया फूल बनाती हैं। इसमें सफेद रंग के बीज निकलते हैं जिन्हें यूनानी हकीम 'हब्बुल कर्तम' कहकर प्रयोग करते हैं। बीज में मींगी निकलती है।

प्रयोज्य अंग—बीज, पुष्प, पत्ते

मात्रा—१॥ माशा से ३ माशा बीज, १ से २ तोले पत्तों का रस और फूलों का काढ़ा ५ से १० तोला तक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—शालिग्राम निघंटु में इसके भिन्न २ अंगों के गुण अलग-अलग बताये हैं। इसके फूल मधुर, त्रिदोष नाशक, भेदक, रूक्ष उष्ण, पित्त कारक केशरंजक कफनाशक और लघु होते हैं।

इसके पत्तों का शाक मधुर, चक्षुष्य, उष्ण, कटु, अग्निदीपक, रूचिकारक, रूक्ष, गुरू, सारक, पित्तजनक, अम्ल, गुदा के रोगों को उत्पन्न करने वाला, कफ, मल-मूत्र और चर्बी को दूर करने वाला है।

कसूम के बीज मधुर, स्निग्ध, शीतल, कषाय, गुरू, कफ-वात्त और रक्त-पित्त का नाश करने वाले होते है।

इसका तैल गरम, पाक में कटु, गुरू, दाहजनक और त्रिदोष का प्रकोप करने वाला है

आधुनिक मत—फूलों में लाल रंग का द्रव्य Carthamin पाया जाता है। **Albumin, Silica, manganese, Iron** होता है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि इसके बीज दस्तावर होते हैं यह गठिया के लिये मुफीद है। इसके फूल पीलिया दूर करने वाले होते हैं।

डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है कि कुसुम का बीज रेचक होता है। तिल तेल को कुसुम के रस में पका कर वायु रोग, सूजन और दर्द वाले जोड़, अर्धांग और जख्मों पर लगाने से फायदा होता है। इसके सूखे हुए फूल पीलिया को दूर करते हैं।

५२ कासनी

अंग्रेजी—**Endive** **लैटिन**—*Cichoriumintybus.*

विवरण—इसका पौधा ३ से ६ फीट ऊंचा होता है, शाखाएँ कोमल होती हैं, पत्ते चौड़े होते हैं और पालक के पत्तों की तरह होते हैं जिन का स्वाद तीखा होता है। नीले रंग के फूल आते हैं जिस में सफेद धुंधले रंग के हलके बीज आते हैं। इसकी जड़ गाय की पूंछ के आकार की बाहर से धुंधली और भीतर से सफेद होती है।

इसकी दो जातियाँ होती है; एक वन्य और दूसरी ग्राम्य। ग्राम्य को **Cichorium endivia** कहते हैं। काश्मीर, पंजाब, ईरान और यूरोप मेंहोती हैं।

प्रयोज्य अंग—पत्ते, जड़, और बीज।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—पत्ते का रस १ से २ तोला, जड़ या बीज का चूर्ण ३ से ६ माशा।

गुण कर्म—इसको बिना पानी में धोए प्रयोग करना चाहिए क्योंकि पानी में धोने से प्रभाव समाप्त हो जाता है। यह खून की गर्मी, पित्त की गर्मी को दूर करती है, आमाशय, जिगर और मसाने की सूजन और गर्मी को दूर करती है। गर्मी के सिर दर्द में कासनी के रस में चन्दन पीस कर लेप करते हैं। शर्बत शहतूत के साथ गले की सूजन में गरारे कराते हैं। इस से पैशाब अधिक आता है। गर्मी की वजह से जिन को पागलपन हुआ हो उन को लाभ पहुँचाती है। खांसी के लिए हानिकारक है।

इसकी जड़ पैशाब और मासिक स्राव साफ लाती है, कफज रोगों को दूर करती और सूजन को दूर करती है। यह गठिया में फायदा पहुँचाती है, यह मतली पैदा करती है, इसके लिए शहद में देना चाहिए।

इसके बीज सिर दर्द, दिल की धड़कन, जिगर की गर्मी, प्यास, पीलिया, गुर्दे और तिल्ली की बिमारी में लाभ पहुँचाते हैं।

आधुनिक मत—इसकी जड़ में पोटाश सलफेट और नाइट्रेट, एन्युलिन होता है। फूलों में साइकोरिन, लैक्टयुसिन और इण्टिबिन पाए जाते है। इसके बीजों में एक मृदु तैल होता है।

हक्सबूलर का कहना है कि दस्तों में और पित्त की खराबी में कासनी लाभ करती है।

कर्नल चोपड़ा का कहना है कि इसकी सूखी जड़ काफी के साथ मिला कर जिगर के रोगों में दी जाती है। इसके पिसे हुए बीज महावारी की खराबी को ठीक करते हैं।

५३. काहू

लैटिन—*Lactuca Scariola.*

विवरण—इसके पौधे आधा गज से एक गज तक ऊँचे होते हैं जिसमें चौड़े पत्ते लगते हैं और शाखाएँ पतली होती हैं। इस में सफेद रंग का फूल लगता है इसकी डोड़ी में बीज आने के समय में एक दूध निकलता है, जो शाखाओं एवं तने मे भी पाया जाता है। चीरा देकर दूध निकाल कर सूख जाने पर 'काहु की अफीम' कहलाता है। इसके बीज बारीक और सफेद होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह दो तरह का होता है। एक जंगली और दूसरा बाग का। बाग में बोया हुआ काहु पत्तों की शक्ल में साग के काम आता है। यह हिन्दुस्तान और फारस में हर जगह पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—पत्ते, बीज और दूध।

मात्रा—पत्तों का रस-१ से ५ तोला, अफीम-१ से ३ रत्ती, बीज-३ से ६ माशा।

गुण कर्म—पत्ते खून की तेजी और पित्त की गर्मी को दूर करते हैं। खून साफ करता है, प्यास मिटाता और पेशाब साफ लाता है, औरतों को दूध बढ़ाता है। यह आहार की तरह प्रयोग होता है। पीलिया और सुजाक को ठीक करता है। नींद लाता है, भूख बढाता और पेट दर्द दूर करता है।

इसके बीजों से रोगन भी बनाया जाता है। यह नींद लाने और बालों को ताकत देने के लिए सिर में लगाया जाता है, गर्मी से हुआ सिर दर्द भी मिट जाता है। यह दिमागी रोगों, गर्मी के बुखारों में दूसरी दवा के साथ मिलाकर दिया जाता है।

काहू की अफीम खसखस की अफीम की तरह नींद और नशा करती है लेकिन उसकी तरह इससे हाजमा खराब नहीं होता और न कब्ज होती है। इसके खाने के बाद सुस्ती और कमजोरी का दौर भी नहीं आता है।

आधुनिक मत—इसमें लेक्टूशिन नामक तत्व पाया जाता है। यह ठंडा, शान्ति देने वाला, पेशाब ज्यादा लाने वाला, नींद लाने वाला और कफ को बाहर निकालने वाला होता है।

५४. किरमानी अजवायन

आयुर्वेदीय पर्याय—चोहार, कीटमारी यवानी यूनानी—दिरमना तुर्की।
अंग्रेजी—Worm Seed लैटिन—*Artemisia Maritima.*

विवरण—इसका पौधा सोए के पौधे के बराबर ऊंचा होता है। पत्ते छोटे-छोटे नाजुक, स्वाद में तीखे और तेज खुशबूदार होते हैं। इसके फूल अफसन्तीन रूमी की तरह होते हैं जिनमें कसूम के बीजों जैसे बीज लगते हैं जो उनसे कुछ बड़े होते हैं। यह बलूचिस्तान; अफगानीस्तान, फारस, तिब्बत में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग, सत (सैन्टोनिन)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—पञ्चांग चूर्ण ३ से ६ माशा, सत १/२ रत्ती से 1½ रत्ती।

गुण-कर्म—यह सूजन मिटाती, घावों को खुश्क करती, पेट के कीड़ों को मारती, दस्त साफ लाती और पेशाब तथा मासिक स्राव को साफ करती है। यह वायु को खत्म करती और पुराने बुखारों को दूर करती है। इसे जलाकर जैतून के तैल में मिला कर लगाने से बाल उगने लगते हैं। इसका जोशांदा बनाकर देने से पेट के कीड़े मर जाते हैं और मल मार्ग से निकल जाते हैं। यह आमाशय और मस्तिष्क को हानि पहुँचाती है, इसके लिए मस्तगी देनी चाहिए।

आधुनिक मत—इसमें १.७५% Santonin फूलों में पाई जाती है। जो आज कृमिनाशक श्रेष्ठ औषध मानी जा रही है। सैन्टोनिन प्रायः रशिया से मंगाई जाती है जब कि इस दवा की खोज कर काश्मीर के कुछ भागों में इसे पाया गया और उससे सैन्टोनिन तैयार किया गया। यद्यपि यह मात्रा में कम निकला तो भी यह पता लग गया कि यह रशियन सैन्टोनिन से किसी तरह भी कम नहीं है, बल्कि कुछ अधिक ही कार्य करती है।

५५. कूठ

आयुर्वेदीय पर्याय—कुष्ठ, वाप्य, काश्मीर यूनानी—कुस्ते हिन्दी

अंग्रेजी—Costus. लैटिन—*Saussurea Lappa.*

विवरण—इसका पौधा ६-७ फुट तक ऊँचा होता है। जिसका तना छोटी ऊँगली के बराबर मोटा और मजबूत होता है इसमें दिल की आकृति के बड़े पत्ते लगते है जिनके डंठल २-३ फुट लम्बे होते हैं। इसके फूल गोल गेन्दा की तरह के बैंगनी रंग के होते हैं। फल दबा हुआ, टेढ़ा-सा होता है। फूल और फल सर्दी में आते हैं।

इसकी जड़ बरसों तक रह सकती है और उसी से हर साल नए पौधे निकल आते हैं। यह ३ से ६ इंच लम्बी और ½ से 1½ इंच मोटी गाजर जैसी एक तरफ फटी हुई-सी और तोड़ने से अन्दर सफेद रंग की होती है। यह बाहर से धुंधली और खड़ी धारियों वाली होती है जिसमें से तेज सुगन्ध निकलती है। कूठ काश्मीर में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—जड़।

मात्रा—२ से १० रत्ती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेदीय ग्रन्थों में कूठ शब्द से कड़वे कूठ को ही ग्रहण किया है। यूनानी की तरह मीठा कूठ करके कोई भेद नहीं बताया गया तो भी कोई २ मीठे कूठ की जगह पोहकरमूल का प्रयोग करते हैं।

कूठ तिक्त; कटु, मधुर रस, लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक कहा गया है। यह कफ वात शामक, अक्षेपहारक, दीपन, पाचन, अनुलोमन, ग्राही, रक्तशोधक, शोथहर, श्वासहर, आर्तवजनन, स्तन्यजनन, मूत्रल, वृष्य, शुक्रशोधन, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न और रसायन गुणों वाला है।

इसका लेप अथवा धूपन करने से पुराने जख्म, सिर दर्द, दान्त दर्द, सन्धिशोथ, गठिया और गंजापन दूर हो जाते हैं।

आधुनिक मत—इसकी जड़ में (Saussurin) नामक क्षारतत्व, सुगन्धित तैल, टैनिन, इन्स्युलिन, (Insulin) पोटाशियम नाइट्रेट और चीनी होती है।

डा० आर०एन० क्षौरी ने लिखा है कि कूठ गरम होता है। यह साँस, हैजा और बदहजमी को दूर करता है। पुराने त्वचा के रोगोंकेलिए हितकारक है।

कर्नल चोपड़ा ने कूठ का परीक्षण दमे के रोगियों पर किया और ६० रोगियों के उपचार से उन्हें पता चला कि यह साँस की नलिकाओं को फैलाता, बलगम को आसानी से बाहर फेंकता और दौरे को मिटाता है।

डा० वामन गणेश देसाई ने त्वचा के रोगों के लिए इसे उत्तम माना है। इनका कहना है कि गठिया में एरण्डी के तैल के साथ इसका चूर्ण पिलाना और उसी का लेप करना लाभ करता है।

५६. गोरखमुण्डी

आयुर्वेदीय पर्याय—मुण्डी, श्रावणी, तपोधना। **यूनानी**—कमदुरियुस।
लैटिन—*Sphaeranthums Indicus.*

विवरण—इसका पौधा लगभग एक फुट तक ऊंचा होता है और खेतों में फैला रहता है। इसका तना गोल होता है और शुरू से ही शाखायें निकली रहती हैं। इस पर सफेद सा रूआँ आया होता है। इसके पत्ते आधा से २ इञ्च तक लम्बे होते हैं और किनारे पर दान्तों की तरह कटाव होता है। इनका रंग फीका हरा होता है। फूलों की डंडी ५ से ७ इंच तक लम्बी होती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और सर्दी में बैंगनी रंग के फूलों के गुच्छे आते हैं। यह कदम्ब के फूलों से मिलते-जुलते होते हैं। यह ५ हजार फुट की ऊँचाई तक सारे भारत में होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़ सहित पूरा पौधा।

मात्रा—रस १/२ से २ तोला; काढ़ा ५ से १० तोला; चूर्ण १/२ से १ माशा।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त, कटु और मधुर रस, लघु और रूक्ष गुण, उष्ण-वीर्य और कटु विपाक होती है। यह त्रिदोषशामक, मेध्य, नाडीबल्य, वेदना-स्थापन, दापन, पाचन अनुलोमन, कृमिघ्न, हृदयोत्तेजक, रक्तशोधक, शोथनाशक, वृष्य, मूत्रल, रसायन है। इसका लेप करने से सूजन और वेदना शान्त होती है। कुष्ठ रोग नाशक है। इसकी जड़ का तैल वाजीकरण होता है।

आधुनिक मत—इसमें से एक तीखा सा क्षार प्राप्त होता है जिसे Sphaeranthine कहा जाता है। एक सुगन्धित तैल भी पाया गया है।

डा० आर०एन० क्षौगी ने लिखा है कि यह सिफलिस, गठिया और फोड़े-फुन्सी ठीक करती है। इसका लेप करने से बवासीर के मस्से और गण्डमाला ठीक हो जाती हैं।

कर्नल चोपरा ने लिखा है कि यह एक उत्तेजक औषध है। यह पथरी, पीलिया और गांठों की सूजन को दूर करती है।

कीमान ने इसे पेशाब के रोगों के लिए उत्तम बताया है।

कहा जाता है कि गोरखमुण्डी को छाया में सुखाकर पीस कर उसका हलवा बनाकर खाया जाए तो जवानी बनी रहती है।

मुफर्रदात इमाम (यूनानी ग्रन्थ) में इसे गण्डमाला की बढ़िया दवा बताया है। तालीफ शरीफ (यूनानी ग्रन्थ) में इसे बुद्धि बढ़ाने वाला कहा गया है।

अरबेहयात (यूनानी ग्रन्थ) में लिखा है कि चैत्र के महीने में ५-७ गोरखमुण्डी के ताजे फूल थोड़े दांत से चबा कर पानी से पी लेने पर आंखों की शक्ति और रोशनी सदा बनी रहती है।

५८. पोहकरमूल

आयुर्वेदीय पर्याय—पुष्करमूल, पद्मपत्र, काश्मार।

अंग्रेजी—Orris Root लैटिन—*Inula Racemosa*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका पौधा कूठ से मिलता-जुलता होता है। जिसके पत्ते ज्यादा लम्बे और कम चौड़े होते हैं। इसमें सफेद नीले या ऐसे ही रंग के फूल आते हैं। इसकी जड़ मिट्टी के रंग की सख्त और गांठदार होती है। इसे तोड़ने पर अन्दर से गुलाबी निकलती है और तेज गन्ध और तीखे एवं कड़वे स्वाद वाली होती है। यह इरान और काश्मीर में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल।

मात्रा—२ से १० रत्ती।

आयुर्वेदीय मत—तिक्त, कटु रस, लघु तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह वातकफ शामक, मस्तिष्क तथा नाड़ी उत्तेजक, दीपन, पाचन, अनुलोमन, रक्तशोधक, कासहर, हिक्का निग्रहण मूत्रजनन, वाजीकरण, स्वेदजनन होता है। इसका स्थानिक प्रयोग सूजन और दर्द को दूर करता है। दर्द पसली में इसका लेप किया जाता है। यह साधारण कमजोरी को दूर करता है। इसे Cardiac Asthma में, प्लुरिसी में और दूसरी श्वासयन्त्र की रोगावस्थाओं में देते हैं।

आधुनिक मत—इस में एक उड़नशील तैल, एक तिक्त सत्त और बेंजोइक एसिड होता है। कर्नल चोपड़ा आदि के मत में यह दवा कफ सरलता से निकालती, पाचन क्रिया ठीक करती और बल देने वाली होती है।

५९. ब्रह्मदण्डी

Tricholepsis Glaberrima.

विवरण—यह ऊँट कटारे की किस्म की एक बूटी है जो कि आधा गज तक लम्बी होती है। इसकी रंगत हरी सफेदी लिए हुए होती है। इसकी शाखाएँ बारीक होती हैं। फूल पहले गोल निकलता है जो बाद में कटोरीनुमा सुर्खी लिए हुए नीला हो जाता है। इसके चारों तरफ बारीक और नाजुक कांटे होते हैं। यह मध्यभारत, पंजाब, आबुपर्वत और राजपूताना में होती है। बम्बई राज्य में पाई जाती है।

प्रयोज्य अंग—पूरा पौधा।

मात्रा—४ माशे से १० माशे तक।

गुण—यह शरीर और स्मरणशक्ति को बढ़ाती है। खून साफ करती और व्रणों का रोपण करती है। यह त्वचा के रोगों को, फोड़े-फुन्सी को साफ करती

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और चेहरे का रंग निखारती है। कहा गया है कि एक तोला ब्रह्मदण्डी को सात मिर्च काली के साथ पीसकर छानकर चालीस दिन तक लगातार पीने और केवल चने की रोटी खाने से कोढ़ अच्छा हो जाता है। यह मनुष्य की कामशक्ति और स्तम्भन शक्ति बढ़ाती है। सूजन और वायु के रोगों को भी दूर करती है।

कुछ का कहना है कि ब्रह्मदण्डी को पानी में भिगोकर छान कर पीने से पेशाब में खून आना बन्द हो जाता है। यह औषधि गर्मी और खुश्की करती है। इसके लिए शुद्ध शहद का प्रयोग करना चाहिए।

आधुनिक मत—कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि यह ल्युकोड्रमा और दूसरी त्वचा की बीमारियों में लाभ करती हैं। नसों (Nerves) को ताकत देती है और वीर्य की कमजोरी को दूर करती है।

६०. बहमन

लैटिन—*Centaurea Behen*

विवरण—यह फारस, सीरिया, अरमानिय से आता है। यह पौधों की जड़ें होती हैं जो दो तरह की होती है। एक सफेद बहमन जो सूखी, भूरे रंग की, झुर्रीदार, बाहर से सफेदी लिए और पेंचदार होती है। इसे पानी में भिगोया जाय तो यह लुआबदार हो जाती है। बहमन लाल गाजर की तरह ज्यादा झुर्रीदार होता है। यह सफेद की अपेक्षा ज्यादा कड़ा और भारी होता है, टूटने में भी सख्त होता है। यह बाहर से कत्थई रंग का या गहरे लाल रंग का होता है।

मात्रा—६ माशा

गुण कर्म—इसका विशेष प्रयोग ताकत बढ़ाने, कामशक्ति बढ़ाने और दिल को मजबूत करने के लिए किया जाता है। इससे धातु की कमजोरी, नपुंसकता तथा वीर्य की कमी दूर होती है। प्रायः इसका चूर्ण दूध के साथ पिलाया जाता है। हृदय के रोगों को दूर करता है। इससे शरीर में वसा बढ़ जाती है जिससे कमजोर आदमी मोटा हो जाता हैं। इससे गुर्दे और मसाने के रोग दूर हो जाते हैं। पथरी और खून के रोग को दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसकी जड़ में एक तीखा दानेदार प्रदार्थ पाया जाता है जिसे 'लेक्टोन बहनिन' कहा जाता है।

कर्नल चोपड़ा आदि ने लिखा है कि इस की जड़ नपुंसकता को दूर करती, पीलिया मिटाती और पत्थरी को दूर करने वाली होती है।

६१. भांगरा

आयुर्वेदीय पर्याय—भृङ्गराज, भृङ्गर, केशराज, केशरंजन।

लैटिन—*Wedelia Galendulacea.*

विवरण—यह भूमि पर फैलने वाला क्षुप है। इस की मुख्यत: तीन जातियां होती हैं—(१) श्वेतपुष्प वाला, (२) पीत पुष्प वाला, (३) नीलपुष्प वाला। इन में नील पुष्प प्राप्त करना दुर्लभ है। श्वेतपुष्प को लैटिन में Eclipta Alba कहा जाता है। यह बंगाल, आसाम और बम्बई में पाया जाता है। पीत विशेषत: उत्तर भारत में होता है।

इसके पत्ते ३-४ इंच लम्बे, लोमश और कर्कश होते हैं। एक लम्बे, टढ़े डंठल में शिरोभाग से पीतवर्ण का पुष्प निकलता है। इस में कालीजीरी के बराबर, लम्बे, छोटे बीज निकलते हैं जो एक फूल में करीब २० होते हैं।

भृंगराज सारे भारत में विशेषकर जल प्रधान स्थानों में होता है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग, बीज।

मात्रा—स्वरस ६ माशा से १ तोला, बीज चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कटुतिक्तरस, रूक्ष-लघु गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक होता है। कफवातशामक है। केश्य, त्वच्च, दन्त्य, रसायन, चक्षुष्य, विषघ्न है। यह वाजीकरण, मूत्रल, रक्तवर्धक एवं कुष्ठ नाशक है। इस का प्रयोग दृष्टिमान्द्य, शिर:शूल, अजीर्ण, यकृत-प्लीहा वृद्धि, पाण्डु, शोथ, कास, श्वास, मूत्रदाह एवं चर्मरोगों में किया जाता है।

आधुनिक मत—इस में अधिक भाग 'रेजिन' होता है और एक क्षार तत्व पाया जाता है जिसे 'इक्लिप्टन' कहा जाता है।

डा० आर. एन. क्षोरी ने लिखा है कि यह पित्त निःसारक होता है। बल्य एवं रसायन है। अजवायन के साथ प्लीकृत के रोग, कास, श्वास एवं प्रतिश्याय में लाभ करता है। इस का प्रलेप, ग्रन्थिशोथ, श्लीपद एवं विविध

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चर्म रोगों में लाभ करता है। एरण्ड तैल के साथ देने से यह पेट के कीड़ों को बाहर निकाल देता है। कर्णशूल में इस का रस टपकाना चाहिए।

भांगरा 'टेरेक्सेकम' की तरह पित्त को शुद्ध करता, बालों को बढ़ाती और आयु को दीर्घ करता है।

६२. सहदेई

आयुर्वेदीय पर्याय—सहदेवी, महाबला

अंग्रेजी—Fleabane **लैटिन**—*Vernonia Cineria*

विवरण—इसका मुलायम सा पौधा होता है जो ३ फुट तक ऊंचा होता है। इसका तना पतला होता है और शाखाएँ रोमश होती हैं। पत्ते रोमश, अनेक आकार के होते हैं। जाति भेद से इस में दो तरह के फूल मिलते हैं श्वेत अथवा नील। इसमें काली जीरी के समान बीज निकलते हैं। यह बरसात में उत्पन्न होता है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग, मूल

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला, क्वाथ ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, रूक्ष, लघु गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक और ज्वरघ्न प्रभाव है। यह कफवात शामक, निद्राकारक, कुष्ठ नाशक, रक्तशोधक है। इस का आभ्यान्तर प्रयोग अथवा बाह्य प्रयोग ज्वर को दूर करता है। इसकी पिण्डी बनाकर फोड़े-फुन्सियों पर बांधते हैं, जिससे वह ठीक हो जाते हैं।

आधुनिक मत—सहदेवी की उपमा फेनसिटिन से दी जा सकती है, जो दर्द मिटाती, पसीना लाती और ज्वर दूर कर देती है। इसके बीज विष नाशक एवं कृमिनाशक माने जाते हैं।

डा० देसाई का कहना है कि सहदेवी का स्वरस पिलाने से या शरीर पर लगाने से ज्वर दूर हो जाता है। इसको देने से पसीना आता है और पेशाब की जलन दूर हो जाती है। बवासीर में इसका रस लाभ करता है। इसके फूल नेत्ररोगों के लिए हितकारक है।

डा० कोमान का कहना है कि मलेरिया में जबकि केवल कुनैन से काम न चले तो कुनैन की कम मात्रा में सहदेवी का रस मिलाकर दिया जाय तो अच्छा लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CONVOLVULACEAE FAMILY त्रिवृतादि वर्ग

पत्र—एकान्तर (Alternate), हृदयाकृति (Cardiac) उपपत्ररहित

पुष्प—पत्रकोणोद्भूत, फनल के आकार का

पुष्पबाह्यकोश—स्थायी, पुंकेशर—५

बीज—बीजकोष—द्विकोष्ठी, बीज—४

६३. आकाश बेल

आयुर्वेदीय पर्याय—अमरवल्ली, आकाश वल्ली यूनानी—अफतीमूनहिन्दी

अंग्रेजी—Dadder लैटिन—*Cuscutareflexa*

विवरण—इसकी बेल बबूल, बेर, पीपल, गूलर आदि पेड़ों पर फैली रहती है जिसमें धागे से फैलते रहते हैं जो पीले रंग के मुलायम और बिना पत्तों के होते हैं। यह बिना जड़ की बेल होती है। पेड़ों के तनों पर ही यह जम जाती है। और वहीं से अपना आहार लेती है। वसन्त में सफेद रंग के गुच्छेदार और खुशबूदार फूल निकलते हैं और गर्मियों में मटर के आकार के फल लगते हैं। जिनमें काले रंग के बीज होते हैं। यह बात ध्यान रखने की है कि इसके बीज बोने से भी बेल पैदा हो जाती है लेकिन ज्यों ही बेल पेड़ों पर चढ़ जाती है फिर उसकी जमीन की जड़ सूख जाती है। बेल का कोई टुकड़ा किसी पेड़ पर डाल दो तो वो फैल जाता है। यह सारे भारत में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—बेल, बीज।

मात्रा—बेल का रस १ से २ तोला, बीज चूर्ण १ से ३ माशे।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त कषाय रस, लघु, रूक्ष, पिच्छिल गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक होती है। कफ पित्तहर, दीपन, पाचन, ग्राही, यकृतउत्तेजक कृमिघ्न, ज्वरघ्न, हृद्य, मूत्रल और स्वेदजनन कर्म करती है।

आधुनिक मत—इसमें Queroetin और Cuxutine नामक तत्व पाये गये हैं। वात रोग नाशक और रक्त शोधक माना है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६४, कालादाना

यूनानी—हब्बुन्नील

आयुर्वेदीय पर्याय—कृष्णबीज

अंग्रेजी—Pharbitis Seeds लैटिन *Impomoea Hederacea*

विवरण—इसकी बेल दूसरे पेड़ों के सहारे बढ़ती है। इसका तना पतला होता है और उस पर पीछे की तरफ मुड़े हुए घन और लम्बे रोम होते हैं। इसके पत्ते ३ से ५ इंच लम्बे सुपारी के आकार के तीन भागों में बटे हुए रोम होते हैं। नील या गुलाबी रंग के फूल प्रायः एक साथ १ से ५ होते हैं। बीज काले और तिकोने होते हैं। बीज के छिलके को हटाने पर भीतर सफेद रंग का गूदा निकलता है। इस की उत्पत्ति सारे भारत में होती है। कहा जाता है कि सबसे पहले यह अमेरिका में ही पैदा होता था।

प्रयोज्य अंश—बीज।

मात्रा—१ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेद के प्राचीन ग्रन्थों में कहीं भी इसका वर्णन नहीं है। भावमिश्र के समय से इसका प्रयोग होने लगा है। यह मधुर कटु रस, लघु रूक्ष-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह कफ पित्तहर, तीव्र रेचक, रक्तशोधक, मूत्रल, आर्तवजनन है। बाह्य प्रयोग में लेखन कर्म करता है।

आधुनिक मत—इस में Pharbitisin नामक मुख्य तत्व ८% होता है जो जलापा के मुख्य तत्व Convolvulin के जैसा काम करता है। इस के विषय में डा० क्षीरी ने लिखा है कि कालादाना दस्तावर, चिकना, सूजन और पेट की बिमारियों को दूर करता है। यह बुखार, पेट का अफार, सिरदर्द और कफ के रोगों में प्रयोग होता है।

६५. जलापा

Ipomoea Purga

विवरण—यह एक बूटी की जड़ है जो देखने में कठोर और भारी होती है। इसका आकार हरड़ से मिलता है। इसका रंग बाहर से श्याम और अन्दर से रक्ताभ-सा होता है। इस पर झुर्रियाँ पड़ी होती हैं और कहीं २ दाग भी होते हैं। इसका स्वाद पहले कुछ मीठा सा लगता है बाद में बेमजा हो जाता है। यह अमेरिका की पैदावार है और यूनानी तिब्ब में अब प्रयोग की जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—जड़

मात्रा—½ माशा से १॥ माशा तक

गुण कर्म—यह कफ आदि दोषों को पतला कर बाहर निकाल देता है। यह एक दस्तावर दवा है। यह अर्दित, एकांग, कब्ज, नजला, जुकाम को दूर करता है। इसे बारीक पीस कर गुलकन्द के साथ खाते हैं और ऊपर से अर्क-सौंफ पीते हैं। यह पित्तज स्वभाव वालों को हानि पहुँचाता है।

आधुनिक मत—इस में जलाप रेसिन ९ से १८% तक होता है। इसलिए यह दस्तावर होता है।

६६. निशोथ

आयुर्वेदीय पर्याय—त्रिवृत, त्रिपुटा, सरल, रेचनी यूनानी—तुर्बुद

अंग्रेजी—Turpeth लैटिन—*Operculina Terpethum*

विवरण—इसकी वृक्षों पर चढ़ने वाली लता होती है, जिसका तना सीधा, तिकोना, रोमवाला होता है और उसके तोड़ने पर दूध जैसी चीज निकलती है। पत्ते कई तरह के होते हैं कुछ अण्डे की शकल के होते हैं तो कुछ कलमी शाक की तरह तिकोने। फूल सफेद रंग के और फल एक इंच लम्बे, गोल या अण्डे की शक्ल के होते हैं। बीज काले रंग के और प्रत्येक फल में चार बीज होते हैं। फूल बरसात में और फल सर्दियों में होते हैं। इसकी जड़ मोटी रक्ताभश्वेत होती है। इसे तोड़ने पर दूध निकलता है। एक और निशोथ होता है। जो काली होती है। निशोथ सारे भारत में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़ को छाल

मात्रा—१ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—इस में कटु, तिक्त, मधुर एवं कषाय रस होते हैं। लघु रूक्ष, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफपित्त शामक है और वातवर्धक है। यह भेदन, रेचन, शोथहर, ज्वरघ्न, लेखन कर्म करता है। विशेषकर कब्ज, बवासीर, पीलिया, कास, श्वास, ज्वर एवं अतिस्थूलता में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—इसकी जड़ में Terpethin नामक एक ग्लूकोसाइड होता है जो रेचक होता है। इस के अलावा इस में लिगेनिन, अलब्युमिन, लौह और स्टार्च होता है।

डा० आर. एन. क्षौरी ने लिखा है कि निशोथ मृदु विरेचक है। यह अकेले या दूसरी दवाओं के साथ दस्त लाने के लिए दी जाती है। हरड़ के साथ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निशोथ दी जाए तो गठिया, अर्धांग-मानसिक रोग कुष्ठ को भी लाभ करती है। जलापा की अपेक्षा इस में दस्तावर गुण अधिक होता है।

६७. विधारा

आयुर्वेदीय पर्याय—वृद्धदारू **यूनानी**—शारफ

लैटिन— *Argyresia speciosa.*

विवरण—इसकी लता वृक्षों पर चढ़ी होती है। तना सख्त, अँगूठे जितना मोटा और रुई जैसे सफेद रोम से भरा होता है। पत्ते पान जैसे ४ से १२ इंच लम्बे होते हैं। इनका ऊपरी भाग चिकना और नीचे का रोम वाला होता है। फूल घंटाकर होते हैं और उनकी बाहरी पंखड़ी सफेद और अन्दर की बैंगनी होती है। फल एक इंच लम्बा, गोल-सा, कच्चे पर हरा और पकने पर पीला होता है। पकने पर स्वयं फूट जाता है और तीन धार वाले सफेद भूरे रंग के बीज निकलते हैं। यह सब जगह बागों में लगाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—जड़, तना और बीज।

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा, बीजचूर्ण ५-१० रत्ती।

आयुर्वेदिक मत— कटु तिक्त, कषाय रस, लघु-स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक है। यह कफवात शामक, मेध्य, दीपन, पाचन, अनुलोमन, रेचन, हृद्य, कण्ठ्य, शुक्रजनन, प्रमेहघ्न, बल्य और रसायन है। शुक्र दुर्बलता, श्वेत प्रदर, क्षय, प्रमेह में लाभ करता है। वातव्याधि में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—इसमें अम्ल राल और कषैला द्रव्य होता है। यह ताकतवर है। गठिया और नर्वस सिस्टम के रोगों को दूर करता है।

६८. मूषाकर्णी

आयुर्वेदीय पर्याय— आखुकर्णी **यूनानी**—आजानुलफार

लैटिन— *Ipomea Reniformis.*

विवरण—इसके पौधे जमीन पर फैले हुए होते हैं। वर्षा तथा शरद्ऋतु में अधिक पैदा होते हैं। इसका तना पतला-लाल रंग का गांठों वाला होता है। गाँठों की जगह से जड़ें निकलती हैं। इसके पत्ते चूहे के कान के आकार के होते हैं। यह दो तरह की होती है, एक खड़ी रहती है और दूसरी बेल की तरह फैली रहती है। यह सारे भारत में पैदा होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—पूरा पौधा।

मात्रा—चूर्ण ½ से २ माशा, रस १ से २ तोला, काढ़ा ५-६ तोला।

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त कषाय रस, लघु गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक होता है। मूत्र रोग, कफ रोग और कृमि रोग नाशक है।

आधुनिक मत—डिमक ने लिखा है कि चूहे का विष नाश करती है। कान के व्रण में टपकाई जाती है। यह ज्यादा मात्रा में लेने से विरेचक होती है।

६६. शंखाहुली

आयुर्वेदीय पर्याय—शंखपुष्पी, क्षीरपुष्पा माँगल्य कुसुमा

लैटिन—*Convolvulus Pluricanlis.*

विवरण—इसकी बहुवर्षायु, अनेक शाखा वाली वनस्पति होती हैं, जिसका तना कुछ चौकोर होता है। इसके पत्ते पतले, लम्बे तीन सिराओं से युक्त, अवृन्त, सूक्ष्मरोम वाले होते हैं। इसमें फूल सफेद रंग के आते हैं और शंख की आकृति के होते हैं। छोटे २ फल शाखाओं के अग्र प्रदेश में लगते हैं। इसकी जड़ सूत्रवत् होती है जो सफेद हरे रंग की होती है। पुष्पभेद से इसकी रक्त और नील दो जातियाँ और होती हैं। यह समस्त भारत में पैदा होती हैं।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग।

मात्रा—स्वरस २-४ तोला, चूर्ण ३-६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कषाय कटु-तिक्त रस, स्निग्ध, पिच्छिल-गुरु-सर गुण, शीतवीर्य, मधुर विपाक एवं मेध्य प्रभाव होता है। यह त्रिदोषनाशक है, विशेष कर वातपित्तशामक है।

यह मेध्य, स्वरहितकारक, सारक, रसायन एवं कान्तिदायक है। आयुर्वर्धक, बलवर्धक, अग्निवर्धक एवं वीर्यवर्धक है। उन्माद, अपस्मार, कुष्ठ, कृमि, उर्ध्वरक्तपित्त, अर्दित का नाश करती है। यह दाह, दाह प्रधान ज्वर एवं पित्त के विकारों को दूर करती है। इसके प्रयोग से मूत्र की मात्रा बढ़ती है और पूयप्रमेह एवं मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

आधुनिक मत—डा० आर. एन. क्षौरी का कहना है कि यह मृदु रेचक, रसायन, वात नाड़ियों को बलदायक होती है। इसका ताजा रस उन्माद, दुर्बलता, गण्डमाला और ग्रहणी में लाभ करता है।

यह रक्तस्तम्भक द्रव्य है। रक्तवमन को रोकने के लिए इसे उत्तम औषधि कहा जाता है। यह शुक्र की दुर्बलता एवं गर्भाशय की दुर्बलता दूर करने वाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CONIFERAE FAMILY देवदार्वादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः वृक्ष

पत्र —सरस, पतले और नोकदार

संयुक्तकोश

७०. चिलगोजा

आयुर्वेदीय पर्याय—निकोचक यूनानी नाम—हब्ब सनोबार किबार

अंग्रेजी—Edible Pine लैटिन—*Pinus Gerardiana*

विवरण—यह एक प्रकार के स्त्री जाति के देवदारू वृक्ष का फल है जो लगभग एक इंच लम्बा, लम्बगोल, एकतरफ से कुछ चपटा और धूसर वर्ण का होता है। ऊपर का छिलका पतला और भंगुर होता है। इसके अन्दर सफेद चिकनी-सी गिरी निकलती है। यह रोम, ईरान, अफगानिस्तान एवं हिमालय प्रदेश में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल की गिरी।

मात्रा—½ से १ तोला।

आयुर्वेदीय मत—यह मधुर रस, गुरु स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक होता है। यह वृष्य, बृंहण, बल्य एवं रक्त प्रसादन है। यह धातुओं की वृद्धि करता है। यह वातशामक एवं कफपित्तवर्धक कहा गया है। यह स्नेहन करता एवं स्तन्यजनन होता है।

शीतकाल में साधारण रूप से इसे शक्ति के लिए सेवन किया जाता है।

आधुनिक मत—इसकी गिरी में आधे के लगभग तैल होता है। इसके अतिरिक्त स्टार्च, अलब्युमिनॉयड पाया जाता है।

७१. चीड़

आयुर्वेदीय पर्याय—सरल, पीतवृक्षा, सुरभिदारूका, धूप वृक्ष

अंग्रेजी—Long Leaved Pine. लैटिन—*Pinus Longi Folia.*

विवरण—इसके पेड़ एकदम सीधे और १००-१२५ फुट ऊंचे होते हैं। इसकी त्वचा १-२ इञ्च मोटी, ऊपर से धूसर वर्ण की और अन्दर से रक्त वर्ण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की होती है। इसकी लकड़ी पीत रक्त मिश्रित होती है और उसमें सुगन्ध आती है। इसके पत्तों का गुच्छा होता है जो नीचे को झुका हुआ होता है और ५-१२ इंच लम्बा होता है। इसमें पत्र सूच्याकार होते हैं। फूल $\frac{1}{2}$ इंच लम्बे होते हैं। फल पत्तों के गुच्छे के मध्य में रहता है जो काष्ठमय, गोलाकार होता है। बीज $\frac{1}{2}$ से १ इंच लम्बा होता है। यह हिमालय प्रदेश में ३-६ हजार फुट की उँचाई तक ज्यादा पैदा होता है।

चीड़ के तने पर क्षत कर देने से एक निर्यास निकलता है जो गंधाविरोजा कहलाता है। गन्धा बिरोजा से परिस्रवण विधि के द्वारा तैल निकाला जाता है जो 'तारपीन का तैल' कहलाता है।

प्रयोज्य अंग—काष्ठ, गन्धाबिरोजा और तैल।

मात्रा—चूर्ण १-३ मासा, गन्धाबिरोजा ६-१२ रत्ती, तैल २-१० रत्ती।

आयुर्वेदिक मात्रा—कटु, तिक्त, मधुर रस, लघु तीक्ष्ण, स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाक है। वातकफसामक है। मस्तिष्क तथा नाड़ियों को उत्तेजना देता है। यह दीपन, अनुलोमन, कृमिघ्न एवं रक्तरोधक होता हैं। यह कफनिःसारक, मूत्रजनन एवं श्लेष्मपूतिहर है। त्वचा के रोगों को दूर करता है। शोथ, कण्डू, व्रण, कृमि, कुष्ठ में लाभ करता है। यह कर्ण, कण्ठ, अक्षि रोगों का नाश करता है। दाह, श्वास एवं मूर्च्छा में लाभ करता है।

आधुनिक मत—गन्धाबिरोजा में २० प्रतिशत तैल प्राप्त होता है। इसमें Pinene, Limoneue, Carene, Longifolene नामक तत्त्व होते हैं।

डा० देसाई ने बताया है कि गन्धाबिरोजा खाने के पश्चात् मुँह में पानी छूटता है, पेट में कुछ विशेषानुभूति होती है, उद्गार आते हैं और वातानुलोमन होता है। नाड़ी भरपूर चलने लगती हैं, श्वासोच्छ्वास बढ़ता हैं, शरीर में उष्णता बढ़ती है। मूत्र की मात्रा बढ़ जाती है। यदि अधिक मात्रा में गन्धाबिरोजा खा लिया जाए तो वमन एवं रेचन होता है, नाड़ी क्षीणता, जी घबराना, शरीर का शीत होना, मूत्र में जलन होना एवं रक्तस्राव होना एवं शरीर का शिथिल होना होना है।

इसके तैल का एनिमा एवं पेट पर मालिश करना बहुत लाभ करता है। थोड़ी शक्कर और पानी के साथ इसका तैल दिया जाए तो आँतों के कृमि, आँतों से रक्तस्राव एवं रक्तातिसार ठीक हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वास संस्थान के रोगों में तैल की मालिश, सूंघना एवं मुख द्वारा सेवन करना लाभ करता है।

मूत्र मार्ग के लिए यह एक शोधक द्रव्य है। त्वचा के रोगों को दूर करता हैं।

७२. तालीसपत्र

आयुर्वेदीय पर्याय—तालीस, पत्राढ्य, धात्रीपत्र

अँग्रेजी—Silver Fir **लैटिन**—*Abies WebbIana*

विवरण—तालीस पत्र के विषय में अभी एक मत नहीं है। ऊपर जो लैटिन नाम दिया है वह बंगाल में प्रयोग होने वाले तालीस पत्र का है। इसके अतिरिक्त नेपाल में प्रसिद्ध तालीस पत्र का प्रयोग होता है, उसे रायली ने Rhodode𝐍dron Lepidotum कहा है। मध्य प्रदेश में प्रयोग होने वाले तालीस पत्र को डिमक ने Taxus Baccata कहा है। इसे 'घुनेर' कहते हैं। यह विषाक्त होता है।

बंगाल के तालीस पत्र के वृक्ष १५०-२०० फुट तक ऊँचे होते हैं। यह हरा रहता है। नई शाखाएँ नीचे को झुकी रहती है। इसके पत्ते १-२ इंच लम्बे होते हैं। यह रेखाकार और नताग्र होते हैं। अग्रभाग पर दो तीक्ष्ण और कठोर नोकें होती हैं। इसका फल बैंगनी या नीले रंग का होता है। यह ६ इंच लम्बा होता है और लम्बगोल होता है। बीज १/२ से १ इंच लम्बे और पक्षयुक्त होते हैं।

तालीसपत्र, भूटान, कुमाऊँ, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—पत्ते

मात्रा—चूर्ण ४ से ८ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक होता है। वातकफशामक हैं। रेचन, दीपन, अनुलोमन, सूत्रजनन, ज्वरघ्न और बलवर्धक है। यह अग्निमान्द्य, गुल्म, अरुचि, कास, हिक्का, श्वास एवं क्षय में लाभ करता है। छर्दि में इसका प्रयोग कराया जाता है। सुश्रुत संहिता में इसे शिरोविरेचन की उत्तम दवा कहा गया है।

आधुनिक मत—इसके पत्तों में एक स्फटिकीय क्षारतत्व टैक्सिन (Taxine) होता है। इसके अलावा उड़नशील तैल होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० आर० एन० क्षौरी ने बताया है कि तालीसपत्र आक्षेपनिवारक है। यह श्वास, रक्तपित्त, अपस्मार एवं अन्याय आक्षेपमूलक पीड़ाओं में प्रयोग होता है।

यह द्रव्य ज्वर में विशेष कार्य करना है। वातकफज ज्वर के लिए उत्तम है। इसका लेप करने से सिर का दर्द मिट जाता है।

७३ देवदारु

आयुर्वेदीय पर्याय—देवदारू, भद्रदारू, सुरभूरुह यूनानी—सज़र तुलजीन
अंग्रेजी—Deodar लैटिन—*Cedrus Deodara*

विवरण—इसका वृक्ष बहुत ऊंचा, लगभग २५० फुट ऊंचा होता है। तना सीधा मोटा और लगभग ३६ इंच के व्यास का होता है। इसकी शाखाएं, नीचे की तरफ झुकी हुई होती हैं। इसकी छाल मोटी और फटी सी होता है। इसमें हरे रंग के, नौकीले गोलाई लिए हुए लम्बे पत्ते होते हैं। हरे-पीले रंग के गुच्छेदार फूल और फल पकने पर काले रंग के होते हैं प्रत्येक में १/४ इंच लम्बा बीज निकलता है। यह जाति भारी और चिकनी होती है तथा धूप के नाम से बाजार में बिकती है। यह हिमालय में ७ से ६ हजार फीट की ऊंचाई तक होती है।

प्रयोज्य अंग—लकड़ी और तैल

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा, तैल २ से ४० बूंद

आयुर्वेदिक मत—तिक्त, कटु रस, लघु स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। वातकफ नाशक, दीपन, पाचन, अनुलोमन और कृमिघ्न है। हृदयोत्तेजक, श्वासनाशक, मूत्रजनन स्वेदजनन स्तन्यशोधन, लेखन एवं हिक्का निग्रहण है। सन्धि वात एवं दूसरे रोगों में इसका लेप लगाते हैं और इसका तैल व्रणों को भरता है। विशेष कर वात रोगों को दूर करता है।

आधुनिक मत—इसमें एक गाढ़े रंग का तैल एवं एक विशेष अम्ल राल पाया जाता है।

डा० क्षौरी ने लिखा है कि यह वातनाशक, पसीना लाने वाला और अधिक मूत्र लाने वाला है। यह बुखार, अफारा, सूजन, पत्थरी को दूर करता है। हल्दी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और गूगल के साथ इसका लेप सूजन मिटाता है इसका तैल पुराने चर्म रोग एवं कुष्ठ में प्रयोग किया जाता है। यह व्रणों को भरता है।

७४. हाऊबेर

आयुर्वेदीय पर्याय—हवुषा यूनानी—अबहल

अंग्रेजी—Juniper लैटिन—*Juniperus Communeis*

विवरण—इसका पौधा लगभग ४ फुट ऊंचा होता है। इसके पत्ते भांग के पत्तों की तरह होते हैं जो रंग में लाल होते हैं। इसमें भूरे लाल रंग का गोल और छोटे बेर के बराबर सुगन्धित फल लगता है। एक फल में ३ या उससे ज्यादा बीज निकलते हैं। हाऊबेर की दो जातियां बताई गई हैं एक छोटा और दूसरे बड़ा। बड़े हाऊबेर के पत्ते और फल छोटे से कुछ बड़े होते हैं। बड़े हाऊबेर का लेटिन नाम Juniperus Marcropoda है। यह नेपाल, भूटान, ईरान में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल

मात्रा—तीन से पांच माशे।

गुण—कटु, तिक्त रस, गुरु, रूक्ष, तीक्ष्ण गुण उष्ण वीर्य कटु विपाक होता है।

नाड़ी संस्थान का उत्तेजक है। पक्षाघात आदि वायु के रोगों में प्रयोग करते हैं। दीपन, अनुलोमन और कृमिनाशक है। दिल की कमजोरी में, खाँसी और श्वास में लाभ करता है। इसका लेप करने से सूजन, दर्द, त्वचा के रोग और व्रणों का नाश होता है। यह आर्तवजनन और मूत्रजनन होता है। ज्यादा मात्रा से प्रयोग करने से गर्भपात हो जाता है। और पेशाब में खून आने लगता है। यह औरतों के लिकोरिया की बिमारी में लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसके फल में उड़नशील तेल, Dextrose ५०%, राल १०% और वसा, मोम, Acetic Acid होते हैं। इसमें Juniperin नामक एक विशेष तत्व पाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CORNACEAE FAMILY अंकोटादिवर्ग

स्वरूप—प्रायः वृक्ष

पत्र —पत्रदण्ड के दोनों ओर पत्रक जोडों में, अग्रभाग में एक पत्रक।

पुष्प—गुच्छों में, पीत-श्वेतवर्ण के

पुष्प बाह्यकोश (Calyx) एवं पुष्पाभ्यन्तरकोश (Corolla) के दल ५—१०

पुंकेसर २०-३०

फल —कवचयुक्त

बीज —तैलयुक्त

७५. अंकोल

आयुर्वेदीय पर्याय—अंकोट, दीर्घकील, रेची, गन्धपुष्प, पीतसार ताम्रफल।

अंग्रेजी—Alangy लैटिन—*Alangium Lamarckii.*

विवरण—१०—२० फुट ऊंचा वृक्ष होता है जो जंगलों में बिना प्रयत्न के ही हो जाता है। इसकी छाल ½ इंच मोटी और धूसर रंग की होती है। शाखाएँ सफेद रंग की और अग्रभाग में तीक्ष्ण होती हैं। पत्ते ३ से ६ इंच लम्बे और १ से २ इंच चौड़े होते हैं। पत्ते के डंठल के दोनों तरफ पत्तियाँ होती हैं और अग्रभाग में केवल एक पत्ती होती है। गुच्छों में पीले-सफेद रंग के सुगन्धित पुष्प निकलते है जो बसन्त में निकलते हैं। लीची के समान फल होते हैं जो चिकने होते हैं। इन में लाल रंग के बीज निकलते हैं। इनमें तैल होता है।

अंकोल पहाड़ी इलाकों में पाया जाता है। कोकंण देश में, चीन, मलाया, लंका और फिलिपाइन्स में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—बीज, मूलत्वक।

मात्रा— ३ से ६ रत्ती वमनार्थ—३माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—कटुतिक्त-कषाय रस, लघु स्निग्ध, तीक्ष्ण, सर गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक एवं विषघ्न प्रभाव होता है। यह वात कफ शामक होता है। यह रेचक, कृमिनाशक एवं शूल शामक होता है। यह जन्तु विष नाशक होता है। बलकारक, शोथ, विसर्प, रुधिर विकार, आमदोष, ग्रह दोषों को दूर करता है। मूषा के विष एवं सर्प विष की उत्तम औषध है। अधिक मात्रा में प्रयोग कराने से वामक होता है।

आधुनिक मत—इस की छाल में 'एलेञ्जीन' नामक क्षार तत्व होता है।

डा० मुर्ड़ान शरीफ ने लिखा है कि इसकी छाल को पचास ग्रेन की मात्रा में दिया जाए तो यह एक उत्तम वामक औषध जैसा कार्य करती है। अल्प मात्रा में अरोचक एवं ज्वरघ्न है। चर्म रोगों पर कर्म करती है। लगातार प्रयोग करने से इसका प्रभाव चर्म रोगों पर आक से अच्छा होता है।

यह इपिकाकुआना की उत्तम प्रतिनिधि है। यह उसके जितने ही गुण करती है। किन्तु आमातिसार में लाभप्रद नहीं। ५—१० ग्रेन की मात्रा में इसकी छाल का चूर्ण ज्वर में पसीना लाकर लाभ करता है।

ऐसा देखा गया है कि इस में प्राप्त होने वाले विशेष तत्व ऐलेञ्जिन सलफेट' का सिरा में अन्तःक्षेप करने से रक्तभार कम हो जाता है किन्तु यह थोड़े समय के लिए होता है।

इसके तेल की ५ बूंद शक्कर में मिलाकर दूध में दी जाए तो यह बल बढ़ाता है। प्रमेह-निर्बलता, भ्रम में लाभ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CRUCIFERAE FAMILY राजिकादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः क्षुप

पत्र —प्रायः मूलोद्भूत एवं एकान्तर

पुष्प —पुष्पबाह्य कोश (Calyx) के दल ४
पुष्पाभ्यन्तर कोश (Corolla) के दल४
(इनकी व्यवस्था X निशान जैसी)

बीज —बीजकोश अधःस्थ

७६. खूबकलाँ

अंग्रेजी—Hedge Mustard **लैटिन**—*Sisymbrium Irio*

विवरण—यह गेहूँ आदि के खेतों में पैदा हो जाती है। इसका पौधा सरसों के पौधे से मिलता-जुलता होता है। इसके बीज सुर्ख पीले रंग के और खसखस की तरह छोटे होते हैं। इन बीजों को पानी में भिगोने से लेस हो जाता है।

प्रयोज्य अंग—बीज।

मात्रा—३ से ६ माशा।

गुण—यह भूख बढ़ाती, कामेन्द्रिय को ताकत देती, सूजन मिटाती और वातनाशक होती है। आमाशय को ताकत देती है। वर्ण को निखारती है। इसका लेप गठिया की सूजन, औरतों के स्तनों की सूजन और आदमियों के अण्डकोषों की सूजन को मिटाता है।

यह फेफड़े के रोग, पुरानी खाँसी और बुखार में लाभ करती है। चेचक मोतीजीरा और खसरा में प्रयोग करते हैं।

आधुनिक मत—कर्नल चोपड़ा का कहना है कि यह उत्तेजक कफ निकालने वाली और ताकत देने वाली है।

डा० वामन देसाई भी इसे खाँसी और श्वास में लाभकारी बताते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

७७. चनसूर

आयुर्वेदीय नाम—चन्द्रशूर, चन्द्रिका, वासपुष्पा **यूनानी**—हुरूफ

अंग्रेजी—Common Cress. **लैटिन** – *Lepidium Sativum*

विवरण—इसका पौधा १ से २ फुट ऊँचा होता है। पत्ते कटे-फटे धनिए के पत्तों जैसे होते हैं। इसमें छोटे और सफेद रंग के फूल आते हैं। इसके बीज लाल रंग के नौकाकार होते हैं जिन को पानी में भीगने से लेस बन जाता है। यह भारत और तिब्बत में पैदा होते हैं।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा**—१ से ३ माशा।

आयुर्वेदीय मत—कटु तिक्त रस, लघु, स्निग्ध पिच्छिल गुण, कटु विपाक, उष्ण वीर्य होते हैं। वातकफ शामक है। दीपन, अनुलोमन, ग्राही, शूलप्रशमन रक्तशोधक, हिक्का निग्रहण, कफ नि:सारक, मूत्रल, वृष्य, बल्य है। आर्तव-जनन एवं स्तन्यजनन होते हैं। वातव्याधि में लाभदायक होता है। इसका लेप कटिशूल, पार्श्वशूल व सन्धि वात में लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में उड़नशील सुगन्धित तैल होता है। पाञ्चांग में आयोडिन, लौह, फास्फैट, पोटाश, गन्धक होता है।

७८. तोदरी

अंग्रेजी—Pepper Grass **लैटिन**—*Lepidium Iberis*

विवरण—इसका काँटे वाला छोटा पौदा होता है। इसके पत्ते लम्बे और फूल बैंगनी लाल रंग के होते हैं। इसमें छोटी २ फलियां लगती हैं जिन में मसूर के दाने के बराबर लेकिन उस से कुछ छोटे और चपटे बीज होते हैं। इनको पानी में भिगोया जाए तो लेस हो जाता है। रंग भेद से यह तीन प्रकार की बताई गई है—(१)सफेद, (२) पीली (३) लाल। इन में पीली तोदरी ज्यादा लाभ करती है। यह साइबेरिया, योरुप और ईरान में पैदा होने वाली चीज है। अब पंजाब में भी पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा**—$\frac{1}{2}$ से १ तोला

गुण-कर्म—यह काम शक्ति बढाती, वीर्य बढ़ाती, औरतों को दूध बढ़ाती, आमाशय को ताकत देती, शरीर को मोटा करती, कफ को बाहर निकालती और सूजन को मिटाती है। इसको चूर्ण कर दूसरी दवाओं के साथ मिला दूध

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

से पिलाते हैं। इसकी चटनी (अवलेह) खांसी, श्वास में लाभ करती है। फुफ्फुस और आंतों को साफ करती है। यह शोथ को दूर करने के लिए प्रयोग की जाती है। यह घबराहट पैदा कर सकती है। इसके लिए इसको उबाला देना चाहिए।

आधुनिक मत—इसके बीजों में उड़नशील तैल, तिक्त सत्व और गन्धक होता है।

कर्नल चौपरा ने लिखा है कि यह बीज कामशक्ति बढ़ाते, कफ निकालते उत्तेजना देते और विष का नाश करते हैं।

७९. मूली

आयुर्वेदिक नाम— मूलक, **यूनानी** —फुज्ल

अंग्रेजी—Radish **लैटिन**—*Raphanus Sativus.*

विवरण—इसका पौधा छोटी सरसों जैसा होता है। पत्ते लम्बे, किनारे कटे हुए और पत्ते की लकीरें लाल या बैंगनी रंग की होती हैं। फूल सफेद या पीले आते हैं और फल सरसों जैसा $\frac{1}{2}$ से २ इंच लम्बी फली जैसा होता है। इसके बीज सरसों से बड़े और बेड़ौल होते हैं। यह सारे भारत में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़ और बीज।

मात्रा—रस २ से ४ तोला, बीज का चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—यह कटु रस, लघु-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक है। रोचन, दीपन, पाचन अनुलोमन, यकृदुत्तेजक, भेदन होती है। कफ निस्सारक, मूत्रल, आर्तवजनन और अश्मरी भेदन तथा ज्वरघ्न है। इससे सिद्ध तैल का अभ्यंग अथवा इसके उपनाह से सूजन मिटती है।

आधुनिक मत- इस में एक स्थिर तैल एक सुगंधित तैल एक उड़नशील तैल होता है। तैल, में गन्धक पाया जाता है।

८०. राई

आयुर्वेदीय पर्याय—राजिका, आसुरी, तीक्ष्ण गन्धा **यूनानी**—खरदल

अंग्रेजी—Brownmustard **लैटिन**—*Brassica Juncea*

विवरण – इसका पौधा सरसों के पौधे की तरह २ से ३ फुट ऊँचा होता है। पत्ते लम्बे, फूल गुच्छों में पीले रंग के, बीज भूरे रंग के सरसों से कुछ छोटे होते हैं। यह सारे भारत में पैदा होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—बीज मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटुतिक्त रस, लघु, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होती है। कफवात शामक, दीपन, पाचन, शूलहर, कृमिघ्न, स्वेदजनन है। चर्म रोगों पर लेप करते हैं और उष्णता एवं उत्तेजना पहुँचाने के लिए इसे लेप के रूप में प्रयोग करते हैं। ज्यादा मात्रा से दाह, प्यास करती है और वमन हो जाती है।

आधुनिक मत—बीजों में २० से २५ प्रतिशत स्थिर तैल होता है।

कर्नल चोपरा ने लिखा है कि इसका बाह्य प्रयोग पुल्टिश के रूप में बहुत लाभ करता है। दर्द-सूजन मिट जाती है। विष को नष्ट करने के लिए इसको ज्यादा मात्रा में खिलाकर वमन कराते हैं।

८१. सरसों

आयुर्वेदीय पर्याय—सर्षप, कटुस्नेह, तन्तुभ यूनानी—सर्षफ

अंग्रेजी—Rape लैटिन—*Brassica Alba.*

विवरण—इसका वर्षायु क्षुप १ से ३ फुट ऊँचा होता है, जिस का तना सीधा और पत्तियाँ एक से डेढ़ फुट लम्बी होती हैं। फूल गुच्छों में पीले रंग के आते हैं। फल छोटे, गोल होते हैं जिन में से पीले या लाल रंग के अनेक बीज निकलते हैं। यह सारे भारत में होती है। लाल दाने वाली सरसों को Brassica Nigra कहते हैं।

प्रयोज्य अंग—बीज मात्रा—३ से ५ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, स्निग्ध गुण (शाक का गुण तीक्ष्ण-रूक्ष है) उष्ण वीर्य व कटु विपाक है। यह कफ वात नाशक एवं पित्त वर्धक है। दीपन, विदाही एवं कृमिघ्न है। यह मूत्रजनन, हृदयोत्तेजक, वाजीकरण और गर्भाशयोत्तेजक है। कुष्टघ्न है। दर्द, शोथ, कण्डु कुष्ठ तथा साधारण दुर्बलता में इसके तैल का अभ्यंग किया जाता है।

आधुनिक मत—इसमें २३ से २५% स्थिर तैल होता है। इस में सिनाल्बिन, सिनापिन, लेसिथिन, माइरोसिन होते हैं। इसमें पोटेशियम, मेगनेसियम और केल्सियम के नमक पाए गए हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CUCURBITACEAE FAMILY कोशातक्यादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: लता जाति, काण्ड–गोल या कोणयुक्त

पत्र —एकान्तर, (Alternate) प्राय: खर, हृदयाकृति (Cardiac) दन्तुर (Dentate)

पुष्प —एकलिंगी, पीत अथवा श्वेत ।

पुष्प बाह्यकोश और पुष्पाभ्यन्तर कोश (Calyx and Corolla) के

दल–५ परस्पर मिले हुए

पुंकेशर—३ परस्पर मिले हुए

फल— मांसल

८२. इन्द्रायण

आयुर्वेदीय पर्याय—इन्द्रवारुणी, ऐन्द्री, गवाक्षी, चित्र **यूनानी**—हँजल

अंग्रेजी— Colocynth **लैटिन**—*Citrullus Colocynthis*

विवरण—इसकी लता रोमश और कठोर होती है पत्ते कटे फटे, तरबूज के पत्तों की तरह के, २ से ३ इंच लम्बे होते हैं। पत्ते के डंठल के पास से फूल और धागा सा निकलता है। फूल पीले रंग के होते हैं। गोल फल होता है जो चिकना होता है और कच्चे का रंग हरा और पकने पर पीला रंग हो जाता है। फूल और फल सर्दियों में आते हैं। फल में काले से रंग के बीज निकलते हैं। यह सारे भारत में एवं ट्रावनकोर में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, मूल।

मात्रा—फल चूर्ण १ से ४ रत्ती, जड़ चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु-रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफ पित्त हर है। रेचन, कृमिघ्न, रक्तशोधक, शोथहर है। इसकी जड़ विशेष कर प्रमेहघ्न, ज्वरघ्न, तीव्र गर्भाशय संकोचक है। मूल को योनि में रखने से मासिक स्राव होता और गर्भपात हो जाता है। उदररोग, गुल्म, कामला, आमवात में लाभ करता है। फल का छिलका वामक और कफ निःसारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसमें Colocynthin नामक तत्व विशेष रूप से पाया जाता है। Pectin भी होता है।

डा० क्षौरी ने लिखा है कि इसके चूर्ण को सूंघने से छींकें आती हैं। वात रोग और बालकों के जिगर तिल्ली में इसकी जड़ देते हैं। वायु के दर्द को मिटाती और कुचले के साथ लेप करने से फोड़े को पका देती है।

८३. कड़वी तोरई

आयुर्वेदीय पर्याय—इक्ष्वाकु, कटुतुम्बी, महाफला, **यूनानी**—कदूए तल्ख
अंग्रजी—Bitter Gourd **लैटिन**—*Lagenaria Vulgaris*

विवरण—इसकी बेल खेतों में फैली रहती है। इसके पत्ते पाँच कोण वाले होते हैं और ६ इंच व्यास के होते हैं। इसमें पीले रंग केफूल आतेहैं। यह फूल ६ इंच लम्बे डंठल में लगे रहते हैं। इसमें तोरई के जैसा फल लगता है। यह सारे भारतमें पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, बीज, पत्र

मात्रा—स्वरस ½ से १ तोला; बीज चूर्ण १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु-तिक्त रस, लघु-रूक्ष तीक्ष्ण गुण, शीत वीर्य, कटु विपाक होती है। यह त्रिदोषनाशक होती है। यह तीव्र वामक एवं विरेचक होती है। कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न एवं विषघ्न है। कास, श्वास, ज्वर, छर्दि, विष, मूर्च्छा में लाभ करती है। कुष्ठ एवं शोथ में लाभ करती है। कृमिनाशक एवं दुष्ट व्रण का शोधन करती है।

आधुनिक मत—इसके फल में सैपोनिन, अलब्युमिनॉयड और कार्बोहाइड्रेट होता है।

अनुसन्धानों से पता चला है कि यह मलेरिया में लाभ करती है। मलेरिया के कारण उत्पन्न यकृत प्लीहा, वृद्धि, कामला, शोथ, जलोदर में यह लाभ करती है।

इसकी तुलना 'इपिकाक' से की जाती है। इसके बीज ५ से १० ग्रेन की मात्रा में कफनिःसारक होते हैं और २० से ३० ग्रेन की मात्रा में वामक होते हैं।

केमान का मत है कि इसका क्वाथ श्वास के रोगियों को बहुत लाभ करता है। चर्म रोगों में लाभ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

८४. करेला

आयुर्वेदीय पर्याय—कारवैल्लक, कठिल्ला सुषवी, कंटफला
युनानी नाम—उलाहिभार
अंग्रेजी—Bitter Gourd **लैटिन**—*Momordia Charantia*

विवरण—इसकी वर्षायु लता होती हैं। इसके पत्ते गोलाकार, १-३ इंच व्यास के, रोमश, अनेक असमान भागों में विभक्त होते हैं। पीले रंग के फूल आते हैं। इसका फल हरे रंग का, १-३ इंच लम्बा होता है जिस पर उभार होते हैं। इसमें $\frac{1}{2}$ इंच लम्बे चपटे बीज होते हैं। यह सारे भारत में पैदा होता है। इसकी एक और जाति होती है जो करेली कही जाती है, उसका लैटिन नाम Momrodia Muricata होता है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग

मात्रा—स्वरस १ से ३ तोला

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु रूक्ष, गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक होता है। यह त्रिदोषनाशक है। रोचन, दीपन, पाचन, भेदन, कृमिनाशक है। रक्त-शोधक, शोथहर, मूत्रल, ज्वरघ्न, विषघ्न एवं कुष्ठघ्न होता है।

रक्तपित्त, पाण्डू, श्वास, कास, प्रमेह, कुष्ठ, ज्वर, अर्श, क्रिमि, व्रण एवं मेदरोग नाशक होता है।

आधुनिक मत—इसके शुष्क फल में विलेय कार्बोहाइड्रेट होता है। साथ में अलब्युमिनायड़ एवं भस्म होती है।

कर्नल चोपड़ा के अनुसार यह वमनकारक एवं विरेचक है। वमनार्थ १० तोला रस देना चाहिये।

यह वाजीकरण है एवं सुजाक में लाभ करता है।

८५. खरबूजा

Cucumis malo

विवरण—इसकी लता होती है। यह एक प्रसिद्ध द्रव्य है जिसको सब जानते हैं। सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, बीज

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, गुरु स्निग्ध गुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक है। मूत्रल, रेचक, वृष्य; वातपित्त शामक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसके बीजों में तैल होता है उस तैल में Fatty acids होते हैं।

इसके बीज शीतल, ताकतवर और पेशाव साफ लाने वाले होते हैं। गूदा पेशाव साफ लाता और पुराने एग्जिमा में लाभ करता है।

८६. खीरा

आयुर्वेदीय पर्याय—कंटकीफल, सुधावार, त्रपुष

अंग्रेजी—Common cucumber **लैटिन**—*Cuchmis sativa*

विवरण- इसकी वर्षायुलता रोम वाली होती हैं। २-३ इंच लम्बे डंठल में पंचकोण गोल पत्ते लगे होते हैं जिनका व्यास ३ से ६ इंच लम्बा होता हैं। फूल पीले रंग का और फल हरे पीले रंग के ४ से १२ इंच लम्बे और १ से $1\frac{1}{2}$ इंच चौड़े होते हैं। इसमें सफेद रंग के लम्बे चपटे बीज होते हैं। सारे भारत में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—फल, बीज

मात्रा -रस २ से ५ तोला, बीज का चूर्ण १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, लघु, रूक्ष गुण, शीत बीर्य और मधुर विपाक होता है। पित्तशामक है। वातकफवर्धक है। मूत्रल है। दाह-प्रशामक है और बलकारक है। अनिद्रा, शिरशूल में बीजों का तैल लगाते हैं। रक्त पित्त मूत्रकृच्छ में दिया जाता है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में स्थिर तैल, स्टार्च, राल और शर्करा होती है। पत्थरी के लिए बहुत उत्तम द्रव्य है।

८७. तोरई

आयुर्वेदीय पर्याय— कोशातकी, मृदंग फल

अंग्रेजी—Ribbed luffa **लैटिन**—*Luffa amara*

विवरण—इसकी लता होती है जिसके पत्त हलके हरे रंग के और पांच कोने वाले होते हैं। फूल हलके पीले रंग के होते है। फल लम्बा, मुलायम होता है। गूदा सफेद रंग का होता है और बीज धूसर वर्ण के होते हैं।

तोरई की दो जातियाँ होती हैं—कड़वी और मीठी। मीठी शाक में काम आती है—कड़वी दवा में प्रयोग की जाती है। कड़वी जंगलों में पाई जाती है, विशेषकर बंगाल में पाई जाती हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—फल, पुष्प, पत्र

मात्रा—स्वरस ३ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु तोरई तिक्त कटु रस, लघु-रूक्ष-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होती है।

इसके बीज वामक एवं विरेचक होते है। दीपन, हृद्य एवं कुष्ठघ्न है। कास, श्वास, ज्वर, कृमि, रक्तपित्त, प्रमेह, कुष्ठ में प्रयोग होते हैं। शिरोरोग नाशक है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में 'लूफिन' नामक कटु तत्व होता है। कर्नल चोपडा इसे वमनकारक, विरेचक, मूत्रल एवं कफ निःसारक बताते हैं।

डा० देसाई का कहना है कि इसके पत्तों का मरहम व्रणरोपक होता है। पत्तों को पीसकर बवासीर पर लगाया जाता है।

८८. परवल

आयुर्वेदीय पर्याय—पटोल, कूलक, कर्कशच्छद, राजीफल।

लैटिन—*Trichosanthes Cucumerina.*

विवरण—इसकी लम्बी सी लता होती है। पत्ते हृदयाकार होते हैं और नौकदार एवं कर्कश होते हैं। सफेद रंग के फूल आते हैं। फल लम्बे गोल होते हैं जिन पर सफेद रंग की धारियाँ होती हैं। यह सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग।

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु-रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाक होता है। त्रिदोष नाशक है। रोचक, दीपन, पाचन, रेचन, कुष्टघ्न, ज्वरघ्न, विषघ्न होता है।

अग्निमान्द्य, अजीर्ण, कामला, अर्श, कृमि रोग, कास, रक्त पित्त, कुष्ठ, कण्डू एवं ज्वर नाशक होता है। यह वर्ण के लिए हितकारक होता है।

विशेष गुण बताते हुए कहा गया है कि पटोल पत्र पित्त नाशक, उसकी नाड़ी कफ नाशक, फल त्रिदोष नाशक एवं मूल विरेचक होता है।

इसके बाह्य प्रयोग से व्रण रोपण होता एवं व्रण का शोधन होता है। बालों के लिए हितकारक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

८६. पेठा

आयुर्वेदीय पर्याय—कूष्माण्ड, पुष्प फल, वृहत फल, सोमका

यूनानी—महदवा।

अंग्रेजी—White Pumpkin. **लैटिन**—*Benincasa Hispida.*

विवरण—इसकी वर्षायु लता होती है। इसके पत्ते लम्बे डंठल में लगे हुए, सफेद रंग के, सख्त और ४, ६ इंच घेरे के होते हैं। इस में फूल बड़े डंठल में लगते हैं और फिर बड़े २ सफेद रंग के फल लगते हैं जिसमें सफेद रंग के चपटे बीज निकलते हैं। सारे भारत में होता है।

प्रयोज्य अंग—फल और बीज का तैल।

मात्रा—फल १ से २ तोला. बीज तैल १ से २ तोला (बाहरी प्रयोग)

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, लघु, स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक और मेध्य प्रभाव वाला होता है। यह वात पित्त शामक, निद्रा जनन, अनुलोमन, तृष्णा-निग्रहण, रक्त पित्त शामक है। मूत्र जलन, दाह-संताप नाशक एवं वृहंण है। इसके बीज कृमि नाशक है। यह उन्माद, उरक्षत, राजयक्ष्मा, कास, मूत्राघात, अश्मरी और दाह में प्रयोग होता है।

आधुनिक मत—इसमें स्टार्च, कुकर्बिटीन, मायोसिन, वाइटेलिन आदि तत्व होते हैं। बीजों में तैल होता है।

डा० क्षौरी ने लिखा हैं कि इसका ताजा रस शक्कर और केसर के साथ देने पर उन्माद, मृगी, मधुमेह और वायु के दर्द में लाभ होता है।

डिमक ने मधुमेह की श्रेष्ठ औषध माना है।

९०. बन्दाल

आयुर्वेदीय पर्याय—जीमूतक, देवदाली।

अंग्रेजी—Bristly Luffa. **लैटिन**—*Luffa Echinata.*

विवरण—इसकी फैलने वाली बेल होती है जिसका पतला सा तना होता है और पञ्चकोण होती है। इसके पत्ते १ से २ इंच लम्बे और रोमश होते हैं। छोटे २ फूल सफेद रंग के होते हैं। फल छोटे, गोल, पीले रंग के होते हैं जिन पर कांटे होते हैं। इन में छोटे २ बीज निकलते हैं। यह गुजरात, बम्बई,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिन्ध और बंगाल में होती है। इसकी पीले फूल वाली एक और जाति होती है।

प्रयोज्य अंग—फल।

मात्रा—५ से १० रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य कटु विपाक होता है। त्रिदोष नाशक है। यह दीपन, वामक, रेचक, ज्वरघ्न एवं कुष्टघ्न है।

ज्वर, श्वास, हिक्का, कास, पाण्डु, शोथ, कामला, कृमि, कुष्ठ एवं विष का नाश करती है।

वमन – विरेचनार्थ इसकी मात्रा १ से २ माशा होती है।

आधुनिक मत – इसके बीजों में एक तैल होता है। पञ्चांग में एक तिक्त तत्व कोलोसिन्थिन के समान गुण करने वाला होता है।

इसके फल को पीस कर बवासीर के मस्सों पर लगाने से लाभ होता है। कामला, पीनस, अपस्मार, कफज शिरोरोगों में इस का नस्य देते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CUPULIFERAE FAMILY मायाफलादि वर्ग

स्वरूप —प्रायः वृक्ष क्वाचित क्षुप
पत्र —एकान्तर, पक्षाकार
पुष्प —पुंकेशर–५-१०
वीजकोश—अधःस्थ
फल —कवचयुक्त
बीज —१–२

९१. भोजपत्र

आयुर्वेदीय पर्याय—भूर्जपत्र; भूर्जचर्म; वहुवल्कल; बहुपुट; चित्रपत्र।
अंग्रेजी—Jacpuemontree लैटिन—*Betula Bhojapattra*

विवरण—पहाड़ी प्रदेशों में लगभग ४०-५० फुट ऊँचा वृक्ष होता है, जिस की छाल कोमल, चमकीली कागज की जैसी पतली होती है। इसका रंग रक्ता-भ श्वेत होता है। इस पर अनुप्रस्थ रेखाएँ पड़ी रहती हैं। इस वृक्ष में लटवाकार पत्ते होते हैं, जो दन्तुधार होते हैं। इसमें ४-१२ जोड़े पत्रसिराएँ होती हैं। इसके बीज पक्षयुक्त होते हैं। यह हिमालय में ५ हजार फुट से ऊपर पाया जाता है। सिक्कम और भूटान में विशेष कर होता हैं।

प्रयोज्य अंग—छाल।

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कषाय रस, लघु स्निग्ध गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक है। भूतनाशक प्रभाव होता है। त्रिदोष शामक, मेध्य, रक्तपित्त शामक, रक्तरोधक, मेदघ्न एवं विषघ्न होता है।

कर्ण रोग, कुष्ठ, रक्त रोग, आक्षेप एवं अतिसार, प्रवाहिका में प्रयोग किया जाता है। कास में लाभ करता है।

आधुनिक मत—इस में बेटुलिन नामक क्षार तत्व होता है और एक उड़नशील तैल होता है।

इस की छाल को हिस्टेरिया नाशक एवं शान्तिदायक माना जाता है। इस में कुछ सुगन्धित एवं कृमिनाशक तत्व होते हैं।

मलाया में इसकी छाल का काढ़ा पित्तज्वर एवं पीलिया में प्रयोग किया जाता है।

इसका बाह्य प्रयोग पूतिहर एवं कीटाणु नाशक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

CYPERACEAE FAMILY मुस्तादिवर्ग

स्वरूप —क्षुप-तृण सदृश,
काण्ड-त्रिकोण, पर्वरहित,

पत्र —अवृन्त,

पुष्प —छोटे, हरे, काण्डाग्र में गुच्छों में लगे हुए,

९२. कसेरू

आयुर्वेदीय पर्याय—कशेरूक ।

अंग्रेजी—Water Chestnut **लेटिन**—*Scirpus grossus*

विवरण—इसका वर्षायु पौधा ४-६ फुट ऊँचा होता है जिस का तना अंगुली जितना मोटा होता है और छोटे २ पत्ते होते हैं। लगभग ३ फुट लम्बी फूलों की मंजरी होती है। फल धूसर अथवा कृष्ण वर्ण के छोटे २ होते हैं। इसकी जड़ में कन्द निकलता है जो जायफल के बराबर गोल होता है। यह रोमश होता है। ऊपर से काला और अन्दर से सफेद रंग का होता है। इस में सुगंध आती है और मीठा होता है। इसे चिचोढ़ भी कहा जाता है। इसका एक और भी भेद होता है जिस का कन्द इस से कुछ वड़ा होता है, इसे बड़ा कसेरू या राज कसेरू कहा जाता है। इस का लैटिन नाम Scirpus Tuberosus है।

कसेरू भारत के उष्ण प्रदेशों में या आद्र भूमि में पैदा होता है। चीन में भी पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—कन्द ।

मात्रा—$\frac{1}{2}$ से १ तोला।

आयुर्वेदिक मत—मधुर-कषाय रस, गुरू-रूक्ष गुण, शीतवीर्य एवं मधुर विपाक होता है। यह पित्त शामक-कफ वात वर्धक है। यह संग्राही, रक्तस्तम्भन स्तन्य जनन, शुक्रल, कृमिकारी होता है।

दाह, रक्तजरोग, नेत्ररोग, प्रमेह, तृष्णा, कामला एवं दुर्बलता में प्रयोग किया जाता है। यह गर्भस्थापक औषधि मानी जाती है। हृदय को बल देती है।

आधुनिक मत—इसके कन्द में स्टार्च ६३% होती है। प्रोट्रीन ७% एवं गोंद होता है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि इस का कन्द वमन को बन्द करता एवं रक्तातिसार में लाभ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यूनानी ग्रन्थकारों ने इसे उत्तम विषघ्न कहा है। उन का कहना है कि विष चाहे किसी जन्तु के काटने से पैदा हुआ हो अथवा कोई विषाक्त द्रव्य भक्षण से दोनों ही अवस्थाओं में लाभ होता है।

९३ नागरमोथा

आयुर्वेदीय पर्याय—मुस्तक, वारिद **यूनानी**—साअद्

लैटिन—*Cyparus Scariosus.*

विवरण—इसका पौधा १ से ३ फुट ऊँचा होता है। पत्ते लम्बे घास की तरह होते हैं। फल का डठंल पौधे के अग्रभाग से निकलता है। जिसमें ऊपर तरफ १० से २० तक शाखाएँ होती हैं। फल लम्बे होते हैं। इसकी जड़ $\frac{1}{2}$ से १ इंच मोटी, काले रंग की और सुगन्धित होती है। यह भारत के आद्र भागों में उत्पन्न होता है।

आयुर्वेद में इसकी मुख्यतः तीन जातियाँ होती हैं जो नागरमोथा के अलावा भद्रमुस्तक और कैवर्त्तमुस्तक हैं।

प्रयोज्य अंग—१ से ३ माशा।

मात्रा--चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कटु, तिक्त-कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, शीतवीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफ पित्त शामक है। यह मेध्य और नाड़ियों को बलकारक होता है। यह दीपन, पाचन, ग्राही क्रृमिघ्न, कफघ्न, मूत्रल, स्तन्य-जनन, स्वेदजनन, ज्वरघ्न, बल्य और विषघ्न है।

यह अपस्मार आदि मानसिक रोग, अरुचि वमन, क्रृमिरोग, संग्रहणी में प्रयोग होती है। कास, श्वास, मूत्र रोग, ज्वर, रजोरोध एवं त्वचा के रोगों को दूर करता है। दुर्बलता नाशक एवं विषनाशक है। इसका लेप त्वचा के रोगों को दूर करता और स्तनों पर लेप करने से स्तनवृद्धि करता है। आँखों में अंजन लगाया जाता है।

आधुनिक मत—इसमें चर्बी, शर्करा, कार्बोहाइड्रेट, अलब्युमिन तथा क्षार होता है। इसमें उड़नशील तैल होता है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि यह पाचक, हृदय और आमाशय को ताकत देने वाला, पसीना लाने वाला, पेशाब लाने वाला और संकोचक है। यह दस्तों को ठीक करता है। इसका क्वाथ उनोरिया और सिर्फालिस में दिया जाता है। यह बाल धोने के काम में लिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

D

DIOSCORIACEAE FAMILY वाराहीकन्द वर्ग

स्वरूप—प्राय: आरोही, लम्बेक्षुप
पत्र —एकान्तर अभिमुख साधारण अथवा संयुक्त
पुष्प —छोटे, एकलिंगी पुंकेशर–६, बीजकोश–त्रिकोष्ठीय
मूल —बड़े, स्थूल, कन्दाकार (**Bulbous Root**)

६४. वाराहीकन्द

आयुर्वेदीय पर्याय—नाराही, वरदा, गृष्टी, वाराहवदना
लैटिन—*Discorea Buebifara.*

विवरण—इसकी सुहावनी लता होती है जो वर्षा आरम्भ होने पर बढ़ाना आरम्भ होती है। इसका तना चिकना होता है और पत्रकोण में एक उभार होता है। पत्त एकान्तर लगे हुए, और तीक्ष्णाग्र होते हैं। वर्षान्तिकाल में फूल मंजरी में लगते हैं। इनका रंग पीत अथवा श्वेत होता है। रात्री में इन में से बहुत मधुर गन्ध आती है। इसके फलों में बीज निकलता हैं। इसका कन्द छोटा होता है जिसका आकार शूकर के मुख जैसा, एक तरफ मोटा और दूसरी तरफ पतला लोम युक्त होता है। ऊपर स यह भूरे रंग का होता है और काटने पर अन्दर से पीलापन लिए हुए श्वेत होता है। कुछ अन्य लता जाति की वनस्पतियों के कन्द को भी वाराहीकन्द मानते है। वाराहीकन्द हिमालय प्रदेश में ५ हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—कन्द **चूर्ण**—$\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—कटु-तिक्त मधुर रस, लघु-स्निग्ध गुण, उष्णवीर्य एवं कटु विपाक होता है। कफ नाशक, पित्त वर्धक होता है। दीपन, रसायन, वृष्य, आयुस्य, बल्य होता है।

यह कुष्ठ, कृमि, प्रमेह में बहुत लाभ करता है। रक्त-विकार, दुर्बलता मे प्रयोग किया जाला है। स्वर तथा वर्ग को निखारने वाला है।

आधुनिक मत—इसके कन्द में स्टार्द काफी मात्रा में होता है।

आधुनिक वैज्ञानिक इसे उत्तम पोषक द्रव्य मानते हैं और इसके रसायन तथा वृष्य गुण के स्वीकार करते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

DIPTEROCARPEAE FAMILY शालादि वर्ग

स्वरूप—बड़े वृक्ष, सपुष्प

पत्र —एकान्तर (**Alternate**) सादे (**Simple**) सिराऐं (**Veins**) समानान्तर एवं स्पष्ट

पुष्प —गुच्छों में, शाखाग्र या पत्रकोण (**Apical or Axillary**) उद्भूत;

पुष्प बाह्यकोश (**Calyx**) के दल ५ स्थायी

पुष्प अभ्यन्तर कोश (**Corolla**) के दल–५

विशेष—इन वृक्षों से राल अथवा सार तैल निकलता है।

९५. कपूर भीमसेनी

आयुर्वेदीय पर्याय—कर्पूर, हिमवालुक, सिताभ्र, हिमाहृत **यूनानी**—काफूर
अँग्रेजी—Camphor **लैटिन**—*Dryobalanops Aromatics*

विवरण–कपूर के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष सदा हरे रहते हैं। इनकी छाल ऊपर से खुरदरी और अन्दर से चिकनी होती है। इसके पत्ते तेजपात के जैसे होते हैं। फूल हरे, पीले मंजरियों में होते हैं। फल मटर की तरह गुच्छों में होते हैं। इस वृक्ष के तने में खोखली जगह होती है जिसमें पेड़ का निर्यास एकत्रित हो जाता है। यही कपूर होता है। यह पानी में डूब जाता है।

उत्पत्ति भेद से दूसरा कपूर जापानी कपूर कहलाता है जिसका पौधा Latin में Cinnamomum Camphora कहलाता है और Lauraceae Family का होता है। तीसरी तरह का कपूर हिन्दुस्तानी कपूर होता है जो Labiatae Family के वृक्ष Ocimum Kilimandscharicum का निर्यास है।

भीमसेनी कपूर के पौधे बोर्नियो और सुमात्रा में ज्यादा होते हैं और भारतीय देहरादून आदि में होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यूनानी हकीमों ने तीन तरह के कपूर का वर्णन किया है—१. रियाही (सुर्ख श्वेत) २. कैसूरी (श्वेत) इसे 'फार्मोसा कैम्फर' कहते हैं। ३. काफूर मोती (नकली) जो 'ब्लूमिया कैम्फर' कहा जाता है।

प्रयोज्य अंग—निर्यास।

मात्रा—१ से ३ रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त, कटु, मधुर रस, लघुतीक्ष्ण गुण, शीतवीर्य और कटुविपाक होता है। त्रिदोषनाशक, अल्पमात्रा में मेध्य एवं वेदना स्थापन है। मुख-शोधक, रुचिकारक, दीपन, पाचन, अनुलोमन, हृदय को उत्तेजना देने वाला, कफनिःसारक, मूत्रल, विषघ्न, स्वेदजनन कर्म करता है। अल्प मात्रा में वाजीकरण हैं किन्तु अधिक मात्रा में कामावसादक है। इसको तैल में मिलाकर या मरहम आदि में मिलाकर दर्द, सूजन, जख्म तथा त्वचा रोगों पर लगाते हैं। यह अतिसार, हैजा, कास, श्वास, हृदय रोग, मूत्रकृच्छ, वातव्याधि, कम्पन, आक्षेप में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—डा० देसाई ने लिखा है कि कपूर की क्रियाएँ उसकी मात्रा के अनुसार होती हैं। जब साधारण मात्रा में लिया गया हो तो पहले सर्वव्यापी उत्तेजन करता है किन्तु कुछ देर बाद अवसादक, वेदनानाशक और संकोच-प्रसार नियामक गुण दिखाता है। ज्यादा मात्रा में दाह पैदा करता, नशा करता और विष प्रभाव दिखाता है। इनका कहना है कि कपूर वातकफ-नाशक, दीपन, पसीना लाने वाला, ज्वर मिटाने वाला, दाह दूर करने वाला और दिल को ताकत देने वाला होता है।

९६. साल

आयुर्वेदीय पर्याय—शाल, शक्रद्रु, धूपवृक्ष

अंग्रेजी—Saltree. **लैटिन**—*Shorea Robusta.*

विवरण—इसका वृक्ष बड़ा, लम्बा, सीधा और कम छाया देने वाला होता है। इसका तना सख्त एवं रक्ताभ होता है। जब तक पेड़ छोटा होता है, छाल मुलायम होती है। बड़ा होने पर ऊबड़-खाबड़ और सख्त हो जाती है। पत्र ६ से १० इंच लम्बे और ४ से ६ इंच चौड़े चमकदार होते हैं। इसमें फूल श्वेतपीत, मुलायम, गुच्छेदार होते हैं। फल १/२ इंच लम्बा, सफेद रंग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

का मुलायम होता है। इस वृक्ष में से एक निर्यास निकलता है जो 'राल' कहलाता है। इसी जाति का दूसरा पेड़ होता है जो सर्ज कहलाता है, उसे Vateria Indica कहते हैं। इसके गुण एवं रूप शाल जैसे होते हैं। शाल हिमालय की तराइयों में होता है। कांगड़ा से आसाम तक पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, निर्यास (राल)।

मात्रा—छाल का काढ़ा ५ से १० तोला, राल चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—(वृक्ष की छाल) कषाय, कटु, तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, शीतवीर्य, कटु विपाक, कफपित्तशामक है। रक्तस्तम्भन, कफघ्न, मूत्र-संग्रहणीय, वाजीकरण, कुष्ठघ्न हैं। वेदना, शोथयुक्त स्थानों पर लेप करते हैं। चोट-व्रण अथवा अन्य कारण से हुए दर्द में इसका क्वाथ पिलाते हैं। प्रदर में लाभ करता है।

(राल) कषाय मधुर रस, लघुरूक्ष गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक तथा त्रिदोशनाशक है। यह विशेष कर दीपन, पाचन, कफनिःसारक, कफ दुर्गन्धहर, मूत्रगत जीवाणु नाशक, प्रदर, कुष्ठ मेद रोग नाशक है। इसको मरहम के रूप में प्रयोग करते हैं। फोड़े, फुन्सी, दाद, दग्ध स्थान और दूसरे चर्मरोग ठीक हो जाते हैं। राल का अञ्जन आँखों की रोशनी बढ़ाता है और कान के रोगों में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—इसकी छाल में कषाय द्रव्य होता है जो पानी में उबालने पर कत्थे के जैसा हो जाता है। इसमें Resin होती है जिसमें ६२% एशन्स्यल आयल होता है। संकोचक हैं, पेचिश के लिए फायदा करता है, हाजमा ठीक करता है और सुजाक में फायदा करने वाला कहा गया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

E

EUPHORBIACEAE FAMILY — एरण्डादि वर्ग

पत्र —एकान्तर (Alternate) अथवा अभिमुख (Opposite) उपपत्रयुक्त अथवा उपपत्ररहित प्रायः सादे (Simple) क्वचित खंडित (Compound)

पुष्प—छोटे, बीजकोश–ऊर्ध्वस्थ, तीन कोष्ठ वाला

बीज—चिकने, चमकीले, चित्रित व लम्बगोल

विशेष—पौधे तोड़ने से दूध निकलता है।

६७. आँवला

आयुर्वेदीय पर्याय—आमलकी, वयस्या, वृष्या, शिवा, धात्रीफल, अमृता

यूनानी—आम्लज

अंग्रेजी—Emblic myrabalan **लैटिन**—*Phyllanthus Emblica*

विवरण—इसका वृक्ष २०-२५ फुट लम्बा और पतले तने का होता है। लम्बे डंठल में इमली की पत्तियों की सी लेकिन उनसे कुछ छोटी पत्तियाँ लगी होती हैं। सर्दी में पीले रंग के छोटे २ फूल लगते हैं। फल अण्डे जैसे पीले, हरे रंग के होते हैं और छः हिस्सों में अलग हो सकते हैं, जिनके निशान ऊपर दिखाई देते हैं। यह सारे भारत में होता है।

प्रयोज्य अंग—फल

मात्रा—रस १ से २ तोला, चूर्ण ३ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—अम्ल प्रधान लवणरहित पाँच रस, लघु, रूक्ष, शीत गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक है। यह त्रिदोषहर विशेषकर पित्तशामक है। मेध्य, बल्य, रोचक, दीपक, यकृदुत्तेजक, हृद्य, कफघ्न, वृष्य, मूत्रल,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रमेहघ्न, कुष्टघ्न, ज्वरघ्न और रसायन है। दाह पैत्तिक सिर शूल तथा मूत्रावरोध में इसका लेप करते हैं। नेत्र रोगों में इसका स्वरस डालते हैं। खालित्य और पालित्य में आंवले से सिर धोते हैं। आयुर्वेद की प्रसिद्ध दवा च्यवनप्राश इससे ही बनती है।

आधुनिक मत—इसके फल में गैलिक एसिड, टैनिक एसिड, शर्करा, अलब्युमिन, कैलशियम और विटामिन 'सी' होता है।

डा० क्षौरी ने लिखा है कि ताजा फल चिकना, पेशाब साफ लाने वाला और हलका दस्तावर होता है। सूखा फल शीतल, पाचक और उत्तेजक होता है। अंगूर का रस और शहद के साथ आंवले का शर्बत ज्वर और अतिसार को मिटाता है।

९८. अरण्ड

आयुर्वेदीय पर्याय—एरण्ड, वातारि, रूबुक, **यूनानी**—वेद अंजीर

लैटिन—*Ricinus Communis*

विवरण—इसका पौधा ५ से १२ फुट तक होता है। पत्त हरे रंग के, चौड़े, कटे-फटे और ४ से १२ इंच लम्बे डंठल में लगे होते हैं। लाल या बैंगनी रंग के फूल आते हैं और इनमें ही गुच्छों के आकार में फल लगते हैं। फलों के ऊपर हरे रंग का आवरण रहता है जिनमें मुलायम कांटे होते हैं। फल में दो कोष्ठ होते हैं और उनमें बीज निकलते हैं जो लम्बे चिकने, काले और चितकबरे होते हैं। रंग भेद से अरण्ड दो तरह का है, लाल और सफेद। यह समस्त भारत विशेष कर मद्रास, बंगाल और बम्बई में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़, पत्ते, बीज, तैल

मात्रा— तैल २ से ५ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर कटु कषाय रस, गुरु स्निग्ध तीक्ष्ण सूक्ष्म गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक है। यह कफ वात शामक है। मेध्य, वेदना स्थापन, दीपन, भेदन, स्नेहन और कृमिनाशक है।

हृदय को बल देता है। शोथ हटाता है और मूत्र साफ करता है। वृष्य स्तन्यजनन, शुक्रशोधन और गर्भाशय शोधन करता है। यह बल देता, विष का नाश करता, पसीना लाता और कुष्ठ व ज्वर को मिटाता है। इसके तेल की

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मालिश या पत्तों को गर्म करके बाँधने से सूजन और दर्द दूर होता है। कटि शूल, गृध्रसि, पार्श्वशूल, हृदयशूल, आमवात, सन्धिशोथ एवं चर्म रोगों में इसका बाह्य प्रयोग किया जाता है। पक्षाघात, अर्दित, अर्श और यकृत रोगों में उपयोगी है।

आधुनिक मत—इसमें स्थिर तेल ४५% होता है। पिच्छिल द्रव्य, शर्करा और क्षार होते हैं। इसके बीजों में एक विषाक्त द्रव्य Ricin होता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि अरण्ड के तैल को छोड़कर जितने और विरेचक पदार्थ होते हैं, वह अति विरेचक होते हैं। अरण्ड का तेल उत्तेजक नहीं है। ना ही यह यकृत को उत्तेजित करता है। ग्रहणी में जाकर यह Pancreatic Juice से मिलता है और एक तरह का अम्ल बनाता है जिससे आंतों में स्थित ग्रन्थियाँ उत्तेजित हो जाती हैं और विरेचक क्रिया होती है। अरण्ड बीज का लेप करने से फोड़े पक जाते हैं। अरण्ड के पत्ते गर्म करके पेडू प्रदेश पर रखने से मासिक स्राव साफ हो जाता है।

९९. कबीला

आयुर्वेदीय पर्याय—काम्पिल्लक, कर्कश, रक्तांग, रेचन **यूनानी**—कम्बील
अंग्रजी—Kamala Dye **लैटिन**—*Mallotus philippinesis*

विवरण—इसका हमेशा हरा रहने वाला वृक्ष २५ से ३० फुट ऊंचा होता है जिसमें गूलर के जैसे तीन से छः इंच लम्बे पत्ते लगते हैं। पत्ते के डंठल के पास दो गांठें होती हैं और पत्ते के निचले भाग में तीन लाल रंग की धारियाँ होती हैं। गहरे लाल रंग के डंठल में छोटे २ फूल लगते हैं। इसमें छोटे बेर जैसे फल गुच्छे में लगते हैं। पके हुए फल लाल रंग की धूल से ढके रहते हैं जिनको मसलने पर लाल रंग का चूर्ण इकट्ठा हो जाता है। इसे कबीला कहा जाता है। शाखाओं से भी यह चूर्ण इकठ्ठा किया जाता है जो पीले रंग का और खराब होता है। फल में गोल चिकने और काले रंग के बीज निकलते हैं। असली कबीले में कोई स्वाद और गन्ध नहीं होती और बहुत हलका होता है। यह भारत, लंका, बम्बई, मलाया, चीन, अफ्रीका और सिंगापुर में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—फल के ऊपर की धूलि। **मात्रा**—१ से ३ माशा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण गुण, ऊष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह वात, कफ शामक, रेचक, कृमिनाशक, रक्तशोधक, पथरी, विष, गुल्म, उदर रोग, प्रमेह एवं व्रणनाशक है।

आधुनिक मत—इसमें राल ४०% होती जिसमें Rotllerin नामक द्रव्य पाया जाता है। इसके अतिरिक्त Dsorotllеri भी होता है। डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि कबीला विरेचक और कृमिनाशक है। पित्त को बाहर निकालता और शूल मिटाता है। कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि कुछ समय पहले ब्रिटिश फर्माकोपिया में कृमिनाशक औषधि के रूप में इसे मानते थे किन्तु अब विश्वास कम हो गाया है।

१००. थूहर

आयुर्वेदीय पर्याय—स्नुही, गुड़ा, सुधा, सेहुण्ड, बज्री, समन्तदुग्धा

यूनानी—जक़ूम

अंग्रेजी—Common Milk Hedge **लैटिन**—*Euphorbia Nerifolia*

विवरण—इसका पौधा छोटा और सीधा होता है जो गोल और कांटों से भरा होता है। इसके पत्ते ६ से १२ इंच लम्बे और मोटे होते हैं। फूल पीले रंग के होते हैं। बीज चपटे और रूएदार होते हैं। यह समस्त भारत सिक्किम और भूटान में पैदा होती है। इसको गोधने से दूध निकलता है। इसकी एक जाति तीन धार वाली होती है जो कि E. Antiquorum कहलाती है। पांच धार वाली जाति को E. Ligularia कहते हैं।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग, दुग्ध

मात्रा—१/२ से २ रत्ती, चूर्ण २से ४ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु स्निग्ध, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह कफवातहर, रेचक, रक्तशोधक, शोथनाशक और कफ-निःसारक है। यह त्वगदोषनाशक और विषनाशक है। गुल्म, उदररोग, कुष्ठ, कास, श्वास का नाश करता है। पत्तों को गरम कर शोथ वेदनायुक्त स्थान पर बांधते हैं।

आधुनिक मत—इसमें Euphorbon, राल, रबड़ औरCalcium Mallate होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० क्षीरी ने लिखा है कि यह विरेचक और कफनि:सारक है। इसे त्वचा पर लगाने से फोड़े पड़ जाते हैं। काली खाँसी, सांस, शोथ, प्लीहा, यकृत, ग्रहणी, पीलिया, शूल नाश के लिए इसका रस नमक के साथ देते हैं। इसकी जड़ सर्प दंष्ट वाले के लिए हितकारक है।

१०१. जमाल गोटा

आयुर्वेदीय पर्याय—जयपाल, जेपाल, दन्तिबीज **यूनानी**—हब्बुस्सलातीन
अंग्रेजी—Croton **लैटिन**—*Croton Tiglium*

विवरण—इसका पौधा हमेशा हरा रहता है। इसके पत्ते २ से ४ इंच लम्बे चिकने तथा दन्तवत कटे किनारों के होते हैं। फूल रंग में हरे पीले, मञ्जरी के रूप में लगे होते हैं। फल लगभग १ इंच लम्बा तिकोना होता है जिसमें बादामी रंग का बीज निकलता है। यह भारत, लंका, चीन में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—बीज, बीज तैल।

मात्रा—१/४ से १ रत्ती बीज।

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, गुरु, स्निग्ध तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफवातहर, तीव्र रेचक, कृमिनाशक, शोथहर, ज्वरघ्न और विषनाशक है। कब्ज, कृमि, जलोदर, ज्वर में दिया जाता है। ध्वजभंग में शिश्न पर लगाया जाता है और चर्म रोगों में भी लेप करते हैं।

आधुनिक मत—बीजों में एक स्थिर तैल, Tigliuic acid; Crotonic acid और Croton oil होता है। Croton oil में निम्न तत्त्व होते हैं—(1) Croton oleic acid, (2) Tiglic acid, (3) Crotonol, (4) Volatile oils (5) Fatty acids.

कर्नल चोपरा का कहना है कि यह पागलपन, मृगी, आक्षेप इत्यादि रोगों में लाभ करता है, जिनमें रक्तभार बढ़ गया हो। इसका तैल सन्धिवात, पक्षाघात और अन्य प्रकार के जोड़ों के दर्द में उपयोगी है।

१०२. दन्ती

आयुर्वेदीय पर्याय—दन्ती, उदुम्बरपर्णी, एरण्ड फला, शीघ्रा घुनाप्रिया।
लैटिन—*Baliospermum montanum.*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका पोधा ३ से ६ फुट ऊँचा होता है। पत्तियाँ ऊपर से नीचे तक छोटी-बड़ी होती हैं। ऊपरी पत्तियाँ २ से ३ इंच लम्बी और नीचे की पत्तियाँ ६ से १२ इंच लम्बी होती हैं। फूल हरे रंग के और फल १/२ से १ इंच लम्बा और तीन भूरे रंग के बीज वाला होता है।

इसकी एक जाति बड़ी दन्ती कहलाती है जो इससे बड़ी होती है। उसके पत्ते और बीज भी बड़े होते हैं। आयुर्वेद में उसे 'द्रवन्ती' और Latin में Croton Polyandrum कहा जाता है।

दन्ती बंगाल, बिहार, दक्षिण भारत और बर्मा में ज्यादातर होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़, पत्ते और बीज।

मात्रा—जड़ चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कटुरस, गुरु-तीक्ष्ण,-रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। कफपित्तहर, दीपक विरेचक, पितसारक, कृमिनाशक रक्तशोधक, अश्मरी-नाशक ज्वर, कुष्ठ और विष नाशक है। जड़ और बीज का लेप शोथ एवं वेदना दूर करता है।

आधुनिक मत—जड़ में राल और स्टार्च होता है। बीजों में तैल होता है।

कर्नल चोपरा का कहना है कि इसकी जड़ और बीज विरेचक होते हैं। सर्प-विष में उपयोगी माने जाते हैं।

इसके बीज जमाल गोटे की तरह तीव्र रेचक कहे गए हैं।

१०३. कनोचा

Phyllanthus Maderaspateusis

विवरण—यह एक फिसलने वाले तने की बनस्पति है। इसके पत्ते गोल, मुलायम और फैले हुए होते हैं। इसमें गोल और दबी हुई फलियाँ लगती हैं जिन में बादामी रंग के रक्ताभ बीज निकलते हैं। यह बनस्पति भारत के गर्म प्रदेशों, सीलोन, चीन, अफ्रीका, जावा और अरब में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज।

मात्रा—५ से ७ माशा।

गुण कर्म—औरत के दूध में बीजों को मिलाकर कान में टपकाते हैं जिससे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दर्द मिट जाता है। खिलाने से आमाशय और आंतों को ताकत देता है। इसे खूनी दस्तों और पेंचिश को ठीक करता है। सूजन और फोड़े-फुन्सियों पर यह लगाते या इसकी पुल्टिस बाँधते हैं। यह हवा को खारिज करता है।

इसके बीज तिल्ली के लिए हानिकारक हैं।

कर्नल चोपरा का कहना है कि यह वस्तु लुआबदार होती है। अतः इसके गुण भी दूसरी लुआबदार दवाओं की तरह होते हैं।

१०४. दूधी

आयुर्वेदीय पर्याय—दुग्धिका, स्वादुपर्णी, विक्षीरिणी

यूनानी—शीरक

विवरण—इसकी मुख्यतः दो जातियाँ होती हैं—१. बड़ी जिसका पौधा १-२ फुट का होता है। इसे E. Pilulifera कहते हैं। २. छोटी दूधी दो तरह की होती है—रक्त और श्वेत। लाल दूधी में फूल बारहों महीने रहते हैं। इसे E. Thymifolia कहते हैं।

सफेद दूधी E. Microphylla कहलाती है। यह जमीन पर फैली रहती है, छोटे २ पत्तों और फूलों से भरी रहती है। इसका काण्ड रूएँदार होता है।

भारत के उष्ण प्रदेशों में होती है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग।

मात्रा—५ से ७ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त मधुर रस; गुरु रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। कफ पित्त हर, अनुलोमन, भेदन, कृमिनाशक रक्तशोधक मूत्रल, वृष्य, कुष्टघ्न, विषघ्न है। चर्मरोगों पर लेप करते है। उपदंश, फिरंग मूत्र कृच्छ, पूयमेह शुक्रमेह में लाभ करती है।

आधुनिक मत—इसमें गैलिक एसिड, कर्सेटिन और फिनेलिक तत्व प्राप्त हुआ है।

डा० क्षीरी इसे कृमिनाशक, कफः निःसारक, रेचक और रक्तशोधक बताते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१०५. पुत्रजीवक

आयुर्वेदीय पर्याय—पुत्रजीव, गर्भकर, यष्टिपुष्प, अर्थसाधक।

लैटिन—*Putrajiva Roxburghii.*

विवरण—इसका वृक्ष काफी ऊँचा होता है जो सदैव हरा रहता है। इस का तना लगभग सीधा रहता है। छाल का रंग फीका होता है। इसके पत्ते अण्डाकार चमकीले होते हैं। बसन्त में पीतभ-श्वेत वर्ण के पुष्प लगते हैं। शीत-काल में फल लगते हैं जो लम्ब-गोल और कुछ तीखी नोक वाले होते हैं। इसका बीज कठोर होता है। यह जंगलों में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग— छाल, पत्ते, बीज।

मात्रा—५ माशा से १ तोला।

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर रस, रूक्ष, गुरु, गुण शीत वीर्य और कटु-विपाक है। यह रेचक, वीर्यवर्धक, गर्भदायक, कफवात नाशक एवं मल-मूत्र प्रवर्तक होता है। इसका विशेष प्रयोग गर्भस्थापनार्थ किया जाता है।

यह प्यास, जलन, विसर्प, श्लीपद और नेत्र रोगों में लाभ करता है। इसके फल की गुठली ज्वर का नाश करने वाली कही गई है।

आधुनिक मत—जंगलानी जड़ी बूटी (गुजराती) के लेखक श्री शामलदास जी गोर ने इस पर क्रियात्मक अनुसन्धान किया और यह पाया कि इसके प्रयोग से गर्भाशय के रोग दूर हो जाते हैं और गर्भाधान हो जाता है। गर्भावस्था में प्रयोग करने से गर्भपात या गर्भस्राव का डर नहीं रहता और सन्तान उत्पन्न होती है।

रस रत्नाकर में इसके फल की गुठली को ४ माशा की मात्रा में ठंडे पानी से देने पर स्थावर-जंगम सब प्रकार के विष को नष्ट करने वाला लिखा है किन्तु केस और महस्कर का मत है कि औषध सर्पविष पर कुछ कार्य नहीं करती।

१०६. भूमी आँवला

आयुर्वेदीय पर्याय—भूम्यामलकी, भूधात्री, तामलकी, बहुपत्रा, बहुफला।

लैटिन— (श्वेत) *Phyllanthus Niruri.*
(रक्त) *Phyllanthus Urinaria.*

विवरण—इसका वर्षायु पौधा १।२ से १ फुट तक ऊँचा होता है जिसमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आंवले के समान पत्ते लगते हैं किन्तु चौड़ाई में कुछ कम होते हैं और लम्ब-गोल होते हैं। पीले रंग के फूल आते हैं जो शरद ऋतु में खिलते हैं। फल सरसों के बराबर छोटा होता है किन्तु आंवले की तरह तीन भागों में बंटा हुआ रहता है। बीज सफेद और मुलायम होते हैं। यह आसाम, बंगाल, बिहार में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग।

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला, चूर्ण ३ से ६ माशा।

आयुर्वेदिक मत – तिक्त कषाय मधुर रस, लघु रूक्ष गुण, शीत वीर्य एवं मधुर विपाक होता है। यह कफ पित्त शामक है एवं वातवर्धक है। दीपन, पाचन, अनुलोमन, स्तम्भन आदि कर्म करता है। यह मूत्रल, बल्य एवं विषघ्न है। इसके बीज स्त्रीरोगनाशक होते हैं।

इसका प्रयोग पिपासा, कास, श्वास, हिक्का, पाण्डु, कुष्ठ, मूत्ररोग, दाह, विष एवं पित्तज प्रमेह में किया जाता है।

आधुनिक मत – इसमें एक कार्य करने वाला तत्त्व पाया गया है जिसे Phyllanthin कहा जाता है।

डा० देसाई ने इस पर अपने विचार लिखते हुए बताया है कि यह दीपन, पाचन, मूत्रल, दाहशामक, शोथनाशक, पार्यायिक ज्वरों को रोकने वाला है। इसकी कोमल डालियों का फांट बना कर आमातिसार में दिया जाता है। कामला में इसकी जड़ पीसकर १ तोला की मात्रा में प्रातः सायं दूध से दी जाती है। इस के पञ्चांग का क्वाथ मलेरिया में अच्छा लाभ करता है। इससे मूत्र की मात्रा बढ़ती है और उसकी जलन भी मिट जाती है। अतः यह सुजाक में लाभ करता है। अत्यातर्व में इसकी जड़ों को पीसकर उसका निर्यास बना कर देते हैं।

शोथ एवं व्रण पर इसका बाह्य प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

F

FUMARIACEAE FAM1LY — पर्पटादि वर्ग

स्वरूप—छोटे क्षुप
पुष्प— पुष्प बाह्य कोष के दल २
पुष्पाभ्यन्तर कोष के दल ४ (दो छोटे और दो बड़े)
पुंकेशर—(**Androceum**) ६ (३-३ के जोड़े)
स्त्री केशर—(**Gynoceum**) १ बीज कोष—अधःस्थ

१०७. पित्त पापड़ा

आयुर्वेदीय पर्याय – पर्पट, वरतिक्त, रेणु, सूक्ष्म पत्र **यनानी** – शाहतरा।
लटिन – *Fumaria Parviflora.*

विवरण – इसका पौधा १।२ से १ फुट ऊँचा होता है जो सर्दियों में जौ-गेहूँ के खेतों में बहुत पैदा हो जाता है। इसके पत्ते गाजर के पत्तों जैसे छोटे और कटे हुए होते हैं। फूल छोटे, सफेद या गुलाबी रंग के और अग्र भाग में बैंगनी रंग के होते हैं। फल छोटे और गोल होते हैं। यह गंगा किनारे के खेतों में, हिमालय की तराई और नीलगिरि में होता है।

प्रयोज्य अंग–पञ्चांग। **मात्रा** – चूर्ण ४ से ६ माशा, क्वाथ ५ से १० तोला।

आयर्वेदिक मत – तिक्त रस, लघु गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक है। यह कफ पित्त शामक, संग्राहक, तृष्णाशामक, रक्तशोधक, मूत्रल, दाहप्रशमन, ज्वरनाशक, भ्रमनाशक और कुष्ठनाशक है।

आधुनिक मत – इसमें Fumaric acid और Fumarine पाया जाता है। इसका पित्तशामक गुण इसमें पाये जाने वाले Salts पर निर्भर करता है।

पेशाब ज्यादा लाता, आमाशय को ताकत देता, भूख लगाता, पुराने बुखारों को दूर करता है। इसका प्रयोग आतशक (Syphlis), खारिश, दाद और फोड़े-फुन्सियों में किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

G

GENTIACEAE FAMILY भूनिम्बादि वर्ग

स्वरूप—कांड प्रायः चतुष्कोण

पत्र— अभिमुख (Opposite) सादे (Simple) अखण्ड, उपपत्ररहित

पुष्प— पुष्प बाह्य कोष और पुष्पाभ्यन्तर कोष के दल ५-५ पुंकेसर ५

फल— नीरस

बीज— अनेक छोटे

१०८. चिरायता

आयुर्वेदीय पर्याय—किराततिक्त, भूनिम्ब **यूनानी**—कसबुजजरीरा

अंग्रेजी—Chiretta. **लैटिन**—*Swertia Chirata.*

विवरण—इसका पौधा २ से ३ फुट ऊँचा होता है जिसका तना मोटा गोल और ऊपर की तरफ चौकोर होता है। पत्ते आमने-सामने लगे हुए २ से ३ इंच लम्बे १।२ से ३।४ इंच चौड़े नौकदार होते हैं। इसमें हरे-पीले रंग के छोटे २ फूल लगते हैं। इसके बीज बहुत छोटे होते हैं। फूल आने पर ही इनको इकट्ठा किया जाता है।

इसकी कई जातियाँ बताई गई हैं जिन में दो मुख्य है। कड़वा (पूरा तिक्त) और दूसरा मीठा (आधातिक्त)। चिरायता हिमालय में काश्मीर से भूटान तक ४ हजार से १० हजार फीट की ऊँचाई तक होता है। नेपाल में बहुत होता है।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक है। कफ पित्त नाशक और मलनिःसारक है। सन्निपात ज्वर, कास, श्वास, रक्त विकार, सूजन, तृष्णा, कुष्ठ, व्रण और कृमि रोग नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसमें Ophelic acid और Chiratin मुख्य रूप से होते हैं। डा० क्षोरी का कहना है कि यह ताकत देने वाला, बुखार, त्वचा के रोग, पेट के कीड़े, शरीर की उष्णता, गर्भवती स्त्री की वमन को ठीक करता है। यह मल निःसारक है।

१०६. त्रायमाण

आयुर्वेदीय पर्याय—त्रायमाणा, त्रायन्ती, गिरिसानुजा, बलभद्रा।

यूनानी—गाफिस।

अँग्रेजी—Indian Gentian, **लैटिन**—*Gentiana Kurroa.*

विवरण—इसका छोटा पौधा जो ६-७ अंगुल ऊँचा होता है। पहाड़ के चट्टानों के बीच २ गढ्ढों में होता है। इसकी जड़ पीले रंग की चौकोर ४ से ६ अंगुल गहरी होती है। इस में ३ से ४ पत्ते लगते हैं। इस में नीले रंग के फूल आते हैं। यह हिमालय में ५ से १० हजार फुट की ऊँचाई पर होता है। इसकी एक जाति ईरान में पैदा होती है जिसे G. Daharica कहा जाता है।

प्रयोज्य अंग—पूरा पौधा। **मात्रा**—चूर्ण ३ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। कफ वात शामक तथा पित्त संशोधक है। यह रेचक है। ज्वर, हृदय रोग, गुल्म, बवासीर, शूल, भ्रम और विष नाशक है।

आधुनिक मत—इसमें Gentiopicrin, Gentianic acid और Picrin मुख्य रूप से होते हैं।

डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है कि यह ताकत देने वाला, रसायन, वेदनाहर, मूत्र कारक और कीट नाशक है। यह जिगर और तिल्ली के बढ़ने, कामला और शोथ में दिया जाता है। नीम्बु के रस के साथ देने से यह चर्म रोगों का नाश करता है। बार्ले के साथ पुल्टिस लगाया जाए तो यह फोड़े, फुन्सी पका देता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

GERANIACEAE FAMILY चांगेर्यादि वर्ग

पत्र —अभिमुख (Opposite) अथवा एकान्तर (Alternate)
एकाकी (Simple) अथवा संयुक्त (Compound)

पुष्प—उभयलिंगी, पुष्प बाह्यकोश (Calyx) और पुष्पाभ्यन्तर कोश (Corolla) के दल ५–५
पुंकेशर (Androceum) ५–१०
गर्भाशय (Ovary) ५ कोष्ठयुक्त

बीज— विभिक्त दल

११०. कमरख

आयुर्वेदीय पर्याय—कर्मरंग, पीतफल, शिराल, धाराफल

अंग्रेजी—Chinese Goosebery लैटिन - *Averrhoa Carambola.*

विवरण—इसके वृक्ष गहरे छायादार एवं २५ से ३० फुट ऊंचे होते हैं। पत्ते गोल होते हैं। वर्षान्त में फूल गुच्छों में निकलते हैं। यह रक्ताभ होते हैं और एक गुच्छे में १० से १५ फूल लगे रहते हैं। फल ५, रेखान्वित धारदार होते हैं। यह कच्चे रहने पर हरे और पकने पर पीले रंग के हो जाते हैं। फलों में लम्बे चपटे बीज निकलते हैं। यह सारे भारत में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—फल

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर-अम्ल-कषाय रस, लघुरूक्ष गुण होता है। कच्चा फल उष्ण वीर्य एवं पका फल शीत वीर्य होता है। पाक में मधुर है। इससे वात कफ का शमन होता है। पित्तकारक है। बलकारक, पुष्टिकारक एवं रुचिकारक होता है। यह संग्राहक है अतः ग्रहणी, रक्तपित्त में लाभ करता है।

आधुनिक मत—पके फल में 'ऑक्जेलिक एसिड' होता है। डा० क्षीरी ने इसे स्कर्वी के लिए उत्तम औषध माना है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऐसा कहा जाता है कि स्त्री एवं पुरुष दोनों की जननेन्द्रिय पर यह औषध उत्तेजक कर्म करती है। यह दुग्धवर्धक, मासिक स्राव साफ लाने वाली और गर्भस्रावक भी होती है।

रक्तार्श के लिए इसे अच्छा द्रव्य कहा गया है। इस से रक्तस्राव वन्द होता है।

१११. चांगेरी

आयुर्वेदीय पर्याय—अम्लपत्रिका

अंग्रेजी—Indian Sorrel **लैटिन**—*Oxalis Corniculata*

विवरण—यह जमीन पर फैलने वाली वनस्पति है, जिस के एक डंठल में ३, ३ पत्ते लगते हैं। शरद ऋतु में पील रंग के छोटे २ फूल लगते हैं और बाद में फल लगते हैं जिन में कई बीज होते हैं। यह सारे भारत में उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग

मात्रा—स्वरस $\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—अम्ल-कषाय रस, लघु-रूक्ष गुण, उष्णवीर्य एवं कटु विपाक है। यह वातकफ नाशक, रोचक, दीपक एवं संग्राहक होती है। इस का प्रयोग ग्रहणी, अर्श, अतिसार में किया जाता है। कुष्ठ रोग में भी इसका प्रयोग करना चाहिए।

आधुनिक मत—इसमें पोटाशियम और ऑक्जेलिक एसिड होता है।

कर्नल चोपडा के मतानुसार यह ज्वर शामक एवं अग्नि वर्धक द्रव्य है। पुरानी पेचिश में इसके पत्तों को छाछ या दूध के साथ उबाल कर दिन में २, ३ बार देने से लाभ होता है।

११२. लक्ष्मणा

आयुर्वेदीय पर्याय—पुत्रजननी

लैटिन—*Ipomaea Sepiaria*

विवरण—यह एक संदिग्ध द्रव्य है जिस के विषय में भावप्रकाश निघंटु में लिखा है कि "लक्ष्मणा की आकृति एवं गन्ध बकरे के समान होती है। इसके पत्तों पर लाल रंग के छींटे होते हैं। यह पुत्रदाता होती है।"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

राज निघंटु एवं धन्वन्तरि निघंटु में सफेद फूल वाली कटैली के बीज को लक्ष्मणा कहा गया है।

शालिग्राम निघंटु में लिखा है कि इस वनस्पति की जड़ में एक कन्द निकलता है जो सफेद रंग का होता है। इसके पत्ते चौड़े होते हैं और उन पर लाल रंग के बिन्दु लगे होते हैं। यह पहाड़ों में पाई जाती है।

कीर्तिकार एवं मेजर वसु का कहना है कि हनुमान बेल अथवा बनकलमी को लक्ष्मणा जानना चाहिए। इसी का लैटिन नामIpomaea Sepiaria है।

यह एक प्रकार की लता होती है जिसके पत्ते गिलोय के पत्तों के समान होते हैं। पत्तों पर और बीच की धारियों पर बैंगनी रंग के छींटे होते हैं। फूल छोटे, गोलाई लिए हुए, गुलाबी रंग के और अणीदार होते हैं। इसके फल में चार खण्ड होते हैं और चार बीज होते हैं। दो २ बीज एक सूक्ष्म और पतले तार से बंधे हुए रहते हैं। यह बेल काठियावाड़ में थूहर की बाढ़ों पर बहुत मिलती हैं।

शास्त्रों में लक्ष्मणा को मधुर, शीतल, स्त्री के वन्ध्यत्व को हरने वाली, रसायन, बलकारक तथा त्रिदोष नाशक माना है।

गुजरात में हनुमान बेल गर्भाशय के विकारों को दूर करने एवं सन्तानोत्पत्ति के योग्य बनाने के लिए प्रयोग की जाती है।

इस की एक सफेद फूल वाली जाति भी होती है। कहा जाता है कि यह ही वास्तविक लक्ष्मणा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

GRAMINAE FAMILY यवादि वर्ग

पत्र— अखण्ड

पुष्प—वल्कलसदृश्य

पुंकेशर–३

बीजकोष–पक्षाकार

बीज—मांसल

११३. ईख

आयुर्वेदीय पर्याय—इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिरस, मधुतृण यूनानी—नैशकर
अंग्रेजी—Sugar-cane लैटिन—*Saccharum officinarum*

विवरण—ईख एक प्रसिद्ध वनस्पति है जिसका सीधा तना ६ से १२ फुट तक ऊँचा होता है और बीच २ में ग्रन्थियाँ होती हैं। पतले-चपटे पत्ते ३ से ४ फुट लम्बे होते हैं। वर्षा में इसमें गुच्छों में फूल लगते हैं।

भाव प्रकाश निघंटु में 'इच्क्षु वर्ग' नाम से अलग ही एक वर्ग बताया हुआ है। वहाँ पर ईख की १३ जातियों का वर्णन किया गया है। इन सब के विशेष गुणों को भी अलग २ बताया गया है। सम्भवतः यह देश भेद के अनुसार ही भिन्न हैं।

प्रयोज्य अंग—मूल, स्वरस एवं उससे निर्मित अन्य पदार्थ।

मात्रा—मूल क्वाथ ५ से १० तोला, स्वरस २ से ४ तोला।

आयुर्वेदीय मत—सुश्रुत सू. अध्याय ४५ में ईख मधुर रस, मधुर विपाक, गरू, शीत, स्निग्ध बताया है। इसे बलकारक, वृष्य, मूत्रल, रक्तपित्तशामक कहा है। इसे कृमिकारक कहा गया है।

भावप्रकाश में वर्णित इक्षु वर्ग में १३ प्रकार के ईख के अलग २ गुण बताए हैं फिर ईख की अवस्था के अनुसार क्या २ गुण होते हैं, यह बताते हुए कहा गया है—

"कच्ची ईख कफकारक, मेद तथा प्रमेह को उत्पन्न करने वाली कही गई

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। अधपकी ईख वातहर, मधुर, किञ्चित तीक्ष्ण और पित्तनाशक हैं। पक्व ईख रक्तपित्त तथा क्षय नाशक है एवं बल-वीर्य की वृद्धि करती है।"

"ईख की जड़ अत्यन्त मधुर, मध्य भाग मधुर और अग्रभाग खारी होता है।"

"कोल्हु में पिला हुआ ईख का रस दाह उत्पन्न करता है और विष्टम्भी होता है।"

ईख के रस से बने हुए पदार्थों का वर्णन किया गया है। वे पदार्थ हैं—

(क) फाणित—यह पका हुआ रस होता है जो कुछ गाढ़ा, बहुत पतला होता है।

"यह गुरु, अभिष्यन्दी, पुष्टिकारक, कफवर्धक, वीर्यवर्धक, वातपित्त-शामक, परिश्रम को दूर करने वाला, मूत्रल एवं बस्ति शोधक होता है।"

(ख) मत्स्यण्डी—भली-भांति पकाया हुआ गाढ़ा और कुछ पतलापन लिए हुए ईख का रस 'मत्स्यण्डी' कहा जाता है।

यह मलभेदक, बलकारक, हलका, वातपित्तशामक, मधुर, पुष्टिकारक, वृष्य, रूधिर रोग नाशक होता है।

(ग) गुड़—ईख का रस भली-भाँति पकाकर बिलकुल गाढ़ा कर लिया जाए उसे गुड़ कहा जाता है।

गुड़ वीर्यवर्धक, गुरु, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रल, मेद, कफ, कृमि एवं बल-वर्धक होता है। पुराना गुड़ लघु होता है।

(घ) खांड़—मधुर, वृष्य, चक्षुष्य, पुष्टिकारक, शीतल, वातपित्तशामक, स्निग्ध, बलदायक एवं छर्दि निग्रहण है।

(ङ) चीनी–अत्यन्त मधुर, रुचिकारक,वातपित्तशामक है। रक्तजरोग, दाह, मूर्च्छा, वमन और ज्वर को नष्ट करती है। अतिशीतल और वीर्य वर्धक है।

(च) मिश्री—शीतल, वीर्यवर्धक, रक्तपित्तनाशक, हलकी होती है। यह दस्तावर एवं वातपित्तशामक होती है।

सुश्रुत संहिता में बताया गया है कि यह पदार्थ उत्तरोत्तर अधिक शीतल, अधिक स्निग्ध, अधिक गुरु, अधिक मधुर, अधिक वृष्य एवं अधिक रक्त-पित्ततृष्णाशामक होते जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—ईख में अलब्युमिन, ग्वैनिन और कैल्शियम आॅक्जलेट होता है।

११४. कुशा

आयुर्वेदीय पर्याय—कुश, दर्भ, सूच्यग्र, यज्ञ भूषण

लैटिन—*Eragrostis Cynasuroides.*

विवरण—यह बहुवर्षायु क्षुप है जिसका मूल दृढ़ होता है। इसकी ऊँचाई १-३ फुट होती है। इसके पत्ते जड़ के पास से ही निकलते हैं और लगभग १½ फुट ऊँचे और २ इंच चौड़े होते हैं। इसका अग्रभाग सूई की तरह तीक्ष्ण, पत्रधार सूक्ष्म और रोम वाला होता है। फूल का डंठल ½ से १½ फुट तक लम्बा होता है। इसके बीज ¼ इंच लम्बे, अण्डाकार और चपटे होते हैं। यह खुले मैदानों में सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल।

मात्रा—क्वाथ ५ से १० तोला।

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर कषाय रस, स्निग्ध गुण, शीतवीर्य एवं मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोष नाशक है।

यह मूत्रकृच्छ, अश्मरी, तृष्णा, बस्तिशूल, प्रदर, विसर्प, दाह, रक्त रोगों में लाभ करता है।

आधुनिक मत—कुशामूल को चावल के पानी के साथ पीस कर पीने से प्रदर रोग शीघ्र ही ठीक हो जाता है। कर्नल चोपड़ा ने बताया है कि यह पेचिश, अत्यधिक रक्तस्राव में लाभ करता है। मूत्रल है।

११५. खस

आयुर्वेदीय पर्याय—उशीर, नलद, सेव्य, जलवास, समगन्धक

अंग्रेजी—Khaskhas Grass. **लैटिन**—*Vetiveria Zizanioidis.*

विवरण—यह वीरण नामक तृण की जड़ है। यह तृण कुश के समान होता है। इसका तना २-५ फुट ऊँचा और सुगन्ध वाला होता है। पत्ते १-२ फुट लम्बे और सीधे होते हैं। इसमें बरसात में फूल लगते हैं और फिर फल लगते हैं। यह बंगाल, राजपूताना और छोटा नागपुर में पानी के पास के स्थानों में पैदा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—जड़।

मात्रा—चूर्ण ३ से ६ माशा।

अयुर्वेदिक मत—तिक्त मधुर रस, रूक्ष लघु गुण, शीतवीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफपित्तशामक, दीपक, पाचक, तृष्णानाशक और स्तम्भक है। ज्वर, वमन, रक्तविकार, मद, विष, विसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ और व्रणों का नाश करने वाला है।

आधुनिक मत— इसमें सुगन्धित तैल, राल, चूने का एक लवण और लोहे का आक्साइड़ होता है।

डा० क्षौरी का कहना कि खस ताकत देता, उत्तेजना लाता, दौरा मिटाता, पसीना लाता, पैशाब और मासिक स्राव लाता है। यह ज्वर, मूर्च्छा, अपस्मार, पक्षाघात में दिया जाता है।

११६. दूब

आयुर्वेदीय लैटिन—शतपर्वा, गोलोमी, शीतवीर्य **यूनानी**—उशब
अंग्रेजी—Couch Grass. **लैटिन**—*Cynodon dactylon.*

विवरण—यह जमीन पर फैलने वाली घास है। जिसमें बहुत-सी गाँठें होती हैं और हरेक गाँठ से नई जड़ बनकर जमीन में लग जाती है। पत्ते १-४ इंच लम्बे रेखान्वित होते हैं। फूल का डंठल १ से २ इंच लम्बा हरे या बैंगनी रंग का होता है। जो विशेषकर दवाओं में प्रयोग की जाती है। दूसरी जाति नील दूर्वा कहलाती है जो इससे कुछ बड़ी होती है। दूब सारे भारत में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग।

मात्रा—रस १ से २ तोला, चूर्ण १ से ३ तोला।

आयुर्वेदिक मत—मधुर कषाय तिक्त रस, लघु स्निग्ध गुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक होती है। त्रिदोषनाशक, मेध्य, मूत्रल, रक्तस्तम्भक, रक्तशोधक, छर्दिनाशक एवं तृष्णा मिटाने वाली है। क्षत-व्रण अर्श पर लेप करते हैं। पैत्तिक शिरोरोग, शीतपित्त, विसर्प एवं चर्म रोगों पर लेप करते हैं।

आधुनिक मत—डा० क्षौरी का कहना है कि वमन मिटाती, मूत्रकृच्छ में पेशाब साफ लाती और नकसीर से या चोट से बहने वाले खून को बन्द करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बी० डी० बसु ने इसके रस को हिस्टिरिया, अपस्मार और उन्माद में अच्छा बताया है।

११७. नरसल

आयुर्वेदीय पर्याय – नल, पोटगल, शून्यमध्य, धमन

लैटिन – *Arundo Donax*

विवरण – यह १० से १२ फुट ऊंचा बांस अथवा ईख के आकार का पौधा होता है। इसके तने पर पर्व होते हैं – पर्वस्थान पीला होता है और बीच का भाग खोखला होता है। इसके पर्व बड़े २ होते हैं, अतः उनसे बांसुरी बनाई जाती है – उनकी नली बना कर हुक्का पीने के काम में लेते हैं। यह पानी वाले प्रदेशों में अधिक पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग – मूल

मात्रा – क्वाथ ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत – मधुर-कषाय तिक्त रस, लघु-स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक है। वातपित्त शामक, वृष्य, मूत्रल, दाह प्रशमन है।

यह मूत्र कृच्छ, दाह, रक्त रोग नाशक कहा गया है। मूत्र विकारों में भी यह उत्तम द्रव्य समझ कर प्रयोग किया जाता है।

११८. बांस

आयुर्वेदीय पर्याय – वंश, वेणु, त्वक् सार, शतपर्वा, यवफल **यूनानी** – कसब

अंग्रेजी – Bamboo **लैटिन** – *Bambusa Arundinacea*

विवरण – इसका पेड ४० से ५० फुट ऊंचा होता है, जिसका कांड १२ से १६ इंच माटा होता है। इसमें थोड़ी २ दूर पर गांठें होती हैं जिन के बीच का हिस्सा पोला होता है। प्रायः ३० वर्ष की आयु में इस में फूल और फल लगते हैं। फल देखने में जौ के जैसे लगते हैं।

स्त्री जाति के बांस में एक तरह का रस रिक्त स्थान में जमजाता है, उसे वंशलोचन या तबासीर कहते हैं।

बांस भारत में हर जगह, खास कर आसाम में होता है और जावा, सुमात्रा और बर्मा में होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—जड़, पत्ते, फल, वंशलोचन

मात्रा—क्वाथ ५ से १० तो० वंशलोचन १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—बांस मधुर-कषाय रस, रूक्ष लघु-तीक्ष्ण गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक होता है। इस की छोटी पत्तियाँ और फल उष्णवीर्य होते हैं। बांस की जड़ कफपित्त शामक, मूत्रल, विषघ्न, वर्ण्य हैं। इसका लेप त्वचा के वर्ण को निखारता है।

बांस की छोटी पत्तियाँ और फल पित्त वर्धक, दीपन, पाचन, कृमिनाशक, है। पत्ते का क्वाथ रजारोध और कष्टातर्व में देते हैं। व्रणों पर पत्तों का लेप किया जाता है। फल का प्रयोग मेद रोग और विष रोग में किया जाता है, यह प्रमेह में प्रयोग होते हैं।

वंश लोचन वात पित्त शामक है। ग्राही एवं तृष्णानिग्रहण है। कफ-निःसारक और श्वासहर है। मूत्रल-ज्वरघ्न एवं बल्य-बृंहण है। वमन अतिसार तृष्णा, कास श्वास, यक्ष्मा और सामान्य दुर्बलता में प्रयोग होता है।

आधुनिक मत—बांस की जलाई हुई राख में सेलेसिक एसिड २८%, चूना ४%, मेगनेसिया ६%, पोटाशियम ३४%, सोड़ियम १७%, फ्लोरिन २%, तथा गन्धक १०%, होती है।

वशंलोचन में ९०% सिलिका होता है। चूना, आयरन पेराक्साईड, पोटाश अलुमिनयम और ग्लुकोसाइड पाए जाते हैं।

डा० क्षौरी ने लिखा है कि इसके पत्र रजः स्राव करने वाले हैं। वंशलोचन उत्तेजक, ताक़तवर, शीतल,कास, श्वास, राज्यक्ष्मा और ज्वर नाशक है। इसकी गांठों का क्वाथ 'लोकिया' (प्रसव के वाद योनि मार्ग से होने वाला स्राव) को बन्द करता है। इसके पत्तों का रस रक्त रोधक है।

११९. सरपत

आयुर्वेदीय पर्याय—शर, बाण, मुञ्ज **लैटिन**—*Saccharum Munja*

विवरण—यह बहुयुर्षायु क्षुप होता है जो १० से १२ फुट ऊँचा होता है और ग्रन्थि युक्त होता है। ग्रन्थियों के बीच के पर्व लम्बे और पतले होते हैं। इस की पत्तियाँ पतली, चपटी, ३ से ५ फुट लम्बी और अग्रभाग में तीक्ष्ण होती हैं। फूल गुच्छों में लगे होते हैं। यह सारे भारत में खासकर बंगाल बिहार में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—मल **मात्रा**—क्वाथ ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर कषाय रस; लघु-स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोष नाशक है। वृष्य एवं मूत्रल है। इसका विशेष प्रयोग दाह, तृष्णा, विसर्प, रक्त रोग, मूत्रकृच्छ, अक्षिरोग नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

GUTTIFERAE FMIL नागकेशरादि वर्ग

स्वरूप—बड़े २ वृक्ष, सुगन्धित एवं सुन्दर पुष्प

पत्र —अभिमुख (Opposite) सादे (Simple) अखण्ड, चर्मसदृश

पुष्प --नियमित, पुष्प बाह्यकोश (Calyx) और पुष्प आभ्यन्तर कोश (Coralla) के दल ४–१२
पुंकेशर-अनियत, बीज कोश-अधःस्थ,

फल —मांसल

विशेष—प्रायः वृक्षों से पीतवर्ण का निर्यास निकलता है।

१२०. नागकेशर

आयुर्वेदीय पर्याय — नागकेशर, नागपुष्प, चाम्पेय, **यूनानी** — नारेमुष्क
अंग्रेजी — Cobras Saffron **लैटिन** — *Mesua Ferrea*

विवरण — इसका वृक्ष सदैव हरा रहता है जिसकी छाल लाल रंग की होती है और शाखाएं कोमल होती हैं। इसमें से बबूल की तरह पीले रंग का गोंद सा निकलता रहता है। इसमें नुकीले पत्ते होते हैं जो ऊपर से नुकीले और हरे तथा नीचे से सफेद होते हैं। ३ से ४ इंच के व्यास में फूल निकलते हैं जिनके पीले रंग के पुंकेशर पीले रंग के गुच्छों में होते हैं। इसमें १ से $1\frac{1}{4}$ इंच लम्बा गोल सा फल लगता है जिसमे १ से ४ मेहन्दी के बीज की तरह बीज होते हैं। यह नैपाल, आसाम, बंगाल, बर्मा, अण्डमान में ५ हजार फुट भी ऊँचाई तक पाई जाती है।

प्रयोज्य अंग — पुष्प की केशर

मात्रा — चूर्ण ४ से ८ रत्ती

आयुर्वेदिकमत—कषाय तिक्त रस; लघु रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाकहै। कफ पित्त नाशक, विषनाशक, आमपाचक है। यह ज्वर, तृष्णा, वमन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हृल्लास, खुजली, कुष्ठ, विसर्प नाशक है। यह दुर्गन्धता मिटाने वाली, बस्ति-रोग एवं आध्मान तथा अर्श नाशक है।

आधुनिक मत–इसमें सुगन्धित तैल होता है। डा. क्षौरी का मत है कि यह पेचिश में लाभ करती है। इसका तैल गठिया में लगाया जाता है। इसे मक्खन में मिलाकर रक्तार्श और पाददाह में प्रयोग किया जाता है।

१२१. वृक्षाम्ल

आयुर्वेदीय पर्याय—रक्तपूरक

अंग्रेजी—Red mango. **लैटिन**—*Garcinia Indica*.

विवरण—इसका वृक्ष झाड़ीदार होता है जो २०-३० फुट ऊँचा होता है। इसमें चिकने पत्ते लगते हैं। फल नारंगी के समान लाल रंग के होते हैं। इसमें चपटे बड़े सफेद रंग के बीज निकलते हैं। यह मलाया, चीन, सिंगापुर, जावा, गोवा, मालाबार में ज्यादा होता है। सुखाकर फल को 'कोकम' के नाम से बेचते हैं।

प्रयोज्य अंग—फल, मूल त्वक, बीजों से प्राप्त तैल।

मात्रा—फल १ से २ तोला, तैल ३ से ६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कच्चा फल अम्ल, पका फल मधुराम्ल रस, लघुरूक्ष गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक होता है। वातशामक, कफपित्तवर्धक होता है। रोचक, दीपक एवं संग्राहक है।

तृष्णा, गुल्म, अर्श, ग्रहणी, शूल, हृदय रोग, जन्तु रोग नाशक है।

आधुनिक मत—बीजों में ३०% तैल निकलता है जो हलके पीले रंग का होता है। इसे जमाकर घी जैसा कर लेते हैं। यह 'कोमम आयल' या 'कोकम-बटर' कहलाता है।

◆

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

I

IRIDACEAE FAMILY — केशरादि वर्ग

पत्र —एकान्तर (Alternate) पतले, लम्बे

पुष्प—विविध रंग के पुष्प बाह्यकोश (Calyx) के दल ३ पुंकेशर (Androceum) ३ बीजकोश (Ovary) त्रिकोष्ठी और अधःस्थ

१२२. केशर

आयुर्वेदीय पर्याय—घुसृण, रक्त, काश्मीर, कुंकुम, **यूनानी**—जाफरान

अंग्रेजी—Saffron. **लैटिन**—*Crocus Sativa*.

विवरण—इसका पौधा कई-कई वर्षों तक रहने वाला होता है। इसमें नीचे की ओर सघन पत्तियाँ होती हैं। इसमें २-३ फूल एक साथ या १-१ पत्ते के साथ होते हैं। फूल बैंगनी रंग का होता है। बीजकोष में तीन कोष्ठक होते हैं और उनमें बहुत से बीज निकलते हैं। फूल में पुरुष जाति के तीन भागों में बँटे हुए और रक्ताभवर्ण के होते हैं। स्त्री जाति में से तीन सूत्र (रेसे) से निकलते हैं जो केशर कहलाते हैं। एक फूल में से सिर्फ तीन ही केशर मिलते हैं। इस तरह १ रत्ती केसर २० फूलों से मिलती है। यह काश्मीर, स्पेन, ईरान में होती है।

प्रयोज्य अंग—केसर (पराग)। **मात्रा**—५ से २० रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, स्निग्ध लघु गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक है। यह त्रिदोष नाशक है। नाड़ी संस्थान को उत्तेजना और मस्तिष्क को बल देती है। दीपन, पाचन, रोचन, ग्राही, यकृदुत्तेजक, हृद्य, मूत्रजनन, बाजीकरण और ज्वर नाशक है। चर्म रोगों में और मसूरिका में लाभ करती है। चर्म रोगों में इसका लेप करते हैं। शिरःशूल और व्रणों पर इसका लेप किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसमें उड़नशील तैल ८ से १३·४% होता है। Crocin, Picrocrosin, Proteids, Fixed oil होते हैं।

डा० क्षौरी ने लिखा है, कि केसर उत्तेजक, सुगन्धित, वायु नाशक, आक्षेप निवारक औषधि है। यह रजःरोध, क्षीणशुक्रता, लिकोरिया, तीव्रशूल, कष्ट-रज, श्वास एवं कास में लाभ करती है। यह गठिया और वातवाहिनियों के दर्द को मिटाती है। बच्चों के पतले दस्तों में घी के साथ देते हैं। खसरे इत्यादि में दाने निकालने और गर्मी बनाए रखने को देते हैं। गर्भाशय की पीड़ाओं में इसकी बत्ती बनाकर योनि द्वार में लगाते हैं।

१२३. ईरसा
Iris versicolor

विवरण—इसके पौधे के बीच में से एक ड़ाली निकलती है, जिसके ऊपर पत्तों के गुच्छे और फूल होते हैं। इसके पत्ते मोटे दल के और लम्वे होते हैं और फूल नीले, पीले सफेद और इन्द्र-धनुष के जैसे होते हैं, इसी लिए इसे ईरसा (इन्द्र धनुष) कहा जाता हैं। इसकी जड़ चपटी टेड़ी, गांठदार और बैल की तरह फैलने वाली होती है। जड़ में बनफशा की-सी खुशबु आती है। यह हिमालय पर नौ हजार फुट की ऊँचाई तक होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़

गुण कर्म—यूनानी ग्रन्थों में इसका वर्णन बहुत प्राचीन समय से होता आया है, हकीम डिसकोरिडस और सावफरिस्तून ने भी इसके बारे में लिखा है। इसकी जड़ शरीर में गरमी पैदा करती, दौरा, लकवा और कंपन को मिटाती है। तैल और सिरके के साथ इसका लेप करने से पुराना सिर दर्द ठीक हो जाता है।जैंतून के तैल के साथ कान में टपकाने से पुराना बहरापन मिट जाता है। हड्डी टूटने या चोट लगने की जगह इसका लेप करने से लाभ होता है। यह सूजन और जलोदर में फायदा करती है और व्रण को भरती है।

खांसी, दमा, पसलियों का दर्द और फेफड़े के रोगों को दूर करती हैं। दिल को ताकत देती है। पीलिया बवासीर, में फायदा करती है।

आधुनिक मत—कीर्तिकार एवं वसु ने इसे एक उत्तम रक्तशोधक वस्तु माना है। यौन विषयक रोगों में तथा यकृत, जलोदर में लाभकारी कहा है। कर्नल चोपड़ा इसे रक्तशोधक, मूत्र निःसारक और मृदु रेचक मानते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

J

JAGLANDACEAE FAMILy   अक्षोटादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः वृक्ष, सुगन्धित

पत्र —एकान्तर (Alternate) उप पत्र रहित

पुष्प —एकालिगी पुष्पाभ्यन्तर कोष के दल अनुपस्थित या सूक्ष्म

फल —कठिन, क्वचयुक्ति

१२४. अखरोट

आयुर्वेदीय पर्याय—अक्षोट, अक्षोड़, कर्पराल, रेखाफल, मदनाभफल

अंग्रेजी— Walnut   **लैटिन**—*Juglans Regia*

विवरण—इसका पेड़ मध्यम लम्बाई वाला और सुगन्धित होता है। छाल मिट्टी के रंग की और $\frac{1}{2}$ से २ इंच मोटी होती है और उसमें लम्बे चीरे होते हैं। पत्ते ६ से बारह इंच लम्बे गोल और नोकीले होते हैं। वसन्त में इसमें फूल लगते हैं। फल गोल, रेखासहित, खोल वाला और मदन फल के आकार का होता है। फल में एक बीज होता है जिसमें दो परदे होते हैं। इसकी गिरी धूसर वर्ण की और टेढ़ी-मेढ़ी होती है। हिमालय में पांच से दस हजार फुट की ऊंचाई तक होता है।

प्रयोज्य अंग—फल की गिरी   **मात्रा**—१ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, गुरु, स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक है। यह वातशामक और कफ पित्त वर्धक है। बल्य, बृहंण, वृष्य है। दिमाग को ताकत देता है। पक्षाघात, अर्दित और वात विकारों में लाभ करता हैं। जो गुण बादाम में बताए गए हैं वही अखरोट के हैं।

आधुनिक मत—फल में आक्जोलिक एसिड, बोरियम साल्ट और Juglandia acid होते हैं।

इसकी गिरी का छिलका जलाकर खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

L

LABIATAE FAMILY — तुलस्यादि वर्ग

स्वरूप—काण्ड प्राय: चतुष्कोण

पत्र —अभिमुख (OppositE), उप पत्र रहित, सुगन्धित

पुष्प —पुंकेशर ४ (दो छोटे, दो बड़े) बीजकोश ४ खण्ड वाला

बीज —प्रति खण्ड १ बीज

विशेष—बीजों को पानी में भिगोने से लुआब होता है।

१२५. उस्तूखूद्दूस

अंग्रेजी—Aratban laveneder   लैटिन—*levendula steachas*

विवरण—इसका पौधा जाड़ों के दिनों में पहाड़ों की तर भूमि में पैदा होता है जिसकी ऊंचाई करीब एक हाथ ऊँची होती है। इनके पत्तें गोलाकार एवं कट हुए किनारों के होते हैं। इसके फूल बैंगनी रंग के, छोटे २ रुएँदार और कपूर जैसी गन्ध वाले होते हैं। इनके सूंघने से छींके आती हैं। इसके बीज माकांगनी के समान, छोटे चपटे और काले-पीले रंग की होती है। यह एशिया माइनर, यूरोप, अरब और भारत के बिहार, बंगाल, काश्मीर में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—फूल और पत्ते, बीज   मात्रा—३ से ६ माशा

गुण कर्म-सूजन को दूर करता, दिमाग, मांस पेशियों, आमाशय को ताकत देता है। अपान वायु को शुद्ध करता एवं कफ निकलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह मानसिक रोग, अर्धांग अर्दित, खाँसी, ठण्डा नजला व जुकाम और जोड़ों की दर्द को दूर करता है। यह दिमाग और उसके दोषों को साफ करता है। इसका जोशान्दा मांस पेशियों के दर्दों और जोड़ों के दर्द को मिटाता है। यह यकृत की शीत शोथ और पेट के रोगों को मिटाता है। स्मरणशक्ति बढ़ाता है। यह बुखार हृदय रोग जिगर तिल्ली बवासीर मृगीं में लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसके फूलों में एक लाल पीले रंग का तैल मिलता है। यह तैल खून को बन्द करने और घावों को पूरने के काम में आता है।

कर्नल चोपड़ा के अनुसार यह औषध कफ निःसारक और कृमिनाशक है। यह पेट के अफारे को मिटाता और सूजन तथा प्रदर में लाभ करता है।

१२६. जूफा

Hyssopus Offacinalis

विवरण—इसका पौधा छोटा और जमीन पर फैलने वाला होता है। इसके पत्ते खुशबुदार और कड़वे होते हैं। इसके कोई-कोई पत्ते मेंहदी के पत्तों जैसे होते हैं। इसकी शाखाओं की हरेक गाँठ पर पीले रंग का फूल लगता है। यह ईरान, श्याम, पंजाब और काश्मीर में पैदा होने वाला है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग। **मात्रा**—३ से ६ माशा।

गुण कर्म—कफ को मुलायम कर के दस्तों के द्वारा निकाल देती है, सूजन जमे हुए खून को हटा देती है। पेट के कीड़ों को मारती है। अर्धांग, पुरानी खांसी, फेफड़ों की सूजन, छाती पसली और आमाशय के दर्द और 'कालिक पेन" को दूर करती है। नजला, साँस की रूकावट, दमा में फायदा करती है। आंतों के व्रण, पेचिश, वृक्क और मूत्राशय की सूजन तथा जलोदर में लाभ करती है।

इसके लेप से सूजन मिटती है। त्वचा के दागों पर इसके क्वाथ की मालिश की जाती है।

आधुनिक मत—इस में टैनिन, राल, वसा, शर्करा होती है।

कर्नल चोपड़ा के मत से इसके पत्ते उत्तेजक, अग्निवर्धक, कफ निःसारक, एवं मासिक स्राव ठीक करने वाला है।

कोमान इस के फूलों के क्वाथ को दमा और पुरानी खांसी में लाभकारक बताते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१२७. तुब्य बलंगू

Salvia Aegyptiaca

विवरण—यह एक छोटी और बहुशाखी झाड़ी है जिसके पत्ते बरछी के के आकार के और तीखी नोक के होते हैं। इसके फूल मंजरी में लगते हैं। इसके बीज लम्बे गोल, चमकीले और काले रंग के होते हैं। यह वनस्पति पंजाब के मैदान, सिंध और बलूचिस्तान में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज   **मात्रा**—३ से ६ माशा

गुण कर्म—दिल को ताकत देते हैं, पागलपन, कम्पन और पेचिश को दूर करता है यह प्रमेह का नाश करता है।

आधुनिक मत इसके बीज दस्त, सुजाक और बवासीर को दूर करते हैं। आंखों के रोगों को दूर करते हैं।

१२८. तुलसी

आयुर्वेदीय पर्याय—ग्राम्यार सुलभा, बहुमंजरी, शूलन्घी   **यूनानी**—बादरूज

अंग्रेजी—Holy basil   **लैटिन**—*OGimuw sanctum*

विवरण—इसका पौधा १-२ फुट ऊँचा होता है। जिसमें लगभग १ इंच लम्बे, गोल से और खुशबुदार पत्ते आते हैं। फूलों की मंजरी ५ से ६ इंच लम्बी होती है। यह सर्दियों में लगता है। चपटे लाल रंग के बीज आते हैं। यह सारे भारत में पाई जाती है। प्रायःकर सफेद और काली दो जातियाँ होती है।

प्रयोज्य अंग—पत्ते, जड़, बीज

मात्रा—रस १ से २ तोला बीज पूर्ण १२ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होती है। हृद्य, दाह, पित्त कारक, दीपन, वातकफ, नाशक, कुष्ठ, मूत्रकृच्छ, रक्तविकार और पार्श्व शूल नाशक है। हिक्का, कास, श्वास और विष नाशक है। यह दुर्गन्ध नाशक है।

आधुनिक मत—पीले रंग का सुगन्धित तैल होता है जो जम जाता है और तुलसी कपूर कहलाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० आर० एन० क्षौरी का मत है कि काली मिर्च के साथ इसे देने से फेफड़ों का कफ निकलता है। सूखे पत्तों का चूर्ण जुकाम व कफ नाश के लिए दिया जाता है। ज्वर नाशक है। नीम्बू के रस के साथ लगाने से दाद मिटाती है। इसके बीज मूत्रकृच्छ्र नाशक होते हैं।

१२६. बादरंज बोया
Nepta Hindustana.

विवरण—यह एक छोटी जाति की बूटा है जो प्रत्येक वर्ष पैदा होती है। इसमें विशेष प्रकार की गन्ध आती है। यह पंजाब, बंगाल, मध्यभारत और दक्षिण में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग – पञ्चांग। **मात्रा** – ५ से ७ माशा।

गुणकर्म—दिल को खुशी और ताकत देती है। वायु के लिए लाभकारक है। रक्त शोधक है। सूजन मिटाती और दर्द दूर करती है। इससे सब प्रकार के ज्वर दूर होते हैं।

प्रायः कफज और वातज रोगों को दूर करती आर अपस्मार, अर्धांग में दी जाती है। मुंह की बदबू को दूर करने के लिए इसे चबाते हैं। इसका शर्बत और अर्क बना कर प्रयोग किया जाता है।

नेपाल में यह दवा सुजाक को दूर करने के लिए दी जाता है।

१३०. पुदीना

आयुर्वेदीय पर्याय – पूतिहा, रोचनी, पुदिना। **यूनानी** – फूदनज।
अंग्रेजी – Spearmint **लैटिन** – ***Mentha Viridis***

विवरण – यह एक प्रसिद्ध बूटी है जो तेज सुगन्ध की होती है। इस के हरे पत्ते कोमल और किनारे कटे हुए होते हैं। इसका डंठल मुलायम होता है और उसके चारों तरफ फूलों के गुच्छे लगे होते हैं। यह जंगली, पहाड़ी और बस्तानी तीन तरह का होता है।

प्रयोज्य अंग – पौधा। **मात्रा** – रस १ से २ तोला।

आयुर्वेदिक मत – कटु रस, लघु रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। वात कफ नाशक, दीपन, रोचन, हृद्य, छर्दि एवं आध्मान नाशक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। अग्नि मान्द्य, शूल, कृमि रोग, विसूचिका, अतिसार, जीर्ण ज्वर एवं कास नाशक है।

आधुनिक मत – इसमें मुख्य तत्व 'थाइमोल' होता है। इसके अतिरिक्त राल, गोंद और टैनिन होते हैं।

पुदीने से एक फूल तैयार किया जाता है जो Menthal कहलाता है और पाचक दवाओं में बहुत प्रयोग किया जाता है।

१३१. शातर
Zataria Multiflora.

विवरण – यह एक बूटी है। इसमें फल नीलेपन पर आते हैं। यह खुशबूदार एवं स्वाद में तेज होते हैं। इसकी कई जातियाँ होती हैं।

प्रयोज्य अंग एवं मात्रा—इस बूटी की मात्रा ५ से ७ माशा तक है।

गुणकर्म—सूजन को मिटाती है। अपानवायु निकालती और दर्दों को मिटाती है। आमाशय, यकृत, आंतों के दोषों को निकालती है। अशमरी को निकालती व पैशाब और मासिक स्राव को साफ करती है। पेट के कीड़ों को नष्ट करती हैं। दर्द दान्त में इसके गरारे करते और सूजन मिटाने को शहद में मिलाकर लगाते हैं। वायु गोले के दर्द, मसाने के दर्द, गर्भाशय के दर्द में इसे पिलाते और लगाते हैं। खांसी, दमा में फेफड़ों से बलगम निकालने के लिए इसे शुष्क अंजीर के साथ देते हैं। इसका पानी निचोड़ कर कान के दर्द को और आंख में फूले को मिटाने के लिए डालते हैं। यह काम शक्ति को बढ़ाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

LAURACEAE कर्पूरादि वर्ग

स्वरूप—सदैव हरित

पत्र —सादे (Simple), उपपत्र रहित, तैलग्रन्थि युक्त

पुष्प —शाखाग्रोद्भुत (Apical)

पुंकेशर (Androceum) २-३

फल —मांसल

१३२. तेजपात

आयुर्वेदीय पर्याय—पत्रज, तमालपत्र, **यूनानी**—साजिजहिन्दी

अंग्रेजी—Folia Malabathye **लैटिन**—*Cinnamomum Tamala*

विवरण—इसका पेड़ २० से ४० फुट तक ऊँचा होता है। इसकी छाल भूरे और पीले रंग की होती है। इसमें लम्बे २ पत्ते होते हैं जिनमें रेखायें उभरी रहती हैं। इनमें तीक्ष्ण गंध आती है और इसके फूल सफेद रंग के होते हैं। फल आधा इंच लम्बा और पक जाने पर काले रंग का होता है। यह हिमालय में ३ हजार से ८ हजार फुट की ऊँचाई तक सिलहट और खासिया की पहाड़ियों में होता है।

प्रयोज्य अंग—पत्ते।

मात्रा—२ से ४ माशा।

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, लघु, पिच्छिल, तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और मधुर विपाक है। यह कफवातनाशक है। बवासीर, हृदय रोग, अरुचि और पीनस में लाभ करता है। अजीर्ण, उदरशूल और आम विकार में लाभ करता है।

आधुनिक मत—कर्नल चोपड़ा का कहना है कि इसके पत्तों का लेप बिच्छु के जहर को खत्म करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१३३. दालचीनी

आयुर्वेदीय पर्याय—स्वाद्वी, तनुत्वक्, दारूसिता; त्वक् **यूनानी**—दारसीनी
अंग्रेजी—Cinnamon **लैटिन**—*Cinnamomum Zeylanicum*

विवरण—इसका वृक्ष मध्यम ऊँचाई का होता है। पेड़ के ऊपर मिटेले और लाल रंग की ½ से १ इंच मोटी छाल होती है। इसके पत्तों पर बारीक रूएँ होते हैं। पत्तों का ऊपरी हिस्सा चमकीला और ३-५ धारियों वाला होता है। इसमें धूसर रंग के फल आते हैं। गहरे बैंगनी रंग के लगभग १ इंच लम्बे लगते हैं। इसका आदिम प्रमुख स्थान लंका है, किन्तु अब बर्मा, चीन, दक्षिणी भारत और हिमालय प्रदेश में भी पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, पत्ते। **मात्रा**—५ से १५ रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—कटु-तिक्त मधुर रस, लघुरूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफवातशामक, पित्तकारक, वमन, अरुचि, अग्निमान्द्य और आध्मान नाशक है। मुखशोष, तृष्णा और दाँतों के दर्द को मिटाता है। हृदय विकार, वस्ति के रोग, अर्श, कृमि, कास, अपीनस और आक्षेप नाशक है। शुक्रल और वर्ण्य है।

आधुनिक मत—इसमें उड़नशील तैल, राल, एसिडसिनैमिक और टैनिन आदि होते हैं। यह दिल को ताकत देती, दौरा मिटाती और एण्टी-सेप्टिक प्रभाव करती है। आध्मान, जिह्वास्तम्भ, संग्रहणी, अरोचक, उष्णवात, आन्त्रिक ज्वर में लाभ करती है। इसके एसिड का इन्जेक्शन यक्ष्मा में दिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

LEGUMINOSAE FAMILY **शिम्बीवर्ग**

Caesalpiniaceae sub Family **पूतिकरञ्जादि उपवर्ग**

पत्र--संयुक्त (Compound)

पक्षाकार-एकान्तर, उपपत्र प्रायः नहीं

पुष्प--मञ्जरी के आकार में;

पुष्प बाह्यकोश (Calyx) के दल ५,

प्रायः पृथक् पृथक् (Poly Sepalous) एक दूसरे के ऊपर।

पुष्पाभ्यन्तर कोश (Corolla) के दल ५

पुंकेशर (Androceum) १०

फल --सेम

१३४. अशोक

आयुर्वेदीय पर्याय – अशोक, हेमपुष्प, वंजुल, ताम्रपल्लव, गंध पुष्प

लैटिन – *SaracaIndica.*

विवरण – इसका वृक्ष २५ से ३० फुट ऊंचा होता है। पत्ते ३ से ६ इंच लम्बे आम के पत्तों की तरह होते हैं। फूल गुच्छों के रूप में आते हैं। जिनका रंग आरम्भ में पीताभरक्त होता है परन्तु बाद में रक्त हो जाता है। इसमें फूल बसन्त में आते हैं और सर्दी में फल आते हैं जिनका आकार ३ से १० इंच लम्बा और १$\frac{1}{2}$ से २ इंच चौड़ा होता है। इसमें ४से ८ इंच लम्बे चपटे बीज निकलते हैं। यह बंगाल, दक्षिण भारत और बर्मा में होता है।

प्रयोज्य अंग – छाल, बीज, फूल

मात्रा – क्वाथ के लिए छाल १ से २ तोला बीज या फूल चूर्ण १ से ३ मा०

आयुर्वेदिक मत – कषाय तिक्त रस; लघु रूक्ष गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफ पित्त शामक; दर्द नाशक एवं विष नाशक है। अतिसार, प्रवाहिका, प्यास और कृमिरोग नाशक है। यह रक्तविकार, रक्त-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पित्त एवं शोथ का नाश करता है। दाह नाशक है। अशोक का विशेष प्रयोग रक्तप्रदर श्वेत प्रदर, कष्टार्तव तथा गर्भाशय शिथिलता में किया जाता है। इसके बीज पेशाब ज्यादा लाते हैं और पथरी का नाश करते हैं।

आधुनिक मत — इसकी छाल में हीमैटॉक्सिलिन, टैनिन और कैटेनिन तथा कुछ लौह होता है।

डा० आर० एन० क्षोरी ने इसे रसायन व उत्तेजक बताया है। इसका काढा गर्भाशय के रोगों को दूर करने वाला है। यह खास कर रजोविकार (Menorrhagia) को दूर करता है।

१३५. अमलतास

आयुर्वेदीय पर्याय—आरग्वध, राजवृक्ष, कृतमाल, दार्घफल, स्वर्ण भूषण।

अंग्रेजी—Pudding Pipe Tree. लैटिन — *Cassia Fistula.*

विवरण — इसके वृक्ष बड़े २ होते हैं जिनमें जामुन की सी पत्तियाँ लगती हैं। इनके ३ से ६ तक जोड़े फटते हैं और यह बहुत चिकनी होती है। इसमें पीले रंग के लम्बे और पाँच-पाँच पंखडियों वाले फूल लगते हैं जो गुच्छों में लगे होते हैं। इनमें गन्ध नहीं होती। फूलों के झड़ने पर इनमें हरे रंग की फलियाँ जो भीतर से पीले रंग की होती, लगती हैं। इनकी लम्बाई १ से ३ फुट तक होती हैं। इसके भीतर काले रंग का कुछ गीला सा गूदा निकलता है, जिसके बीच २ में बीज होते हैं। यह सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग — गूदा, बीज, छाल, मूल। मात्रा — गूदा १ से २ तोला।

आयुर्वेदिक मत — मधुर रस, गुरू एवं स्निग्ध गुण, शीत वीर्य एवं मधुर विपाक है। हल्का दस्तावर, वातव्याधि, हृदय, रोग, रक्तपित्त, उदावर्त, ज्वर एवं शूल नाशक है। रूचि वर्धक, कुष्ठ एवं पित्त रोगों में लाभ करता है।

आधुनिक मत — इसके गूदे में ग्लूटिन, पेक्टिन, रेजिन एवं शर्करा पाई जाता है। इसमें केलशियम आक्जेलेट भी होता है। इसका गूदा रेचक है। यदि इसे अकेले दिया जाए तो यह ऐठंन पैदा करता है इस लिए इसे दूसरे द्रव्यों के साथ दिया जाता है।

इसके बीज वामक हैं, मूल तीव्ररेचक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१३६. इमली

आयुर्वेदीय पर्याय — अम्लिका, चिंचा, तिन्तिड़ी। यूनानी — तमरहिन्दी।
अंग्रेजी — Tamarind. लैटिन — *Tarmindus Indicus.*

विवरण — इसके वृक्ष ऊँचे और घने फैले हुए होते हैं। इन का तना मोटा होता है और छाल फटी हुई सी होती है। इमली के पत्ते आँवले के पत्ते जैसे होते हैं। इसमें लाल रंग के छोटे २ फूल आते हैं। फूल बसन्त में आते हैं और गर्मियों में फली लगती हैं जो कच्चे रहने पर हरी और पकने पर लाल हो जाती हैं। फली का गूदा रक्ताभ होता है जिसमें काले, लाल रंग के बीज होते हैं। यह सारे भारत में आसानी से पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग — छाल, गूदा, बीज।

मात्रा — गूदा २ से ४ तोला, बीज १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत — इमली खट्टी, भारी, वातनाशक, पित्त कफ कारक एवं रक्त रोग कारक होती है। पकी इमली अग्निप्रदीपक, रूखी, दस्तावर, गरम तथा कफवात नाशक है।

आधुनिक मत — डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है पकी इमली का गूदा 'स्कर्वी' रोग को नष्ट करता और मृदु विरेचक होता है। यह बुखार, प्यास और पित्त के रोगों में व्यवहार किया जाता है। यह गूदा पुरानी कब्ज का मिटाता है। कच्चे इमली के पत्तों का लेप करने से सूजन मिट जाती है। इमली के बीज आंव और खून क दस्तों में फायदा करते हैं।

१३७. इक्लीलुल-मलिक (नाखूना)

Tringonella uncata

विवरण — यह एक प्रकार की कोमल वनस्पति है। इसके पत्ते गोल होते हैं और ३-३ के गुच्छों में होते हैं। इसके फूल सफेद और लम्बे होते हैं। इसकी फली लम्बी और गोल होती है। फली में २-३ बीज होते हैं। यह परसिया और अफगानिस्तान में पैदा होती है। इसकी फलियाँ नाखून के बराबर की होती है। इसलिए इसे नाखूना भी कहते हैं।

प्रयोज्य अंग — फली, मात्रा — २ माशा से ४ माशा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण कर्म—यह शोथ हटाती, कठोर शोथ को मुलायम करती और बल देता है। इसकी मालिश या लेप करते हैं। यकृत प्लीहा आमाशय और गर्भाशय के दर्दों को दूर करने के लिए, इसका प्रयोग खाने के रूप में भी किया जाता है। इन अंगों की शोथ को भी मिटाता है। इसका प्रयोग लगाने में भी करते हैं। अर्धांग में इसका क्वाथ पिलाते और बाह्य रूप में भी प्रयोग करते हैं। इसके क्वाथ का धूम्रपान करने से आंतों को बल मिलाता है।

आधुनिक मत—कर्नल चोपड़ा के मतानुसार यह संकोचक और निद्राकारक दवा है। इसमें 'कोमेरिन' नामक तत्व होता है। यह दिल की धड़कन को कम कर देता है। कहा जाता है कि यह पथरी को तोड़कर निकाल देता है। श्वास में यह लाभ करता है।

१३८. कचनार

आयुर्वेदीय पर्याय—काञ्चनार, कांचक, गण्डारी, युगपत्रक

लैटिन—*Baubinia variegata*

विवरण—कचनार के वृक्ष १५ से २० फुट तक ऊँचे होते हैं। यह झुकी हुई और मुलायम शाखा का वृक्ष है। इसकी छाल १ इंच मोटी, खरदरी, भूरी और सफेद रंग की होती है। इसके पत्ते हरे और चौड़े होते हैं जो डंठल के पास एक और अग्रभाग में दो भागों में होते हैं। फूल भेद से ३ प्रकार का कचनार कहा है लाल, पीला और सफेद। इन फूलों में थोड़ी २ गन्ध आती है। फलों के बाद इसमें फलियाँ लगतो हैं जो स्वाद में कड़वी होती है। यह सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, फूल, पत्ते, फली **मात्रा**—फूल २ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—कचनार शीतल, ग्राही, कसैला, कफपित्त, कृमि, कुष्ठ गुदभ्रंश, गण्डमाला और व्रण को नष्ट करने वाला है।

आधुनिक मत—डा० क्षौरी ने लिखा है कि इसकी छाल में 'टेनिन' होती है। इसका छाल और कलियाँ रसायन व कषाय है। इसकी छाल का क्वाथ कुष्ठ, गण्डमाला और चर्मरोगों का नाश करता है। कलियों का क्वाथ बहते हुए खून में, खांसी में लाभ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१३९. करञ्जवा

आयुर्वेदीय पर्याय—लताकरञ्ज, पूतिकरञ्ज, घृतकरञ्ज, कण्टकीकरञ्ज
यूनानी—इकतमकत
अंग्रेजी—Fever Plant **लैटिन**—*Caesalpinia Bonducella*

विवरण—इसका क्षुप लताकार होता है। इसके तने और शाखाओं पर काँटे होते हैं। पत्ते १ इंच लम्बे और पक्षाकार होते हैं। बरसात में पीले रंग के फूल आते हैं। सर्दी में फल लगते हैं जो ३ इंच लम्बे चपटे और कांटों से ढके होते हैं। प्रत्येक फल में दो बीज निकलते हैं। बीज का छिलका सख्त और नीले धूसर वर्ण का होता है और अन्दर की गिरी सफेद होती है। यह सारे भारत में विशेषकर समुद्र के निकटवर्ती प्रदेश में उत्पन्न होता है। बंगाल और बम्बई प्रान्त में अधिक होता है।

प्रयोज्य अंग—बीज, मूल, पत्र

मात्रा—बीज और मूल का चूर्ण १० से २० रत्ती पत्र स्वरस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—यह कटु तिक्त रस, लघु-रूक्ष-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। कफवात शामक है। दीपन, अनुलोमन, यकृत उत्तेजक, रेचक और कृमि नाशक है। व्रणरोपक, रक्तशोधक एवं ज्वर नाशक है। कुष्ठ, मूत्रकृच्छ, कास, श्वास में लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में तैल, प्रोटीन और स्टार्च होते हैं। तिक्त सत्व होता है जो 'नाटिन' और बॉण्डुसिन' कहलाता है। डा० आर० एन० क्षोरी का मत है कि इसके बीज बलकारक, ज्वरनाशक और कृमिनाशक है।

डाँयमाक का कहना है कि इसके बीज घाव भरने वाले और ज्वर निवारक होते हैं। इसके आधे बीज को लौंग के साथ देने पर दर्द मिटता है। और काली मिर्च के साथ देने पर मलेरिया दूर होता है। कुष्ठ में यह खाने के काम में लिए जाते हैं। यह कृमिनाशक होते हैं।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि इण्डिजेनस ड्रग्स कमेटी ने इसकी परीक्षा की और यह बताया कि यह उत्तम बलदायक व उपयोगी ज्वरनाशक पदार्थ है।

१४०. कसौंदी

आयुर्वेदीय पर्याय—कासमर्द, कासारि **यूनानी**—कसौंजी
अंग्रेजी—Negro coffee Plant **लैटिन**—*Cassia Occidentalis*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण — इसका क्षुप ३-६ फुट तक ऊँचा होता है जो वर्षा में पैदा हो जाया करता है। इसकी शाखाएं कुछ मुलायम और बैंगनी रंग की होती हैं। इसके पत्त एक तरफ लगे हुए और मिले हुए होते हैं। हरेक डंठल में ५-५ पत्तियाँ होती हैं इसमें पीले रंग के फल लगते हैं जो छोटे होते हैं। फलियाँ ३-४ इंच लम्बी, पतली और गोलाकार होती हैं। प्रत्येक में १०-३० बीज होते हैं। यह हिमालय प्रदेश से बंगाल तक, दक्षिण भारत, लंका और बर्मा में होते हैं।

प्रयोज्य अंग — पत्ते, बीज, जड़।

मात्रा — रस १/२ से १ तोला। बीज चूर्ण १ से २ माशा।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त मधुर रस, रूक्ष, लघु-तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक है। कफवातशामक और पित्त सारक है। पाचन एवं कंठ शोधन, कास, श्वास नाशक, मूत्रल, कुष्ठनाशक, वेदना नाशक एवं आक्षेप शामक हैं। लेप कुष्ठ एवं विष नाशक है।

आधुनिक मत — इसकी पत्तियों में सनाय जैसा रेचक तत्व होता है जिसे **Cathartin** कहते हैं। बीजों में टैनिक एसिड, मैलिक एसिड, क्राइसोफेनिक एसिड एवं एक्रोसीन होती है।

कर्नल चोपड़ा ने यह द्रव्य ज्वर नाशक, रेचक और सर्व विष नाशक बताया है।

१४१. पतंग

आयुर्वेदीय पर्याय — पतंग, रक्तसार, रञ्जन, कुचन्दन **यूनानी** — बक्कम
अंग्रेजी — Sappan wood **लैटिन** — *Gaisalpinca Sappan*

विवरण — इसके वृक्ष चन्दन के वृक्ष की तरह बड़े २ होते हैं। इसमें और लाल चन्दन में बहुत समानताएँ हैं। पहिचान केवल यह है कि चन्दन की लकड़ी सुगन्धित होती है और पतंग में गन्ध नहीं होती। इसमें लम्बी २ पत्तियाँ आती हैं और ऊपर की पत्तियों में फूल लगते हैं। यह मद्रास में ज्यादा होते हैं।

प्रयोज्य अंग— लकड़ी **मात्रा** — २-३ माशा

आयुर्वेदिक मत — पतंग मधुर, शीतल, पित्त कफ एवं रुधिर विकार नाशक है। इसमें पीले चन्दन के समान गुण हैं। विशेष कर यह दाहशामक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्रण रोपक एवं कान्तिवर्धक है। यह संग्राही होता है। चन्दन की अपेक्षा हीन गुण है।

आधुनिक मत—इसमें उड़नशील तैल पाया जाता है, जिसमें 'फेलनड्रिन' और 'ओसीमन' मुख्य तत्व होते हैं।

यह उत्तेजक, बलकारक और रक्तशोधक होता है, कोमान का कहना है कि यह अतिसार एवं रक्त के स्राव को बन्द करता है।

१४२. पवांड़

आयुर्वेदीय पर्याय—प्रपुन्नाट, दन्द्रुघ्न, मेषलोचन, चक्री   **यूनानी**—संगेसबूया

लैटिन—*Cassia Tora.*

अंग्रेजी—Ringworm Plant

विवरण—इसका क्षुप वर्षायु होता है। यह २-५ फुट ऊँचा और दुर्गन्धित होता है। मेथी के जैसे पत्ते १-१½ इंच लम्बे होते हैं। पत्ते रात में आपस में मिल जाते हैं। पीले रंग के फूल आते हैं। इसमें लम्बी फली लगती है। जो ४-६ इंच की चौकोर होती है हरेक फली में बेलनकार घूसर वर्ण के २०-३० बीज निकलते हैं। यह सारे भारत में विशेषकर उष्ण प्रदेशों में उत्पन्न होता है।

प्रयोज्य अंग—बीज और पत्ते।

मात्रा—बीज चूर्ण १-३ माशा, पत्ते का रस ½ से १ तोला।

आयुर्वेदिक मत—बीज कटु रस, लघु रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होते हैं। पत्ते मधुर एवं शीतवीर्य होते हैं। कफवातशामक, नाड़ियों के लिए बलप्रद है। यह कटु और उष्ण होने से अनुलोमक, कृमिनाशक एवं यकृत-उत्तेजक होता है। रक्तविकार, हृदय रोग, कास, श्वास एवं अर्श में लाभ करता है। कुष्ठ, कण्डु, दाद एवं विष नाशक है। मेदनाशक एवं गुल्म-कृमि रोगों में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में 'इमोडिन' जैसी एक चीज निकलती है जो गुणों में 'क्राइसोफानिक एसिड' से मिलती-जुलती है। पत्तों में 'कैथार्टिन' की तरह की और सनाय की पत्तियों जैसा लाल रंजक द्रव्य होता है तथा कुछ खनिज द्रव्य होते हैं।

यह रसायन है एवं चर्मरोगों की अचूक दवा है। भिलावे से जले पर पत्तों को लेप लगाना चाहिए। बीज का लेप दाद, पामा एवं प्लेग की गाँठ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पर किया जाता है। पत्तों की पुल्टिश कच्चे फोड़े को पकाती है। पत्तों का क्वाथ मृदुरेचक है।

१४.३ सनाय

अंग्रेजी – Indian Senna. **लैटिन** – *Cassia Augustifolia.*

विवरण – इसका सीधा क्षुप २-३ फुट ऊँचा होता है, पत्ते जुड़े हुए, पत्तियाँ १ से २ इंच लम्बी होती हैं। इसमें अमलतास जैसे पीले रंग के फूल आते हैं। इसमें चपटी फली आती हैं और पकने पर काले रंग की हो जाती है। हरेक फली में ५-६ बीज होते हैं। यह अरब में पैदा होता है और भारत में विशेष कर मद्रास में होता है।

प्रयोज्य अंग – पत्ते और फल। **मात्रा** – १ से ३ माशा।

गुणकर्म – यह वायु और कफ में लाभ करती है। यह मृदु रेचक होती है और वातानुलोमक है। इसके प्रयोग से आँतों की गति और स्राव बढ़ जाते हैं। यकृत को उत्तेजित करती है। यह कृमिनाशक है और रक्त साफ करती है। यह ज्वर, उदर विकार और आमवात में बहुत लाभ करती है। इसकी पत्ती को सिरके में पीसकर चर्मरोग नाशक गुण के लिए लेप करते हैं।

सनाय का प्रयोग करने से जी मिचलता, मरोड़ होती और प्यास लगती है। इससे बचने के लिए इसके चूर्ण के साथ सौंफ, सोंठ, गुलकन्द, सैंधानमक और मिश्री मिलाकर देते हैं।

आधुनिक मत – इसकी पत्तियों में कैम्फरीन, ऐन्थ्राक्विनोन, आइजो-रैमनेटिन, कैल्शियम ऑक्जलेट, काइसोफनिक एसिड और कैथार्टिक एसिड होते हैं। कैथार्टिक एसिड इसमें विशेषकर रेचक कर्म करता है।

सनाय का प्रयोग करने के पश्चात् यह शरीर के सभी स्रावों से बाहर निकलती रहती है। माता को जब सनाय खिलाई जाती है तो वह दूध द्वारा निकलती है और बच्चे को दस्त आ जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

LEGUMINOSAE FAMILY शिम्बी वर्ग

Mimosaceae Sub-Family बब्बूलादि उपवर्ग

पत्र– संयुक्त पक्षाकार

पुष्प–कन्दुकाकार, सूक्ष्म, समूह में, दल तलभाग में जुड़े हुए

फल– सेम चपटी, सन्धि स्थान से फटने वाली

१४४. कीकर

आयुर्वेदीय पर्याय—बब्बूल, किंकिरात, सपातक, आभा यूनानी—मुगीलाँ

अंग्रेजी—Acacia Tree. लैटिन—*Acacia Arabica.*

विवरण—इसका वृक्ष २५ से ३० फुट तक ऊँचा होता है। जिसकी छाल धूसर वर्ण की होती है। इसकी शाखाएँ सीधी और कांटे वाली होती हैं। पत्ता लम्बा होता है जिसमें १०-२० जोड़े पत्तियाँ होती हैं। पीले रंग के फूल आते हैं। फली ३-६ इंच लम्बी, $\frac{1}{2}$ इंच चौड़ी, चपटी और सफेद रंग की होती है। इसके भीतर ८ से १२ बीज होते हैं। इसकी उत्पत्ति भारत के सभी स्थानों पर विशेष कर जंगलों में होती है।

प्रयोज्य अंग—छाल, पत्ते, फल और गोंद।

मात्रा— फल चूर्ण और गोंद ३-६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कषाय रस, गुरू रूक्ष गुण, शीतवीर्य और कटु विपाक होता है। गोंद चिकना, मधुर कषाय रस, मधुर विपाक एवं शीतवीर्य होता है। बबूल कफ पित्तशामक, स्तम्भक और कृमिनाशक है। दाहनाशक, कुष्ठ-नाशक व विषनाशक है। प्रमेह, अतिसार, प्रवाहिका में लाभ करता है। गोंद वातपित्तशामक, स्नेहक एवं संग्राहक है। वृष्य, मूत्रल एवं बलकारक है।

आधुनिक मत—फल में टैनिन होती है। गोंद में अरेबिक एसिड, कैल्सियम, मैलिक एसिड, मैगनाशियम व पोटाशियम होता है।

छाल कषाय व बलकारक है और 'ओक बार्क' के स्थान पर प्रयोग करते हैं। गोंद, ठंडा, स्निग्ध और पोषक है। यह मधुमेह में लाभ करता है। फल खाँसी में लाभ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१४५. खैर

आयुर्वेदीय पर्याय—खादिर, रक्तसार, दंत धावन, बहुशल्य

अंग्रेजी — Catechu Tree **लैटिन** — *Acacia Catoechu*

विवरण — इसका वृक्ष मध्यम कद का होता है। इसकी छाल खुरदरी और कांटों से भरी होती है। छाल का रंग मैला होता है। इसमें इमली के जैसे पत्ते लगते हैं जो ३ से ४ इंच लम्बे होते हैं। इसमें ३० से ५० जोड़े पत्तियां रहती हैं जिन पर रूंआ होता है। इसमें पीले रंग के छोटे २ फूल लगते हैं। इसमें २ से ४ इंच लम्बी फली लगती है जो पतली और मैले चमकदार रंग की होती हैं। प्रत्येक फली में ५ से ८ छोटे २ गोल बीज निकलते हैं। इसकी लकड़ी से खैरसार (कत्था) बनाया जाता है। हिमालय में ५ हजार फुट की ऊँचाई तक होता है।

प्रयोज्य अंग — छाल, कत्था

मात्रा — छाल १ से ३ माशा कत्था ३ से ६ रत्ती

आयुर्वेदिक मत — खैर तिक्त कषाय रस, लघु-रूक्ष गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक है। प्रभाव कुष्टघ्न है। कफ पित्त शामक है। दान्तों के लिए हितकारक, रूचिकारक, पाचन एवं कृमिनाशक है। शोथहर एवं रक्तस्तम्भक है। प्रमेह, ज्वर, कास, कण्डु एवं व्रण नाशक है। मेदरोग एवं प्लीहा रोग नाशक है।

आधुनिक मत — इसमें 'कैटैच्यूटैनिक एसिड' और 'कैटैचीन' पाया जाताहै।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह बलप्रद और रसायन है। पाचन करता और ज्वर दूर करता है। संग्रहणी, बच्चों के आमातिसार एवं रक्तातिसार, मलेरिया स्कर्वी में लाभ करता है। अधिक लालास्राव प्रदर व रक्तस्राव में लाभ करता है।

१४६. छुई मुई

आयुर्वेदीय पर्याय — लज्जालु, शमीपत्रा, समङ्गा, रक्तपादी

अंग्रेजी — Sensitive Plant **लैटिन** — *Mimosa Pudica*

विवरण — इसका क्षुप कांटों वाला और छोटा होता है। पत्ते का डंठल लम्बा होता है और उसमें छोटे डंठल छोटी २ पत्तियों से भरे हुई होते हैं। इन पत्तियों को छुआ जाए तो वह सिकुड़ जाते हैं। गुलाबी रंग के फूल रूई जैसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुलायम होते हैं। इसमें ½ से ¾ इंच लम्बी फली लगी रहती हैं जिसमें ३ से ४ बीज होते हैं। पहले केवल 'ब्राजिल' में पैदा होती थी अब भारत में भी होती है।

प्रयोज्य अंग — जड़, पञ्चांग मात्रा — रस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत — कषाय तिक्त रस; लघु रूक्ष गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक है। यह कफ पित्त शामक, रक्तपित्त शामक, स्तम्भक, रक्तशोधक है। प्रमेह नाशक, विषनाशक व वृष्य है। यह क्षत, व्रण और भगन्दर में लगाया जाता है। प्रदर प्रवाहिका व अतिसार में लाभ करता है।

आधुनिक मत — इसकी जड़ में १०% 'टैनिन' होती है। इस का लेप शोथ, कुष्ठ और पुराने जख्मों में लाभ करती है।

१४७. शिकाकाई

आयुर्वेदीय पर्याय — शातला, सप्तला, सारा, विमला यूनानी — शिकाही

विवरण — इसका क्षुप छोटा और कांटेदार होता है। इसमें तिकोने, कुछ मोटे और रूएंदार पत्ते लगे होते हैं। इसमें पीले रंग के फूल लगते हैं और बबूल जैसी फलियाँ लगती हैं। यह भारत के जंगलों में पैदा होता है।

प्रयोज्य — फल और पत्ते। मात्रा — काढा ४ से ८ तोला।

आयुर्वेदिक मत — तिक्त रस, लघु तीक्ष्ण, गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक है। कफ पित्त शामक व वात वर्धक है। शोथ, आनाह, उदावर्त नाशक है। कुष्ठ, कृमि, अर्श एवं गुल्म रोग नाशक है। हृदय को ताकत देती और हृदय के रोगों का नाश करती है। पुरानी खांसी और सांस में लाभ करती है।

आधुनिक मत — इसकी फलियों में सेपोनिन, मैलिक एसिड, ग्लूकोज आदि होते हैं। इसकी फली को पानी में भिगोने से रीठे की तरह के झाग हो जाते हैं। यह बालों को ताकत देता और बढ़ाता है। चर्म रोगों में लाभ करता है।

१४८. सिरिस

आयुर्वेदीय नाम — शिरीष, भण्डी, कपीतन, शुकत।

विवरण — इसका वृक्ष ५०-६० फुट ऊँचा होता है। पत्ते चिकने और रूएंदार होते हैं और एक पत्ते में ४ से ८ चौड़ी पत्तियों के जोड़े होते हैं। इस में फूल पीले रंग के सफेद अच्छी गन्ध वाले और मुलायम होते हैं। इसमें ½

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

से १ फुट लम्बी और $\frac{1}{2}$ से $\frac{3}{4}$ इंच चौड़ी-चपटी और सख्त फली लगती है। इसमें ६ से १० चिपटे हुए बीज हाते हैं। यह दो तरह का होता है। १ सफेद जिसकी छाल सफेद रंग की होती है और २. काला जिसकी छाल काले रंग की हाती है। काला ज्यादा होता है।

प्रयोज्य अंग — छाल, बीज, पत्ते और फूल।

मात्रा — छाल ३ से ६ माशा, बीज १ से २ माशा।

आयुर्वेदिक मत — कषाय, तिक्त, मधुर रस, लघु रूक्ष तीक्ष्ण गुण, ईषत् उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। त्रिदाष नाशक, शाेष, विसर्प, कास, व्रण, विष नाशक है। वर्ण कारक एवं कुष्ठ, कण्डू, त्वगदोष नाशक हैं।

आधुनिक मत — इसकी छाल में सपोनिन होती है। डा० क्षौरी ने लिखा है कि इसके बीज ताकत देते और संकोचक होते हैं। यह पेट के रोगों में प्रयोग होते हैं। पत्तों का लेप कण्डु, शाथ में लाभ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

GUTTIFERAE FMIL नागकेशरादि वर्ग

स्वरूप—बड़े २ वृक्ष, सुगन्धित एवं सुन्दर पुष्प

पत्र —अभिमुख (Opposite) सादे (Simple) अखण्ड, चर्मसदृश

पुष्प —नियमित, पुष्प बाह्यकोश (Calyx) और पुष्प आभ्यन्तर कोश (Coralla) के दल ४–१२ पुंकेशर-अनियत, बीज कोश-अधःस्थ,

फल —मांसल

विशेष—प्रायः वृक्षों से पीतवर्ण का निर्यास निकलता है।

१२०. नागकेशर

आयुर्वेदीय पर्याय — नागकेशर, नागपुष्प, चाम्पेय, **यूनानी** — नारेमुश्क

अंग्रेजी — Cobras Saffron **लैटिन** — *Mesua Ferrea*

विवरण — इसका वृक्ष सदैव हरा रहता है जिसकी छाल लाल रंग की होती है और शाखाएं कोमल होती हैं। इसमें से बबूल की तरह पीले रंग का गोंद सा निकलता रहता है। इसमें नुकीले पत्ते होते हैं जो ऊपर से नुकीले और हरे तथा नीचे से सफेद होते हैं। ३ से ४ इंच के व्यास में फूल निकलते हैं जिनके पीले रंग के पुंकेशर पीले रंग के गुच्छों में होते हैं। इसमें १ से १$\frac{1}{4}$ इंच लम्बा गोल सा फल लगता है जिसमे १ से ४ मेहन्दी के बीज की तरह बीज होते हैं। यह नैपाल, आसाम, बंगाल, बर्मा, अण्डमान में ५ हजार फुट भी ऊँचाई तक पाई जाती है।

प्रयोज्य अंग — पुष्प की केशर

मात्रा — चूर्ण ४ से ८ रत्ती

आयुर्वेदिकमत—कषाय तिक्त रस; लघु रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाकहै। कफ पित्त नाशक, विषनाशक, आमपाचक है। यह ज्वर, तृष्णा, वमन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हृल्लास, खुजली, कुष्ठ, विसर्प नाशक है। यह दुर्गन्धता मिटाने वाली, बस्ति-रोग एवं आध्मान तथा अर्श नाशक है।

आधुनिक मत—इसमें सुगन्धित तैल होता है। डा. क्षौरी का मत है कि यह पेचिश में लाभ करती है। इसका तैल गठिया में लगाया जाता है। इसे मक्खन में मिलाकर रक्तार्श और पाददाह में प्रयोग किया जाता है।

१२१. वृक्षाम्ल

आयुर्वेदीय पर्याय—रक्तपूरक

अंग्रेजी—Red mango. **लैटिन**—*Garcinia Indica*.

विवरण—इसका वृक्ष झाड़ीदार होता है जो २०-३० फुट ऊँचा होता है। इसमें चिकने पत्ते लगते हैं। फल नारंगी के समान लाल रंग के होते हैं। इसमें चपटे बड़े सफेद रंग के बीज निकलते हैं। यह मलाया, चीन, सिंगापुर, जावा, गोवा, मालाबार में ज्यादा होता है। सुखाकर फल को 'कोकम' के नाम से बेचते हैं।

प्रयोज्य अंग—फल, मूल त्वक, बीजों से प्राप्त तैल।

मात्रा—फल १ से २ तोला, तैल ३ से ६ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कच्चा फल अम्ल, पका फल मधुराम्ल रस, लघुरूक्ष गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक होता है। वातशामक, कफपित्तवर्धक होता है। रोचक, दीपक एवं संग्राहक है।

तृष्णा, गुल्म, अर्श, ग्रहणी, शूल, हृदय रोग, जन्तु रोग नाशक है।

आधुनिक मत—बीजों में ३०% तैल निकलता है जो हलके पीले रंग का होता है। इसे जमाकर घी जैसा कर लेते हैं। यह 'कोमम आयल' या 'कोकम-बटर' कहलाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

I

IRIDACEAE FAMILY — केशरादि वर्ग

पत्र —एकान्तर (**Alternate**) पतले, लम्बे

पुष्प—विविध रंग के पुष्प बाह्यकोश (**Calyx**) के दल ३ पुंकेशर (**Androceum**) ३ बीजकोश (**Ovary**) त्रिकोष्ठी और अधःस्थ

१२२. केशर

आयुर्वेदीय पर्याय—घुसृण, रक्त, काश्मीर, कुंकुम, **यूनानी**—जाफरान

अंग्रेजी—Saffron. **लैटिन**—*Crocus Sativa*.

विवरण—इसका पौधा कई-कई वर्षों तक रहने वाला होता है। इसमें नीचे की ओर सघन पत्तियाँ होती हैं। इसमें २-३ फूल एक साथ या १-१ पत्ते के साथ होते हैं। फूल बैंगनी रंग का होता है। बीजकोष में तीन कोष्ठक होते हैं और उनमें बहुत से बीज निकलते हैं। फूल में पुरुष जाति के तीन भागों में बँटे हुए और रक्ताभवर्ण के होते हैं। स्त्री जाति में से तीन सूत्र (रेसे) से निकलते हैं जो केशर कहलाते हैं। एक फूल में से सिर्फ तीन ही केशर मिलते हैं। इस तरह १ रत्ती केसर २० फूलों से मिलती है। यह काश्मीर, स्पेन, ईरान में होती है।

प्रयोज्य अंग—केसर (पराग)। **मात्रा**—५ से २० रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, स्निग्ध लघु गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक है। यह त्रिदोष नाशक है। नाड़ी संस्थान को उत्तेजना और मस्तिष्क को बल देती है। दीपन, पाचन, रोचन, ग्राही, यकृदुत्तेजक, हृद्य, मूत्रजनन, बाजीकरण और ज्वर नाशक है। चर्म रोगों में और मसूरिका में लाभ करती है। चर्म रोगों में इसका लेप करते हैं। शिरःशूल और व्रणों पर इसका लेप किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसमें उड़नशील तैल ८ से १३·४% होता है। Crocin, Picrocrosin, Proteids, Fixed oil होते हैं।

डा० क्षौरी ने लिखा है,कि केसर उत्तेजक, सुगन्धित, वायु नाशक, आक्षेप निवारक औषधि है। यह रजःरोध, क्षीणशुक्रता, लिकोरिया, तीव्रशूल, कष्ट-रज, श्वास एवं कास में लाभ करती है। यह गठिया और वातवाहिनियों के दर्द को मिटाती है। बच्चों के पतले दस्तों में घी के साथ देते हैं। खसरे इत्यादि में दाने निकालने और गर्मी बनाए रखने को देते हैं। गर्भाशय की पीड़ाओं में इसकी बत्ती बनाकर योनि द्वार में लगाते हैं।

१२३. ईरसा

Iris versicolor

विवरण—इसके पौधे के बीच में से एक ड़ाली निकलती है, जिसके ऊपर पत्तों के गुच्छे और फूल होते हैं। इसके पत्ते मोटे दल के और लम्बे होते हैं और फूल नीले, पीले सफेद और इन्द्र-धनुष के जैसे होते हैं, इसी लिए इसे ईरसा (इन्द्र धनुष) कहा जाता हैं। इसकी जड़ चपटी टेड़ी, गांठदार और बैल की तरह फैलने वाली होती है। जड़ में बनफशा की-सी खुशबु आती है। यह हिमालय पर नौ हजार फुट की ऊँचाई तक होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़

गुण कर्म—यूनानी ग्रन्थों में इसका वर्णन बहुत प्राचीन समय से होता आया है, हकीम डिसकोरिडस और सावफरिस्तून ने भी इसके बारे में लिखा है। इसकी जड़ शरीर में गरमी पैदा करती, दौरा, लकवा और कंपन को मिटाती है। तैल और सिरके के साथ इसका लेप करने से पुराना सिर दर्द ठीक हो जाता है।जैतून के तैल के साथ कान में टपकाने से पुराना बहरापन मिट जाता है। हड्ड़ी टूटने या चोट लगने की जगह इसका लेप करने से लाभ होता है। यह सूजन और जलोदर में फायदा करती है और व्रण को भरती है।

खांसी, दमा, पसलियों का दर्द और फेफड़े के रोगों को दूर करती हैं। दिल को ताकत देती है। पीलिया बवासीर, में फायदा करती है।

आधुनिक मत—कीर्तिकार एवं वसु ने इसे एक उत्तम रक्तशोधक वस्तु माना है। यौन विषयक रोगों में तथा यकृत, जलोदर में लाभकारी कहा है। कर्नल चोपड़ा इसे रक्तशोधक, मूत्र निःसारक और मृदु रेचक मानते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

J

JAGLANDACEAE FAMILy — अक्षोटादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: वृक्ष, सुगन्धित
पत्र —एकान्तर (Alternate) उप पत्र रहित
पुष्प —एकालिंगी पुष्पाभ्यन्तर कोष के दल अनुपस्थित या सूक्ष्म
फल —कठिन, क्वचयुक्ति

१२४. अखरोट

आयुर्वेदीय पर्याय—अक्षोट, अक्षोड़, कर्पराल, रेखाफल, मदनाभफल
लैटिन—*Juglans Regia*
अंग्रेजी— Walnut

विवरण—इसका पेड मध्यम लम्बाई वाला और सुगन्धित होता है। छाल मिट्टी के रंग की और ½ से २ इंच मोटी होती है और उसमें लम्बे चीरे होते हैं। पत्ते ६ से बारह इंच लम्बे गोल और नोकीले होते हैं। वसन्त में इसमें फूल लगते हैं। फल गोल, रेखासहित, खोल वाला और मदन फल के आकार का होता है। फल में एक बीज होता है जिसमें दो परदे होते हैं। इसकी गिरी धूसर वर्ण की और टेढ़ी-मेढ़ी होती है। हिमालय में पांच से दस हजार फुट की ऊंचाई तक होता है।

प्रयोज्य अंग—फल की गिरी
मात्रा—१ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, गुरु, स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक है। यह वातशामक और कफ पित्त वर्धक है। बल्य, बृंहण, वृष्य है। दिमाग को ताकत देता है। पक्षाघात, अर्दित और वात विकारों में लाभ करता है। जो गुण बादाम में बताए गए हैं वही अखरोट के हैं।

आधुनिक मत—फल में आक्जोलिक एसिड, बोरियम साल्ट और Juglandia acid होते हैं।

इसकी गिरी का छिलका जलाकर खाने से बवासीर का खून बन्द हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

L

LABIATAE FAMILY

तुलस्यादि वर्ग

स्वरूप—काण्ड प्राय: चतुष्कोण

पत्र —अभिमुख (OppositE), उप पत्र रहित, सुगन्धित

पुष्प —पुंकेशर ४ (दो छोटे, दो बड़े) बीजकोश ४ खण्ड वाला

बीज —प्रति खण्ड १ बीज

विशेष—बीजों को पानी में भिगोने से लुआब होता है।

१२५. उस्तूखूदूस

अंग्रेजी—Aratban layeneder लैटिन—*levendula steachas*

विवरण—इसका पौधा जाड़ों के दिनों में पहाड़ों की तर भूमि में पैदा होता है जिसकी ऊंचाई करीब एक हाथ ऊँची होती है। इनके पत्तें गोलाकार एवं कट हुए किनारों के होते हैं। इसके फूल बैंगनी रंग के, छोटे २ रुएँदार और कपूर जैसी गन्ध वाले होते हैं। इनके सूंघने से छींके आती हैं। इसके बीज माकांगनी के समान, छोटे चपटे और काले-पीले रंग की होती है। यह एशिया माइनर, यूरोप, अरब और भारत के बिहार, बंगाल, काश्मीर में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—फूल और पत्ते, बीज **मात्रा**—३ से ६ माशा

गुण कर्म-सूजन को दूर करता, दिमाग, मांस पेशियों, आमाशय को ताकत देता है। अपान वायु को शुद्ध करता एवं कफ निकलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह मानसिक रोग, अर्धांग अर्दित, खांसी, ठण्डा नजला व जुकाम और जोड़ों की दर्द को दूर करता है। यह दिमाग और उसके दोषों को साफ करता है। इसका जोशान्दा मांस पेशियों के दर्दों और जोड़ों के दर्द को मिटाता है। यह यकृत की शीत शोथ और पेट के रोगों को मिटाता है। स्मरणशक्ति बढ़ाता है। यह बुखार हृदय रोग जिगर तिल्ली बवासीर मृगी में लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसके फूलों में एक लाल पीले रंग का तैल मिलता है। यह तैल खून को बन्द करने और घावों को पूरने के काम में आता है।

कर्नल चोपड़ा के अनुसार यह औषध कफ निःसारक और कृमिनाशक है। यह पेट के अफारे को मिटाता और सूजन तथा प्रदर में लाभ करता है।

१२६. जूफा

Hyssopus Offacinalis

विवरण—इसका पौधा छोटा और जमीन पर फैलने वाला होता है। इसके पत्ते खुशबुदार और कड़वे होते हैं। इसके कोई-कोई पत्ते मेंहदी के पत्तों जैसे होते हैं। इसकी शाखाओं की हरेक गाँठ पर पीले रंग का फूल लगता है। यह ईरान, श्याम, पंजाब और काश्मीर में पैदा होने वाला है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग। **मात्रा**—३ से ६ माशा।

गुण कर्म—कफ को मुलायम कर के दस्तों के द्वारा निकाल देती है, सूजन जमे हुए खून को हटा देती है। पेट के कीड़ों को मारती है। अर्धांग, पुरानी खांसी, फेफड़ों की सूजन, छाती पसली और आमाशय के दर्द और 'कालिक पेन'' को दूर करती है। नजला, सांस की रूकावट, दमा में फायदा करती है। आंतों के व्रण, पेचिश, वृक्व और मूत्राशय की सूजन तथा जलोदर में लाभ करती है।

इसके लेप से सूजन मिटती है। त्वचा के दागों पर इसके क्वाथ की मालिश की जाती है।

आधुनिक मत—इस में टैनिन, राल, वसा, शर्करा होती है।

कर्नल चोपड़ा के मत से इसके पत्ते उत्तेजक, अग्निवर्धक, कफ निःसारक, एवं मासिक स्राव ठीक करने वाला है।

कोमान इस के फूलों के क्याथ को दमा और पुरानी खांसी में लाभकारक बताते है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१२७. तुब्य बलंगू

Salvia Aegyptiaca

विवरण—यह एक छोटी और बहुशाखी झाड़ी है जिसके पत्ते बरछी के के आकार के और तीखी नोक के होते हैं। इसके फूल मंजरी में लगते हैं। इसके बीज लम्बे गोल, चमकीले और काले रंग के होते हैं। यह वनस्पति पंजाब के मैदान, सिंध और बलूचिस्तान में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा**—३ से ६ माशा

गुण कर्म—दिल को ताकत देते हैं, पागलपन, कम्पन और पेचिश को दूर करता है यह प्रमेह का नाश करता है।

आधुनिक मत इसके बीज दस्त, सुजाक और बवासीर को दूर करते हैं। आंखों के रोगों को दूर करते हैं।

१२८. तुलसी

आयुर्वेदीय पर्याय—ग्राम्यार सुलभा, बहुमंजरी, शूलन्घी **यूनानी**—वादरूज

अंग्रेजी—Holy basil **लैटिन**—*OGimuw sanctum*

विवरण—इसका पौधा १-२ फुट ऊँचा होता है। जिसमें लगभग १ इंच लम्बे, गोल से और खुशबुदार पत्ते आते हैं। फूलों की मंजरी ५ से ६ इंच लम्बी होती है। यह सर्दियों में लगता है। चपटे लाल रंग के बीज आते हैं। यह सारे भारत में पाई जाती है। प्रायःकर सफेद और काली दो जातियाँ होती है।

प्रयोज्य अंग—पत्ते, जड़, बीज

मात्रा—रस १ से २ तोला बीज पूर्ण १२ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होती है। हृद्य, दाह, पित्त कारक, दीपन, वातकफ, नाशक, कुष्ठ, मूत्रकृच्छ, रक्तविकार और पार्श्व शूल नाशक है। हिक्का, कास, श्वास और विष नाशक है। यह दुर्गन्ध नाशक है।

आधुनिक मत—पीले रंग का सुगन्धित तैल होता है जो जम जाता है और तुलसी कपूर कहलाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऐसा कहा जाता है कि स्त्री एवं पुरुष दोनों की जननेन्द्रिय पर यह औषध उत्तेजक कर्म करती है। यह दुग्धवर्धक, मासिक स्राव साफ लाने वाली और गर्भस्रावक भी होती है।

रक्तार्श के लिए इसे अच्छा द्रव्य कहा गया है। इस से रक्तस्राव बन्द होता है।

१११. चांगेरी

आयुर्वेदीय पर्याय—अम्लपत्रिका

अंग्रेजी—Indian Sorrel **लैटिन**—*Oxalis Corniculata*

विवरण—यह जमीन पर फैलने वाली वनस्पति है, जिस के एक डठंल में ३, ३ पत्ते लगते हैं। शरद ऋतु में पील रंग के छोटे २ फूल लगते हैं और बाद में फल लगते हैं जिन में कई बीज होते हैं। यह सारे भारत में उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग

मात्रा—स्वरस $\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—अम्ल-कषाय रस, लघु-रूक्ष गुण, उष्णवीर्य एवं कटु विपाक है। यह वातकफ नाशक, रोचक, दीपक एवं संग्राहक होती है। इसका प्रयोग ग्रहणी, अर्श, अतिसार में किया जाता है। कुष्ठ रोग में भी इसका प्रयोग करना चाहिए।

आधुनिक मत—इसमें पोटाशियम और ऑक्जेलिक एसिड होता है।

कर्नल चोपडा के मतानुसार यह ज्वर शामक एवं अग्नि वर्धक द्रव्य है। पुरानी पेचिश में इसके पत्तों को छाछ या दूध के साथ उबाल कर दिन में २, ३ बार देने से लाभ होता है।

११२. लक्ष्मणा

आयुर्वेदीय पर्याय—पुत्रजननी
लैटिन—*Ipomaea Sepiaria*

विवरण—यह एक संदिग्ध द्रव्य है जिस के विषय में भावप्रकाश निघंटु में लिखा है कि "लक्ष्मग की आकृति एवं गन्ध बकरे के समान होती है। इसके पत्तों पर लाल रंग के छींटे होते हैं। यह पुत्रदाता होती है।"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

राज निघंटु एवं धन्वन्तरि निघंटु में सफेद फूल वाली कटैली के बीज को लक्ष्मणा कहा गया है।

शालिग्राम निघंटु में लिखा है कि इस वनस्पति की जड़ में एक कन्द निकलता है जो सफेद रंग का होता है। इसके पत्ते चौड़े होते हैं और उन पर लाल रंग के बिन्दु लगे होते हैं। यह पहाड़ों में पाई जाती है।

कीर्तिकार एवं मेजर वसु का कहना है कि हनुमान बेल अथवा वनकलमी को लक्ष्मणा जानना चाहिए। इसी का लैटिन नाम Ipomaea Sepiaria है।

यह एक प्रकार की लता होती है जिसके पत्ते गिलोय के पत्तों के समान होते हैं। पत्तों पर और बीच की धारियों पर बैंगनी रंग के छींटे होते हैं। फूल छोटे, गोलाई लिए हुए, गुलाबी रंग के और अणीदार होते हैं। इसके फल में चार खण्ड होते हैं और चार बीज होते हैं। दो २ बीज एक सूक्ष्म और पतले तार से बंधें हुए रहते हैं। यह बेल काठियावाड़ में थूहर की बाढ़ों पर बहुत मिलती हैं।

शास्त्रों में लक्ष्मणा को मधुर, शीतल, स्त्री के बन्ध्यत्व को हरने वाली, रसायन, बलकारक तथा त्रिदोष नाशक माना है।

गुजरात में हनुमान बेल गर्भाशय के विकारों को दूर करने एवं सन्तानोत्पति के योग्य बनाने के लिए प्रयोग की जाती है।

इस की एक सफेद फूल वाली जाति भी होती है। कहा जाता है कि यह ही वास्तविक लक्ष्मणा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

GRAMINAE FAMILY

यवादि वर्ग

पत्र— अखण्ड

पुष्प—वल्कलसदृश्य

पुंकेशर—३

बीजकोष—पक्षाकार

बीज—मांसल

११३. ईख

आयुर्वेदीय पर्याय—इक्षु, दीर्घच्छद, भूरिरस, मधुतृण **यूनानी**— नैशकर

अंग्रेजी—Sugar-cane **लैटिन**—*Saccharum officinarum*

विवरण—ईख एक प्रसिद्ध वनस्पति है जिसका सीधा तना ६ से १२ फुट तक ऊँचा होता है और बीच २ में ग्रन्थियाँ होती हैं। पतले-चपटे पत्ते ३ से ४ फुट लम्बे होते हैं। वर्षा में इसमें गुच्छों में फूल लगते हैं।

भाव प्रकाश निघंटु में 'इच्क्षु वर्ग' नाम से अलग ही एक वर्ग बताया हुआ है। वहाँ पर ईख की १३ जातियों का वर्णन किया गया है। इन सब के विशेष गुणों को भी अलग २ बताया गया है। सम्भवतः यह देश भेद के अनुसार ही भिन्न हैं।

प्रयोज्य अंग—मूल, स्वरस एवं उससे निर्मित अन्य पदार्थ।

मात्रा—मूल क्वाथ ५ से १० तोला, स्वरस २ से ४ तोला।

आयुर्वेदीय मत—सुश्रुत सू. अध्याय ४५ में ईख मधुर रस, मधुर विपाक, गुरू, शीत, स्निग्ध बताया है। इसे बलकारक, वृष्य, मूत्रल, रक्तपित्तशामक, कहा है। इसे कृमिकारक कहा गया है।

भावप्रकाश में वर्णित इक्षु वर्ग में १३ प्रकार के ईख के अलग २ गुण बताए हैं फिर ईख की अवस्था के अनुसार क्या २ गुण होते हैं, यह बताते हुए कहा गया है—

"कच्ची ईख कफकारक, मेद तथा प्रमेह को उत्पन्न करने वाली कही गई

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

है। अधपकी ईख वातहर, मधुर, किञ्चित तीक्ष्ण और पित्तनाशक है। पक्व ईख रक्तपित्त तथा क्षय नाशक है एवं बल-वीर्य की वृद्धि करती है।"

"ईख की जड़ अत्यन्त मधुर, मध्य भाग मधुर और अग्रभाग खारी होता है।"

"कोल्हु में पिला हुआ ईख का रस दाह उत्पन्न करता है और विष्टम्भी होता है।"

ईख के रस से बने हुए पदार्थों का वर्णन किया गया है। वे पदार्थ हैं—

(क) फाणित—यह पका हुआ रस होता है जो कुछ गाढ़ा, बहुत पतला होता है।

"यह गुरु, अभिष्यन्दी, पुष्टिकारक, कफवर्धक, वीर्यवर्धक, वातपित्त-शामक, परिश्रम को दूर करने वाला, मूत्रल एवं बस्ति शोधक होता है।"

(ख) मत्स्यण्डी—भली-भाँति पकाया हुआ गाढ़ा और कुछ पतलापन लिए हुए ईख का रस 'मत्स्यण्डी' कहा जाता है।

यह मलभेदक, बलकारक, हलका, वातपित्तशामक, मधुर, पुष्टिकारक, वृष्य, रुधिर रोग नाशक होता है।

(ग) गुड़—ईख का रस भली-भाँति पकाकर बिलकुल गाढ़ा कर लिया जाए उसे गुड़ कहा जाता है।

गुड़ वीर्यवर्धक, गुरु, स्निग्ध, वातनाशक, मूत्रल, मेद, कफ, कृमि एवं बल-वर्धक होता है। पुराना गुड़ लघु होता है।

(घ) खांड़—मधुर, वृष्य, चक्षुष्य, पुष्टिकारक, शीतल, वातपित्तशामक, स्निग्ध, बलदायक एवं छर्दि निग्रहण है।

(ङ) चीनी—अत्यन्त मधुर, रुचिकारक, वातपित्तशामक है। रक्तजरोग, दाह, मूर्च्छा, वमन और ज्वर को नष्ट करती है। अतिशीतल और वीर्य वर्धक है।

(च) मिश्री—शीतल, वीर्यवर्धक, रक्तपित्तनाशक, हलकी होती है। यह दस्तावर एवं वातपित्तशामक होती है।

सुश्रुत संहिता में बताया गया है कि यह पदार्थ उत्तरोत्तर अधिक शीतल, अधिक स्निग्ध, अधिक गुरु, अधिक मधुर, अधिक वृष्य एवं अधिक रक्त-पित्ततृष्णाशामक होते जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—ईख में अलब्युमिन, ग्वैनिन और कैल्शियम ग्रांत्र होता है।

११४. कुशा

आयुर्वेदीय पर्याय—कुश, दर्भ, सूच्यग्र, यज्ञ भूषण

लैटिन—*Eragrostis Cynasuroides.*

विवरण—यह बहुवर्षायु क्षुप है जिसका मूल दृढ़ होता है। इसकी ऊँचाई १-३ फुट होती है। इसके पत्ते जड़ के पास से ही निकलते हैं और लगभग $1\frac{1}{2}$ फुट ऊँचे और २ इंच चौड़े होते हैं। इसका अग्रभाग सूई की तरह तीक्ष्ण, पत्रधार सूक्ष्म और रोम वाला होता है। फूल का डंठल $\frac{1}{2}$ से $1\frac{1}{2}$ फुट तक लम्बा होता है। इसके बीज $\frac{1}{4}$ इंच लम्बे, अण्डाकार और चपटे होते हैं। यह खुले मैदानों में सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल।

मात्रा—क्वाथ ५ से १० तोला।

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर कषाय रस, स्निग्ध गुण, शीतवीर्य एवं मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोष नाशक है।

यह मूत्रकृच्छ, अश्मरी, तृष्णा, बस्तिशूल, प्रदर, विसर्प, दाह, रक्त रोगों में लाभ करता है।

आधुनिक मत—कुशामूल को चावल के पानी के साथ पीस कर पीने से प्रदर रोग शीघ्र ही ठीक हो जाता है। कर्नल चोपड़ा ने बताया है कि यह पेचिश, अत्यधिक रक्तस्राव में लाभ करता है। मूत्रल है।

११५. खस

आयुर्वेदीय पर्याय—उशीर, नलद, सेव्य, जलवास, समगन्धक

अंग्रेजी—Khaskhas Grass. लैटिन—*Vetiveria Zizanioidis.*

विवरण—यह वीरण नामक तृण की जड़ है। यह तृण कुश के समान होता है। इसका तना २-५ फुट ऊँचा और सुगन्ध वाला होता है। पत्ते १-२ फुट लम्बे और सीधे होते हैं। इसमें बरसात में फूल लगते हैं और फिर फल लगते हैं। यह बंगाल, राजपूताना और छोटा नागपुर में पानी के पास के स्थानों में पैदा होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—जड़।

मात्रा—चूर्ण ३ से ६ माशा।

अयुर्वेदिक मत—तिक्त मधुर रस, रूक्ष लघु गुण, शीतवीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफपित्तशामक, दीपक, पाचक, तृष्णानाशक और स्तम्भक है। ज्वर, वमन, रक्तविकार, मद, विष, विसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ और व्रणों का नाश करने वाला है।

आधुनिक मत— इसमें सुगन्धित तैल, राल, चूने का एक लवण और लौहे का आक्साइड़ होता है।

डा० क्षौरी का कहना कि खस ताकत देता, उत्तेजना लाता, दौरा मिटाता, पसीना लाता, पैशाब और मासिक स्राव लाता है। यह ज्वर, मूर्च्छा, अपस्मार, पक्षाघात में दिया जाता है।

११६. दूब

आयुर्वेदीय लैटिन—शतपर्वा, गोलोमी, शीतवीर्य **यूनानी**—उशब

अंग्रेजी—Couch Grass. **लैटिन**—*Cynodon dactylon.*

विवरण—यह जमीन पर फैलने वाली घास है। जिसमें बहुत-सी गाँठें होती हैं और हरेक गाँठ से नई जड़ बनकर जमीन में लग जाती हैं। पत्ते १-४ इंच लम्वे रेखान्वित होते हैं। फूल का डंठल १ से २ इंच लम्बा हरे या बैंगनी रंग का होता है। जो विशेषकर दवाओं में प्रयोग की जाती है। दूसरी जाति नील दूर्वा कहलाती है जो इससे कुछ बड़ी होती है। दूब सारे भारत में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग।

मात्रा—रस १ से २ तोला, चूर्ण १ से ३ तोला।

आयुर्वेदिक मत—मधुर कषाय तिक्त रस, लघु स्निग्ध गुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक होती है। त्रिदोषनाशक, मेध्य, मूत्रल, रक्तस्तम्भक, रक्तशोधक, छर्दिनाशक एवं तृष्णा मिटाने वाली है। क्षत-व्रण अर्श पर लेप करते हैं। पैत्तिक शिरोरोग, शीतपित्त, विसर्प एवं चर्म रोगों पर लेप करते हैं।

आधुनिक मत—डा० क्षौरी का कहना है कि वमन मिटाती, मूत्रकृच्छ में पेशाब साफ लाती और नकसीर से या चोट से बहने वाले खून को बन्द करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बी० डी० बसु ने इसके रस को हिस्टिरिया, अपस्मार और उन्माद में अच्छा बताया है ।

११७. नरसल

आयुर्वेदीय पर्याय—नल, पोटगल, शून्यमध्य, धमन
लैटिन—*Arundo Donax*

विवरण—यह १० से १२ फुट ऊंचा बांस अथवा ईख के आकार का पौधा होता है। इसके तने पर पर्व होते हैं—पर्वस्थान पीला होता है और बीच का भाग खोखला होता है। इसके पर्व बड़े २ होते हैं, अतः उनसे बांसुरी बनाई जाती है—उनकी नली बना कर हुक्का पीने के काम में लेते हैं। यह पानी वाले प्रदेशों में अधिक पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल

मात्रा—क्वाथ ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर-कषाय तिक्त रस, लघु-स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक है। वातपित्त शामक, वृष्य, मूत्रल, दाह प्रशमन है।

यह मूत्र कृच्छ, दाह, रक्त रोग नाशक कहा गया है। मूत्र विकारों में भी यह उत्तम द्रव्य समझ कर प्रयोग किया जाता है।

११८. बांस

आयुर्वेदीय पर्याय—वंश, वेणु, त्वक् सार, शतपर्वा, यवफल **यूनानी**—कसब
अंग्रेजी—Bamboo **लैटिन**—*Bambusa Arundinacea*

विवरण—इसका पेड ४० से ५० फुट ऊँचा होता है, जिसका कांड १२ से १६ इंच मोटा होता है। इसमें थोड़ी २ दूर पर गांठें होती हैं जिन के बीच का हिस्सा पोला होता है। प्रायः ३० वर्ष की आयु में इस में फूल और फल लगते हैं। फल देखने में जौ के जैसे लगते हैं।

स्त्री जाति के बांस में एक तरह का रस रिक्त स्थान में जमजाता है, उसे वंशलोचन या तबासीर कहते हैं।

बांस भारत में हर जगह, खास कर आसाम में होता है और जावा, सुमात्रा और बर्मा में होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग — जड़, पत्ते, फल, वंशलोचन

मात्रा — क्वाथ ५ से १० तो० वंशलोचन १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत — बांस मधुर-कषाय रस, रूक्ष लघु-तीक्ष्ण गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक होता है। इस की छोटी पत्तियाँ और फल उष्णवीर्य होते हैं। बांस की जड़ कफपित्त शामक, मूत्रल, विषघ्न, वर्ण्य हैं। इसका लेप त्वचा के वर्ण को निखारता है।

बांस की छोटी पत्तियाँ और फल पित्त वर्धक, दीपन, पाचन, कृमिनाशक, है। पत्ते का क्वाथ रजारोध और कष्टातर्व में देते हैं। व्रणों पर पत्तों का लेप किया जाता है। फल का प्रयोग मेद रोग और विष रोग में किया जाता है, यह प्रमेह में प्रयोग होते हैं।

वंश लोचन वात पित्त शामक है। ग्राही एवं तृष्णानिग्रहण है। कफ-निःसारक और श्वासहर है। मूत्रल-ज्वरघ्न एवं बल्य-बृंहण है। वमन अतिसार, तृष्णा, कास श्वास, यक्ष्मा और सामान्य दुर्बलता में प्रयोग होता हैं।

आधुनिक मत — बांस की जलाई हुई राख में सेलेसिक एसिड २८%, चूना ४%, मेगनेसिया ६%, पोटाशियम ३४%, सोड़ियम १७%, फ्लोरिन २%, तथा गन्धक १०%, होती है।

वशंलोचन में ९०% सिलिका होता है। चूना, आयरन पेराक्साईड, पोटाश अलुमिनयम और ग्लुकोसाइड पाए जाते है।

डा० क्षौरी ने लिखा है कि इसके पत्र रजः स्राव करने वाले हैं। वंशलोचन उत्तेजक, ताकतवर, शीतल,कास, श्वास, राज्यक्ष्मा और ज्वर नाशक है। इसकी गांठों का क्वाथ 'लोकिया' (प्रसव के बाद योनि मार्ग से होने वाला स्राव) को बन्द करता है। इसके पत्तों का रस रक्त रोधक है।

११९. सरपत

आयुर्वेदीय पर्याय—शर, बाण, मुञ्ज **लैटिन** — *Saccharum Munja*

विवरण — यह बहुयुर्षायु क्षुप होता है जो १० से १२ फुट ऊँचा होता हैं और ग्रन्थि युक्त होता है। ग्रन्थियों के बीच के पर्व लम्बे और पतले होते हैं। इस की पत्तियाँ पतली, चपटी, ३ से ५ फुट लम्बी और अग्रभाग में तीक्ष्ण होती हैं। फूल गुच्छों में लगे होते हैं। यह सारे भारत में खासकर बंगाल बिहार में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग — मल **मात्रा** — क्वाथ ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत — मधुर कषाय रस; लघु-स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोष नाशक हैं। वृष्य एवं मूत्रल है। इसका विशेष प्रयोग दाह, तृष्णा, विसर्प, रक्त रोग, मूत्रकृच्छ, अक्षिरोग नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—कुचले में २।। से ३% तक क्षार होता है जिसमें आधा 'स्ट्रिकनीन' होता है।

फरमाकोपिया इन्डिया में लिखा है कि कुचले के बीज उत्तेजक होते हैं और वात नाडियों को बल देते हैं। यह पक्षाघात और नाडीशूल का नाश करते हैं। यह अतिसार, पुरानी पंचिश और जीर्ण विबन्ध का नाश करते है। इसका प्रयोग विषम ज्वर, मधुमेह और अपस्मार में होता है। पीलिया और अपने आप होने वाले वीर्य स्राव को रोकता है।

विष प्रभाव—ध्यान रहे कुचला एक विष है। इसे अधिक मात्रा में या बिना शुद्ध किए प्रयोग करने से शरीर में अकड़ाहट आ जाती है और मनुष्य को धनुष स्तम्भ हो जाता है। आधे घंटे के अन्दर यह सब होकर सांस रूक जाता है और मृत्यु हो जाती है।

१६८. निर्मली

आयुर्वेदीय नाम—कतक, पयः प्रसादी, चक्षुष्य

अंग्रेजी—Clearing Nut **लैटिन**—*Strychnos Potatorum*

विवरण—इसका वृक्ष कुचले के वृक्ष से मिलता-जुलता किन्तु उससे कुछ अधिक ऊँचा होता है। पीले रंग के फूल और काले रंग का फल होता है। यह फल जामुन की तरह का होता है जिसमें एक बीज गूदे में लिपटा हुआ रहता है। यह बीज श्वेत रंग का होता है और कुचले के आकार का होता है, अन्तर केवल इतना है कि यह उसकी अपेक्षा छोटा होता है। यह दक्षिण भारत, बंगाल और बर्मा में विशेष कर होते हैं।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा**—१ से २ माशा

आयुर्वेदीय मत—यह मधुर-तिक्त-कषाय रस, लघु विशद गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक होती है। इसका प्रभाव चक्षुष्य है। यह वात कफ शामक है। यह प्रायः प्रसादक है। वामक है। प्रमेह, तृष्णा, दाह, गुल्म, विष, शोथ, पाण्डु, प्रतिश्याय, कामला, कुष्ठ, मूत्रकृच्छ, अश्मरी एवं गरविष नाशक है। नेत्र रोगों में इस का अंजन लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में ब्रुसिन नामक तत्व प्राप्त हुआ है। मद्रास में इसके बीज मधुमेह और सुजाक में उत्तम लाभकारक माने जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

LILIACEAE FAMILY रसोनादि वर्ग

पत्र —अभिमुख, सादे, अवृन्त

पुष्प –पुंकेशर ६ (दो चक्रों में)

बीजकोश उर्ध्वस्थ ६ खण्डों वाला

१६९. उशबा

विवरण—यह एक लता जाति की वनस्पति होती है जो अमेरिका में पाई जाती है। भारत में उत्पन्न होने वाली अनन्त मूल की लता का स्वरूप इससे मिलता-जुलता है। इस लता का मूल बहुत लम्बा, सीधा और लचीला होता है, वे अनन्त मूल की तरह टेढी-मेढी नहीं होती। इन जड़ों के साथ रेस्से से लगे रहते हैं।

प्रयोज्य अंग—मूल **मात्रा**—५ से ७ माशा

गुणकर्म—यह शोथ को दूर करता; रक्त शुद्ध करता; मूत्र साफ लाता; वीर्य को पतला करता और वृक्क वस्ति के रोगों को दूर करता है। आमवात, अर्दित, अर्धांग में इसे प्रयोग करते हैं और तैल में मिलाकर मालिश भी की जाती है। यह उपदंश, कुष्ठ और चर्म रोगों को दूर करता है।

आजकल इसे धातु परिवर्तक, मूत्र निःसारक और स्वेदक मानते हैं। कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि यहद्रव्य कई वर्षों तक उपदंश के इलाज में और पाचन के विकारों में प्रयोग किया जाता रहा और इसे चर्म रोग नाशक और रक्त शोधक माना जाता रहा है। किन्तु इसमें पाए जाने वाले enzyme इसे शिपलग्रायल और Saponin में इन रोगों को दूर करने की कोई ताकत नहीं पाई गई।

१७०. कलिहारी

आयुर्वेदीय पर्याय—हलिनी, लांगली, विशल्या, अग्निशिखा, गर्भनुत्

अंग्रेजी—Superb Lily. **लैटिन**—*Gloriosa Superba.*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—यह पतले काण्ड की १०, १२ फुट लम्बी सुन्दर वनस्पति होती है। जिसका भौमिक काण्ड हल के आकार का होता है। यह भाग बहुत वर्षों तक बना रहता है और प्रत्येक वर्षा काल के आरम्भ होते ही इसमें से नए पत्ते आदि निकलने आरम्भ हो जाते हैं जो शीत आने पर सूख जाते हैं। इसके पत्ते वृन्तरहित होते हैं। पुष्प कई रंग के होते हैं, नीचे की तरफ पीले रंग के होते हैं और क्रमशः ऊपर २ जाते हुए रक्त वर्ण के होते हैं। फली ३ से ४ इंच लम्बी होती है। इसकी जड़ में कन्द निकलता है। स्त्रीलिंगी कलिहारी का कन्द गोल होता है और पुरुषलिंगी का चपटा-लम्बा दो भागों में विभक्त होता है। यह बंगाल, दक्षिणी भारत, बर्मा एवं लंका में उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग—कन्द **मात्रा**—१ से २ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक होता है। यह प्रभाव द्वारा गर्भपातन करती है। पित्त कारक, वात कफ शामक है। सारक है। यह कृमि रोग, शोथ, कुष्ठ, अर्श, शूल, शल्य एवं व्रण नाशक कही गई है। प्रसव के पश्चात नाभि एवं बस्ति भाग में इस का लेप कर दिया जाए तो अपरा सरलता से निकल आता है। इसका कन्द योनि में रख दिया जाए तो गर्भ सरलता से गिर जाता है।

आधुनिक मत—इसमें सुपर्बिन (Superbine) नामक एक तिक्त द्रव्य होता है और ग्लोरिओजिन (Gloriosine) नामक एक क्षार तत्व होता है।

कर्नल चोपड़ा इसे विरेचक बताते हैं। उन्होंने लिखा है कि यह कृमि रोग, कुष्ठ और अर्श में लाभ करती है। सर्पदंश और वृश्चिकदंश में लाभ करती है।

१७१. घी कुआँर

आयुर्वेदीय पर्याय—घृतकुमारिका, कुमारी, गृहकन्या **यूनानी**—दरख्तेसिब्र।

विवरण—इसका क्षुप १ से २ फुट ऊँचा होता है, जिसमें ३ से ४ अंगुल चौड़ी १ से १/२ हाथ लम्बे स्थूल पत्ते होते हैं जिनके किनारे पर छोटे २ कांटे होते हैं। इसके अन्दर घी जैसा चिपचिपा गूदा निकलता है। पुराने क्षुप में पत्तियों के बीज से एक लम्बा सा डठंल निकलता है जिसमें लाल रंग के फूल आते हैं। इसके गूदे को उबाल कर एक सत बनाया जाता है जिसे हिन्दी में मुसब्बर या एलवा कहते हैं, यूनानी हकीम इसे 'सिब्र' कहते हैं और अंग्रेजी में 'Aloes कहलाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घी कुआँर भारत, अफ्रीका और अरब में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—पत्ते मात्रा—गूदा १ से २ तोला, सत १ से ४ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—तिक्त मधुर रस, गुरू, स्निग्ध, पिच्छिल गुण, शीतवीर्य और कटु विपाक है। प्रभाव में भेदन कहा गया है। यह त्रिदोष नाशक है। यह अग्निमान्द्य, उदर रोग, गुल्म, प्लीहा, यकृत वृद्धि, उदरशूल, विवन्ध और कृमि रोग नाशक हैं। रक्त विकार और सूजन को दूर करता है। मूत्रल होने से मूत्र कृच्छ में दिया जाता है। यह शुक्र-दुर्बलता और मासिक स्राव अवरोध में लाभ करता है। यह गर्भपात कारक भी हो सकता है। चर्म रोग एवं पुराने बुखार में लाभ करता है। यह रसायन एवं नेत्रों के लिए हितकारक है। व्रण-रोपक है एवं शोथ पर बाह्य प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत— इसमें एलोइन, बार्बेलोइन, एलो-एमोडिन और 'कुमार क्रिसमिक एसिड' होता है।

कर्नल चोपड़ा का कहना है कि इसका ताजा रस रेचक, शीतल और ज्वर-नाशक होता है। इसका गर्भशिय पर प्रभाव होता है।

डा० वामन गणेश देसाई ने लिखा है कि यह पाचक है और यकृत की क्रिया को सुधारता है। गर्भाशय, बीज कोष, और बीज वाहक नालियों पर दाहजनक क्रिया करता है जिससे मासिक आने लगता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि मुसब्बर यकृत की क्रिया को उत्तेजित करता, मृदु रेचक होता, मासिक स्राव शुद्ध करता और कृमियों को मार कर बाहर निकाल देता है। यह गर्भ स्राव कराता है। पुरुषेन्द्रिय में दृढ़ उत्तेजना करता है। अर्श रोग में रक्त को बन्द करता है। इसका लेप चर्म रोग नाशक है।

१७२. चोपचीनी

आयुर्वेदीय पर्याय—द्वीपान्तर वचा यूनानी—अस्लुस्सीनी

अंग्रेजी—China Root. लैटिन—*Smilax Glabra.*

विवरण—इसकी लता फैली हुई और किसी वृक्ष आदि पर चढ़ी हुई होती है। इसके पत्र अण्डाकार होते हैं। सफेद रंग के छोटे फूल लगते हैं। इसकी जड़ भारी-मोटी और गांठों वाली होती है। इसका रंग कुछ लाली लिए

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है। इसका आदिम उत्पत्ति स्थान चीन और जापान है, सम्प्रति आसाम में भी उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—३ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटुविपाक है। अग्नि दीपक, विबन्ध, आध्मान और शूल नाशक है। यह मल और मूत्र का शोधन करती है। वातव्याधि, अपस्मार, उन्माद और शरीर के शूल को दूर करती है। इसका विशेषकर्म फिरंग (सिफलिश) का नाश करना है।

आधुनिक मत—इसमें बसा, शर्करा, सैपोनिन, गोंद और स्टार्च होता है। डा० डिमक ने लिखा है कि चोपचीनी पसीना लाने वाली, उत्तेजक, रसायन और ग्रन्थि आदि को शमन करने वाली होती है। पुराने सिर दर्द में अनन्त मूल के साथ देते हैं। मस्तगी, इलायची या तज के साथ वात, आमवात, अपस्मार, रक्ताल्पता, गंडमाला, शुक्रक्षीणता और पुरानी सिफलिश में लाभ करती है।

डा० वामग गणेश देसाई का कहना है कि यह फिरंगज सन्धि शोथ और उपदंश की दूसरी-तीसरी अवस्था में लाभ करती है।

चोपचीनी आज भी एलोपैथिक फार्माकोपिया में वर्णित है।

१७३. प्याज

आयुर्वेदीय पर्याय—दुर्गंध, पलाण्डु **यूनानी**—बसल

अंग्रेजी—Bulb Onion. **लैटिन**—*Alliumn cipa.*

विवरण—इसका क्षुप २-३ फुट ऊँचा होता है जिसमें मोटे, गोलाई लिए हुए और हरे रंग के पत्र आते हैं। पत्र के ऊपरी भाग से हरे रंग का लम्बा डंठल बाहर निकलता है जिसके अग्रभाग में से गुच्छेदार सफेद रंग के फूल आते हैं। इसके बीज तिकोने और काले रंग के होते हैं। इसकी जड़ में गोल कन्द निकलता है। यह सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—कन्द और बीज।

मात्रा—रस १ से ३ तोला, बीज चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—मधुर कटु रस, गुरु-स्निग्ध-तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और मधुर विपाक है। वातशामक है। रोचक, अग्निवर्धक, बलकारक, वृष्य, वर्ण-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करता एवं ओजकारक होता है। यह बुद्धि को बिगाड़ता है। इसके बीज वृष्य होते हैं। दाँतों के कीड़ों को मारता है और प्रमेह का नाश करता है।

आधुनिक मत—इसमें सिलापिक्रिन (Scillapicrine) सिलामेरिन (Scillamarine) और सिलिनाइन(Scillinine) में तीन तत्व कार्य करते हैं।

डा० क्षौरी ने लिखा है कि कम मात्रा में उत्तेजक कफ निकालने वाली और मूत्रकारक होता है। यह हृदय की गति को मन्द करता है। अधिक मात्रा में वामक तथा विरेचक है। अत्यधिक मात्रा में विष जैसा काम करता है। इससे बेचैनी, पेशाब रुकना या पेशाब में खून आना, आँतों में जलन और हृदय-गति बन्द होकर मृत्यु हो जाती है। खाँसी, काली खांसी और पुरानी खाँसी में कफ निकालने को दिया जाता है।

१७४. जंगली प्याज

आयुर्वेदीय पर्याय—वनपलाण्डु **यूनानी**—उन्सुल

अंग्रेजी—Indian!sqiue. **लैटिन**—*Urginea Indiea.*

विवरण—इसका क्षुप भी प्याज के जैसा ही होता है। इसमें पत्ते निकलने से पहले ही फूल निकलते हैं। इसके पत्ते ६ से १८ इंच लम्बे और ½ इंच चौड़े होते हैं। इसमें १ से १½ इंच ऊँचे और कोमल डंठल के अग्र-भाग में सफेद रंग के फूल घंटे की आकृति में लगे रहते हैं। बीजकोष में तीन कोष्ठ होते हैं जिनमें से प्रत्येक ५-१० काले चपटे बीजों से भरा रहता है। यह समुद्र के किनारे रेतीली भूमि में और हिमालय की निचली शुष्क पहाड़ियों में, शिमला, सहारनपुर, पंजाब, बंगाल और सीमाप्रान्त में होता है। कन्द छोटे नींबू या बेर जैसी होती है।

प्रयोज्य अंग—कन्द **मात्रा**—३ से ५ माशा

गुण-कर्म—यह प्याज की अपेक्षा अधिक तीव्रकर्म करती है। इसलिए साधारण खाने के काम में नहीं आती। यह उन सब रोगों को नष्ट करती है जिनकोप्याज मिटाती है। विशेषकर यह मूत्रविकारों और कफज विकारों में लाभ करती है। खाँसी में इसका प्रयोग होता है और यह उदरकृमि को मार डालती है। इसको पीलिया में भी देते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसमें एक निष्क्रिय ग्लुकोसाइड 'सिल्लिनिन' पाया जाता है। दो सत्व होते हैं। सिल्लीपिक्रिन और सिल्लीटॉक्सिन। आधुनिक, वैज्ञानिक इसका शर्बत बनाकर तथा टिंचर बनाकर प्रयोग करते हैं।

१७५. मूसली सफेद

आयुर्वेदीय नाम—तालमूली **यूनानी**—शकाकुलेहिन्दी
लैटिन—*Aspragus Adscendens.*

विवरण—यह एक कंटकित क्षुप होता है जिसका तना लम्बा, ऊँचा, मोटा, गोल और चिकना होता है। शाखाएँ पोली और ऊपर को चढ़ने वाली होती हैं। पत्तियों के आकार की शाखाएँ ६ से २० तक एक साथ गुच्छे में होती हैं जो $\frac{1}{2}$ से २ इंच लम्बे होती हैं। इसकी जड़ में सफेद रंग का लम्बे, गोल कन्दों का गुच्छा निकलता है जो सफेद मूसली कहलाता है। यह हिमालय, पञ्जाब, गुजरात, बम्बई, मध्यभारत में पैदा होता है।

दूसरी तरह की मूसली काले रंग की होती है। उसके अन्दर खाकी रंग निकलता है। यह पौधा Amaryllidaceae Family का होता है जिसे Latin में Curculigo Orchioides कहते हैं।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—५ से ७ माशा

गुण-कर्म—यह काम शक्ति को बढ़ाता और वीर्य को बढ़ाता और गाढ़ा करता है। इसका चूर्ण कर बराबर की खांड़ मिलाकर पुरुषतत्वशक्ति की कमी और वीर्यस्राव में प्रयोग कराते हैं। इसको माजून बनाकर भी प्रयोग करते हैं।

आयुर्वेदिक ग्रन्थ—भावप्रकाश में इस विषय में बहुत कम वर्णन किया है। वहाँ लिखा है कि मूसली मधुर, वृष्य, उष्णवीर्य, वृहंण, गुरू, तिक्त, रसायन है। यह वातनाशक एवं अर्शनाशक है।

आधुनिक मत—इसमें रेसिन, टेनिन, स्टार्च और राख में Oxalate of calcium होता है।

डा० क्षीरी ने लिखा है कि यह तिक्त, सुगन्धित, बलदायक व चिकनी होती है। यह साधारण कमजोरी, मूत्र सम्बन्धी रोग और नपुंसकता आदि में लाभ करती है। सांस, बवासीर, मूत्र कष्ट से आना, दस्त, अधिक मासिक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्राव और सुजाक में लाभ करता है। आम तौर पर इसे पुरुषत्व शक्ति बढ़ाने वाली औषधियों में मिलाते हैं।

१७६. लहसुन

आयुर्वेदीय नाम- रसोनलशुन, उग्रगन्ध, महौषध, यवनेष्ठ **यूनानी** – सीर
अंग्रेजी—Garlic. **लैटिन**—*Allium Sativum.*

विवरण—इसका क्षुप १-२ फुट ऊँचा होता है जिसका काण्ड कोमल और आवरण एवं कोष्ठ युक्त होता है। इसके पत्ते चपटे, पतले और लम्बे होते हैं। इसके बीचोबीच एक डंठल निकलता है जिसके ऊपरी हिस्से पर गुच्छेदार सफेद फूल लगते हैं। इसका कन्द श्वेत एवं रक्ताभ होता है जिसमें यवाकृति ५ से १२ तक टुकड़े रहते हैं। यह सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—कन्द **मात्रा**—२ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेद के ग्रंथों में रसोन का वर्णन बहुत विस्तार से किया है। यहाँ तक कि काश्यप संहिता में तो 'लशुन कल्प' नामक एक पूरा अध्याय ही दिया हुआ है।

लहसुन में ५ रस होते हैं—अम्ल रस नहीं होता। भावप्रकाश ने लिखा है कि जड़ में कटु रस, पत्तों में तिक्त रस, नाल में कषाय रस, नाल के अगले भाग में लवण रस और बीज में मधुर रस होता है। इसमें स्निग्ध, तीक्ष्ण, पिच्छिल, गुरु और सर पांच गुण होते हैं। उष्णवीर्य और कटु विपाक है। वातकफशामक व रक्तपित्तवर्धक है। नाड़ी उत्तेजक, बुद्धिवर्धक एवं दृष्टिशक्ति वर्धक है। दीपन, पाचन, अनुलोमन, शूलप्रशमन, कृमिनाशक व यकृदुत्तेजक है। हृदय को उत्तेजना देना एवं शोथ का नाश करता है। यह कफनिःसारक व कास, श्वास, स्वरभेद एवं यक्ष्माकीट नाशक है। मूत्रजनन, शुक्रजनन व आर्तवजनन है। कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न एवं रसायन हैं। यह भग्नसन्धानकारक है। इसका लेप, सूजन को दर्द, को व विष को नष्ट करता है।

भावप्रकाश में रसोन सेवनकरते समय मद्य,मांस तथा अम्ल का सेवन हितकारक बताया है और व्यायाम, आतप, क्रोध, अतिजलपान. दूध व गुण का प्रयोग अहितकारक कहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—लहसुन से एक उड़नशील तैल पातन (डिस्टिलेशन) द्वारा प्राप्त होता है जिसमें 'एलाइल' और 'प्रोपाइल' नामक गन्धक के तत्व होते हैं। यह आमाशय के रस को बढ़ाकर पाचन में सहायता करता और उदराध्मान को मिटाता है। फुफ्फुसों में जमे कफ को निकालता है। मासिक स्राव ठीक करता है। यह बलकारक, वायुशामक, मूत्र तथा स्वेद ज्यादा लाता है।

बेहोश बालक के नाक पर इसकी पोटली रखते हैं। उदरकृमि मारता और शोथ को मिटाता है। विषैले जन्तुओं के द्वारा काटे गए स्थान पर इसका लेप करते हैं। दाद पर लहसुन को रगड़ते हैं। इसे तैल में पकाकर उस तैल की बूंद कान के दर्द में डालते हैं।

१७७. शकाकुल

Trachydium Lehmani.

विवरण—शकाकुल एक वनस्पति की जड़ होती है जो कि छोटी गाजर के बराबर, सफेद और पीताभ होती है। यह लेसदार होती है और मधुर होती है। भारत में विदेशों से आती है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—३ से ५ माशा

गुण-कर्म—यह शरीर को बल देती और वृहंण करती है। कामशक्ति को बढ़ाती है। इसके प्रयोग से वीर्य बलवान और अविक्र बनता है। स्त्री का दूध बढ़ाती है। इसका चूर्ण, माजून या मुर्बा, नपुंसकता और वीर्य स्राव में दिया जाता है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में इसका वर्णन नहीं मिलता है।

१७८. सतावर

आयुर्वेदीय नाम—शतावरी, बहुसुता, भीरू, शतपदी शतवीर्या **यूनानी**—गुर्जदस्ती

अंग्रेजी—Wild Asparagus **लैटिन**—*Aspragus Racemosus*

विवरण—इसकी कांटे वाली आरोहणी लता होती है। इसकी शाखाएँ तिकोनी, चिकनी और रेखान्वित होती हैं। पत्ते छोटे, सोये के पत्तों जैसे होते हैं। इसमें $\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ इंच लम्बे और टेढे कांटे होते हैं। इसकी बारीक शाखाएँ २ से ६ एक साथ गुच्छों में लगे होते हैं। छोटे, सफेद गुलाबी रंग के सुगन्धित फूल आते हैं, जिस में मटर के आकार के फल होते हैं। फल में १ या २ बीज होते हैं। इसकी जड़ में मोटा, लम्बा गोल, दोनों किनारों पर नुकीला सफेद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रंग का गुच्छा निकलता है। सतावर सारे भारत में, विशेष कर उत्तर भारत में पाई जाती है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—चूर्ण ३ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—मधुर तिक्त रस, गुरु स्निग्ध गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक है। वात पित्त शामक, अग्नि वर्धक है। गुल्म ग्रहणी, अर्श का नाश करती और हृदय को बल देती है। शोथ नाशक, मूत्रल, बल्य, वृष्य, स्तन्यजनन रसायन और नेत्रों के लिए हितकारक है।

डा० आर एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह वातवाहिनियों को शक्ति देती, बल बढ़ाती और दूध बढ़ाती है। यह पित्त के विकार, आमवात, अग्निमन्दता और अतिसार में दी जाती है। वीर्य की क्षीणता और फुफ्फसों के विकारों में लाभ करती है।

१७९. सुरञ्जान

अंग्रेजी—Colchicum **लैटिन**—*Colchicum Luteum*

विवरण—यह एक बनस्पति का कन्द है जो सिंघाडे के जैसा होता है। यूनानी हकीम दो तरह का बताते हैं। एक मीठा और दूसरा कड़वा। मीठा सुरञ्जन एक पीताभ आवरण से ढका रहता है जिस को हटाने से सफेद रंग की गिरी निकलती है। कडुआ रक्ताभ होता है। कडुआ पंजाब, काशमीर और अफगानिस्तान में और मीठा ईरान में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—१ से ३ माशा

गुण कर्म—मीठा सुरञ्जान प्रायः खाने के काम में लिया जाता है। यह शरीर के कफ को दस्तों के द्वारा निकाल देता है। सुद्दे निकालता है। जोड़ों, सन्धि शोथ व दर्द को मिटाता है। पुरुषत्व शक्ति बढ़ाता है। शरीर के दोषों को बाहर निकाल देता है।

कडुआ सुरञ्जान खाने के काम में नहीं लिया जाता। इसे लेप के तौर पर सूजन और दर्द मिटाने में प्रयोग करते हैं।

आधुनिक मत—कडुए सुरञ्जान में Colchicine नाम का एक क्षार तत्व प्रचुर मात्रा में होता है। मीठे में भी एक क्षार तत्व होता है। B. P. का Colchicum सुरञ्जान ही है। आयुर्वेद के प्राचीन साहित्य में इसका कहीं वर्णन उपलब्ध नहीं होता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

LINACEAE FAMILy अतस्यादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: क्षुप

पत्र —एकाकी (Simple) छोटे, अखण्ड, एकान्तर (Alternate)

पुष्प —नियताकार, शाखाग्रोद्भूत (Apical), पुष्प-बाह्य कोश (Calyx) के दल-५, पुष्पाभ्यन्तर कोश-(Corolla) के दल-५, गर्भाशय-(Ovary) ३-५, कोष्ठ युक्त, प्रत्येक कोश में बीज १-२, पराग-वाहिनियाँ Style) ३ से ५

फल —विदारी (Dehiscent)

१८०. अलसी

आयुर्वेदीय नाम—अतसी, नील पुष्पी, पार्वती, उमा **यूनानी**—कत्तान

अंग्रेजी—Linseed **लैटिन**—*Linum Usitatissimum*

विवरण—इसका क्षुप २ से ४ फुट ऊंचा होता है। पत्र लम्बे और नुकीले होते हैं। फूल नीले रंग के छोटे होते हैं। इसमें गोल घुंडीदार फल आते हैं। इसके वीज चपटे होते हैं। यह रंग भेद से चार प्रकार की होती है सफेद, पीली, लाल और काली। इसकी उत्पत्ति मिश्र, रूस, ब्रिटेन, हालेण्ड में होती है। भारत में बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश में होती है।

प्रयोज्य अंग—फूल, बीज और वीजों से निकाला गया तैल

मात्रा—चूर्ण ३ से ६ माशा, तैल $\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर, तिक्त रस, गुरु, स्निग्ध, पिच्छिल गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह वातशामक तथा कफपित्त वर्धक है। इसका तैल संग्राहक, त्वचा के दोषों का नाश करने वाला, मलकारक और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातनाशक होता है। तैल का प्रयोग पीने में, वस्ति में, अभ्यंग, नस्य और कर्ण पूण में दिया जाता है।

आधुनिक मत—बीजों में ३७ से ४४% तक तैल होता है। प्रोटीन, राल, मोम और चीनी होती है। इसमें ३ से ५% क्षार होते हैं जिनमें पोटाशियम, कैलशियम और मैगनीशियम सलफेट और क्लोराइड़ होते हैं।

कर्नल चोपरा ने लिखा है कि अलसी की पुल्टिस नासूर, फोड़े, सूजन में फायदा करती है। अलसी की चाय पेशाब की बीमारियों में काम आती है।

अलसी के तैल में बराबर का चूने का पानी मिलाने से एक मिश्रण तैयार होता है। जिसे 'Carron' कहते हैं, यह आग से जले हुए स्थान पर लगाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

LYTHERACEAE FAMILy मद्‌यन्त्यादि वर्ग

पत्र —अभिमुख (Opposite)

पुष्प —पुष्पबाह्य कोश और पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ३-६

फल – विदारी (Dehiscent)

१८१. धाय

आयुर्वेदीय नाम—धातकी, धातुपुष्पी, वह्नि ज्वाला

अंग्रेजी—Downy grislea **लैटिन**—*Wood fordia fruticosa*

विवरण—यह एक क्षुप जाति की वनस्पति है जिसके क्षुप १० फुट तक भीं ऊंचे चले जाते हैं और उनमें अनेक शाखाएं होती हैं। इसमें अनार के जैसे पत्र लगते हैं। पत्र वृन्त रहित होते हैं। पत्तों का ऊपरी स्तर चिकना और निचला स्तर रोमश होता है। पुष्पदण्ड पत्तों के नीचे से निकलते हैं और प्रत्येक पुष्पदण्ड में ५-१५ तक पुष्प होते हैं जिनका रंग लाल होता है यह फूल जाड़ों में खिलते हैं इसमें धूसर वर्ण के चिकने बीज होते हैं।

धातकी भारत के पार्वत्य प्रदेशों में उत्पन्न होती है

प्रयोज्य अंग—पुष्प **मात्रा**—चूर्ण १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—कषाय कटु रस, लघुरूक्ष गुण, शीत वीर्य एवं कटु विपाक होता है। यह कफ पित्तशामक है।

तृष्णा, अतिसार, रक्तविकार, विष, कृमि और विसर्प नाशक है। चरक के दशेमानी में तथा सुश्रुत के गणों में धातकी पुष्प का वर्णन आया है। वहाँ इसे ग्रहणी एवं अतिसार के रोगों में प्रयोग करने के लिए ही कहा गया है।

आधुनिक मत—इसके फलों में २०% टैनिन होती है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि धाय के फूल उत्तेजक एवं संयोजक होते हैं। मधु के साथ देने से प्रवाहिका में लाभ करते हैं। यह रक्तस्राव को रोकते हैं। रक्तप्रदर एवं श्वेतप्रदर में लाभ करते हैं।

धातकी पुष्प चूर्ण क्षतों पर लगाया जाता है, घाव को शीघ्र भरते और वहाँ पूय पड़ने से बचाव करते हैं। इनका लेप दाह प्रशामक होता है। इसके फूलों को पीस कर अलसी के तैल में मिलाकर जले हुए स्थानों पर लगाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

M

MELIACEAE FAMILy **निम्बादि वर्ग**

स्वरूप –प्राय: वृक्ष

पत्र –एकान्तर, संयुक्त, उपपत्ररहित, पत्रधारा प्राय: दन्तुर

पुष्प –पुष्पबाह्य कोष और पुष्पाभ्यन्तर कोष के दल ३-६, पुकेंशर–८-१०, गर्भाशय–उर्ध्वस्थ

फल –प्राय: मांसल, १-५ कोष्ठ युक्त

बीज – बड़े

१८२. नीम

आयुर्वेदीय नाम – निम्ब, तिक्तक, पारिभद्र, **यूनानी** – आजाद दरख्तेहिन्दी
अंग्रेजी – Margosa tree **लैटिन** – *Melia Azadirachta*

विवरण – नीम का वृक्ष २०-३० फुट ऊंचा होता है और इसका तना सीधा होता है जिसमें चारों तरफ शाखाएँ निकली रहती हैं। इसकी छाल काली, मोटी और खुरदरी होती है। इसका पत्ता ८-१० इंच लम्बा होता है जिसमें ६ से १४ जोड़ी पत्तियाँ लगी रहती है। एक पत्ती १ से ३ इंच लम्बी और उससे आधी चौड़ी होती है। बसन्त में छोटे सफेद रंग के और सुगंधित फूल आते है। गर्मियों में फल लगते हैं जो पकने पर पीले रंग के हो जाते हैं। यह खिरनी के समान होते हैं। साधारण भाषा में इसे 'निम्बोली' कहते हैं। नीम सारे भारत में होता है।

प्रयोज्य अंग – फूल, पत्र, छाल और बीज।

मात्रा – ६ माशे से १ तोला तक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत — नीम शीतल, हल्का, ग्राही, पाक में चरपरा हृदय को अप्रिय और अग्नि, वात, परिश्रम, तृष्णा, ज्वर, अरूचि, कृमि, व्रण, पित्त, कफ, वमन, कुष्ठ, हृल्लास और प्रमेह को नष्ट करता है। नीम के पत्र नेत्रों को हितकारी वात कारक, पाक म चरपरे, सब प्रकार की अरूचि, कुष्ठ, कृमि, पित्त तथा विष नाशक है। नीम के फल कड़वे, पाक में चरपरे, मलभेदक, स्निग्ध, हलके गरम, और कुष्ठ, गुल्म, बवासीर कृमि तथा प्रमेह को नष्ट करने वाले हैं। इसके तैल का नस्य सिर के बाल गिरना और गंज रोग में लाभ करता है।

आधुनिक मत — इसके बीज में एक राल युक्त तेल होता है जिसे 'नीम का तेल' कहते हैं। इसकी छाल में 'Margosine' और टैनिन होता है। इसकी छाल और पत्र बलकारक, ज्वरनाशक होते हैं। इसके पत्रों का लेप फोड़े और सूजन को मिटाता है। नीम का मद कृमिनाशक, पाण्डु रोग नाशक और और पीलिया नाशक होता है। इसका तेल कुष्ठ, कृमिरोग और प्रमेह में प्रयोग किया जाता है। चर्म रोग, यकृत रोग, कुष्ठ में प्रयोग होता है।

१८३. बकायन

आयुर्वेदीय नाम — महानिम्ब, रम्यक, विषमुष्टिका, निम्बक **यूनानी** — वान
अंग्रेजी — Bead Tree. **लैटिन** — *Meliazedarach*

विवरण — नीम के वृक्ष जैसा इसका वृक्ष ४० से ५० फुट ऊंचा होता है। इसकी टहनियों में पत्र झुंड़ रूप में लगे रहते हैं। इसके पत्र का डण्ठल १ से २ फुट लम्बा होता है जिसमें अलग - पत्तियाँ होती हैं। पत्तियों के किनारे आरे की तरह कटे हुए होते हैं। बसन्त में सफेद रंग के सुगन्धित फूल लगते हैं। इसमें एक इंच से कम लम्बे फल सर्दियों में आते हैं जो कच्चे हरे और पकने पर पीले होते हैं। प्रत्येक फल में एक बीज निकलता है। यह उत्तर भारत में पाया जाता है। विलोचिस्तान, चीन, फारस में भी होता है।

प्रयोज्य अंग — पत्र, छाल और फल।

मात्रा — पत्र का रस १ से २ तोला और बीज का चूर्ण $\frac{1}{2}$ से १ माशा।

आयुर्वेदिक मत — कटु-तिक्त-कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, अनुष्णवीर्य, कटु विपाक है। इसका प्रभाव अर्शरोग नाशक है। यह त्रिदोश नाशक है। वात

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विकारों में लाभ करता है। बवासीर, कृमि रोग एवं रक्त विकारों का दूर करता है। कास, श्वास, प्रमेह, कुष्ठ एवम् ज्वर नाशक है। कष्टर्तिव में प्रयोग किया जाता है। इसका लेप कुष्ठ, व्रण और गंडमाला में लाभ करता है।

आधुनिक मत — इसके अन्दर राल जैसा पदार्थ, चीनी और टैनिन होती है। डा० क्षौरी ने लिखा है कि बकायन की छाल कम मात्रा में बलकारक, संकोचक, ज्वर निवारक और कृमि नाशक है। इसके पत्र और फूल रसायन और मूत्रल होते हैं।

१८४. रोहनी

आयुर्वेदीय पर्याय—मांसरोहिणी, रोहिणी, प्रहारवल्ली, चर्मकषा

अंग्रेजी—Indian red wood. **लैटिन**—*Soymida Febrifuga.*

विवरण — इसके वृक्ष नीम के जैसे होते हैं। पत्र खिरनी के समान एक डण्ठल में आमने-सामने कई लगे रहते हैं। पत्र पक्षाकार होते हैं। फूल छोटे, हरे सफेद रंग के होते हैं जिनके भीतर अनेक सपक्ष बीज होते हैं। यह वनों एवं पर्वतों में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—छाल। **मात्रा**—चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कषाय कटु रस, लघु रूक्ष गुण, शीतवीर्य एवं कटु विपाक होती है। यह त्रिदोषनाशक, वृष्य एवं सारक होती है। यह ज्वर नाशक, कृमिनाशक एवं कामोद्दीपक है।

आधुनिक मत—इसकी छाल में एक तिक्त पदार्थ, राल, स्टार्च, टैनिन और गैलिक एसिड होते हैं। मलेरिया एवं अन्य पार्यायिक ज्वरों में इसका चूर्ण लाभ करता है। यह एक उत्तम संकोचक द्रव्य है। पुराने अतिसार एवं संग्रहणी में लाभ होता है। अधिक मात्रा में प्रयोग करने से चक्कर, बेहोशी आदि उपद्रव हो जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

MENISPERMACEAE FAMILY गुडूच्यादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः लता जाति

पत्र —एकान्तर, साधारण, अखण्ड, लम्बे, सवृन्त

पुष्प —छोटे, हरे व पीले

नियमित और पत्रकोणोद्भत, पुष्पबाह्यकोश और पुष्पाभ्यन्तरकोश के दल ६-६

पुंकेशर–नियत और अनेक, दोनों कोशों के दल और पुंकेशर दो चक्रों में, बीजकोश–अधःस्थ

बीज –मांसल

१८५. कलम्बा

अंग्रेजी—Calamba Root. **लैटिन**—*Jateorhisa Palmata*

विवरण—यह एक लता जाति की वनस्पति है। इसकी लता गिलोय के समान होती है। इसके मूल गोल टुकड़ों में कटे हुए शुष्क अवस्था में बाजार में बिकते हैं। यह बाहर से पीले रंग और अन्दर से भूरे रंग के होते हैं। यह वनस्पति अफ्रीका के प्रदेशों में उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग—मूल **मात्रा**—$\frac{1}{2}$ से २ माशा

गुण-कर्म—इस द्रव्य का आयुर्वेद के प्राचीन शास्त्रों में कहीं वर्णन उपलब्ध नहीं होता, यूनानी हकीम इसे प्रयोग करते हैं। यह कफ और पित्त के विकारों में लाभ करता है। दीपन, पाचन, अनुलोमन, कृमिघ्न कर्म करता है। यह रक्त-शोधक, रक्त वर्धक, बलकारक एवं ज्वर नाशक है।

आधुनिक मत—रासायनिक विश्लेषण करने से इसमें पाँच तत्व प्राप्त हुए हैं:—

(१) कोलम्बेमिन (Columbamine)
(२) पामेटिन (Palmatine)
(३) जैटिओराइजिन (Jateorhizine)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(४) कोलम्बिन (Columbine)
(५) कोलम्बिक एसिड (Coulmbic Acid)

१८६. गिलोय

आयुर्वेदीय पर्याय—गुडूची, अमृता, जीवन्ती, रसायनी, **यूनानी**—गुलञ्च
लैटिन—*Tinospoacordifolia.*

विवरण—यह बहुवर्षायु लता है। नीम आदि पेड़ों का सहारा लेकर चढ़ती है। इससे बहुत से धागे जैसे सूत्र निकलकर नीचे को झूलते रहते हैं। इसकी छाल बहुत पतली होती है जिसे हटाने पर हरा गूदा निकलता है। इसके पत्र चिकने, अगले हिस्से में नोकीले और हृदयाकृति होते हैं। फूल छोटे, पीले रंग के और गुच्छों में होते हैं। सर्दियों में फल लगते हैं जो पकाने पर लाल रंग के हो जाते हैं। यह सारे भारत में पाई जाती है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग **मात्रा**—चूर्ण १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—तिक्त-कषाय-रस, गुरू स्निग्ध गुण, उष्णवीर्य और मधुर विपाक है। त्रिदोषनाशक है। यह प्यास एवं वमन को मिटाती है। दीपन, पाचन, अनुलोमन एवं कृमिघ्न है। आमाशयगत अम्लता इससे कम होती है। कुष्ठ-ज्वर, दाह, रक्तरोग नाशक है। वृष्य एवं मूत्रजनन है। पाण्डु, प्रमेह और कास में लाभ करती है।

आधुनिक मत—इसमें स्टार्च, बर्बेरिन और एक तिक्त सत्व होता है। डिमक ने लिखा है कि यह पाचक, बलकारक, वृष्य, रसायन ज्वरनाशक और स्निग्ध है। उपदंश, कुष्ठ, चर्मरोग, कामला में लाभ करती एवं मूत्र की मात्रा बढ़ाती है।

१८७. पाढ़

आयुर्वेदीय पर्याय—पाठा, अम्बष्ठा, वरातिक्तिका
अंग्रेजी—Velvet Leaf. **लैटिन**—*Cissampelos Pareira.*

विवरण—यह एक लता जाति की वनस्पति है। यह सूत्रवत पतली और अधिक से अधिक मोटी होने पर भी कनिष्ठा अँगुली से अधिक मोटी हींन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होती। पृष्ठ भाग पर से पत्रवृन्त निकलता है जो २-४ इंच लम्बा होता है। इसमें हृदयाकृति पत्र लगते हैं। पत्र में ७-११ तक सिराएँ होती हैं। जो पत्र श्वेत रोमान्वित होते हैं। फूल वर्षाऋतु में लगते हैं जो पीताभ-श्वेत होते हैं। इसमें फल मकोय के समान रक्तवर्ण के होते हैं। शीतकाल में फल लगते हैं। इसके बीज वक्राकृति होते हैं। पंजाब, सिन्ध, दक्षिण भारत, लंका में होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल मात्रा--चूर्ण १-३ माशा

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य एवं कटु विपाक होता है। यह त्रिदोषनाक विशेषकर वातकफ नाशक होता है। यह बल्य एवं विषघ्न है। यह शूल, ज्वर, छर्दि, कुष्ठ, कण्डू, अतिसार हृदयरोग, दाह, श्वास, कृमि, गुल्म और विषैले व्रणों में लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसके मूल में सिसेम्पेलिन (Sissampeline) नामक तत्व होता है। यह शीत ज्वर, ज्वरातिसार, मूत्रकृच्छ, बस्तिशोथ में प्रयोग किया जाता है। इसका बाह्य प्रयोग व्रणरोपक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

MALVACEAE FAMILY कर्पासादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: क्षुप, मजबूत, रेसेदार

पत्र —प्राय: रोमश, एकान्तर

पुष्प —सुन्दर, नियमित और शाखाग्रोद्भूत
पुष्पबाह्यकोश के दल ५, अधोभाग में संयुक्त, पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ५, पुंकेशर—अनेक अधोभाग में मिलकर नलिकाकार, बीजकोश—१ कोषी

१८८. कंघी

आयुर्वेदीय नाम—प्रतिबला, कंकातिका, ऋष्यप्रोक्ता **यूनानी**—दरख्तशान
लैटिन—*Abutilon Indicum.*

विवरण—इसका क्षुप ४-५ फुट ऊँचा होता है जिसके पत्र रोमश एवं दन्तुरधार वाले होते हैं। फल गोल होता है किन्तु ऊपर कंघी की तरह दाँत होते हैं। बीज १५-२० की संख्या में काले या भूरे होते हैं, इन्हें 'बीज बन्द' कहा जाता है। यह समस्त भारत और लंका में उत्पन्न होते हैं।

प्रयोज्य अंग—मूल, बीज, पत्र **मात्रा**—१-३ माशा, स्वरस १-२ तोला

आयुर्वेदिक मत—भावप्रकाश निघंटु में बलाचतुष्ट्य के गुण एक साथ बताए गए हैं। वहाँ लिखा हैं कि चारों प्रकार की बला (कंघी, खरेंटी, गंगेरन, सहदेई) शीतल, मधुर, बलकारक, कान्तिवर्धक, स्निग्ध, ग्राही होती हैं। वातपित्त, रक्तपित्त, रुधिर विकार और क्षयनाशक हैं।

आधुनिक मत—डा० आर० एन० क्षौरी ने कंघी के पत्तों में पिच्छिल द्रव्य, टैनिन, सेन्द्रिय अम्ल, कुछ ऐस्पैरेगिन बताया है। इसकी जड़ में भी ऐस्पैरेगिन होता है। उन्होंने लिखा है कि इसके बीज स्निग्धता करने वाले हैं। इसकी छाल मूत्रल और शीतल है और सुजाक तथा तत् जन्य अन्य अवस्थाओं में लाभ करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१८९. कपास

आयुर्वेदीय नाम—कार्पासी, तुण्डकेरी, समुद्रान्ता यूनानी—कुतून
अंग्रेजी – Cotton Plant. **लैटिन** – *Gossy pium Herbaceum.*

विवरण—इसका क्षुप १० से १२ फुट ऊँचा होता है जिसमें अरण्ड के जैसे पत्र लगते हैं। ये आगे की तरफ तीन से पाँच भागों में विभक्त होते हैं। पीले रंग के फूल आते हैं और फल के अन्दर रुई तथा कई बीज निकलते हैं। ये बीज गर्मियों में फल के पक कर फट जाने पर बाहर आते हैं। बीजों को देशी भाषा में 'बिनौले' कहा जाता है जिसे यूनानी में 'पम्बादाना' कहते हैं। इनसे तेल निकाला जाता है। इसकी जड़ बाहर से पीली और अन्दर से सफेद होती है। कपास सारे भारत में, विशेष कर बंगाल, गुजरात, बम्बई और मद्रास में होती है।

प्रयोज्य अंग – जड़, छाल, फूल और बीज

मात्रा – बीज का चूर्ण ३-६ माशे. क्वाथ ५-१० तोला

आयुर्वेदिक मत – कपास मधुर कषाय रस, लघु स्निग्ध गुण, ईशत् उष्ण वीर्य और मधुर विपाक है। यह वात नाशक होता है। इसके पत्र वातनाशक, रक्त विकार करने वाले, मूत्र वर्धक होते हैं। कान का दर्द. बहरापन और कान के अन्दर आवाजें आना और कान के बहने में लाभ करता है। इसका फल दुग्ध-वर्धक, वीर्यवर्धक, कफ कारक चिकना और भारी होता है।

आधुनिक मत – इसकी छाल में स्टार्च, Chromogine, राल, स्थिर तेल और टैनिन होती है। इसकी जड़ की छाल में Di-hydroxy Benzoic acid और Phenol होता है। फूलों में रंजक द्रव्य औरGossypetin होता है। बीजों के तेल में Gossypol निकलता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि कपास के फूल का शर्बत मस्तिष्क विकारों में लाभ करता है। इसके फूलों का लेप जले हुए पर लगाया जाता है। कपास के कच्चे फल में अफीम और जायफल भरकर पुटपाक की विधि से उसके चूर्ण कर खूनी दस्तों में दिया जाता है। इसकी जड़ का क्वाथ कपास के बीज अतिसार, रक्तातिसार में दिए जाते हैं। ये वृष्य, कफनि:सारक और दूध बढ़ाने वाले होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१९०. खतमी

Althoca-officinalis.

विवरण—खतमी का क्षुप ४से६ फुट ऊँचा होता है। इसक पत्र गोल,खुरदरे और फीके हरे रंग के होते हैं। इसके फूल गोल और बड़े होते हैं जिसमें गन्ध नहीं आती। अलग २ जातियों में फूल के रंग अलग-अलग होते हैं। किसी में सफेद, किसी में लाल और किसी में पीले और गुलाबी फूल लगते हैं। सफेद रंग के फूलों वाली खतमी सबसे अधिक लाभ करती है। जामुनी रंग के फूल वाली खतमी को 'गुलेरवेरू' कहते हैं। खतमी के बीज काले रंग के और चपटे होते हैं। इसकी जड़ बहुत चिकनी और लुआबदार होती है।

प्रयोज्य अंग—पत्र, फूल और जड़ **मात्रा**—५ माशे से ७ माशे तक

गुण-कर्म—इसके पत्र गर्मी की सूजन, कंठमाला, आमवात और गृध्रसी (Sciatica) जोड़ों के दर्द में लाभ करते हैं। इसके पत्तों को सिरके में पीसकर त्वचा के सफेद दागों पर लगाकर धूप में बैठने से लाभ होता है। दूसरी दवाओं के साथ निमोनिया में खिलाया जाता है। पेट का दर्द, पेचिश और पेशाब की जलन को मिटाता है। खतमी के फल मुंजिशों में डालते हैं। इसका क्वाथ मूत्राशय की अश्मरी को निकालता है। अर्दित, अपस्मार में लाभ करता है और औरतों को मासिक स्राव साफ लाता है। यह सूजन व दर्द को मिटाता है।

खतमी बीज शरीर में एकत्रित हुए दोषों को स्निग्ध करके विरेचन के द्वारा निकाल देते हैं। वृक्क की अश्मरी, आमवात और निमोनिया में अच्छा लाभ होता है। खांसी में कफ और खून जाए तो यह लाभ करते हैं। खतमी की जड़ विबन्ध को मिटाने वाली और पेचिश को दूर करने वाली होती है। पित्त के दस्त और पेशाब की जलन, आँतों की जलन और खुश्की को मिटाती है। मूत्राशय की विकृति और वृक्क की अश्मरी में लाभ करती है। इसको पीसकर सूअर या बकरी की चर्बी और रोगन सोसन और बाकले के आटे में मिलाकर पकाकर जोड़ों की सूजन और जोड़ों के दर्द पर बाँधने से सख्त से सख्त दर्द और सूजन दूर हो जाते है।

१९१. खरैंटी

आयुर्वेदीय पर्याय—बला, खरयष्टिका, वाटयालिका

अंग्रेजी—Country Mallow. **लैटिन**—*Sida cordifolia.*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका पौधा २ से ४ फुट ऊँचा होता है जिसके पत्र १-२ इंच लम्बे १ इंच चौड़े रोमश होते हैं। इनमें ७-६ सिराएँ होती हैं और गोलदन्तुर होते हैं। फूल पीले रंग के होत हैं और फल मूंग के समान पंचकोष्ठी होता है। इसके बीज भी भूरे या काले रंग के छोटे-छोटे होते हैं। यह समस्त भारत व लंका में उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग—पत्र, मूल, बीज

मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा, स्वरस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—कघी के समान।

आधुनिक मत—रासायनिक विश्लेषण से इसके बीजों में ०·३२% क्षार-तत्व पाए गए हैं जिनमें मुख्य भाग 'इफेड्रीन' (Ephedrine) होता है। इसकी जड़ में ऐस्पैरेगिन और गिलेरिन होते हैं।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि इसकी जड़ शीतल, कषैली, तिक्त, बल्य, ज्वरघ्न, स्निग्ध एवं मूत्रल होती है।

१६२. गंगेरन

आयुर्वेदीय पर्याय—गांगेरूक, नागबला, झषा, हृस्वा, गवेधुका।

लैटिन—*Sida Humilis.*

विवरण—यह रोमयुक्त वनस्पति है जो भूमि पर अथवा झाड़ों पर फैलने वाली होती है। २ से ३ फुट तक यह सर्पवत टेढ़ी चलती हैं। तने की प्रत्येक गाँठ से मूल निकलता है। पत्र १।२ से १ इंच लम्बे लट्वाकार या हृदयाकार होते हैं। यह कंगूरेदार होते हैं। पीले रंग के फूल लगते हैं। फल पकने पर नारंगी के रंग के हो जाते हैं। यह समस्त भारत के उष्ण प्रदेशों में उत्पन्न होती हैं।

प्रयोज्य अंग—मूल

मात्रा—मूल क्वाथ ५ से १० तोला, मूलत्वक चूर्ण $१\frac{1}{2}$ माशा से ६ माशा

आयुर्वदिक मत—कंघी के अनुसार।

आधुनिक मत—डा० वामन गणेश देसाई ने इस औषध का लैटिन नाम *Sida Garpinifolia* बताया है। उनका कहना है कि इसकी जड़ का

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चूर्ण अजीर्ण में लाभ करता है। मूल का क्वाथ आमवात की उत्तम औषध है। ज्वर में सोंठ के साथ इसका क्वाथ दिया जाने से मूत्र की मात्रा बढ़ जाती और उष्णता कम होती है। सुजाक में इसकी जड़ का चूर्ण दूध के साथ दिया जाता है। दूध के साथ देने पर कास एवं श्वास में भी लाभ होता है।

१९३. लता कस्तूरी

आयुर्वेदीय पर्याय—लता कस्तूरिका, कटुक।

अंग्रेजी—Musk Mallow. **लैटिन**—*Hibiscus Abelmoschus.*

विवरण—इसका वर्षायु क्षुप ३ से ५ फुट ऊँचा होता है। जिसमें भिन्डा के जैसे पत्र लगते हैं, यह रोमश एवं ३ से ५ भागों में विभक्त होते हैं। शाखाओं के अग्रभाग में पीले रंग के फूल लगते हैं। फल भिन्डी के आकार के होते हैं जिनमें वृक्काकार, चपटे, कृष्ण वर्ण के बीज निकलते हैं। इन बीजों में कस्तूरी के समान गन्ध आती है। इन्हें 'मुश्कदाना' कहा जाता है। यह बंगाल, मद्रास एवं उत्तरी नेपाल में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा**—१ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु गुण, शीत वीर्य एवं मधुर विपाक होते हैं। कफ नाशक, मुख शोधक, रूचि कारक, चक्षुष्य, दीपक होते हैं। यह तृष्णा क्लेद एवं मुख के रोगों को दूर करते हैं मूत्रल होते हैं और दुर्गन्ध नाशक होते हैं।

आधुनिक मत—निर्यास, अलब्युमिन, सुगन्धित तैल, सुगन्ध द्रव्य, राल, ठोस स्फटिकीय द्रव्य होते हैं।

१९४. सहदेई

आयुर्वेदीय नाम—महाबला, पीतपुष्पा, सहदेवा, क्षेत्रबला

लैटिन—*Sida Rhombifolia.*

विवरण—इसका क्षुप ३ से ५ फुट ऊँचा होता है। पत्र एकान्तर, लट्वाकार होते हैं फूल छोटे २ पीले रंग के होते हैं। छोटे २ फल लगते हैं। बीज १ से २ होते हैं।

प्रयोज्य अंग—मूल, पंचांग

मात्रा—क्वाथ ५ से १० तोला, चूर्ण १$\frac{1}{2}$ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—कंघी के अनुसार।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१९५. सेमल

आयुर्वेदीय नाम — शाल्मली, मोचा, पूरणी, रक्त पुष्पा।

अंग्रेजी — Silk Cotton tree. **लैटिन** — *Bombax malabaricum.*

विवरण — सेमल का बड़ा वृक्ष होता है। इसकी एक-एक शाख में पाँच २ पत्र होते हैं जो करतलवत दिखाई देते हैं। इसमें लाल रंग के मोटे दल के फल लगते हैं। इसमें ६ से ७ इंच लम्बा और पाँच कोष्ठ वाला फल लगता है जिसके भीतर रूई निकलती और काले रंग के बीज निकलते हैं। इसकी छाल में कीड़ों के द्वारा एक गोंद तैयार होता है जिसे 'मोचरस' कहते हैं। ये भूरे रंग का और हल्का होता है। सेमल पेड़ के दो साल का होने पर उसकी जड़ निकाल ली जाय तो वह 'सेमल-मुशली' कहलाती है। सेमल सारे भारत में, लंका, बर्मा और सुमात्रा में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग — जड़, फूल, फल और गोंद

मात्रा — जड़ $\frac{1}{2}$ से १ तोला, फल का रस १ से २ तोला, फल या गोंद १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत — मधुर रस, लघु स्निग्ध पिच्छिल गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक है। यह वात पित्तशामक और कफ वर्द्धक है, रसायन है, रक्त-पित्त और रुधिर विकार नाशक है। यह बलकारक एवं शुक्र वर्धक है। इसके फूल का शाक घी और सेंधव नमक से बनाकर प्रयोग किया जाय तो प्रदंर रोग शान्त होता है।

मोचरस कसैला, स्निग्ध, शीतल होता है। यह संग्राहक है। प्रवाहिका, अतिसार, कफ पित्त, रुधिर, रक्त विकार और दाह को नष्ट करता है।

आधुनिक मत — मोचारस में Tannic acid और Galic acid होता है। डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि इसकी जड़ संकोचक, रसायन, चिकनी और धातु वर्धक है। अतिसार और अधिक रजः स्राव में दिया जाता है। इसे क्षय रोग में भी प्रयोग करते हैं। मोचरस भी खून के बन्द करने और धातु बढ़ाने तथा वाजीकरण औषधियों के साथ प्रयोग कराया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

MORINGACEAE FAMILy शोभाञ्जनादि वर्ग

स्वरूप –प्रायः वृक्ष

पत्र –एकान्तर, संयुक्त

पुष्प –पुष्प बाह्यकोश एवं पुष्पाभ्यन्तरकोष के दल—५, पुंकेशर—अनियत स्त्रीकेशर—१

फल –लम्बो सेम, तीन स्थानों पर फटने वाली

बोज –प्रभूत तैल युक्त

१९६. सहंजना

आयुर्वेदोय पर्याय—शोभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्ण गन्धा, मोचक, अक्षीव

अंग्रेजी—Horse Radish tree **लैटिन**—*Moringa Pterygosperma*

विवरण—इसका वृक्ष २० मे २५ फुट ऊंचा होता है जिसकी लकड़ी और छाल मुलायम होती है। एक डन्ठल में जो १ से २ फुट तक लम्बा होता है ६ से ९ जोड़े पत्तियों के लगे होते हैं। पत्तियाँ $\frac{1}{2}$ से $\frac{3}{4}$ इंच लम्बी होती हैं। और इन सबके मिलने से एक पत्र बनता है जो पक्षाकार होता है। नीलापन लिये सफेद रंग के फूल बसन्त ऋतु में गुच्छों में निकलते हैं। इसमें लम्बी २ फलियाँ लगती हैं। जिसमें छः धारियाँ पड़ी रहती हैं और इनका रंग हरा होता है। इसमें मिर्च जैसे सफेद रंग के बीज निकलते हैं। निघण्टुकारों ने दो प्रकार का सहंजना बतलाया है, एक सफेद फूल वाला, दूसरा लाल फूल वाला। सफेद फूल वाला कड़वा होता है और लाल फूल वाला मीठा होता है। लाल फूल क कम मिलता है। यह बगाल, राजपूताना और सिंध में पाया जाता है। इसका लैटिन नाम Moringa Concanensis है। कड़वा सहंजना सारे भारत में मिलता है।

प्रयोज्य अंग—छाल, पत्ते और फली

मात्रा—रस २ से ४ माशा, बीज का चूर्ण १ माशा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, (मधु रस) लघु रूक्ष, तीक्ष्ण और सर गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक है। अग्नि दीपन करने वाला, रूचिवर्द्धक, दाह कारक, संग्रहाक, वीर्य वर्द्धक, हृदय को हितकारी होता है. कफवात नाशक है। विद्रधि, ..तन, कृमि, मेद रोग, अपची, विष, प्लीहारोग, गुल्म गडमाला तथा व्रणों को नष्ट करने वाला है। सहंजना की छाल और पत्रों का रस हर प्रकार की वेदना को नष्ट करता है। इसके बीज नेत्रों को हितकारक, कफवातनाशक और विषनाशक होते हैं। इसके बीजों का नस्य लेने से सिर दर्द दूर होता है। इसका तेल सारक, वातकफशाामक, कृमि नाशक, कृमि,कुष्ठ,प्रमेह और सिर के रोग दूर करता है।

आधुनिक मत – कर्नल चोपड़ा और डे ने सन् १९३० में इस की जड़ की छाल में Moringinine औरMoringine नामक दो उपक्षार पता लगाये। इनमें दूसरा अधिक क्रिया करने वाला हैं। इनकी क्रिया एफीड्रीन के समान होती है।

डा० आर. एन. क्षौरी ने लिखा हैं कि यह आक्षेप को मिटाता, उत्तेजना देता, कफ को सरलता से निकालता और मूत्र की मात्रा को बढ़ाता है। इसकी जड़ को पीस कर लगाया जाये तो त्वचा में झनझनाहट पैदा करता है। सैंधा नमक और हींग के साथ यह अन्तःविद्रधि, पत्थरी, बेहोशी, मृगी और अर्धांग, आमवात, शोथ, खांसी, पेट का अफारा और जलोदर में लाभ करता है। इसके बीजों का तेल आमवात, वातरक्त और दूसरे दर्दों में मालिश के काम लिया जाता है। इसके छाल का लेप फोड़े को पका देता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

MYRATACEAE FAM1Ly लवंगादि वर्ग

स्वरूप —प्राय: वृक्ष

पत्र —अभिमुख, सादे अखण्ड, सुगन्धित, तैल ग्रन्थि युक्त,

पुष्प —पत्रकोणोद्भूत या शाखागोद्भूत पुष्प बाहयकोश एवं पुष्प अभ्यान्तर कोश के दल ४-५

फल —शुष्क या मांसल

१६७. आस

Myrtuscommunis

विवरण— आस का वृक्ष होता है जिसके फल और पत्त औषध रूप में प्रयोग होते हैं। फल काली मिर्च से कुछ बड़े होते हैं और उन के अन्दर आठ, सात छोटे २ बीज निकलते हैं जो चिकने होते हैं। यह 'हब्बुल-आस' या 'तुख्म मूरद' कहलाते हैं। इसके पत्ते बर्ग आस कहलाते हैं।

प्रयोज्य अंग—फल, पत्ते **मात्रा**— ३ से ५ माशा

गुण-कर्म—आयुर्वेद के प्राचीन साहित्य में कहीं वर्णन नहीं मिलता ? यूनानी हकीम 'हब्बुल आस' को दस्त बन्द करने और बहते हुए खून को रोकने के लिए प्रयोग करते हैं। पसीना रोकने के लिए इसे बारीक पीसकर शरीर पर लगाते हैं। दिल की कमजोरी और मस्तिष्क विकार को दूर करने को देते हैं। 'शर्बत हब्बुल आस' यूनानी की एक प्रसिद्ध दवा है जो कि दस्त बन्द करने, खून रोकने, आमाशय और दिल को ताकत देने के लिए प्रयोग कराया जाता है।

पत्तों को गर्म सूजन और सिर दर्द को मिटाने के लिए पीस कर लगाते हैं। बगल के पसीने को रोकने और उसकी बू को दूर करने के लिए बगल में मलते हैं बालों को मजबूत रखने और काला रखने के लिए खिजाबों में प्रयोग करते हैं।

आधुनिक मत—कर्नल चोपरा ने लिखा हैं कि इसके पत्ते संकोचक होते हैं। यह मस्तिष्क विकार विशेष कर अपस्मार में लाभ करते हैं। यह आमाशय और यकृत की विकृतियों में भी दिये जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके फल दस्त, पेंचिश, अर्श और आन्तरिक व्रणों में लाभ करते हैं। यह आमवात में प्रयोग किए जाते हैं।

१९८. जामुन

आयुर्वेदीय पर्याय—जम्बू, महफला, फलेन्द्रा

अंग्रेजी—Black Berry **लैटिन**—*Eugenia Jambo Lana*

विवरण—इसका बड़ा वृक्ष सदैव हरा रहता है। इसके पत्ते ३ से ६ इंच लम्बे और २ से ३ इंच चौड़े होते हैं। सफेद या सुनहरे फूल बसन्त में आते हैं। १/२ से $1\frac{1}{2}$ इंच लम्बे फल वर्षा आरम्भ होने पर आते हैं। कच्चे फल हरे और पक जाने पर गाढ़े नीले रंग के होते हैं। इसके अन्दर एक गुठली निकलती है। यहकई जाति की होती है और सारे भारत में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—फल, गुठली, छाल और पत्ते।

मात्रा—स्वरस १ से२ तोला, चूर्ण १ से ३ माशा।

आयुर्वेदिक मत—कषाय, मधुर-अम्लरस, लघु-रूक्ष गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक है। यह कफपित शामक है तथा बहुत वातकारक है। यह संग्राहक है। अतः अतिसार एवं रक्तस्राव में लाभ करती है। यह रोचक, पाचक, कंठशूल नाशक एवं कृमि रोग नाशक है। श्रम, दाह, कास एवं श्वास रोगनाशक है। इसकी गुठली की गिरी विशेष कर मधुमेह का नाश करती है।

आधुनिक मत—इसमें 'जम्बोलिन' 'इलैगिक एसिड़' 'गैलिक एसिड' और 'अलब्युमिन' होता है। आधुनिक खोज में इसे मधुमेह की उत्तम दवा बताया है। डिमक ने लिखा है कि अभी तक यह पता नहीं चला कि मधुमेह को ठीक करने में यह क्या क्रिया करती है, लाभ जरूर होता है।

१९९. लौंग

आयुर्वदीय नाम—लवंग, देव कुसुम, श्रीप्रसून, वारिज **यूनानी**—करनफूल

अंग्रेजी—Clove **लैटिन**—*Caryophyllus Aromaticus*

विवरण—इसका सदा हरित वृक्ष ३० से ४० फुट ऊँचा होता है। इसकी छाल मुलायम और मैले पीले रंग की होती है तने से बहुत सी मुलायम शाखाएँ निकल कर चारों तरफ फैली रहती हैं। हरे रंग के पत्ते अण्डाकार होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फूल बहार से लाल रंग के होते हैं और चार तिकोने हिस्सों में बंटे रहते हैं। इसमें गूदेदार लगभग १ इंच लम्बा फल लगता है। हरेक फल में एक बीज निकलता है। आरम्भ में यह मलाया और सैलिबिस टापु से आती थी अब सुमात्रा, बोर्निओ, ब्राजिल, गियाना, ट्रावनकोर में भी उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग- कलियाँ **मात्रा**—४ से १२ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—तिक्त-कटु रस, लघु-तीक्ष्ण स्निग्ध गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक है। यह कफ पित्त का नाश करती है। दीपन, पाचन और रुचि-वर्धक है। मुखदुर्गन्ध नाशक है। वायु का अनुलोमन करती और शूल का नाश करती है। यह कास, श्वास, हिक्का और क्षय में लाभ करती है। प्याम, उलटी और पेट के अफारे को दूर करती है। ज्वरों में इसका प्रयोग किया जाता है। यह शुक्रस्तम्भक व मूत्रजनन है।

आधुनिक मत---इसमें १८% भारी उड़नशील तैल मिलता है। कैरियो-फाईलिन, रेजिन, कैरियोफाइलिक एसिड़, 'युजिनिन' 'युजिनॉल' होता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह Antiseptic है। स्थानिक सुन्नता करती, ग्रामाशय को बल देती, पाचन करती, रोचन, वमन को रोकती और दर्द की ऐंठन को रोकती है। इसका बाहरी प्रयोग किया जाए तो यह लगाने पर त्वचा को लाल करती, सुन्नता करती और पूयहर कर्म करती है। इस के खाने से खून का बहाव बढ़ता और उष्णता ज्यादा हो जाती है। यह पाचन को बढ़ाती और आमाशय तथा आंतों के दर्द को दूर करती है। यह त्वचा को, लालास्राव बनाने वाली ग्रन्थियों को, वृक्कों को, यकृत को और श्वासवाहिनियों को उत्तेजित करती है। यह श्वास से, स्वेद से, पित्त से, दूध से और पेशाब से शरीर के बहार निकलती है।

२००. समुद्र फल

आयुर्वेदीय नाम—इज्जल, निचुल, विदुल, अम्बुज, हिज्जल

लैटिन—*Barringtonia Acutangula.*

विवरण—इसका वृक्ष ३० से ४० फुट ऊँचा होता है। पत्र लम्बे गोल, ५ इंच लम्बे २ इंच चौड़े होते हैं। पुष्प दण्ड लगभग १ फुट लम्बा होता है जिसमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लाल रंग के फूल लगते हैं। फल १ से $1\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा और $\frac{1}{2}$ से १ इंच लम्बा होता है। यह तीन रेखायुक्त होता है और देखने में बड़ी इलायची के सदृश होता है। यह मध्य भारत, दक्षिण भारत, बंगाल एवं हिमालय प्रदेश में उत्पन्न होता है। बर्मा में भी पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—फल-मूल-पत्र

मात्रा—चूर्ण ५ से १० रत्ती, पत्र स्वरस $\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु-रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक होता है। यह वामक है। वमनार्थ इसके फल की मात्रा ३ से ६ माशा होनी चाहिए। यह त्रिदोष नाशक है। भ्रान्ति नाशक है। भूत नाशक होता है। वात व्याधियों में लाभ करता है। इसे जल के साथ घिस कर पान किया जाए तो कृमि रोग नाशक होता है। यदि इसे पानी में पीस कर अञ्जन लगाया जाय तो यह कामला का नाश करता है और चक्षु: स्राव के लिए महौषध है।

चक्रदत्त में इसके पत्तों का रस मधु के साथ सेवन करने से आमातिसार में लाभ होना बताया है।

आधुनिक मत—इसके फल में ग्लुकोसाइड, सैपोनिन, बैरिंगटोनिन, स्टार्च प्रोटीन, सेल्युलोज, वसा तथा क्षारीय लवण होता है।

यह मूत्रल है। रक्तशोधक एव कुष्ठनाशक है। इससे गर्भाशय का संकोच होता है। कुष्टनाशक एवं विष नाशक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

MYRICACEAE FAMILY

कटफलादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: वृक्ष
पत्र —एकान्तर, सादे
पुष्प —बीजकोश–ऊर्ध्वस्थ
फल —माँसल
बीज —-एक बीज

२०१. कायफल

आयुर्वेदीय पर्याय—कट्फल, सोमकल्क, भद्रा, **यूनानी**—दारशीशआन
अंग्रेजी—Box Myrtle **लैटिन**—*Myrica Nagi*

विवरण—इसका वृक्ष सदैव हरा रहता है। यह छायादार और सुगन्धित होता है। इसके पत्र ४ से ६ इंच लम्बे चौड़े और सुगन्धित होते हैं। इस में लाल रंग के फूल लगते हैं जो छोटे और रोमश होते हैं। सर्दी में फूल खिले रहते हैं। गर्मियों में इसमें फल लगते हैं जो खिरनी के समान होते हैं। इस वृक्ष की छाल पीताभ वर्ण की भारी और $\frac{1}{4}$ इंच मोटी होती है और इसमें छोटे २ दाग होते हैं। इसमें बहुत तेज गन्ध होती है जिसे सुँघने से छींक आने लगती है। इसकी छाल ही 'कायफल' कहलाती है। यह पंजाब, गढ़वाल, कुमाऊँ, नेपाल और खासिया की पहाड़ियों में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल **मात्रा**—चूर्ण १ से २ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु-तिक्त कषाय रस, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह वातकफ शामक व पित्त वर्धक है। ज्वर, प्रमेह, बवासीर खांसी, कंठ के रोग और अरूचि इन सबको ठीक करता है। यह प्रतिश्याय, मुख-रोग और गलगण्ड का नाश करता है। यह नस्य के काम में लिया जाता है।

आधुनिक मत— इसकी छाल में टैनिन, सेकरिन और नमक होते हैं। डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि कायफल उत्तेजक, रसायन, सुगन्धित, और संकोचक होती है बुखार, जुकाम, दस्त, पैचिश में, गण्ड़माला और गनोरिया में लाभ करती है। इसका नस्य छींक पैदा करता है। विसूचिका में हाथ-पाव ठंड़े हो जाएं तो इसके बीजों को बारीक पीस कर लगाने से शरीर में उष्णता उत्पन्न हो जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

MYRISTISTICACEAE FAMILY जातिफलादि वर्ग

स्वरूप —प्रायः वृक्ष

पत्र —अखण्ड, एकान्तर, उपपत्ररहित

पुष्प —श्वेत वर्ण, बाह्य कोश के दल-३

पुंकेशर–१०, बीजकोश—१ खण्ड वाला

फल —मांसल

बीज –बड़े और तैल युक्त

२०२. जायफल

आयुर्वेदीय पर्याय—जाति फल, जातिकोश, मालती फल **यूनानी**—जोज बुआ

अंग्रेजी—Nut Meg **लैटिन**—*Myristica Fragrans*

विवरण—इसका वृक्ष बड़ा होता है और उसकी शाखायें नीचे को झुकी रहती हैं। इसके पत्र जामुन के पत्तों जैसे होते हैं किन्तु उनसे कुछ छोटे और सुगन्धित होते हैं। इनकी ऊपर की स्तर गहरे रंग की होती है। और नीचे की पीली मटैली वर्ण की। बरसात के बाद में छोटे, सुगन्धित और पीले रंग के धूसर फूल लगते हैं। इसका फल कुछ लम्बा गोल, छोटी नासपाती या अमरूद जैसा होता है। इसकी तीन स्तरें होती हैं, १. ऊपर का खोल जो कि पीले रंग का और मोटा होता है। इसके नीचे २. एक पतली सी झिल्ली होती है और उस के नीचे ३. बीज होता है। इस बीज की आकृति मुर्गी के अण्डे की सी होती है और उसका रंग खाकी सा होता है।

फल के पक जाने पर वह स्वयं फट जाता है और उसका खोल हट जाने के बाद पतली झिल्ली अलग हो जाती है। इसे 'जावित्री' कहा जाता है,फारसी में 'बजवाज' कहते हैं और अंग्रेजी में Mace कहते हैं। अन्दर का बीज 'जायफल, कहलाता है।

प्रयोज्य अंग—जायफल और जावित्री **मात्रा**—५ से १० रत्ती

आयुर्वेदिक मत—जायफल कटु, तिक्त, कषाय रस, लघु-तीक्ष्ण और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। वातकफ शामक है। यह रुचिकारक, अग्नि दीपक है। यह मुख की विरसता का नाश करता, स्वर को ठीक करता और मल की दुर्गंधता एवं कृष्णता का नाश करता है। यह संग्राही है। यह कास, श्वास, पीनस, कृमि, वमन एवं बलकारक होता है।

जाबित्री रुचिकारक, व्रण रोपक, कास, श्वास, तृष्णा, वमन एवं विष का नाश करती है।

आधुनिक मत—जायफल एवं जावित्री में उड़नशील तैल एवं स्थिर तैल होते हैं। वसा भी होती है।

डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है कि जायफल और जावत्री सुगन्धित, पाचक और उत्तेजक होते हैं। थोड़ी मात्रा में पाचन को तीव्र कर भूख बढाता, अफारा हटाता और अग्निमान्द्य एवं उदरशूल का नाश करता है। अधिक मात्रा में यह मूढ़ता एवं प्रलाप पैदा करता है। अतिसार, रक्तातिसार, मूत्र-कृच्छ्रता और रक्तमूत्रता में लाभ करता है। सिर दर्द एवं वातव्याधि में लेप करते हैं। दूसरे तैलों में मिलाकर शोथ एवं शूल के स्थान पर अभ्यंग करते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

MYRSINACEAE FAMILY विडंगादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः झाड़ी

पत्र —एकान्तर, सादे

पुष्प —पुष्प बाह्यकोश एवं पुष्प आभ्यन्तर कोश के दल ४-५

फल — मांसल

२०३. बायबिडंग

आयुर्वेदीय पर्याय—बिडंग, कृमिघ्न, जन्तुनाशन, अमोघा

यूनानी—बिरंग काबुली

अंग्रेजी—Babreng लैटिन—*Embelia Ribes*

विवरण—इसकी बड़ी झाड़ी होती है जिसमें अण्डाकार पत्र लगे होते हैं और उनका अग्रभाग नोकीला होता है। इसमें सफेद रंग के फूल आते हैं और काली मिर्च जैसे फल गुच्छों में लगते हैं। फल के भीतर धूसर वर्ण का गूदा निकलता है और एक बीज निकलता है, जिस पर सफेद दाग होते हैं। यह भारत में पहाड़ी प्रदेशों में उत्पन्न होता है।

प्रयोज्य अंग—फल **मात्रा**—१ से २ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु-रूक्ष-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह वात कफ शामक है। यह अग्निवर्धक है। शूल, अफारा, उदर विकार, कृमि रोग एवं विबन्ध का नाश करती है। अग्निमान्द्य, अरूचि और भ्रान्ति नाशक है। इसका प्रयोग रसायन भी है।

आधुनिक मत—इसमें Embalic acid, tannin और christombine होता है।

डा० आर एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह रेचक है। यह अफारा मिटाती, वायु का नाश करती और कृमि रोग नाशक है। यह रसायन भी है। डा० देसाई ने इसे मस्तिष्क को बल देने वाली और रक्त को शुद्ध करने वाली भी कहा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

N

NYCTAGINACEAE FAMILY **पुनर्नवादि वर्ग**

स्वरूप–क्षुप

पत्र –अभिमुख, सादे, उपपत्ररहित,

पुष्प –बाह्याभ्यन्तर कोष, संयुक्त

पुंकेशर–अनियत, बीजकोष–उर्ध्वस्थ, एक खण्ड वाला

फल –पतली त्वचा वाला, कोश नलिका के भीतर आवृत

२०४. बिसखपरा

आयुर्वेदीय पर्याय—पुनर्नवा, शोथघ्नी, श्वेतमूला **यूनानी**—हदकूकी

अंग्रेजी—Spreding Hogweed **लैटिन**—*Boerhavia Diffusa*

विवरण—इसकी छोटी बेल २-३ फुट लम्बी होती है जो बरसात में खूब फैली रहती है। पत्र १ से $1\frac{1}{2}$ इंच लम्बे, गोल और गूदेदार तथा मुलायम रुएँ से भरे होते हैं। फूल छोटे और सफेद रंग का होता है। इसमें $\frac{1}{2}$ इंच लम्बे गोल फल लगते हैं जिनमें चौलाई के बीजों के जैसे बीज निकलते हैं। इसकी जड़ मोटी, सख्त और सफेद रंग की होती है।

इसकी एक जाति और है जो लाल रंग की होती है। यह ज्यादा मिलती है। बिसखपरा सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़ और पूरा पौधा तथा बीज

मात्रा—रस १ से २ तोला, चूर्ण जड़ का ३ से ६ माशा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—मधुर तिक्त कषाय रस, लघु-रूक्ष गुण होती है। श्वेत बिसखपरा उष्ण वीर्य और मधुर विपाक है तथा लाल शीत वीर्य और कटु विपाक है। श्वेत कफवात का नाश करता, पाण्डु रोग, सूजन, विष विकार एवं उदररोग नाशक है। रक्त कफ नाशक है। रक्त वातकारक, पित्त एवं रक्त विकार नाशक है। हृदय रोग, उरक्षत, कास एवं अर्श, शूल नाशक है। यह मूत्र ज्यादा लाता है।

आधुनिक मत—इसमें 'पुर्ननवीन' और 'पोटाशियम नाइट्रेट' होता है। डा० क्षौरी ने लिखा है कि यह हलका दस्तावर, पैशाब साफ करने वाला, कफ निकालने वाला और वामक होता है। इसका लेप त्वचा की शोथ मिटाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

NYMPHAEACEAE FAMILY कमलादि वर्ग

स्वरूप–जलज क्षुप

पत्र —बड़े, गोल, जल पर तेरने वाले

पुष्प —एकाकी, सफेद, लाल, पीले आदि विभिन्न रंग के, पुष्पवृन्त—लम्बा, मोटा, सछिद्र, पुष्पबाह्य कोश एवं पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ३-६, पुंकेशर एवं स्त्रीकेशर, अनेक, बीजकोश–८ या अधिक संयुक्त उर्ध्वस्थ, सूर्यविकाशी अथवा चन्द्रविकाशी

२०५. कमल

आयुर्वेदीय नाम—कमल, पद्म, नलिन, अरविन्द, महोत्पल, सहस्रपत्र, पंकेरूह
अंग्रेजी—Sacred Lotus **लैटिन**—*Nelumbium Speciosum*

विवरण—यह जल में होने वाला क्षुप है जा कीचड़ में उगता है। इसके पत्र १से२ फुट व्यास के पत्रनाल में लगे हुए पानी के ऊपर रहते हैं जो चिकने और गोल होते है। इसमें सुगन्धित पुष्प लगते हैं जिनका रंग श्वेत अथवा रक्त होता है। यह पुष्प सूर्योदय पर खिलते हैं और सायं समय संकुचित हो जाते हैं। पुष्पानुसार श्वेत एवं रक्त के अतिरिक्त इसकी एक और जाति भी होती है जिसमें नील पुष्प आते हैं। इसे नीलोफर कहा जाता है। कमल समस्त भारत में उत्पन्न होता हैं।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग

मात्रा—बीज चूर्ण इसे ६ माशा, मूल स्वरस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—नीलोफर के समान

२०६. नीलोफर

आयुर्वेदीय नाम—कुमुद, उत्पल, **यूनानी**—नीलफर
अंग्रेजी—Water Lily **लैटिन**—*Nymphaea Lotus*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—यह कमल की एक जाति होती है। इसकी जड़ कीचड़ में रहती है। पत्र चिकने, गोल होते हैं और फूल नीले रंग के होते हैं। कुमुद के बीज को कमल गट्टा कहा जाता है। यूनानी हकीमों का ख्याल है कि भारत में पैदा होने वाले बाहर से आने वाला नीलोफर ज्यादा गुण करता है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग **मात्रा**—बीज चूर्ण ३ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—मधुर, कषाय, तिक्त रस, लघु-स्निग्ध, पिच्छिल गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक है। कफ पित्तशामक है। यह वर्ण कारक, तृष्णा, दाह, रक्तरोग, विस्फोट, विष-विसर्प का नाश करता है। यह रक्तपित्त नाशक है। कमलगट्टा विष्टम्भि, वृष्य, गर्भसंस्थापक, बलकारक और संग्राहक है।

आधुनिक मत—इसके बीज और जड़ में राल, ग्लुकोज, मेटार्बिन, टैनिन, नेलम्बिन होते हैं।

बोस और कीर्तिकार ने लिखा है कि इसके फूल दस्त, हैजे, बुखार और जिगर के रोगों में फायदा करता है। हृदय के लिए पौष्टिक है। इसकी जड़ पीसकर आमातिसार और बवासीर में फायदा करती है।

राक्सबर्ग ने इसके बीज (कमलगट्टा) पुराने प्रमेह रोग को नाश करने वाले कहे हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

O

OLEACEAE FAMILY

पारिजातादि वर्ग

स्वरूप—वृक्ष अथवा क्षुप

पत्र —अभिमुख, उपपत्र रहित

पुष्प —पुष्पाभ्यान्तर, कोश के दल—५, पुंकेशर—३

२०७. जैतुन

Olea Europea.

विवरण—इसके वृक्ष बड़े होते हैं जिसमें अमरूद के जैसे पत्र लगते हैं जो कुछ गोल होते हैं। इसके फल अण्डे की शक्ल के और कलमी बेर के बराबर होते हैं। यह कच्ची हालत में हरे और पकने पर लाल और अन्त में काले पड़ जाते हैं। इसके फल की गुठली पौन इंच लम्बी और आधा इंच मोटी होती है। इसका मूलस्थान भूमध्यसागर है। बलूचिस्तान में भी पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—फल, पत्र, तैल और गोंद

मात्रा—तैल २$\frac{1}{2}$ तोला, गोंद ३ से ५ माशा

गुण-कर्म—इसके पत्र कब्ज करते हैं। जंगली जैतुन के पत्तों को सुखा कर तथा पीसकर बदन पर मलने से यह पसीना बन्द करते हैं। इनका लेप पित्त, खुजली, दाद, व्रणों में लाभ करता है। शहद में मिलाकर लगाने से व्रण शीघ्र भरते हैं। पत्रों का रस कान में डालने से कान का दर्द, पीब और सूजन मिटाती है। रस में बराबर का मिलाकर थोड़ा गर्म कर कान में डालने से कान का बहरापन और फुन्सी मिट जाती है। बाग के जैतुन के पत्र आँखों के रोग दूर करते हैं। इसको सिरके में उबालकर कुल्ले करने से दाँतों का दर्द और मुँह के छाले मिट जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसके कच्चे फल को पीसकर लेप करना चेचक, फोड़े-फुन्सी, विकृत व्रण और अग्निदग्ध में लाभ करता है। इसको जलाकर राख बना उसमें शहद मिला कर गंज में लगाने से लाभ होता है। पानी में उबाल कर उसके गरारे करने से दाँत और मसूढ़े मजबूत होने और उनके तथा मुँह के छाले मिटते हैं। इसका पक्व फल आँखों को हानि पहुँचाता है। हलका दस्तावर होता है।

जैतुन के तैल (Olive oil) की मालिश ठंड, सूजन और दर्द को दूर करती है। पीबदार फोड़ों में लगाते हैं। मुख पर लगाने से स्निग्धता बढ़ाता और आँखों में लगाने से खुजली, जाला, पानी बहना और नजला मिटाता है। यह वात शमन करता और अर्धांग में लाभ करता तथा बल पहुँचाता है।

इसका गोंद जुकाम, नजला, सर्दी और खाँसी में लाभ करता है। यह कफ निकालता और आवाज साफ करता है। मूत्रल है। मरहम में मिलाकर दाद, जख्म व आर्द्र पामा में लगाते हैं।

२०८. जुही

आयुर्वेदीय नाम — यूथिका, गणिका

लैटिन — *Jasminum Auriculatum.*

विवरण — इसकी लता चमेली के सदृश्य होती है। इसके एक डंठल में पाँच पत्तियाँ लगती हैं। पुष्प श्वेत या पीत वर्ण होते हैं। मोहक गन्ध होती है। यह विशेषत: बंगाल एवं मद्रास में होता है।

प्रयोज्य अंग — पुष्प, पत्र

मात्रा — पुष्प स्वरस १-२ तोला, पत्र क्वाथ ४-८ तोला

आयुर्वेदिक मत — तिक्त-कषाय-मधुर रस, लघु गुण, शीतवीर्य, कटु विपाक एवं हृद्य प्रभाव होता है। यह पित्तशामक एवं कफवात वर्धक है।

यह व्रण, रक्त विकार, मुखरोग, दन्तरोग, नेत्र रोग, शिरोरोग एवं विष का नाश करती है।

२०९. बेला

आयुर्वेदीय नाम — मल्लिका, शीतभीरू

अंग्रेजी — Arabian Jasmine. **लैटिन** — *Jasminum Sambac.*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका क्षुप २-४ फुट ऊँचा झाड़दार होता है। पत्र अभिमुख क्रम से निकलते हैं। सफेद रंग के फूल निकलते हैं जो सुगन्धित होते हैं। फल ½ इंच लम्बा होता है जिसमें काले रंग के १-२ बीज निकलते हैं। इसी की एक जाति में मोती के समान फूल निकलते हैं। उसे मोतिया कहा जाता है। यह भारत, वर्मा, लंका में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फूल, मूल, पत्र **मात्रा**—क्वाथ ५-१० तोला

अयुर्वेदिक मत—तिक्त कटु रस, लघु गुण, उष्णवीर्य एवं कटुविपाक है। वात पित्तनाशक तथा वृष्य है।

यह रक्तज रोगों, नेत्र रोगों, कुष्ठ, अरुचि एवं विष का नाश करता है।

आधुनिक मत—पुष्पों में एक उड़नशील तैल होता है।

२१०. हारसिंगार

आयुर्वेदीय नाम—पारिजात, मन्दार, रागपुष्पी **यूनानी**—गुलजाफरी

अंग्रेजी—Night Jasmine. **लैटिन**—*Nyctanthes Arhor tristis.*

विवरण—इसका छोटा पेड़ १० से २० फुट ऊँचा होता है। पत्र ४-५ इंच लम्बे और २-२½ इंच चौड़े होते हैं। यह खुरदरे और रूएंदार होते हैं। पत्र का ऊपरी स्तर और निचला स्तर सफेद-सा होता है। फूल का डंठल पीले रंग का होता है। इसमें फूल सफेद और खुशबूदार होते हैं। यह रात में खिलते हैं और बर्मा में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—पत्र, छाल और फूल

मात्रा—रस १-२ तोला, चूर्ण १-५ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक है। यह कफवात नाशक एवं पित्तसंशोधक है। दीपन, अनुलोमन और कृमिनाशक है। रक्तशोधक, मूत्रल, स्वेदजनन, ज्वर नाशक एवं विषनाशक है। कास, श्वास, मूत्रकृच्छ्र में प्रयोग करते हैं। अग्निमान्द्य, विवन्ध, अर्श में लाभ करता है। इसके बीजों का लेप गंजेपन में लाभ करता है।

आधुनिक मत—पत्रों में 'निक्टैनथीन' नामक क्षार तत्व होता है।

केस और महस्कर ने इसके पत्रों को ३४ मलेरिया के रोगियों पर प्रयोग किया, उनमें से २६ बिलकुल ठीक हो गए।

*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ONAGRACEAE FAMILY

शृंगाटकादि वर्ग

पत्र — अभिमुख या एकान्तर, सादे

पुष्प—पत्र कोण या शाखाग्र से उद्भूत

पुष्प बाह्यकोश—रंगीन, नालिकाकार

२११. सिंघाड़ा

आयुर्वेदीय पर्याय—शृंगाटक, जलफल, त्रिकोणफ

अंग्रेजी — Water Caltrop　　**लैटिन**—*Trapa Bispinosa*

विवरण – यह पानी में पैदा होने वाला बेल है। इसका पत्ता गोल, लाल धारियों वाला, कटे किनारे का, २ से ३ इंच लम्बा और २ इंच चौड़ा होता है। यह लाल रंग के ४ से ६ इच लम्बे डठल में लगा होता है। फल तिकोना होता है। दो कोनों पर दो बड़े कांटे होते हैं। फल का छिलका हरा होता है और गिरी सफेद रंग की होती है। यह सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल की गिरी　　**मात्रा**—$\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर कषाय रस, गुरु रूक्ष गुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक है। यह त्रिदोष नाशक, रक्त पित्त एवं दाह शामक है। यह वृष्य-मूत्रल एवं बलकारक है। इसे तृष्णा, अतिसार और संग्रहणी में प्रयोग करते हैं। शुक्र दुर्बलता में एवं गर्भ को बल देने के लिए गर्भावस्था में देना अच्छा होता है। यह लेप करने के काम में लिया जाता है और दाह को मिटाता है।

आधुनिक मत – इसके फल में स्टार्च और मैंगनीज होता है। कम्बाडिया के लोग इसके फल को पौष्टिक और ज्वर नाशक मानते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ORCHIDACEAE FAMILY — रासनादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः क्षुप

पत्र—सादे अखण्ड, पुष्प बाह्यकोश के दल ६, (३–३ के दो चक्रों में), पुंकेशर–१ बीजकोश–अधःस्थ त्रिकोष्ठी

मूल—कन्दमय

२१२. सालममिश्री

आयुर्वेदीय नाम—मुञ्जातक **यूनानी**—सालबमिश्री

अंग्रेजी—Salep **लैटिन**—*Eulophia Compestnis*

विवरण—इसका क्षुप ८ से १२ इंच ऊंचा होता है। इसमें लम्बे पत्र लगते हैं जिसका अगला भाग नुकिला होता है। फूल का डंठल जड़ के पास से निकलता है और लगभग १ से ३ फुट लम्बा होता है। यह सख्त और सीधा होता है। इस पर कई बड़े २ फूल लगते हैं जो नीले या बैंगनी रंग के होते हैं। जा फूल बसन्त में लगते हैं। इसकी जड़ सींग जैसी होती है। यह अच्छे स्वाद की और मीठी होती है। कन्द के आकार के अनुसार इसे दो प्रकार माना जा सकता है। एक वह जो हाथ के पंजे जैसी हो, उसे 'सालम पंजा' कहते हैं। जो लहसन की शक्ल की हो वह 'लहसुनियां सालम' कहलाता है। यह फारस-अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, मिश्र, नेपाल, काश्मीर और नीलगिरी में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—१ से ३ माशा

गुणकर्म—जोड़ों को ताकत देता, कामशक्ति को बढ़ाता, वीर्य बढ़ाता और उसे गाढ़ा करता है। यह बृंहण करता है। इसका चूर्ण दूध के साथ दिया जाता है या माजून बनाकर दिया जाता है। यह दिमाग और नाड़ियों को ताकत देता है।

आयुर्वेदिक ग्रन्थ—चरक में सूत्र स्थान अध्याय २७ में मुञ्जातक के गुण लिखे हैं। वहाँ इसे बलकारक, शीतल, गुरु, स्निग्ध, तर्पण करने वाला और बृंहण करने वाला कहा है। यह वातपित्त नाशक, मधुर, वृष्य होता है।

आधुनिक मत—इसमे ४८% एक तरह का गोंद होता है। इसमें भस्म ३·६% होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

P

PALMAE FAMILY

नारिकेलादि वर्ग

स्वरूप—वृक्ष मध्यमाकार या बड़े, अकेले या झुण्डों में, काण्ड सीधे, शाखाएँ प्राय: नहीं

पत्र —एकान्तर–काण्ड के अग्रभाग में संबद्ध

पुष्प —छोटा, पुंकेशर प्राय: ६–दो कतारों में बीजकोश १ से ३ कोष्ठयुक्त

फल —कठिन -कवचयुक्त

२१३. खजूर

आयुर्वेदीय नाम—खजूर — **यूनानी**—खुर्मा

अंग्रजी— Date — **लैटिन**—*Phoenix Sylvestris*

विवरण—इसका पेड़ ३० से ४० फुट ऊँचा होता है जिसका तना सीधा, मैले रंग का और लगभग ३ फुट मोटा होता है। पत्ते का डंठल तने से ही लगा रहता है। इसका पत्ता ६ से ७ फुट लम्बा होता है जो पक्षाकार होता है। इसकी पत्तियाँ ६ से १२ इंच लम्बी और १ इंच चौड़ी होती हैं। इनका अगला किनारा नोकीला होता है। पत्र की जड़ में ४ इंच लम्बा कांटा होता है। फूल एक पेड़ में एक लिंग के लगते हैं। स्त्री जाति के फूलवाले पेड़ में फल लगते हैं और पुरुष जाति में नहीं। फल १ से १$\frac{1}{2}$ इंच लम्बा, गोल और पीले रंग का होता है। पक जाने पर रक्ताभ हो जाता है। फल के अन्दर एक सख्त बीज निकलता है। पेड़ में से एक तरह का रस निकलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसी जाती का पिण्डखजूर होता है जिस का फल बड़ा और गूदेदार होता है। इसका लैटिन नाम Phoenix Dactylifera है। इसका फल सूखने पर 'छुहारा' कहलाता है।

खजूर सारे भारत में पैदा होता है। पिण्ड खजूर अफ्रीका, मिश्र, सीरिया और अरब में होता है, आजकल पंजाब और सिन्ध में भी खेती की जाती है।

प्रयोज्य अंग—फल और रस **मात्रा**—५ से ७ दाने, रस ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, स्निग्ध गुरु गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक है। यह वात पित्त शामक है। यह नाड़ियों को ताकत देता, भ्रम, मूर्च्छा, कटि-शूल में लाभ करता है। प्यास, वमन, अतिसार में लाभ करता है। उर, क्षत-कास-श्वास-हिचकी में फायदा करता। हृद्य, वृष्य एवं मूत्रल है। ज्वर नाशक है। दाहनाशक है।

आधुनिक मत—पिण्ड खजूर में लौहा, टैनिन और चूना होता है। कर्नल चोपरा ने लिखा है कि यह कफ निकालने वाला, मृदुरेचक, कामोद्दीपक होता है। यह श्वास में लाभ करता है।

२१४. सुपारी

आयुर्वेदीय नाम—पूग, क्रमुक, गुवाक **यूनानी**—फोफल

अंग्रेजी—Betel Nut **लैटिन**—*Areca Catechu*

विवरण—इसका पेड़ ३० से ४० फुट ऊँचा होता है जिसमें शाखाएँ नहीं होती। इसके पत्र ४ से ६ फुट लम्बे होते हैं। जिसमें पत्तियाँ १ से २ फुट लम्बी और रूएँदार होती हैं। पीले रंग के सफेद से फूल लगते हैं जो गुच्छों में लगते हैं जो १ से २ इंच लम्बे, गोल, चिकने होते हैं। कच्चे फल हरे और पकने पर पीले या लाल रंग के हो जाते हैं। इनका ऊपरी खोज सूत्रों से बना होता है। जिसे हटाने पर सुपारी निकलती है। यह भारत के उष्ण प्रान्तों जैसे मैसूर, आसाम, बंगाल, मालाबार में होता है। मलाया में भी यह पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल **मात्रा**—१ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—कषाय मधुर रस, गुरु, रूक्ष गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक है। यह कफ पित्त शामक है, रुचिकारक, अग्नि दीपक, मुख की विरसता-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाशक एवं मोहजनक होती है। कच्ची सुपारी भारी, अभिष्यन्दी, जठराग्नि का और नेत्रों की दृष्टि का नाश करती है। चिकनी सुपारी त्रिदोषघ्न है।

आधुनिक मत—सुपारी में टैनिन, गैलिक एसिड़, चर्वी होती है। 'एरिकोलिन' नामक तत्व होता हैं जो हृदय से लगी प्राणदा नाड़ी के सूत्रों को उत्तेजित कर हृदय को अवसादित करता है और रक्तभार को कम करता है। यह एक तेज कीड़े मारने की दवा है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह लालास्त्रावर्धक, पसीना कम करने वाली, मसूढों को बल देने वाली और मुँह का स्वाद ठीक करने वाली होती है। इसे आमातिसार एवं रक्तातिसार और पेट के कीड़े मारने में देते हैं

२१५. नारियल

आयुर्वेदीय नाम—नारिकेल, दृढ़फल, लांगली, सदाफल **यूनानी**—नारजील
अंग्रेजी – Cocoanut Palm. **लैटिन** – *Cocas Nucifora.*

विवरण – इसका पेड़ लगभग ४० से ६० फुट ऊँचा होता है। इसका तना सीधा खड़ा होता है जिसका घेरा १ से २ फुट होता है और वाहरी तरफ गोल निशान होते हैं। इसमें शाखाएँ नहीं होती, तने से ही एक पत्ते का डंठल निकलता है जो १२ से १६ फुट लम्वा होता है, उस पर २ से ३ फुट लम्बी, हरे रंग की पत्तियाँ लगी रहती हैं जो अगले किनारों पर नुकीली होती हैं। इसमें पीले रंग के फूल लगते हैं। इसका फल गोल होता है जो ६ से १० इंच लम्वा होता है। इसका ऊपरी खोल सख्त होता है और तन्तुमय होता है। आरम्भ में सिर्फ पानी रहता है, कुछ दिनों बाद पानी कम हो जाता है और दूध जैसी मीठी गिरी बन जाती है। पक जाने पर यह गिरी सख्त हो जाती है और पानी खत्म हो जाता है। यह समुद्र के किनारे, बंगाल, उड़ीसा, लंका, बर्मा में अधिक पैदा होते हैं।

प्रयोज्य अंग – फल, फूल **मात्रा** – २ से ३ तोला

आयुर्वेदिक मत – मधुर रस, गुरू-स्निग्ध गुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक है। यह बालों का बढ़ाता है। वात पित्त शामक है। यह देर में हजम होता, मूत्राशय का शोधन करता, संग्राहक, पुष्टिकारक बलदायक होता है। रक्त-विकार एवं दाह का नाश करता है। कच्चा फल विशेषकर पित्त ज्वर व पित्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विकार नाशक है। पुराना फल भारी, पित्त कारक, विदाही और विष्टम्भ कारक होता है। नारियल का पानी ठंडा, हृदय को प्रिय लगने वाला, अग्नि दीपक, वीर्य वर्धक, हलका, तृष्णा और पित्त को नष्ट करने वाला और मूत्राशय को शुद्ध करने वाला होता है।

आधुनिक मत—नारियल के तैल में लॉरिक, मिरिस्टिक, पामिटिक स्टिमरिक एसिडों के गिलसरायड होते हैं। इनके अलावा 'कैप्रिलिक एसिड' भी होता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि इसका दूध ठंडक करने वाला, पुष्टिकारक, रेचक, मूत्रल व कृमिनाशक है। नारियल का पानी ठंडा, चिकना और ज्यादा लेने पर दस्तावर हो जाता है।

इसका तेल काड़लिवर आयल की जगह प्रयोग किया जाता है। यह कमजोरी दूर करता, फेफड़ों के जख्मों को भरता है, किन्तु देर में हजम होता है। बुखार व खांसी में इसकी मालिश की जाती है। बिना समय के बाल पकने को रोकता है। यह बालों की रक्षा करता, उन्हें बढ़ाता और त्वचा के रोगों का नाश करता है। नारियल की जड़ मूत्रकारक होती है। नारियल की गिरी वृष्य है। इससे पेट के फीते जैसे लम्बे कीड़े मर जाते हैं।

२१६. खूनखराबा

आयुर्वेदीय पर्याय—रक्त निर्यास

यूनानी—दम्मुल अख्वैन

अंग्रेजी—Dragon's blood.

लैटिन—*Calamus Draco*

विवरण—यह एक पेड़ का गोंद है जो लाल रंग का होता है। इसमें कुछ नीलेपन की झलक आती हैं, किन्तु बारीक पीस लेने पर केवल लाल रह जाता है। इसके पेड़ अरब, अफ्रीका में पैदा होते हैं।

प्रयोज्य अंग—गोंद

मात्रा—१ से १$\frac{1}{2}$ माशा

गुणकर्म—यह आंतों में तीव्र संकोच करती है, इसी से यह पेचिश को, दस्तों को, खून के बहाव को रोकता है। औरतों को माहवारी में ज्यादा खन आए, बवासीर में खून आए, छाती से बलगम के साथ खून आए या कहीं से भी खून बह रहा है। उसे यह रोक देता है। इसे बारिक पीसकर जख्मों पर छिड़कते हैं। यह ताजा जख्मों को सुखा देता है और उन से खून बहता हो तो

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वह बन्द हो जाता है। यह वृकों को हानि पहुँचाता है, इसके साथ कतीरा प्रयोग करना चाहिए।

आधुनिक मत—इसमें 'बेञ्जोइक एसिड' और 'साइनेमिक एसिड' होता है। कर्नल चोपड़ा ने इसे तीव्र संकोचक और दस्त एवं पेचिश में उपयोगी बताया है।

२१७. नारियल दरयाई

अंग्रेजी—Sea Coconut **लैटिन**—*Lodoicea Seychellarum*

विवरण—इसका पेड़ भी नारियल की तरह का ही होता है। इसका फल भी आकार में नारियल जैसा ही होता है। किन्तु इसका फल उससे सख्त, भारी और मोटा होता है। २० से २५ सेर तक के फल होते हैं। बाजार में इस की गिरी के कटे हुए टुकड़े मिलते हैं जो बेडौल, भारी और सफेद होते हैं। यह अफ्रीका, अमेरिका के समुद्रतट पर होता है, लंका और बम्बई में भी पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—गिरी **मात्रा**—४ रत्ती से १ माशा

गुणकर्म—यह कफ और वायु के लिए लाभ करता, ठंड के बुखार को हटाता और शरीर की उष्णता को स्थिर रखता है। यह हैजे में और विष के असर में लाभ करता है।

हैजे में इसे अकेले या दूसरी दवाइयों के साथ गुलाब जल में घिसकर पिलाते हैं, जितना भी विष होता है सभी उलटी से निकल जाता है और प्यास भी मिट जाती है। अफीम और बच्छनाग के विष में भी पिलाते हैं। साँप, बिच्छु, भिड़ के काटे हुए स्थान पर इसको लगाने से सूजन दूर हो जाती है और विष नष्ट हो जाता है। बुखार आने से पहले ठंड आवे तो इसे पिलाने से लाभ होता है। यह दिल को ताकत देता है।

आधुनिक मत—कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि इसका फल ताकत देता, शरीर की रक्षा करता और हैजे में काम आता है। कुचले की जड़ के साथ बच्चों के पेट दर्द में देते हैं। इसका पानी या कच्ची गिरी पित्त को मिटाती और अम्ल पित्त को कम करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PANDANACEAE FAMILY केतक्यादि वर्ग

स्वरूप –काण्ड़ अनेक, अनियमित मूलों से युक्त

पत्र –पतले, वृन्तरहित, किनारे कटंकित

पुष्प –छोटे-गुच्छों में, पुँकेशर अनेक, बीजकोश एक कोष्ठीय।

२१८. केवड़ा

आयुर्वेदीय पर्याय—केतक, सूचिपुष्प, जम्बुक, क्रकच्छद **यूनानी**—काजी
अंग्रेजी—Screw Pile **लैटिन**—*Pandanus Tectorius*

विवरण—इसके पेड़ बहुत बड़े नहीं होते। इसके तने से डालियाँ निकलती हैं और इधर उधर फैल कर झाड़ी का आकार बना लेती हैं। इसका तना टेढ़ा होता है और उसमें गूदा नहीं होता। इसके तने से जटाऐं निकलती हैं जो जमीन में आकर घुस जाती हैं। इसके पत्ते ४-१२ फ़ीट लम्बे और २ से ३ फुट चौड़े होते हैं। इन का अग्र भाग नुकीला और किनारे कांटेदार होते हैं। तने के मध्यभाग से फूल निकलते हैं। पुरुष जाति के वृक्ष के फूल सफेद और कम सुगन्धित होते हैं। स्त्री जाति के वृक्ष का फूल पीले रंग का, छोटा और अधिक सुगन्धित होता है। इसका फल नारंगी जैसा किन्तु सख्त होता है। यह सारे भारत में, ईरान एवं अरब में पैदा होता हैं।

प्रयोज्य अंग—फल, जड़। **मात्रा**—अर्क ४-६ तो०, शर्बत २-४ तो०

आयुर्वेदिक मत—केवड़ा तिक्त-मधुर, कटु रस, लघु स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। कफ पित्त शामक, नेत्रों को हित कारक वर्ण कारक, केशों की दुर्गन्ध नाशक, रसायन, बल कारक एवं देह को दृढ़ करने वाला है।

आधुनिक मत—इसके फूलों में उड़न शील तेल होता है। डा० आर. एन. क्षौरी ने लिखा है कि केवडे का फल गर्म होता है और पसीना लाने वाला तथा आक्षेप को मिटाने वाला है। यह कमजोरी, बेहोशी और चक्कर को मिटाने वाला है। सिर की बीमारियों में लाभ करता है। कान के दर्द में और कान के बहने में इसके तेल की बूंद डालते हैं। केवड़े की जड़ को दूध के साथ पीस कर पीने से गर्भ गिरने का भय नहीं रहता।

तैल व्रण रोपक है। इसके अभ्यंग से कमर दर्द और जोड़ों का दर्द दूर होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PAPAVERACEAE FAMILY अहिफेनादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः क्षुप

पत्र —एकान्तर, सादे और दन्तुर

पुष्प --पत्रकोणोद्भूत, पुष्प बाह्यकोश के दल २-३
आभ्यन्तर कोश के दल ४-६ या १-१२ दो चक्रों में
पुंकेशर—अनेक, अनियत, स्त्री केशर—एक
बीज कोश-अधःस्थ,

फल —लम्बगोल

बीज —सूक्ष्म और अधिक

विशेष—सफेद या पीला दूध निकलता है।

२१९. अफीम

आयुर्वेदीय पर्याय—अहिफेन, आफूक, तिलभेद, खर्सातिल, **यूनानी**—अफयून
अंग्रेजी — Opium **लैटिन** — *Papaver Somniferum*

विवरण—इसका पौधा ३, ४ फुट ऊँचा होता है जिसे 'पोश्ता' कहते हैं। इसका तना हरे रंग का मुलायम रूएँदार और चिकना होता है। इसके पत्ते लम्बे-चौड़े और बिना डन्ठल के होते हैं। इसमें जाति भेद से तीन रंग के फूल लगते हैं। (१) खसखस सफेद—जिसमे पीलापन लिये हुऐ सफेद फल लगते हैं। (२) खसखस मन्सूर—इसमें लाल रंग के फूल लगते हैं। (३) खसखस स्याह—इसमें अनार जैसे छोटे फल लगते है इसे डोड़ा कहते है। फल के छिलके को पोस्त कहते हैं। बीज सफेद या काले रंग के होते है इनको खसखस कहते हैं। यह फारस, चीन, नेपाल और भारत के बिहार, बंगाल, यू. पी. में होता है।

कच्चे फल के चारों ओर संध्या समय गहरे क्षत लगा कर छोड़ देते हैं, उससे जो दूध जैसा रस निकलता है, वह जम जाता है और उसे खुरच कर इकठ्ठा कर लेते है। इसे अफीम कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—अफीम मात्रा—$\frac{1}{4}$ से १ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—तिक्तकषाय रस, सूक्ष्म-रूक्ष गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक एवं मादक प्रभाव है। आयुर्वेद के संहिता ग्रन्थों में इस का वर्णन नहीं मिलता, राजनिघंटु एवं भावप्रकाश निघंटु में इसका वर्णन मिलता है।

भाव प्रकाश में लिखा है कि यह शोषक, ग्राही, कफनाशक, वातपित्तकारक है। जो पोस्त की डोड़ियों के गुण है वही गुण इसके है।

पोस्त की डोड़ी, ग्राही, वातकारक, कफ एवं कास नाशक, धातुओं का शोषण करने वाली, मदकारी, वाक्शक्ति वर्धक, मोह जनक तथा रूचिकारक है। लगातार सेवन से नपुंसकता पैदा करती है।

राजनिघंटुकार ने खसखस का मधुरपाक कहा है। यह कान्ति, वीर्य और बल करने वाला बताया है।

आधुनिक मत—अफीम में बहुत तत्व होते है—जिनमें सबसे अधिक मात्रा 'मार्फीन' होता है जो दर्दों को मिटाता है, फिर उससे कम 'नार्कोटीन' होता है जो मलेरिया को दूर करने वाला होता है। इनके अतिरिक्त 'कोड़ीन' आदि क्षार तत्व होते है।

अफीम औषधोपयोगी मात्रा में सेवन करने पर पहले निःश्वासोच्छवास, मस्तिष्क और हृदय की उत्तजना को पैदा करती है। पश्चात् सारे शरीर में अवसाद पैदा करती है। यह साधारणतः वेदनाहर, निद्राजनक, आक्षेप नाशक, मादक व मस्तिष्क की स्फूर्ति की नाशक है। अफीम की क्रिया अधिकतर मस्तिष्क व सुषुम्ना प्रान्त की नाड़ियों पर होती है। अतएव नाडियों के द्वारा अपने प्रभाव को शरीर पर फैलाती है। इससे त्वगश्रित नाड़ियों में शोथ होता है। अतः पहले कर्ण पाली की (Externalear) उष्णता तथा कण्डू पैदा करती है। पुनः परिणाम स्वरूप गात्र व अंगुलि शीतल हो जाती है। अफीम के प्रभाव से जननेन्द्रिय में उत्तेजना हुआ करती है। औषधोपयोगी मात्रा में यदि अफीम कुछ दिनों तक सेवन की जाये तो वह पसीना बढ़ाती है। और पित्त श्लेष्मा व रसादि का स्राव कम कर देती है। अधिकतर यह मुंह व श्वास प्रणाली को शुष्क तथा आमाशयिक रस का स्राव कम कर देती है। अतएवं भूख इसके सेवन से जाती रहती है। पित्त स्राव

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

की अल्पता पैदा करती है, अतः कोष्ठ बद्धता पैदा होती है। हृदय की क्रिया वेग से होने के कारण नाड़ी वेगवती हो जाती है। मस्तिष्क के अन्यथा भाव होने से नई २ चिन्ताओं का प्रादुर्भाव हुआ करता है। हलका नशा होने के कारण निद्रा तथा जितनी ही निन्द्रा हो वह स्वप्न पूर्ण और जग जाने पर सिर भारी मालूम पड़ता है। भोजन जीर्ण नहीं हुआ करता तथा कोष्ठ परिष्कार नहीं हो पाता और शरीर में स्फूर्ति नहीं मालूम होती। हर तरह की तकलीफ को अफीम दूर कर सकती है, किन्तु मात्रा उत्तरोत्तर बढ़ानी पड़ती है। पूर्णमात्रा में अफीम सेवन करने से मस्तिष्क में उत्तेजना मूलक चिन्ह दिखलाई पड़ने लगते हैं। किन्तु यह उत्तेजना स्थाई नहीं होती। इसके प्रभाव के प्रकाश में ये लक्षण पाये जाते हैं, मुख की शुष्कता, अन्न न पचना, वमन होने जैसी चेष्टाओं का होना, वमन होना तथा पसीना प्रचुर प्रमाण में निकलना। हृदय में क्लान्ति पैदा होती है तथा रक्त का बहाव मन्द हो जाता है। धातूष्मा के द्वारा पाक (Oxidation) कम होता है। साथ ही शरीरोष्मा की भी कमी पाई जाती है। चक्षु में पुतली का संकोच, नासिका कण्डू और मूत्र कृच्छ्र हो जाता है। मस्तिष्क में अवसाद होने के कारण, शिर पीड़ा, सिर का घूमना, मस्तिष्क की जड़ता मन्द निःश्वासोच्छ्वास की उत्पति होती है।

अफीम अत्यधिक मात्रा में विषवत् कार्य करती है। इसमें गले से घड़-घड़ की आवाज के साथ श्वास-प्रश्वास का आना, सन्यास(Coma)का उपस्थित होना, नाड़ी क्षीणता, हिमाङ्गता, पसीना, पुतलियों में संकोच व विस्तार इत्यादि चिह्न दिखलाई पड़ते हैं। पश्चात् जिस समय मृत्यु निकटवर्ती हो जाती है उस समय मुख-मण्डल हस्त पाद इत्यदि से रक्त स्राव के अन्तिम प्रत्यावर्तन के फल स्वरूप मुख व हस्त-पादांगुली का नील वर्ण का होना, घोर संज्ञाहीनता श्वासोच्छवास की कमी होती है और अन्त में मृत्यु होती है।

मस्तिष्क प्रदाह से भिन्न जिन रोगों में प्रदाहशमनार्थ अथवा कोई उत्तेजना शक्ति के लिए अफीम प्रयोग की जाती है, अधिकतर आक्षेपहर रूप में ही प्रयोग होती है। अनिन्द्रा, गृध्रसी (Sciatica) निउरल्जिया, कटिवात, अर्बुद, विविधशूल (Intestinal Renal and Hepatic Colic) व पथरी प्रभृति पीड़ाओं में तथा धनुष्टंकार व तीव्र मारात्मक कोष्ठ प्रदाह, अंत्रवृद्धि मूत्र व

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुक्राशय सम्बन्धी पीडाओं में अफीम सेवन से तकलीफ कम व यन्त्रणा कम हो जाती है। निन्द्रा आ जाती है। अतिसार तथा रक्तातिसार, नाड़ी जन्य वमन (Nervous and Sympathetic Vomiting) अतिरिक्त श्लेष्मागमन, बहुमूत्र प्रचुर लाला स्राव में स्राव इत्यादि की शक्ति को ह्रास करने के लिये अफीम का सेवन अत्युपयोगी है।

२२०. सत्यानासी

आयुर्वेदीय पर्याय—स्वर्णक्षीरी, पीतदुग्धा, कटुपर्णी

अंग्रेजी—Mexican Poppy लैटिन—*Argemone Mexicana*

विवरण—इसका पौधा १ से ३ हाथ ऊँचा होता है। इसके सभी अंग कांटेदार होते हैं। इनको तोड़ने से पीले रंग का दूध निकलता है। पत्र काँटेदार होते हैं जिनके किनारे कटे-फटे होते हैं और इन पर सफेद रंग की धारियाँ होती हैं। फूल पीले रंग के होते हैं। इसमें गोल-से फल लगते हैं जिसमें काले रंग के बीज होते हैं। इसकी जड़ को 'चोक' कहते हैं। इसकी एक जाति और होती है। जो इससे बड़ी होती है। उसे जंगली बैंगन कहते हैं। इसका पौधा बैंगन के पौधे से मिलता-जुलता है। सारे भारत में होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़, दूध, बीज, पञ्चांग

मात्रा—जड़ का चूर्ण १० से ३० रत्ती, बीज-चूर्ण २ से ३ माशा, दूध ३ से ६ माशा, रस $\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, लघु-रूक्ष गुण, शीतवीर्य और कटु विपाक है। यह रेचक, भेदक व उत्क्लेशकारक है। कृमि-कण्डु, विष का नाश करती है। आनाह नाशक है। कुष्ठरोग, रक्तरोग एवं कफपित्त नाशक है। यह मूत्रकृच्छ, अश्मरी, शोथ, दाह एवं ज्वर का नाश करती है।

आधुनिक मत—इसके पत्रों और फलों में Berberine और Protopine होता है। डा० क्षीरी ने लिखा है कि बच्चों के कफज बुखार में इसे खिलाते हैं। यह शोथ नाशक है। पत्रों के रस के लगाने से हाथ-पैर नहीं फटते। जड़ का लेप फोड़े वा ग्रन्थियों को नष्ट कर देता है। इसके पत्रों के द्वारा पका हुआ तैल फोड़े-फुन्सी को नष्ट कर देता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PASSIFLORACEAE FAMILY एरण्डकर्कटी वर्ग

स्वरूप—प्रायः वृक्ष
पत्र —बड़े डंठल में लगे हुए कटे-फटे
पुष्प —एकलिंगी

२२१. पपीता

आयुर्वेदीय नाम—एरण्ड कर्कटी यूनानी—शज्रतुलबतीख
अंग्रेजी—Papaya लैटिन—*Carica Papaya*

विवरण—इसका वृक्ष २०-२५ फुट ऊँचा होता है। इसका तना सीधा रहता है। किसी तरह की शाखाएँ नहीं होती। पत्र ताड़ के पत्रों जैसा छत्राकार होते हैं। पत्र फैला हुआ और सात भागों में बँटा हुआ होता है। पत्र एक डंठल में लगा रहता है जो ३ फुट लम्बा और खोखला होता है। फूल एकलिंग के होते हैं। फल लम्बे गोल होते हैं जो कच्चे रहने पर हरे और पक जाने पर पीले रंग के हो जाते हैं। कच्चे फल को काटने से गाढ़ा दूध निकलता है। इसमें छोटे २ धूसर रंग में बीज निकलते हैं। यह अमेरिका और ब्राजील में पैदा होता था, वहाँ से पुर्तगालियों ने इसे भारत में लगाया। अब सारे भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, पत्ते, दूध और बीज

मात्रा—बीज-चूर्ण ४-८ रत्ती, दूध १/२ से १ तोला

गुणकर्म—यह पाचक, दीपक, अनुलोमक, पेशाब साफ करने वाला और पत्थरी को तोड़ कर निकालने वाला होता है। यह पेट के कीड़ों को मार डालता है और शरीर से बाहर निकालता है। कच्चे पपीते के दूध को दाद पर लगाते हैं। इस दूध में कपड़ा भिगो कर स्त्री की योनि में रक्खा जाए तो मासिक स्राव आने लगता है और गर्भ भी गिर सकता है। गर्भवती स्त्री को पपीता हानि करता है।

आधुनिक मत— इसमें एक पाचक तत्व होता है जिसे 'पापेन' कहते हैं। ताजा गूदे में वसा, राल, अलब्युमिनाइड, पेक्टीन, साइट्रिक एसिड, टारटेरिक एसिड, मेलिक एसिड आदि तत्व होते हैं। इसके बीजों में 'Caricin' नामक खराब स्वाद और गन्ध वाला तैल होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PEDALIACEAE FAMILY — तिलादि वर्ग

स्वरूप—क्षुप

पत्र —अभिमुख, अखंड, उपपत्ररहित

पुष्प —पुष्पाभ्यन्तर कोष के दल ५, नीचे से जुड़कर नलिकाकार, पुंकेसर ४ (दो छोटे दो बड़े), बीज कोष २ खण्डों का

बीज —अनेक

२२२. तिल

आयुर्वेदीय नाम—तिल **यूनानी**—कुन्जद

अंग्रेजी—Sesamum **लैटिन**—*Sesamum Indicum*

विवरण—तिल की खेती की जाती है। इसका पौधा १ से २ फुट तक ऊँचा होता है जिसके तने पर मुलायम रूएँ लगे होते हैं। पत्र ३ से ५ इंच लम्बे छोटे-बड़े अनेक प्रकार के होते हैं। ऊपर की पत्तियाँ कुछ लम्बी होती हैं और नीचे की अण्डाकार होती हैं। कोमल रूएँदार, नीलापन लिए हुए सफेद होते हैं। इन पर लाल, पीले निशान होते हैं। बीज छोटे, चिकने और रंग में सफेद, लाल या काले जाति के अनुसार होते हैं। यह सारे भारत में पैदा होते है।

प्रयोज्य अंग—बीज, तैल **मात्रा**—बीज चूर्ण ३-६ मा[illegible]

आयुर्वेदिक मत—मधुर-कषाय-तिक्त रस, गुरु-स्निग्ध गुण, उष्णवीर्य व मधुर विपाक है। केश्य प्रभाव है। त्रिदोषनाशक है। बलकारक, त्वचा को हितकारक, स्पर्श में शीतल, दुग्धवर्धक, व्रणरोग में हितकारक, दाँतों को अच्छा करने वाला मूत्र की मात्रा घटाने वाला, ग्राही, अग्नि को बढ़ाने वाले और बुद्धिवर्धक है। वृष्य एवं स्नेहन है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में ५०-६०% तैल होता है। तैल में दो तत्व होते हैं। 'सिसेमिन' और 'सिसेमॉल'।

बोस और कीर्तिकार के अनुसार इसके बीज ताकत देने वाले और मासिक-धर्म नियामक हैं। ऐसा ख्याल है कि ज्यादा लेने पर यह गर्भ गिरा देता है। इसमें लोहा, चूना और फास्फोरस भी होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PIPERACEAE FAMILY पिप्पल्यादि वर्ग

स्वरूप--प्रायः लता, कांड मुड़ने वाला, आधार मिलने पर आरोही

पत्र –अखंड, एकान्तर, हृदयाकृति

पुष्प –छोटे, काड़ पर, एक स्थान पर जमे हुए पत्रकोण या पत्र के सामने से निकलते हैं

२२३. कबाबचीनी

आयुर्वेदीय नाम—गन्धमारिच **यूनानी**—हब्बुल उरूस

अंग्रेजी—Cubeb. **लैटिन**—*Piper Cubeba*

विवरण—इसकी बेल दूसरे पेड़ों पर चढ़ी होती है जिसमें ५-६ इंच लम्बे अण्डाकार पत्र लगे होते हैं। इनका अग्रभाग नोकीला होता है और पिछले भाग पर बहुत-सी उभरी हुई रेखाएँ होती हैं। इसके फूल छोटे और पीताभ श्वेत होते हैं जो सर्दियों में गुच्छों की शक्ल में लगे दिखाई देते हैं। इसके फल गोल काली मिर्च के जैसे होते हैं और इनमें तेज गन्ध आती है। इसे चबाया जाए तो यह चरपरा लगता है और मुँह में ठंडक अनुभव होती है। कंकोल जावा, सुमात्रा, मलाया में पैदा होती है। भारत के मैसूर प्रान्त में इसकी खेती की जाती है।

प्रयोज्य अंग—फल **मात्रा**—१ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफवातशामक, मुख की दुर्गन्धता का नाशक एवं दीपन, रोचन, पाचन, अनुलोमन है। तृष्णानाशक एवं वृष्य है। हृदय को बल दायक एवं हृदयरोग नाशक है।

आधुनिक मत—इसमें क्रियाकारी तत्व ३%, उड़नशील तैल जो हरे, नीले रंग का होता है, १०-१५% होता है। इसमें Cubebin और Cubabic acid १% होता है। Calcium and Magnacium के Salts होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० आर० एन० क्षोरी का कहना है कि यह एक उत्तेजक और मूत्रल दवा है। यह मूत्र मार्ग की शोथ एवं तत्सम्बन्धी रोगों को मिटाती है। इसका नस्य लेने से या सिगरेट में रख कर पीने से यह गले और सांस की नलकियों की बीमारियों में लाभ करती है। इनसे कफ निकलता है।

२२४. काली मिर्च

आयुर्वेदीय पर्याय—मरिच, वेल्लज, कृष्ण, ऊषण **यूनानी**—फिलफिल स्याह
अंग्रेजी— Black Pepper **लैटिन**—*Piper Nigrum*

विवरण—इसकी लता मोटी होती है जो नारियल, सुपारी आदि के वृक्षों पर चढ़ी रहती हैं। इसकी शाखाओं से ग्रन्थि स्थान से सूत्र से बाहर निकलते हैं जो वृक्षों पर चिपट जाते हैं। इसके पत्ते ५-७ इंच लम्बे और २-५ इंच चौड़े होते हैं, जो सुपारी के पत्रों के जैसे होते हैं। इनके पृष्ठ पर ५ धारियाँ होती हैं। इसमें फूल एकलिंगी होते हैं। फल गोल और गुच्छों में लगे होते हैं। कच्चे फल हरे रंग के होते हैं, पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं। सूख जाने पर यह फल काले रंग के हो जाते हैं।

इसकी एक जाति सफेद मिर्च भी है, बजार में काली मिर्च के पके फलों को पानी में भिगोकर छिलका उतार कर सफेद मिर्च के नाम से बेचा जाता है। मिर्च मलाया, सिंगापुर, आसाम, मालाबार और कोंकण प्रदेश में उत्पन्न होती हैं।

प्रयोज्य अंग— फल **मात्रा**—३ से १० रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह कफ वातशामक है। पित्तकारक है। यह दीपन, पाचन, शूलनाशक तथा कृमिनाशक है। यह कफ निःसारक है; अतः कास, श्वास में लाभ करती है। यह नेत्रों के लिए हितकारक हैं। कुष्ठ आदि चर्म रोगों में इसका बाह्य प्रयोग एवं आन्तरिक प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत—फल के छिलके में Piperine और Piperidine नामक तत्व होते हैं। अन्दर फल के गूदे में Chavicin नामक पदार्थ होता है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि यह उत्तेजक दवा है। पेट के अफारे में, हैजा में, भूख बन्द होने पर, कब्ज में और दूसरी पाचन की खराबियों में लाभ करती है। इसको घी के साथ मिलाकर त्वचा के रोगों में लगाया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ऊपर लिखे गुणों के अतिरिक्त डिमक ने बताया है कि इसका तत्व Piperine विषम ज्वर में बहुत लाभ करता है। यह ३ ग्रेन की मात्रा में दिया जाता है। डा० देसाई ने बताया है कि यह अर्श की उत्तम औषध है और मूत्र की मात्रा को बढ़ाती है।

२२५. चव्य

आयुर्वेदीय पर्याय— चव्यम्, चविका, ऊष्णा,

लैटिन—*Pipe chava*

विवरण—यह लता जातिकी वनस्पति होती है जो आकार में पिप्पली सदृश होती है। इसका काण्ड सख्त होता है और शखाओं पर फूली हुई गांठे होती हैं। इसके पत्ते पान जैसे होते हैं जिनका ऊपर पृष्ठ चिकना होता है। पुष्पदण्ड अनेक शाखा-प्रशाखायुक्त होता है। इसका फल पिप्पली सदृश किन्तु उससे कुछ मोटा एवं लम्बा होता है। कुछ वैद्य इसके फल को 'गज पीपल' कहते हैं। इसका आदिम स्थान फैलाया है। सम्प्रति भारत में विशेष कर बंगाल एवं बिहार में होती है।

प्रयोज्य अंग—मूल, फल मात्रा—चूर्ण ५ से १० रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाक होती है। कफवात शामक, पित्त वर्धक, दीपन, पाचन, अनुलोमन, कृमिघ्न है।

यह अर्श के लिए विशेष उपयोगी कही गई है। उदर विकार, आलाद, अजीर्ण, अग्निमान्द्य कास एवं श्वास में लाभ करती है।

आधुनिक मत—कर्नल चौपड़ा के मतानुसार इसका फल सुगन्धित, उत्तेजक और पेट के अफारे को दूर करता है। जुकाम एवं खांसी में लाभ करता है।

२२६. पान

आयुर्वेदीय पर्याय—नागबल्लरी, ताम्बुल यूनानी—तंबूल

अंग्रेजी—Betel लैटिन—*Piper Bettle*

विवरण—इसकी फैलने वाली लता होती है जिसका तना सख्त और मजबूत होता है। इसके पत्र ३ से ८ इंच लम्बे, हृदय की आकृति के और अग्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भाग में नोकीले होते हैं। ३-६ इंच लम्बे डंठल में एक लिंग वाले फूल लगते हैं। इसमें छोटे लगभग $\frac{1}{4}$ इंच के फल लगते हैं। भिन्न २ प्रदेश में पैदा होने के कारण इसकी कई जातियाँ होती है। पान गर्म और तर प्रदेशों में पैदा होता है। यह बिहार, बंगाल, उड़ीसा, दक्षिण भारत और लंका में पैदा होता है।।

प्रयोज्य अंग—पत्ता **मात्रा**— १/२ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—यह तिक्त कषाय रस, विशद, तीक्ष्ण, सर एवं लघु गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह रूचि उत्पन्न करता, बल बढ़ाता एवं रक्तपित्त को प्रकुपित करता है। कफ, मुख की दुर्गन्धता, मल, वात तथा श्रमनाशक है। यह क्षारीय होता है।

आधुनिक मत—लसमें उड़नशील तैल, जिसे 'पान का तैल' कहते हैं, इसमें तारपीन और फेनाइल जैसे पदार्थ होते हैं।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह उत्तेजक, पाचक, पाक हटाने वाला है। यह पेट के अफारे, मुँह की दुर्गन्ध, अपचन, पेट में दर्द में चबाया जाता है। इसके उड़नशील तैल में एक तो सुगन्धित होता है जिसे Betel oil कहते हैं और दूसरा शीघ्र उड़ जाने वाला तत्व जिसे चविकल बहुत अच्छा एन्टिसेप्टिक है। यह कार्बोनिक एसिड से ५ गुना अधिक और एजिनोल से दुगना अधिक काम करता है। पान का रस भी एन्टिसेप्टिक होता है। यह कफ के रोग रोहिणी और गले के रोगों में लाभ करता है।

२२७. पीपल

आयुर्वेदीय पर्याय—पिप्पली कणा, कृष्णा, चपला, **यनानी**—दारफिलफिल
अंग्रेजी—Long Pepper **लैटिन**—*Piper Longum*

विवरण—पीपल की लता होती है। यह जमीन पर फैलती है या दूसरे वृक्षों के सहारे उपर चढ़ जाती है। पत्ते २-३ इंच लम्बे पान के पत्तों जैसे होते हैं। इन पर पांच सिराएँ होती हैं। इस में फूल एकलिंगी होते हैं। पुरुष जाति के फूल १ से ३ इंच लम्बे डंठल में लगे रहते हैं जब कि स्त्रीजाति फूल का डंठल १/२ से १ इंच लम्बा होता है। यह फूल बरसात में लगते हैं। सर्दियों में लम्बे फूल लगते हैं जो पक जाने पर लाल रंग के होते हैं—यह फल सूख

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाने पर काले रंग के होते हैं। इस की जड़ को 'पिप्पली मूल' या 'पीपला मूल' कहा जाता है। यह बंगाल, बिहार, आसाम, ट्रावनकोर, नेपाल, भूटान, मलाया, सिंगापुर में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग--फल, मूल, **मात्रा**—चूर्ण ५ से १० रत्ती।

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, स्निग्ध एवं लघु गुण, अनुष्ण वीर्य एवं मधुर विपाक होती हैं। आद्र पिप्पली मधुर, गुरू एवं स्निग्ध तथा शीतल होती है। आद्र कफकारक व पित्त शामक होती हैं जब कि शुष्क वातकफ शामक और पित्तकारक होती है। यह अग्निवर्धक, वीर्य वर्धक तथा रेचक होती है। यह कास, श्वास, ज्वर, उदररोग, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, अर्श, प्लीहा, शूल और आमवात को ठीक करती है।

शहद के साथ पीपल खाई जाए तो यह मेदरोग और कफ नाशक होती हैं। यह वीर्य वढ़ाती है। बुद्धि तथा अग्नि को बढ़ाती तथा कास-श्वास ज्वर को शान्त करती है।

गुड़ के साथ पीपल का प्रयोग किया जाए तो खांसी, अजीर्ण, अरूचि, हृदय रोग, पाण्डु रोग, कृमिरोग तथा जीर्ण ज्वर का नाश होता है।

आधुनिक मत—इस में रेजिन, उड़नशील तैल, स्टार्च, गोंद, एलकलायड़ होते हैं।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह उत्तेजक, पाचक, मृदु रेचक और रसायन गुण वाली होती है। यह फेफड़ों के रोग और पुरानी खांसी में लाभ करती है। अजीर्ण में प्लीहोदर में और उदर के दूसरे अवयवों की शोथ में लाभ करती है। 'गाउट' और 'लम्बेगो' में लाभ करती है। इसको पाषाणभेद के साथ पीसकर चुचक पर लगाने से दूध ज्यादा आता है।

पीपलामूल

आयुर्वेद में पीपलामूल का वर्णन अलग किया गया है। इसे कटुरस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक माना है। कफवातशामक, पित्तकारक, दीपन, पाचन, मलभेदक होता है। उदररोग, आनाह, गुल्म, कृमि, श्वास और क्षय नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PLANTAGINACEAE FAMILY अश्वगोलादि वर्ग

पुष्प—पुष्प बाह्यकोश एवं पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल, ४-५ पुंकेशर—४,

फल—बिदारी

बीज—बहुत पानी में डालने से लुग्राब करने वाले

२२८. ईसबगोल

अंग्रेजी—Spogel Seeds. **लैटिन**—*Plantago Ovata*

विवरण—यह एक वर्षायु क्षुप होता है जिसका तना सख्त होता है और रोमावृत होता है। इसके पत्र लम्बे होते हैं, दन्तुर होने हैं जिनमें तीन सिराएँ होती हैं। फूल अण्डाकार और सूक्ष्म रोग युक्त होते हैं। बीजकोश द्विकोष्ठी होता है और प्रत्येक में एक बीज निकलता है। यह बीज हलके गुलाबी रंग के होते हैं जो देखने में घोड़े के कान के सदृश दिखाई देते हैं। बीजों से छिलका (भूसी) अलग करके भी प्रयोग करते हैं। यह ईरान, सिन्ध एवं पंजाब में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज, भूसी **मात्रा**—१/२ से १ तोला

गुण-कर्म—यह वातपित्त पर शामक कर्म करती हैं। यह अन्न नलिका की रूक्षता को दूर करती और पिच्छिल के कारण मल को बहार निकलने में सहायक देती है। आन्त्रगत व्रणों पर इसका आवरण बन जाता है। यह मूत्रल एवं दाह नाशक हैं। बल्य एवं बृहंण है।

प्रायः अतिसार, प्रवाहिका, मूत्रकृच्छ, तृष्णा, दाह, ज्वर आदि में प्रयोग करते हैं। शुष्क कास में भी लाभ होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PLUMBAGINACEAE FAMILy चित्रकादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः क्षुप

पत्र —आभिमुख या एकान्तर सादे

पुत्र —पुष्प बाह्य कोश के दल-५, नीचे से जुड़कर नलिकाकार हुए छोटी २ ग्रन्थियों से युक्त, पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल-५, पुकेंशर ५, स्त्रीकेशर १.

फल —छोटे और कठिन

२२९. चित्रक

आयुर्वेदीय नाम—चित्रक, अनल, व्याल **यूनानी**—शीतरज

अंग्रेजी—Lead wort. **लेटिन**—*Plumbago Zeylanica.*

विवरण—इसका पौधा ४-६ फुट ऊँचा होता है। जिसका तना गोल, पतला, मुलायम और गाँठदार होता है। पत्र एक तरफ लगे हुए लम्बे, गोल लगभग ३ इच लम्बे और १$\frac{1}{2}$ इंच चौड़े होते हैं। एक ४-१२ इंच लम्बा डठल होता है जो कई शाखाओं में विभक्त होता है। इसमें सफेद रंग के बिना गन्ध वाले फूल गुच्छों में लगे रहते हैं। इसमें फली जैसा फल लगता है जिसमें लम्बा-सा बीज निकलता है। यह बंगाल,, उत्तर-प्रदेश, लंका में पैदा होती है। पुराने शास्त्रों में फूल के रंग के अनुसार चार प्रकार की चित्रक बताई है—ऊपर सफेद रंग की चित्रक का वर्णन किया है। पीले रंग के फूल वाली, काले रंग के फूल वाली और लाल रंग के फूल वाली तीन प्रकार की अन्य होती हैं। लाल रंग वाली को Plum-bago Rosea कहते हैं। यह खासिया की पहाड़ियों में, सिक्कम में पैदा होती है।

प्रयोज्य अग—जड़ की छाल **मात्रा**—२ से ८ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होती है। वातकफ शामक व पित्त वर्धक है। अल्प मात्रा में यह नाड़ी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दुर्बलता और वातव्याधि पर अच्छा कार्य करती है और अधिक मात्रा में मादक कर्म करती है। यह दीपन, पाचन, पित्तसारक, संग्राही व कृमिनाशक है। शोथ, कास, जुकाम में लाभ करती है। औरतों को रुकी हुई महावारी, प्रसूता के रोग और मक्कलशूल में लाभ करती है। पुराने ज्वर व विषम ज्वर में लाभ करती है। शोथ, श्वित्र व कुष्ठ आदि दूसरे त्वचा के रोगों में लाभ करती है।

आधुनिक मत—इसमें Plumbagin and acric Principle होते हैं। डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि चित्रक रसायन, पाचक व अग्नि-वर्धक है। इसकी जड़ शोथ, संग्रहणी, अजीर्ण, अग्निमन्दता में व्यवहार की जाती हैं। इसका लेप आमवात, कुष्ठ और वातव्यादि में लाभ करता है। कच्चा व्रण इसके लेप करने से पक जाता है। योनि मार्ग में इसके प्रवेश से गर्भस्राव हो जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

POLYGONACEAE FAMILY चुक्रादि वर्ग

स्वरूप—कांड गोल

पत्र —एकान्तर, सवृन्त

पुष्प —पुंकेशर ५-६, एक या दो चक्रों में, बीजकोश २-३ खण्डों वाला, उर्ध्वस्थ

२३०. अञ्जुबार

Polygonum Aviculra

विवरण—इसका पौधा कम लम्बा होता है जिसमें शाखाएँ फैली रहती हैं। इसके पत्र नरम होते हैं और बरछी के आकार के होते हैं। इसके फूल लाल रंग के धब्बेदार होते हैं जो छोटे और तिकोने होते हैं। यह हिमालय पर्वत पर ६ हजार फुट से १२ हजार फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—मूल **मात्रा**—२ से ६ माशा

गुणकर्म—यह रक्तस्राव को रोकती है; विशेष कर फुफ्फुस, छाती, अर्श और पुराने दस्तों में निकलने वाले रक्त को रोकती हैं। ज्वर हटाती है एवं मूत्रल है। पेट की जलन और मूत्राशय के विकार में लाभ करती है। हाथीपाँव और विसर्प में लाभ करती है। यह उष्णप्रकृति वालों को हानि पहुँचाती, इससे बचने के लिए इसके साथ सौंठ मिलाकर देनी चाहिए। आयुर्वेद के ग्रन्थों में इसका वर्णन नहीं मिलता है, यूनानी के पुराने 'हकीम डिसकोरिड्स' और 'प्लाइनी' ने इसका वर्णन किया है।

आधुनिक मत—इसमें 'पोलीगॉनिक एसिड़', 'टेनिक एसिड़', 'गैलिक एसिड़', 'केल्शियम ऑक्सलेट' और उड़नशील तैल पाया जाता है।

कर्नल चोपड़ा के मत से यह संकोचक व कृमिनशाक है। यह शोथ ठीक करती और संकोचक होती है। इसका क्वाथ प्रदर में लाभ करता है।

२३१. चूका

आयुर्वेदीय नाम—चुक्र, चुक्रिका, पत्राम्ला, शतवेधनी **यूनानी**—हुम्माज

अंग्रेजी—Couutry So-rel. **लैटिन**—*Rumex Vesicarius*.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका पौधा ६ से १२ इंच लम्बा होता है। पत्र अण्डाकार १ से ३ इंच लम्बे होते हैं। इसमें ३ से ५ धारियाँ होती हैं। छोटे, सफेद या लाल रंग के फल आते हैं। फल में छोटे २ बीज आते हैं। इन बीजों को यूनानी में 'तुख्म हुम्माज' कहते हैं। यह सारे भारत में विशेष कर पहाड़ी प्रदेशों या उनकी तराइयों में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—रस व बीज **मात्रा**—रस ३ से ५ तोला, बीज ३-६ माशा

आयुर्वेदिक मत—मधुर अम्लरस, लघु रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और अम्लविपाक है। इसके बीज पिच्छिल और शीत होते हैं।

चूका वातनाशक, कफपित्तकारक, रुचिकारक, दीपन, वातगुल्मनाशक होता है। इसका शाक बैंगन के साथ मिला कर खाया जाए तो अधिक रुचिकारक होता है।

आधुनिक मत—इसकी जड़ में 'Rumiciu' और 'Lapathin' नामक दो तत्व होते हैं जिनके गुण 'क्राइसोफेनिक एसिड़, जैसे होते हैं।

२३२. रेवन्दचीनी

अंग्रेजी—Indian Rhubarb **लैटिन**—*Rheum emodi*

विवरण—इसका पौधा ५-६ फुट ऊँचा होता है जिसका रंग हरा, मिटेला होता है। इसका तना मोटा होता है, सख्त होता है। इसमें शाखाएँ और पत्र लगे होते हैं। यह पत्र एक सख्त डंठल में जो १२ से १८ इंच लम्बा होता है; में लगे रहते हैं। पत्र पीपल के पत्रों जैसे लेकिन उससे कुछ कम चौड़े होते हैं। इसमें मदार के जैसे फूल लगते हैं और १/२ इंच लम्बे बैंगनी रंग के फल लगते हैं। इसकी जड़ मोटी, सख्त और भूरे पीले रंग की होती है। इसकी शाखाओं को गूँथ कर बाजार में वेचा जाता है। यह "अम्लबेंत" कहलाती हैं। यह हिमालय में काश्मीर से नेपाल तक ७ से १२ हजार फुट की ऊँचाई पर मिलती है। सिक्कम, चीन, तातार, खोतान में भी होती हैं।

प्रयोज्य अंग—मूल और अम्लबेंत **मात्रा**—१ से ३ माशा

गुणकर्म—यह जैसी चीजों के साथ मिलाया जाए वैसा ही काम करती है। क्योंकि यह रेचक भी है और विबन्ध भी करती है।

इसका वाह्य प्रयोग त्वचा के रोगों को मिटाता है, शोथ को मिटाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसे सिरका में पीसकर झाईं, दाद, त्वचा के दाग और धब्बों पर लगाया जाता है। इसका लेप शोथ को हटाता है।

मुख द्वारा प्रयोग करने से यह फेफड़ों से कफ निकालती है। खांसी, दमा, कफ के रोगों में लाभ करती है। कम मात्रा में देने से यह आमाशय को ताकत देती, वायु को निकालती और विबन्ध पैदा करती है। यह शरीर को बल देती एवं यकृत को बल देती है। अधिक मात्रा में देने से लाल रंग के दस्त लाती और अन्त में कब्ज करती है। यह पैशाब ज्यादा लाती और मूत्र विषयक रोगों को दूर करती है। यह औरतों को मासिक स्राव लाती है। कमजोर लोगों को इससे दस्त दिलाना अच्छा नहीं होता है।

आधुनिक मत—इसकी जड़ में 'क्राइसोफेनिक एसिड़', 'एमोड़िन', 'रैपोण्टिसिन', 'रिआे-टैनिक एसिड़', टैनिक व गैलिक एसिड़ आदि तत्व होते हैं।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि रेवन्दचीनी पश्चिमी चिकित्सा-शास्त्र में एक दस्तावर दवा के रूप में प्रयोग होती है। बच्चों के रोगों में यह एक उपयोगी और घरेलू दवा मानी जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

POLYPODIACEAE FAMILY हंसराजादि वर्ग

यह अपुष्प वनस्पति का वर्ग है।

२३३. बिस्फेज

Polypodiumvulgare

विवरण—यह एक छोटी जाति की वनस्पति है जिसके पत्र कंगूरेदार होते हैं। इसमें अनेक मूल होते हैं। ताजी हालत में इसके मूल का रंग हरा और सूखने पर भूरा हो जाता है। इसमें कुछ पीताभा होती है। इस के मूल की प्रत्येक गांठ में बारीक २ सूत्र लगे रहते हैं। अच्छी जड़ वह होती है जो मोटी और ताजी हो तथा ऊपर से रक्ताभ और पीलापन लिए हो। अन्दर से पिस्ते के मगज़ की जैसी हो। चबाने से उसका स्वाद कुछ कड़वा और मीठा हो और जिह्वा में संकोच पैदा करे। यह यूरुप, अमरीका और तुर्की में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़ मात्रा—५ से १० रत्ती

गुण कर्म—दिल को ताकत देती और प्रसन्न करती है। दिल और दिमाग की खराबी ठीक करती है। यह वायु-कफ-रक्त के विकारों और उदर विकारों को ठीक करती है। आमवात और कुष्ठ में लाभ करती है। अनीसून और मुलहठी के साथ उबाल कर पीने से लाभ करती है। इसका जोशांदा कालिक पेटदर्द को मिटाता है। इसको अमलतास के साथ लेने पर बवासीर, पेट के पुराना दर्द और अपस्मार में लाभ होता है। इसे अधिक मात्रा में खाने से मतली पैदा होती है, छाती और वृक्कों को हानि पहुँचाता है। यह पेट में जलन पैदा करती है।

आधुनिक मत—इसमें उड़नशील तैल होता है। इसमें ब्युटिरिक, हेक्सोइक ल्युरिक और सक्सनिक एसिड़ होते हैं।

यह पित्त को पतला करता, दस्त साफ करता और पेट के कीड़े मारता है।

२३४. हंसराज

आयुर्वेदीय नाम—हंसपदी, कीटमारी, रक्तपादी यूनानी—परसियावशां

अंग्रेजी—MaidenHair लैटिन—*AdiantumLunulatum*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका पौधा १ से २ फुट ऊँचा होता है जिसकी शाखाएं लाल रंग की, पतली और मुलायम होती हैं। छोटे २ पक्षाकार पत्तों के किनारे कुछ गोलाकार और कटे हुए होते हैं। पत्तों से ही नए पौधे पैदा हो जाते हैं। इसकी जड़ मुलायम और लाल रंग की होती है। यह पानी के स्थानों में और पर्वतों के शीत स्थानों में पैदा होता है। इसमें पुष्प फल नहीं होते।

प्रयोज्य अंग—पञ्चाँग

मात्रा—स्वरस $\frac{1}{2}$ से १ तोला, चूर्ण १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—मधुर-तिक्त-कषाय रस, गुरु-स्निग्ध गुण, शीतवीर्य, मधुर विपाक होता है।

यह रक्त विकार, विष विकार, व्रण विकार, विसर्पदाह, अतिसार, शोथ, लूता विष, अग्नि रोहणी में लाभ करता है।

आधुनिक मत—आज के वैज्ञानिकों ने इसके विषय में लिखा है कि यह मृदुरेचक, मूत्रल एवं मासिक स्राव नियामक है। कास, श्वास एवं पसली के दर्दों में लाभ करता है। इसकी जड़ का क्वाथ बनाकर प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PORTULACEAE FAMILY लोणिकादि वर्ग

स्वरूप—क्षुप

पत्र —मांसल और अखण्ड़

पुष्प —पुष्प बाह्यकोश के दल–२ पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४–५ पुंकेशर—४ या अधिक, स्त्रीकेशर—१

२३५. चाय

अंग्रेजी—Tea plant **लैटिन**—*CamelliaTheifera*

विवरण—चाय के पौधे ४ से ६ फुट तक ऊँचे होते हैं जिस के पत्र सदैव हरे रहते हैं। इन पत्तों को तोड़कर मशीनों के द्वारा इनको काटकर रस निकाल कर और शुष्क कर के बाजारों में बेचने योग्य बनाया जाता है। यह शीघ्र सूखने पर हरे रंग की और देर तक सूखने पर काले रंग की होती है। इसकी बहुत क्वालिटियाँ होती हैं। चाय आसाम, चीन, जापान, इंगलैण्ड, अमेरिका में होती है।

गुण कर्म—यह श्रमहर, उष्ण, आनन्द प्रद एवं स्वेदकारक है। अधिक सेवन से हृदय, मस्तिष्क, वातनाड़ियों एवं पाकस्थली की क्रिया में विघात पैदा करती है और अरुचि, वमन, आध्मान, ग्रहणी हस्तपादकंप, मुखविवरणता, नाड़ी क्षीणता, मत्तता, स्वप्नदोप आदि विकारों को उत्पन्न करती है।

नाइट्रोजन व हाइड्रोजन युक्त खाद्य पदार्थ चाय के पान से पच जाते हैं। चाय में टैनिन नामक पदार्थ रहता है जो आहार द्रव्य में मिलकर अव्यवस्था पैदा करता है, अतः संग्रहणी व कोष्ठबद्धता पैदा होती है।

मूर्च्छा, अनिद्रा, हृत्स्पन्दन, हृदय के कोष्ठों की विकृति व मस्तिष्क रोग वालों के लिये चाय बहुत हानि करती है।

डा० डिमक का कहना है कि पहले यह विश्वास किया जाता था कि चाय में 'थाइन' नामक तत्व हैं जो शरीर के क्षय को मिटाती है किन्तु बाद में डा० एडवर्ड स्मिथ ने बताया कि यह श्वास की वृद्धि करती और शरीर का क्षय करती है। डा० एड़वर्ड स्मिथ ने बताया है कि चाय माँस उत्पादक है एवं भोजन के पाचन में सहयोग देती है। बहुत भोजन के अभाव में भी चाय से शरीर का क्षयहोता है। सिर दर्द, न्यूरलजिया, वात नाड़ीजन्य अन्य पीड़ाओं में चाय उत्तेजक औषधि के रूप में लाभ करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

PUNICACEAE FAMILY दाड़िमादि वर्ग

स्वरूप—झाड़ी

पत्र —अमिुख, सादे

पुष्प —शाखाग्रोद्भूत, अकेला या गुच्छों में, पुष्प वाह्य कोष—रंगीन नलिकाकार, पुष्पाभ्यन्तर कोष के दल ५-७

फल —गोलाकार, बहुबीज युक्त

अनार

आयुर्वेदीय पर्याय—दाड़िम, दन्तबीज, लोहित पुष्पक यूनानी—रूम्मान

अंग्रेजी—Pome Granate लैटिन—*Punica Granatum*

विवरण—इसका वृक्ष १०-१५ फुट ऊँचा होता है जिसमें छोटे २ पत्र लगभग २-३ इंच लम्बे और १ इंच चोड़े होते हैं, दोनों किनारों पर नोकीले होते हैं। इसमें लाल रंग के फूल आते हैं और गोलाकार फल लगते हैं। फल में बीज होते हैं जिनमें रस भरा रहता है। यह अफ्रीका, काबुल, ईरान में अधिक होता है। अब भारत में भी पैदा होने लगा है।

प्रयोज्य अंग—फल, मूलत्वक्, फलत्वक, पुष्प, पत्र

मात्रा—स्वरस, २ से ५ तोला, क्वाथ ४ से ८ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर कषाय, अम्लरस, लघु स्निग्ध गुण, अनुष्ण वीर्य एवं मधुर विपाक है। मधुर फल त्रिदोष नाशक है। तृष्णा, दाह, ज्वर का नाश करता है। हृदय रोग, कण्ठ रोग एवं मुख रोग नाशक है। यह तर्पण करता एवं शुक्रल होता है। यह ग्राही है तथा बल, बुद्धिवर्धक है।

मधुराम्ल फल दीपन, रूचिकारक एवं कुछ पित्तकारक होता है। अम्ल दाडिम पित्तकारक, आमवात नाशक एवं कफ नाशक होता है।

आधुनिक मत—डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि यह ग्रहणी एवं ज्वर में लाभ करता है। अनार का छिलका या फूल लेकर उसमें जावित्री, दालचीनी, धनिया, मिर्च मिलाकर बच्चों के पुराने अतिसार में देते हैं। अनार के फूल को इनके रस के साथ पीसकर देने से नासिका से रक्तस्राव रूक जाता है। मूल त्वक् क्वाथ स्फीताकार उदर कृमि का नाश करने के लिए प्रयोग करते हैं। डा० डिमक ने भी इसे उदर कृमि की अव्यर्थ औषध बताया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

R

RANUNCULACEAE FAMILY वत्सनाभादि वर्ग

स्वरूप—प्राय: क्षुप, कहीं २ लता

पत्र —पर्ण विन्यास मूलोद्भव, एकान्तर, क्वचित् अभिमुख

पुष्प —पूर्ण, दल ५ एवं रंगीन, पुंकेशर अनियत स्त्रीकेशर अनेक

मूल —कन्द, क्वचित् सूत्रवत्

२३७. अतीस

आयुर्वेदीय पर्याय—प्रतिविषा, विषा, शृंगी, घुनवल्लभा यूनानी—वज्जिुरकी

लैटिन—*Aconitum Heterophylum*

विवरण—आधुनिक विज्ञान ने इसे विष वर्ग में माना है। परन्तु आयुर्वेद के विषों में इसकी कहीं गणना नहीं की और न ही इससे कोई विषाक्त लक्षण ही होता है।

इसका क्षुप २ से ४ फुट ऊँचा होता है। इसका तना सीधा और शाखाएँ चपटी होती हैं। पत्र २ से ४ इंच लम्बे अण्डाकार या हृदयाकार होते हैं। पौधे के नीचे के पत्र बड़े और पांच भागों में बँटे और ऊपर के पत्र छोटे, दन्तुर किनारे के होते हैं। इसमें नीले, हरे रंग के एक डेढ़ इंच लम्बे, चमकदार, बैंगनी धारी के फूल लगते हैं जो बहुत सारे होते हैं। इसका फल पांच कोष्ठों वाला होता है। इसकी जड़ में प्राय: दो जड़ें निकलती हैं जो १ से २ इंच लम्बी और $\frac{1}{2}$ इंच मोटी होती है। जड़ का ऊपरी भाग मोटा और नीचे का कुछ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पतला होता है। यह भूरे रंग की, तोड़ने पर अन्दर से सफेद और बीच में ४-५ बिन्दियों वाली होती है। पुराने ग्रन्थों में इसकी तीन जातियाँ बताई हैं, सफेद, लाल और काली, सफेद ही उत्तम होती है। यह हिमालय में ६-१२ हजार फुट ऊपर, सिन्ध से कुमाऊँ तक पैदा होती है। अतीस के लिए एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि इसे कीड़े लगने का डर होता है, अतः इसको बालु (रेत) में रख देना चाहिए।

प्रयोज्य अंग—जड़ (कन्द) **मात्रा**—५ से ३० रत्ती

आयुर्वेदिक मत—तिक्त और कटु रस, लघु और रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक है। पित्तकफ शामक, दीपन, पाचन, छर्दि, निग्रहण, संग्रहि, अर्शोघ्न, रक्तस्तम्भक, रक्तशोधक, ज्वरघ्न, वाजीकरण है। बाल रोगों के लिए यह उत्तम औषध है। विशिष्ट योग अतिविषादि चूर्ण, बाल चतुर्भद्रा।

आधुनिक मत—रासायनिक विश्लेषण से इसमें अतीसिन (Atisine), एकोनाइटिक एसिड (Aconiticacid) टैनिक एसिड (Tannicacid) पैक्टीन (Pectin) आदि तत्व पाए हैं। साथ ही साथ स्टार्च, फेट, चीनी और क्षार भी मिले हैं। कुछ ग्लिसराइडों (Glycerides) का मिश्रण भी होता है। (R. N. Khory)

डा० कोमान ने इसे पेचिश और आंतों की सूजन के लिए श्रेष्ठ बताया है। कर्नल चोपड़ा का कहना है कि यह मुख्यतः नियत काजल ज्वर निवारक और पौष्टिक (Tonic) है। डा० डिमक ने कम मात्रा में (Tonic) और २ ड्राम या इससे ज्यादा मात्रा में Antiperodic माना है। क्षौरी के मतानुसार मलेरिया में इसका प्रयाग करने से लाभ होता है, लेकिन क्युनाइन से हलका असर करता है।

२३८. ऊदसलीब

अंग्रेजी—Official Peony **लैटिन**—*Peonia emodi*

विवरण—इसका पौधा १ से २ फुट ऊँचा होता है। इसमें ६ से १२ इंच लम्बे पत्ते होते हैं जो २-३ भागों में बंटे रहते हैं। फूल लम्बे, टेढ़े और बैंगनी रंग के डंठल पर लगते हैं—जिसमें पत्तियाँ ५ से १०, सफेद रंग की और आगे से कटी हुई होती हैं। फलों का रंग नीला होता है। फूल मई के महिने में आते

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हैं। इसमें १-३ इंच लम्बे और $\frac{1}{2}$ से $\frac{3}{4}$ इंच मोटे गाय की पूंछ के आकार के फल होते हैं। इनमें गाँठें होती हैं जिनमें बीज निकलते है। यह दाने रक्ताभ वर्ण के होते हैं और इस की जड़ सफेद रंग की निकलती है। यह काश्मीर से कुमाऊं तक पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल, बीज **मात्रा**—१ से ३ माशा

गुण कर्म—इस में तिक्त और कषैला रस होता है। पुराने हकीम इसे अपस्मार, गर्भाशय के रोग, आक्षेप और जलोदर की दवा के रूप में प्रयोग करते रहे। यह मूत्राशय के रोगों को दूर करता और मूत्र की मात्रा बढ़ाता है तथा बच्चों की पत्थरी तोड़ता है। इस से मासिक स्राव आने लगता है। दूध के साथ लेने पर यह रक्तविकारों को ठीक करता है।

आधुनिक मत—इसमें एक उड़नशील तेल, चीनी, चर्बी, मैलेट, आक्जलेट फास्टफेट और टेनिन होते हैं।

डिमक ने लिखा है कि हकीम जालीनूस के समय में इसके बीजों का ताबीज अपस्मार दूर करने और बच्चों के दान्त आसानी से निकल आने के लिए पहनाते थे।

कर्नल चोपड़ा के ख्याल में यह पेट दर्द और पित्त के रोगों को दूर करने वाला, दस्तावर और उलटी लाने वाला है। अपस्मार में इसका प्रयोग किया जाता है। यह सूजन मिटाने वाला है।

२३९. कलौंजी

आयुर्वेदीय पर्याय—कालाजाजी, उपकुंचिका, पृथ्वीका, **यूनानी**—शोनीज

अंग्रेजी—Small Fuuuel **लैटिन**—*Nigella Sativa*

विवरण—इसके पौधे सौंफ या धनिये की तरह खेतो में बोए जाते हैं। जिसमें दोनों तरफ पत्ते जोड़े से निकलते हैं। इस में सफेद, नीले या पीलापन लिए हुए फूल निकलते हैं। फल गोल होते हैं जिनमें तिकोने, काले रंग के गन्ध वाले बीज निकलते हैं। बीज की झिल्ली उठाते ही अन्दर सफेद रंग का गूदा दिखाई देता है। वास्तव में यह पौधा दक्षिणी यूरोप का है, वैसे अब सारे यूरोप में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—इस के बीज काम में आते हैं **मात्रा**—१ से ३ माशा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत — यह कटुतिक्त रस, लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। कफ वातशामक, वेदनास्थापन, रोचन, दीपन, पाचन, अनुलोमन, ग्राहि और कृमिघ्न है। यह गर्भाशय संकोचक, स्तन्यजनन, मूत्रल, और स्वेदजनन है।

आधुनिक मत – इसके बीजों में ३७·५% फिक्स ग्रायल; १·५% वालेटायल ग्रायल, ग्रल्ब्युमिन, मुसिलेज, ग्रार्गेनिक एसिड, मेटार्बिन, मेलान्थिन, ग्ररेबिक एसिड ग्रादि तत्व मिले हैं।

डा० आर० एन० क्षौरी ने इसे कृमिनाशक, मूत्रकारक, दुग्ध वर्धक, मासिक स्राव कराने वाली और वायुनाशक कहा है।

कर्नल चोपड़ा का कहना है कि बिच्छु के डंक पर भी यह औषधि उपयोगी है। खुजली और दूसरे चर्म रोगों पर इस का लेप किया जाता है।

कोमान का कहना है कि यह प्रसूतावस्था में लाभ करती है।

Beng. Pharm. की एक official preparation Tincture of Mugrela में कलौंजी पड़ती है।

२४०. निर्विषी

आयुर्वेदीय नाम—निर्विषी, विषहा, विषभवा **यूनानी**—जद्वार
लैटिन—*Delphinium Denudatum.*

विवरण—यह बहुत शाखाओं वाला २-३ फुट ऊँचा पौधा है, इसके पत्र धनिए के पत्रों की तरह छोटे, बड़े डंठल वाले और ५-६ पक्षाकार भागों में बँटे रहते हैं। इसमें बसन्त के शुरू में फूल ग्राते हैं जो छोटे और नीले से रंग के होते हैं। इसमें फल लगता है जो १ से ७ तक बीज वाला होता है। इसकी जड़ १ से १$\frac{1}{2}$ इंच लम्बी, तकवा की तरह की धूसर रंग की होती है।

यूनानी के ग्रन्थों में इसकी पाँच जातियाँ बतलाई हैं जिनमें जद्वार खताई ग्रौर जद्वार ग्रकरवी मुख्य हैं। जद्वार खताई को जीभ पर रखा जाए तो उसका स्वाद पहले मीठा ग्रौर बाद में कड़वा लगता है। जद्वार खुरासान, तिब्बत, नेपाल में पैदा होती है। यह काश्मीर से कुमाऊँ तक पैदा होती है।

यूनानी हकीमों का कहना है कि जद्वार में नकली चीजें भी मिलाते हैं, ग्रतः उसका रंग एवं स्वाद देखकर लेना जाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—४ से ८ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—इसका विशेष वर्णन यूनानी के ग्रन्थों में किया गया है। राजनिघंटुकार ने निर्विषा को कटु, उष्ण और कफवात और रक्त विकारों को दूर करने वाला कहा है। अनेक विष दोषों को दूर करती और व्रण संरोहण करने वाली कहा है।

आधुनिक मत—इसमें दो मुख्य क्षार तत्व बतलाए हैं—(i) Delphinine (ii) Staphisagrine. डा० चोपड़ा आदि के ख्याल में यह तिक्त, उत्तेजक, रसायन, बलकारक, दाँतों का दर्द दूर करने वाला और बचछनाग के विष को दूर करने वाला माना है।

२४१. बचछनाग

आयुर्वेदीय नाम—वत्सनाभ, विष, **यूनानी**—बिस सलगमी
अंग्रेजी—Aconite. **लैटिन**—*Aconitum Ferox.*

विवरण—इसका पौधा १ से २ फीट ऊँचा होता है, जिसके पत्र तरबूज की तरह के किन्तु उससे कुछ छोटे होते हैं। पत्रों पर रोम होते हैं। तने के दोनों तरफ फूल लगे होते हैं; फल के डंठल सीधे होते हैं और फूल का बाह्य भाग नीले रंग का और रोमवाला होता है। बाहर से देखने पर फूल मटर के फूल जैसे लगते हैं। इसका फल हुलहुल के फल के जैसा काँटेदार, छोटा और मोटा होता है जिसमें काले रंग के बीज निकलते हैं। इसकी जड़ १ से ३ इंच लम्बी $\frac{1}{4}$ से १ इंच मोटी, बाहर से धूसर रंग की और भीतर से कुछ सफेद, चिकनी और चमकीली होती है।

प्राचीन आयुर्वेदिक पुस्तकों में लिखा है, "जो जड़ गाय के थन जैसी हो, पाँच अंगुल से बड़ी न हो, थन से मोटी भी न हो वह मिट्टी के रंग वाला बचछनाग होता है।" (र० र० स०) भावप्रकाश ने लिखा है कि इसके पौधे के पास और पौधे पैदा नहीं होते। विशेष बात यह है कि जिस जगह यह पैदा होता है उसके पास की जमीन काली और चिकनी नजर आती है। इसमें फूल आने पर कोई जानवर इसके पास नहीं आता, एक किस्म का चूहा इसमें रहता है जो इसे खाकर जीवित रहता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बच्छनाग हिमालय प्रदेश में सिक्कम से गढ़वाल तक १० से १४ हजार फीट की ऊँचाई तक पैदा होता है। इसकी लगभग १८० जातियों का पता अब तक लग चुका है।

प्रयोज्य अंग—जड़ को शुद्ध करके मात्रा—१।८ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, रूक्ष, तीक्ष्ण, लघु, व्यवायि, विकाशी गुण, मधुर विपाक और उष्णवीर्य होता है। विशेषकर वात कफ शामक है। उचित मात्रा में रुचिकारक, दीपन, पाचन शूल प्रशमन है। शुद्ध हृदयोत्तेजक, रक्तभारवर्धक और शोथ नाशक है। मूत्रजनन, आतर्वजनन, बल्य, बृहंण, ज्वर-नाशक और कुष्ठघ्न है।

विशिष्ठ योग—मृत्युञ्जय रस, आनन्द भैरव रस, रामबाणरस।

आधुनिक मत—रासायनिक विश्लेषण करने पर इसमें निम्न तत्व मिले हैं—Pseudo Aconitine जो अधिक मात्रा में मिलता है। इसके अतिरिक्त एकोनाइटिन, एकोनिन, पिक्रो-एकोनिन, बैन्जोइल-एकोनिन और होमोनेपेलिन कम मात्रा में मिले हैं।

चोपड़ा आदि ने इसे ज्वर, विसूचिका और आमवात की उत्तम दवा माना है। बी० पी० के नुस्खे—इस औषध से कई दवाइयाँ आज आधुनिक चिकित्सक भी प्रयोग में लाते हैं, उनमें से कुछ यह हैं—

1. Linimentum Aconiti. 2. Tinctura Aconiti 3. Aconitina 4. Unguentum Acontinae.

विष लक्षण—अधिक मात्रा में लेने पर कुछ मिनट बाद ही मुँह में और अन्न मार्ग में झुनझुनी और जलन होती है। पसीना ज्यादा आता है, नाड़ी मन्द हो जाती है, साँस तेज हो जाता है। आँखें रुक जाती हैं और आक्षेप आ जाता है। इसमें श्वास रुकने या हृदयगति के रुक जाने से मृत्यु हो सकती है। विष लिए देर न हुई हो तभी वमन करावे, और कस्तूरी, जद्वार, शराब देनी चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

RHAMNACEAE FAMILY

बदरादि वर्ग

स्वरूप—झाड़ी

पत्र— एकान्तर या अभिमुख, सादे, उपपत्र सूक्ष्म, आशु-पाती या कांटों में रूपान्तरित

पुष्प— पुष्प बाह्य कोश या पुष्प आभ्यन्तर कोश के दल ४-५ स्त्रीकेशर १

गर्भाशय १ से ४ कोष्ठी

फल— मांसल और अविदारी

२४२. उन्नाब

आयुर्वेदीय पर्याय—राजबदर

यूनानी—सेलान

अंग्रेजी—Jujuba Fruit.

लैटिन—*Zizyphus Sativa.*

विवरण—यह बेर की जाति का एक वृक्ष होता है जिसके पत्ते बेर के पत्तों के समान, किन्तु कुछ बड़े और वरछाकार होते हैं। यह अफगानिस्तान में बहुत होता है। बगदाद का उन्नाव सबसे अच्छा माना जाता है। इसके फल पकने पर गहरे लाल रंग का हो जाता है और उसमें गुठली होती है।

प्रयोज्य अंग—फल

मात्रा—४ से १० दाने

गुणकर्म—यह एक प्रसिद्ध द्रव्य है जिसे यूनानी हकीम प्रयोग करते हैं। यह शुष्क कफ को आर्द्र करके शरीर के बाहर निकालता है और अधिक कफ बनने को रोकता है, अतः नई व पुरानी खांसी, श्वास संस्थान के दूसरे रोगों को दूर करने के लिए प्रयोग करते हैं। इससे प्यास और जलन मिट जाती है। मृदु रेचक है। रक्त को शुद्ध करता, वृक्क और मूत्राशय के रोगों को दूर करता और यकृत प्लीहा के विकारों को दूर करता है। उन्नाब का चूर्ण वीर्य को कम करता है और मैथुन शक्ति घटा देता है।

आधुनिक मत—फलों में एसिड, स्निग्ध पदार्थ और शर्करा पाई जाती है। कर्नल चोपड़ा का कहना है कि यह शान्तिदायक और कफ निःसारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२४३. बेर

आयुर्वेदीय नाम—बदरीफल, कोल, कर्कन्धु, सौवीर।

अंग्रेजी—Jujuba Fruit. **लैटिन**—*Zizyphus Jujua.*

विवरण—बेर के वृक्ष प्रायः सभी जानते हैं। इस में हरे रंग के पत्ते होते हैं और कांटे होते हैं। फल लम्बे गोल होते हैं। भारत में सर्वत्र होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, मूल, त्वक, पत्र।

मात्रा—मूलत्वक ३ से ६ माशा, पत्र कल्क ६ माशा से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—बड़ा बेर शीतल, दस्तावर, गुरू, शुक्रल, पुष्टिकारक होता है। पित्त, दाह, रूधिर विकार, क्षय, तृष्णा को नष्ट करता है।

कोल बेर (छोटे बेर) ग्राही, रूचिकारक, उष्ण, वातनाशक है। कफ तथा पित्तकारक है। गुरू व रेचक है। कर्कन्धु (झाड़ी बेर) खट्टा, कषैला, किंचित् मीठा, स्निग्ध एवं वात पित्त शामक है।

आधुनिक मत—डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि बेर की छाल संकोचक होती है। अतिसार, प्रदर एवं रक्त प्रवृति को रोकती है। प्रलेप करने से कच्चा फोड़ा पक जाता है। इसकी जड़ की छाल ज्वर नाशक होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

RUBIACEA FAMILY मजिष्ठादि वर्ग

पत्र–अभिमुख, सादे, अखण्डित

पुष्प पुष्प बाह्य कोश एवं पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४-५
शाखाग्र पर पत्र कोणउदभूत

२४४. काफी

अंग्रेजी—Coffee लैटिन—*Coffea Arabica.*

विवरण—इसके पौधे झाड़ी के समान छोटे २ लगभग ८ फुट तक लम्बे होते हैं। यह बगीचों और खेतों में बोए जाते हैं। इसका बीज चपटा और दूसरी तरफ गोल होता है। यह सख्त होता है और मीठी हलकी गन्ध आती है। इस के बीजों को थोड़ा घी लगाकर सेक लेते हैं और फिर पीसकर रख लेते हैं। यह आरम्भ में अरब देश में उत्पन्न हुआ, किन्तु बाद में मद्रास, मैसूर, अफ्रीका, अमेरिका और लंका में भी उत्पन्न होने लगा है।

प्रयोज्य अंग—बीज और पत्ते

मात्रा—बीज १ से $2\frac{1}{2}$ रत्ती, पत्तों का क्वाथ २ से ४ तोला

गुणकर्म—काफी में वैज्ञानिकों ने निम्न तत्व प्राप्त किए हैं केफिन, एडो-नाइन, झन्टाइन आदि। जिनमें केफिन ने चिकित्सा जगत में बहुत उच्च स्थान प्राप्त किया है। इसके द्वारा यह द्रव्य अधिक कार्य करता है।

यूनानी हकीमों का कहना है कि कहवा रक्त की उष्मा बढ़ाता है, और पित्त की तेजी को कम करता है। मृदु रेचक, पित्त के ज्वर, चेचक, खसरा, पीलिया, शीत पित्त, रक्तज रोग, कफज कास को दूर करता है, मूत्र अधिक आता है।

डा० आर० एन० क्षीरी ने लिखा है कि यह दिमाग आमाशय और वृक्कों को उत्तेजना देता है। मृदु रेचक, कोथ नाशक, (एन्टिसेप्टिक), मूत्रल और पथरी को बनने से रोकने वाला है। इससे पेशाब में निकलता हुआ यूरिक-एसिड कम हो जाता है। थकावट दूर होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह हृदय पर उत्तेजक कर्म करती है जिससे रक्त का दबाव बढ़ जाता है और ऐसी अवस्था में जब कि रक्त की गति में कठिनाई हो रही हो, काफी अच्छा काम करती है। यह सांस की क्रिया को भी उत्तेजना देती है। मूत्रल होने के कारण यह जलोदर, सर्वांग शोथ और उरस्तोभ (Wet Pluerisy) में लाभ करती है। कहवा का विशेष तत्व केफिन आज दर्दों के लिए प्रयोग किया जाता है, एस्प्रिन के साथ मिलाकर देने से यह उसके हृदय पर होने वाले घातक प्रभाव नहीं होने देता और अर्धविभेदक तक के दर्दों को ठीक करता है। Strych-nnine के साथ मिला देने से यह श्वास के आक्षेप को ठीक करता है।

अधिक मात्रा में काफी का प्रयोग करने से प्यास, गले में जलन, पेट दर्द, उलटी, दस्त, चक्कर, कम्पन, आक्षेप और अर्धांग तक हो जाता है। ऐसी अवस्था में दूध, घी, मक्खन आदि देने चाहिए।

२४५. कदम्ब

आयुर्वेदीय पर्याय—कदम्ब, नीप, प्रियक, वृत्तपुष्प, हलिप्रिय,

लैटिन—*Anthocephalus Cadamba*

विवरण—इसके पेड़ ५०-६० फुट ऊँचा गहरी छाया वाले होते हैं। पत्ते महुये के पत्तों के समान चिकने होते हैं और उन पर सिराएँ स्पष्ट होती हैं। केशर के रंग के छोटे २ फूल लगते, गोल एवं कठिन फल लगते हैं। यह बंगाल, उत्तर प्रदेश एवं मलाया में उत्पन्न होते हैं।

प्रयोज्य अंग—त्वक्, पत्र, फल।

मात्रा—त्वक् चूर्ण ६ से १२ रत्ती, स्वरस १ से २ तोला।

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त, कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, शीत वीर्य एवं कटु विपाक है। विषनाशक है एवं त्रिदोष नाशक है। वीर्य वर्धक एवं शोथनाशक है। व्रणरोपक, कासघ्न, दाहशामक है। रक्तपित्त आध्मान, अरोचक एवं अति-सार में लाभ करता है।

२४६. गन्ध प्रसारिणी

आयुर्वेदीय पर्याय—प्रसारिणी, प्रतानिनी, सरणी, भद्रपर्णी, राजबला, सारणी

अंग्रेजी—Chinese Flower Plant **लैटिन**—*Paederia Foetida*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण— इसकी विशाल प्रतानिनी रोमवती लता होती है। पत्र आमने-सामने लगे रहते हैं। यह भालाकार, लटकार या हृदयाकृति २ से ६ इंच लम्बे और $\frac{3}{4}$ इंच से २$\frac{1}{2}$ इंच चौड़े होते हैं। पत्तों को मसल कर सूंघने से तीव्र गंध आती है। नीललोहित वर्ण के पुष्प पीकाकार आते हैं। पीले रंग के फल लगते हैं। बीज दानेदार एवं छोटे होते हैं। यह नेपाल,बंगाल,आसाम में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल एवं पञ्चांग,

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला, क्वाथ ५ से १० तोला।

आयुर्वेदिक मत—तिक्तरस, गुरु सर गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक है। वृष्य, बलवर्धक, सन्धानकारक है। यह रेचक त्रिदोषनाशक है। अर्श, शोथ, वातरक्त एवं कब्ज में लाभ करती है।

आधुनिक मत—इसमें एक दुर्गन्धित उड़नशील तैल अल्फा पिड़ेरिन और विटापिडेरिन नामक दो क्षार तत्व होते हैं।

डा० आर० एन० क्षोरी ने बताया है कि यह रसायन, आक्षेपनिवारक एवं विशेषरूप से वामक होता है।

२४७. मंजीठ

आयुर्वेदीय पर्याय – मज्जिष्ठा, विकसा, अरूणा, **यूनानी** – फुव्व,
अंग्रेजी – Indian Madder **लैटिन** – *Rubia Cordifolia*

विवरण – यह बहुत शाखाओं वाली सहारा लेकर चढ़ने वाली लता होती है। इसका तना चौकोर सा लाल रंग का होता है। इसके पत्ते २ से ४ इंच लम्बे, तीक्ष्ण नोक वाले, हृदयाकार होते हैं, जिन का ऊपर का भाग खुरदरा और नीचे का रूएँदार होता है। पत्तों का डंठल पत्तों से दुगना लम्बा होता है जिस पर कांटों जैसे टेढ़े से उभार होते हैं। इसमें १/५ इंच लम्बे, गोल, गूदेदार बैंगनी रंग के फल लगते हैं। इसकी जड़ लाल रंग की लम्बी और मोटी होती है। यह नीलगिरी और हिमालय प्रदेश में उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग – जड़ **मात्रा** – २ से ४ माशा

आयुर्वेदिक मत – रस में कषाय, तिक्त और मधुर है। गुरु और रूक्ष, गुण वाला, उष्ण वीर्य और कटु विपाक वाला होता है। यह कफ पित्त शामक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दीपन, पाचन, स्तम्भन और कृमिघ्न है। शोणितस्थान होने से रक्त के रोगों को ठीक करता है। प्रमेह, कुष्ठ और ज्वर का नाश करता है। स्तन्यशोधक एवं आर्तवजनन है। त्वचा का रंग निखारने वाला, बल देने वाला और विष नाश करने वाला होता है।

आधुनिक मत—इसमें दानेदार लाल रंग का द्रव्य Purpuriu होता है। इसमें ये ग्लुकोसाइड़ पाए गए हैं—Maujistin, Garaucin Alizarin Xanthine इसकी जड़ में एक तेल निकलता है।

इसकी क्रियाएं तीन अवयवों पर होती हैं। मस्तिष्क पर, जहाँ थोड़ी मात्रा दी जाए तो वह बेचैनी दूर करता है और अधिक मात्रा हो जाए तो चक्कर पैदा कर देता है। दूसरे गर्भाशय में सिकुड़न पैदा करता है और तीसरे त्वचा में रक्त की मात्रा बढ़ा देता है। इन क्रियाओं से ही यह अपने कर्म करता है।

२४८. मैनफल

आयुर्वेदीय नाम—मदन फल, छर्दन, राठ, विषपुष्प **यूनानी**—जौजुल्कै
अंग्रेजी—Emetic Nut **लैटिन**—*RaudiaDumetorum*

विवरण—इसका पौधा छोटा, झाड़ीदार और कांटे वाला होता है। इसके पत्र कुछ गोलाई लिए हुए अपामार्ग के पत्तों से मिलते-जुलते होते हैं। पत्तों के निकट से दोनों तरफ लम्बे तेज कांटें निकलते हैं। इसमें सफेद या कुछ पीले, सफ़ेद रंग के फूल गर्मियों में लगते हैं। छोटी नासपाती जैसा फल पीला या मिट्टी के रंग का होता है जिस का गूदा अखरोट जैसा गोला होता है। इसे तोड़ने से काले रंग के बीजों के चार भाग हो जाते हैं, जो बड़ी इलायची जैसे लगते हैं। यह मैनफल की 'पिप्पली' कहे जाते हैं। मैनफल हिमालय की निचली पहाड़ियों में जम्मू से लेकर सिक्कम तक, स्निग्ध, कूच बिहार, महाराष्ट्र में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, बीज

मात्रा—१ से २ माशे (वमनार्थ ३ से ६ माशा)

आयुर्वेदिक मत—यह मधुर, तिक्त, कषाय, कटु रस, लघु, रूक्ष गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक और वामक प्रभाव वाला होता है। यह वात कफ नाशक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एवं पित्त निःसारक होता है। रक्तशोधक, शोथहर, ज्वरघ्न, कुष्ठघ्न एवं आर्तवजनन है। आमवात और दूसरी ऐसी अवस्थाओं, जिनमें शोथ एवं शूल हो, में इसका लेप करते हैं। पेट दर्द में सिरके में इसे पीस कर लेप करते हैं।

आधुनिक मत—मैनफल में $\frac{1}{3}$ हिस्सा एक तत्व होता है जिसे Saponin कहते हैं, इसके अतिरिक्त Valerianicacid पाया गया है। कुछ मोम और राल भी होते हैं।

डा० आर०एन०क्षोरी ने लिखा है कि आज के वैज्ञानिकों ने खोज कर यह मत व्यक्त किया है कि इसका छिलका और बीज वमन नहीं लाते, केवल इसका गूदा ही वमन लाता है। छिलका और बीज पेट के कीड़ों को मारते हैं। बच्चों के पित्त विकार में इनका प्रयोग उत्तम होता है। इसमें Valerianic acid होता है। इसलिए इस का टिंचर नाड़ियों को उत्तेजना देने और काली खांसी को दूर करने के लिए दिया जाता है।

आधुनिक वैज्ञानिक इसे इपिकाकुआना के स्थान पर प्रयोग करने के लिए उत्तम औषध मानते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ROSACEAE FAMILY — तरूण्यादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः क्षुप

पत्र —एकान्तर, संयुक्त, पक्षाकार

पुष्प —शाखाग्रोद्भूत, पुष्पबाह्यकोश एवं पुष्पाभ्यान्तर कोश के दल ५, पुंकेशर — अनियत

२४९. आलू बुखारा

आयुर्वेदीय नाम—आरूक — यूनानी—इज्जास

अंग्रेजी— Bokhara Plum — लैटिन— *Prunus Communis*

विवरण—इसका पौधा झाड़ीदार लगभग १० हाथ तक ऊँचा होता है। इसकी शाखाएँ सीधी और एक साथ दो-दो डंडियाँ निकली हुई होती हैं। इसके पत्र अण्डाकार और कटे हुए किनारों के होते हैं। बसन्त में पूरा पतझड़ हो जाता है और फूल रह जाते हैं जो रंग में सफेद, पीले और छोटे २ गुच्छों में होते हैं। इसमें गोल, आँवला या बेर के बराबर आलू के सामान काला या पीला फल लगता है। सूख जाने पर इसका रंग गहरा भूरा हो जाता है और झुरियाँ पड़ी होती हैं। इसके अन्दर बादाम की सी गिरी निकलती है, उसमें से तैल निकाला जाता है। इसकी कई जातियाँ हैं परन्तु मुख्यतः उद्यान का और पहाड़ी ही प्रकार का होता है। आरम्भ में समरकन्द में पैदा हुआ था। अब यह हिमालय में गढ़वाल से काश्मीर तक ५ से ७ हजार फुट की ऊँचाई तक पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग— फल — मात्रा— ३ से ५, दस्तावर १५ से २० तक

गुण कर्म—यह एक प्रसिद्ध द्रव्य है जिसका प्रयोग यूनानी हकीम अधिक करते हैं। इसके पत्र रक्त को शुद्ध करते हैं। नकसीर को बन्द करते हैं और तालु प्रदाह को दूर करते हैं इसका फल खट्टा, मीठा, हलका दस्तावर और ज्वर को दूर करने वाला होता है। यह फोड़ों को दूर कर खुजली मिटाता है। मीठा आलुबुखारा आमाशय को सुस्त करता है। इसके पत्रों का लेप पेड़ू पर किया जाए तो आन्तों के कीड़े निकाल देता है। इसका गोंद खांसी, फेफड़े

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

और छाती के दर्द को दूर करता है। यह वृक्क और मूत्राशय की पथरी का तोड़कर निकाल देता है। इसके गोंद के बारीक चूर्ण को घाव पर डालने से या इसके पानी से घाव को धोने से घाव सूख जाता है। सिरके के साथ पिसा हुआ गोंद, दाद, खाज और सिर की गञ्ज को मिटाने वाला है।

आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ मदनपाल निघंटु में पुष्पादि भेद से चार प्रकार के 'आरुक' का वर्णन किया है और इधर निघंटु रत्नाकर में कच्चे और पके फलों के अनुसार इसके गुण बताए हैं। इसे मधुर एवं अम्ल रस, लघु एवं स्निग्ध गुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक कहा गया है। यह वातपित्त एवं रक्त शामक, तृष्णानिग्रहण, अनुलोमन, मूत्रल, ज्वरघ्न एवं बल्य कहा गया है।

आधुनिक मत—इसमें Malic acid (मैलिक एसिड) Citric acid (सायट्रिक एसिड) पेक्टीन, अल्ब्युमिनाइड़ और शर्करा पाई जाती है।

डिमक ने लिखा है कि खाली पेट खाने से आलुबुखारा खट्टा, ठंडा, पाचक और मृदुरेचक होता है। शरीर की रूक्षता और उष्णता को दूर करता है।

२५०. पद्माख

आयुर्वेदीय नाम—पद्मगन्धि, पद्मक

अंग्रेजी—Bird cherry **लैटिन**—*Prunus Cirasoides*

विवरण—इसके वृक्ष बड़े होते हैं। जिसका तना गोल, लाल से रंग का और ग्रन्थि युक्त होता है। इसमें से कमल के समान गन्ध आती है। पत्र ३" से ५" लम्बे दन्तुरधार, चिकने तथा रोमश होते हैं। फूल कदम्ब के फूल के समान होते हैं। आडू के समान फल लगते हैं जो पीले या लाल रंग के होते हैं। इसमें सख्त बीज होता हैं और गूदा कम होता है। शिमला, गढ़वाल, सिक्कम, नेपाल, भूटान में होता है।

प्रयोज्य अंग—कांड, त्वक्, बीजमज्जा **मात्रा**—चूर्ण ५ से १५ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कषाय तिक्त रस, लघु स्निग्ध गुण, शीतवीर्य, कटु विपाक एवं प्रभाव में त्रिदोषहर है। रक्त पित्त नाशक है। ज्वर, छर्दि एवं विष का नाश करता है। मोह, दाह, भ्रान्ति, कुष्ठ, व्रण एवं तृष्णा का नाश करता है। यह गर्भ स्थापक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत — इसकी छाल में हाइड्रोसायनिक एसिड नामक तत्व पाया जाता है। डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है कि इसकी छाल तिक्त, बलकारक एवं अवसादक होती है। पुराने रोगों के बाद जो दुर्बलता आती है उसे मिटाने के लिए और हृदय की धड़कन के लिए यह उत्तम द्रव्य है।

२५१ बादाम

आयुर्वेदीय पर्याय — वाताद, वातबैरी, नेत्रोयमफल **यूनानी** — लौजुल
अंग्रेजी — Almond **लैटिन** — *Prunus Amygdalus*

विवरण — इसका वृक्ष मध्यमाकार होता है जिसमें चौड़े, लम्बे, भूरे रंग के पत्र लगते हैं। इसके फूल सफेद रंग के होते हैं। इसका कच्चा फल अम्ल और पका हुआ मधुराम्ल होता है। इसके बीज बादाम के नाम से प्रयोग किए जाते हैं। बादाम की दो जातियाँ होती हैं। एक मीठा और दूसरे कड़वा। इनमें कड़वा बादाम विषाक्त होता है क्योंकि उसमें 'हाइड्रोसायनिक एसिड' होता है। यह यूरोप और तुर्की में पैदा होता है, भारत में भी काश्मीर में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग — बीज तैल **मात्रा** — ७ से ११ बीज, तैल १/४ तोला

आयुर्वेदिक मत — मधुर रस, गुरु एवं स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक होता है। वातशामक एवं कफपित्त को बढ़ाता है। नाड़ी संस्थान को ताकत देता, दीपन, स्नेह, अनुलोमन एवं मृदु रेचन है। कफ सरलता से निकलता, शुक्र और दूध बढ़ाता और वाजीकरण होता है। यह बृहंण भी है।

कड़वे बादाम का लेप खारिश मिटाता, कुष्ठ और कीड़ों को नष्ट करता है। रंग को निखारता है।

आधुनिक मत — मीठे बादाम में Fixedoil ५६%, इमल्शिन, शर्करा, प्रोटीड पाये जाते हैं। पोटाशियम, कैल्शियम, और मैगनीशियम फास्फेट होते हैं। वैज्ञानिकों ने गिरी को स्निग्धता करने वाला, उत्तेजक और वात-वाहिनियों को बल देने वाला बताया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

RUTACEAE FAMILY नीम्बुकादि वर्ग

स्वरूप—प्रायः वृक्षः

पत्र —एकान्तर,

पुष्प —नियमित, शाखाग्रोद्भूत, पुष्प बाह्य कोश एवं पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४-५, पुँकेशर ८ से १०, बीजकोष उर्ध्वस्थ

२५२. अम्लवेत

आयुर्वेदीय पर्याय—अम्लवेतस, शतवेधी

अंग्रेजी—Pomelo **लैटिन**—*Citrus Decumana*

विवरण—इसका वृक्ष ३०-४० फुट ऊँचा होता हैं। पत्र ६ से ९ इंच, अण्डाकृति, सूक्ष्म रोमश होते हैं। अग्रभाग नोकीला होता है। पुष्प बड़े एवं श्वेत व्रण के होते हैं। फल बड़े, ताल फल के सदृश्य होते हैं। कच्ची अवस्था में हरे और पकने पर पीले होते हैं। अब यह भारत में भी पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, पत्र

मात्रा—स्वरस ३ से ६ माशा, पत्रस्वरस $\frac{1}{2}$ से १ तोला

आयुर्वेदिक मत—अत्यन्त अम्ल, लघु-रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य एवं अम्लविपाक है। मलभेदक, अग्नि प्रदीपक, पित्तकारक, रोमहर्षक है। हृदय रोग, गुल्म, मूत्रदोष, प्लीहा, उदावर्त, हिक्का, आध्मान, अरूचि, कास, श्वास, अजीर्ण, वमन नष्ट करता है। यह वातकफ शामक है।

आधुनिक मत—इसके फल में साइट्रिक एसिड, सल्फ्युरिक एसिड, शर्करा होती है। फल त्वचा में सुगन्धित तैल होता है।

विशेष—सम्प्रति बाजार में जो अम्लवेंत के नाम पर बिकती है। वह रेवन्द चीनी की शाखायें होती हैं।

२५३. कैंथ

आयुर्वेदीय पर्याय—कपित्थ, दधित्थ, सुरभिच्छद

अंग्रेजी—Wood Apple **लैटिन**—*Feronia Elephantum*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका वृक्ष बिल्व के सदृश २५-३० फुट ऊँचा होता है। शाखाओं पर दृढ़ कांटे होते हैं। पत्र मेंहदी के पत्रों से बड़े होते हैं, एकान्तर होते हैं और संयुक्त होते हैं। रक्ताभ श्वेत रंग के फूल लगते हैं। फल गाल, छोटे बिल्व फल के समान होते हैं। यह समस्त भारत में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—त्वक्, फल, पत्र

मात्रा—क्वाथ ५ से १० तोला, फल स्वरस, १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—कषाय, अम्ल, मधुर रस, लघु रूक्ष-गुण, शीत वीर्य एवं कटु विपाक है। कच्चा फल संग्राही लेखन होता है। और लघु होता है परन्तु पक्व फल गुरु होता है, तृष्णा हिक्का का नाश करता है, वातपित्त नाशक होता है। श्वास, कास अरुचि, तृष्णा एवं कण्ठ रोगों का नाश करता है।

आधुनिक मत—फल मज्जा में साइट्रिक एसिड प्रचुर परिमाण में होता है। पिच्छिल द्रव्य होता है। क्षार होते हैं जिनमें पोटाशियम, लोह व खटिक होते हैं। पत्तियों में एक सुगन्धित तैल पाया जाता है।

२५४. तुम्बरू

आयुर्वेदीय पर्याय—तेजबला **यूनानी**—कबाबा खंदा

अंग्रेजी—Toothach Tree **लैटिन**—*Zanthoxylon Alatum*

विवरण—इसकी एक छोटी कांटे वाली झाड़ी होती है। जिसके पत्र १ से ६ इंच तक लम्बे होते हैं। फूल छोटे और लम्बे होते हैं। धनिए के से फल होते हैं जिनमें चमकीले बीज होते हैं और उन पर तैल वाली छोटी २ गांठें होती हैं। यह जम्मू से भूटान तक २ से ५ हजार फुट की ऊँचाई पर पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—फल, छाल

मात्रा—फल ५ से १० रत्ती और छाल १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—यह रस में कटुतिक्त, लघु-रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफवात शामक एवं पित्तवर्धक है। यह नाड़ी उत्तेजक, दीपन, पाचन, कृमिघ्न है। मूत्र जनन, ज्वरघ्न और कुष्ठघ्न है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसका चूर्ण व्रणों पर छिड़कते हैं। मुँह दान्त और गले के रोगों में इसके स्वरस या क्वाथ से कवल करते हैं। यह ऊर्धांग एवं आमवात म भी लाभ करता है।

आधुनिक मत — इसके फल में उड़नशील तैल, राल और एक दानेदार ठोस तत्व Zanthoxvlin पाया जाता है। फल के छिलके में तारपीन का तैल और युकेलिप्टस जैसा तैल पाया जाता है।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा है कि यह सुगन्ध वाला और ताक़त देने वाला है। यह बुखार हटाता है। अग्निमान्द्य और विशूचिका को ठीक करने वाला होता है।

२५५. नीम्बु

आयुर्वेदीय नाम—निम्बुक, जम्बीर, दन्तशठ

अंग्रेजी—Lemon **लैटिन**—*Citrus Medica*

विवरण—प्राय: तीन प्रकार नीम्बु होते हैं। जम्बीरी नीम्बु, कागजी निम्बु और मीठा नीम्बु। इनका अन्तर केवल फल के स्वरूप के अनुसार होता है। यह प्राय: समस्त भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल स्वरस **मात्रा**—२ से ५ तोला

आयुर्वेदिक मत—जम्बीरी नीम्बु गरम, भारी, खट्टा, वात कफ-मलबन्ध शूल नाशक है। कास, कफोत्क्लेश, छर्दि, तृष्णा, आमदोष, मुख की विरसता, हृदय की पीड़ा, अग्निमन्दता तथा कृमिरोग नाशक है।

कागजी नीम्बु अम्ल, वातनाशक, दीपक, पाचक और लघु होता है। नीम्बु कृमि समूह को नष्ट करने वाला है। तीनों दोष अग्नि मन्दता, वातव्याधि, मलबन्धता एवं विसूचिका में लाभ होता है।

मीठा नीम्बु मधुर एवं गुरु है। विष, रक्तविकार, अरूचि, तृष्णा, तथा वमन को नष्ट करता है। यह बलदीपक एवं पुष्टिकारक है।

आधुनिक मत—डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि निम्बू के रस के सेवन से मूत्र से यूरिक एसिड़ अलग होकर तलछंट से (Deposits) रूप में आ जाता है, अतः अश्मरी होने की संम्भावना रहती है। नींबू के रस के या साइट्रिक एसिड़ के अधिक सेवन से अग्नि दुर्बल हो जाती है और रक्त का संगठन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिगड़ जाता है। यह शरीर के भीतर की ग्रन्थियों को विलीन करने की शक्ति रखता है, अतः अष्ठीला रोग (Atherma) में हितकर है। इसका ताजा रस बच्चों की स्नायुविक दुर्बलता (स्कर्वी) में उपकारी है। त्वचा या वृक्क की कार्य शक्ति बढाने या ज्वर में तृष्णा के शान्त्यर्थ जितने शीतल या मूत्रल पानीय हैं, उन सबों में वह अन्यतम उपादान है। यह प्रदाह मूलक पीड़ा वा अम्ल पित्त में हितकर है। नींबू का रस रक्त में अपना क्षारीय गुण प्रदान कर देता है। अतः वातव्याधि (गृध्रसी) वा कटि शूलादि पीड़ा में हितकारक है। अधिक मात्रा में सेवन करने से यह स्थूलता को दूर कर देता है। संग्रहणी रोग में देशी चिकित्सक मधु व यवक्षार के साथ इसके रस की व्यवस्था करते हैं। इसका बाह्य प्रयोग कण्डू, धूप सेवन से उत्पन्न पीड़ा वा प्रसवान्त रक्तस्राव में हितकर है। निम्बु का छिलका पाचक, उष्ण, वायु नाशक वा आध्मानहर है। इसके क्वाथ शीत-कषाय इत्यादि को सुगंधित करने के लिए रेचक वस्तुओं में प्रयुक्त होते हैं। इसका तैल वात में हितकर है। अग्निपक्व नींबू का रस अतिसार की उत्तम औषध है।

२५६. बैल

आयुर्वेदीय नाम—बिल्व, शांडिल्य, कंटकी, श्रीफल **यूनानी**—बेह हिन्दी
अंग्रेजी—Bengal Quince **लैटिन**—*Aegle Marmelos*

विवरण—इसका वृक्ष २५ से ३० फुट ऊँचा होता है, जिसमें एक डंठल में मिली हुई तीन २ पत्तियाँ होती हैं। इन पत्रों में सुगन्ध आती है और साथ में कांटे लगे होते हैं। पत्र गर्मियों में झड़ जाते हैं। मई मास में इसमें फूल आते हैं जो सफेद रंग के होते हैं और ४ से ५ दल वाले होते हैं। दूसरे वर्ष मार्च मे फल आते हैं जो बड़े गोल और ऊपर से बहुत सख्त होते हैं, इन में ८ से १५ तक कोष्ठ रहते हैं जो बीज और गूदे से भरे होते हैं। यह सारे भारत में विशेषकर बंगाल, बिहार, मध्यभारत में पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—फल का गूदा, पत्र जड़, छाल

मात्रा—चूर्ण ३ से ६ माशा, रस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेद में इसे एक श्रेष्ठ औषध माना है। यह कषाय, तिक्त रस, लघु और रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह कफ वात

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शामक है। कच्चा फल दीपन, पाचन, ग्राही है। यह अतिसार प्रवाहिका और उदर शूल लाभ करता है। कच्चे फल का गूदा आग पर पकाकर चीनी के साथ मिलाकर देने से रक्तातिसार, प्रवाहिका और रक्तार्श में लाभ होता है। पका हुआ फल कसैला, मीठा और अनुलोमक होता है। इस का ज्यादा प्रयोग करने से यह अरूचि उत्पन्न करता है। यह हृद्य होता है, सूजन को हटाता और ताकत देता है। इसके पत्र का रस सूजन और दर्द मिटाता है। यह जुकाम, खाँसी और श्वास में भी लाभ करता है। पत्र रस से इक्षुमेह भी दूर होता है। इसकी जड़ नाड़ी तन्तुओं को शान्त करती और ज्वर को हटाती है। यह शोथ को भी दूर करती है।

आधुनिक मत—इसके फल के गूदे में एक कार्यकारी पदार्थ होता है जिसे Marmelosine कहते हैं। इसमें म्युसिलेज, पेक्टिन, टैनिन और शर्करा होती है। डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि पका हुआ बेल का फल मीठा, ताकतवर और हलका दस्तावर होता है। क्रूरकोष्ठ होने से जिन्हें सदैव मल त्याग की प्रवृति बनी रहती है उनके लिए यह बहुत लाभ करता है। इसका शर्बत संग्रहणी को दूर करता है। और अतिसार में लाभ करता है।

डा० देसाई ने लिखा है कि इसकी जड़ दिल की धड़कन, नींद न आना और पागलपन में लाभ करती है। इस का क्वाथ विषम ज्वर में देते हैं। विषाक्त जीव के दंश स्थान पर इसकी जड़ का लेप करते हैं। बच्चों के उल्टी और दस्तों में चावलों के माण्ड में जड़ को उबाल कर दिया जाता है।

कर्नल चोपरा ने लिखा है कि इसके पत्र पुल्टिस की तरह व्रण एवं शोथ पर बांधने से लाभ करते हैं।

२५७. रतनजोत

यूनानी—सखजार लैटिन—*Clausena Pentaphylla*

विवरण—इसका पौधा एक छोटी झाड़ी के आकार का होता है जो १ फुट से २$\frac{1}{2}$ तक ऊँचा होता है। इसमें गहरे हरे या सांवले रंग के पत्ते लगते हैं जो काहू के पत्रों से मिलते हैं। इसमें रक्ताभ सा पीला फूल लगता है, इसकी दूसरी जाति और है जिसमें काला फूल आता है। इसमें पीले रंग के छोटे २

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसदार फल लगते हैं। इसमें लाल रंग की जड़ होती है जो तेल आदि के रंगने में प्रयोग की जाती है। यह नेपाल, कुमाऊँ आदि में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—३ माशा से ५ माशा

गुणकर्म—प्रायः इसको वाह्य रूप में प्रयोग किया जाता है। इसे सिरके के साथ पीसकर झाईं, व्यंग, तिल और दूसरे त्वचा के रोगों में लेप करते हैं। तेल में मिलाकर मालिश करने से अधिक पसीना आना बन्द हो जाता है। गर्भाशय के रोगों में, गर्भ गिराने के लिए, मासिक स्राव लाने के लिए और कमर दर्द में इसकी बत्ती बनाकर स्त्री के योनि मार्ग में रखते हैं। इसे जलाकर तेल में पीसकर उस तेल की मालिश गंजेपन और बाल झड़ने में की जाती है।

इसका चूर्ण आमाशय, यकृत, प्लीहा, अश्मरी और वृक्कों के रोगों में दिया जाता है। क्वाथ बनाकर भी प्रयोग करते हैं। अर्धांग, अर्दित और कण्ठमाला में भी लाभ होता है।

२५८. सिताब

यूनानी—सुद्दाब

अंग्रेजी—Garden Rue. **लैटिन**—*Ruta Graveoleus.*

विवरण—इसका छोटा सा पौधा होता है, जिसके पत्ते पतले, धूसर रंग के और बहुत बदबुदार होते हैं। इसके फूल पीले रंग के होते हैं। फल में तीन कोष्ठ होते हैं जिनमें ३ बीज निकलते हैं। यह ईरान, अफगानिस्तान, पंजाब आदि स्थानों पर पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग—पूरा पौधा, विशेषकर पत्ते

मात्रा—रस २ से ३ माशा, चूर्ण ५ से १० रत्ती, फाण्ट १ से २ तोला

गुणकर्म—यह कफ और वायु को शान्त करता है। यह आक्षेप दूर करता, नाड़ियों को बल देता, अपस्मार आदि को दूर करता है। यह भूख बढ़ाता, पाचन करता और पेट के कीड़े मारता है। अफारा और पेट दर्द को दूर करता है। जुकाम और खाँसी में लाभ करता और पेशाब अधिक लाता है। यह पसीना अधिक लाता और बुखार हटा देता है। इससे औरतों को कष्टार्तव और श्रावि दूर होते हैं। ध्यान रखना चाहिए कि इसे अधिक मात्रा में न प्रयोग किया जाए क्योंकि यह नशा कर देता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—विश्लेषण से पता चला है कि इसमें ग्लुकोसाइड, एक पदार्थ Rutin और एक उड़ने वाला तैल होता है। तैल में ६०% 'मेथिलनाँ' निलकेटोन होता है। इसे एन्टीसैप्टिक उत्तेजक और मासिक स्राव लाने वाला बताया है। इसके पत्ते आमवात के दर्द को दूर करते हैं।

२५६. हरमल

यूनानी—इस्पन्द

अंग्रेजी—Syrian Rue. **लैटिन**—*Peganum Harmala.*

विवरण—इसका पोधा १ से ३ इंच लम्बे कटे फल होते हैं। पत्ते की जड़ में सफेद रंग के फूल निकलते हैं। इसके फूल जुलाई में आते हैं और सितम्बर में फल आता है जो गोल होता है और अन्दर तीन कोष्ठों में बंटा रहता है, जिनमें १-१ बीज होता है। यह बीज तिकोने और धूसर वर्ण, तम्बाकू जैसी गंध वाले होते हैं। कहा जाता है कि इनको आग में डालने से आग बुझ जाती है। यह अरब, ईरान, सिन्ध एवं काश्मीर में होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा**—१ से ३ माशा

गुणकर्म—यूनानी हकीम इसे दो तरह की मानते हैं—१. इस्पन्द अरबी और दूसरे इस्पन्द सोख्तनी जो लाल होती है, यही श्रेष्ठ भी मानी गई है। यह वाजीकरण, बृहंण, कफ वात शामक है। पेट के कीड़े मारता और मूत्रल तथा आर्तवजनन होता है। यह खांसी श्वास, अर्धांग और अर्दित को दूर करता है। बीजों को जैतुन के तेल में पकाकर कान के बहरेपन में बूंद २ डालते हैं। दान्तों के दर्द में इसके बीजों की धूनी देते हैं। यह खून साफ करती, दूध बढ़ाता, कुष्ठ और ज्वर को दूर करता है। यह नशीली चीज है।

आधुनिक मत—बीज में तीन क्षार तत्व होते हैं, हरमलोल, हरमलिन, हरमिन। हरमलिन कुनैन की तरह काम करती है। कहा गया है कि हरमल नींद लाने के लिए अच्छा है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

S

SALICACEAE FAM1LY — वेतसादि वर्ग

पत्र —एकान्तर

पुष्प—बीजकोश, उर्ध्वस्थ, एक खण्ड वाला

बीज—अनेक, रोममुक्त

२६०. बेंत

आयुर्वेदीय नाम—वेतस, नम्रक, वानीर — **यूनानी**—बेदेमुश्क

अंग्रेजी—Broaleaved Willow — **लैटिन**—*Salixcaprea*

विवरण—इसका पौधा १५ से ३० फुट ऊँचा होता है, जिसमें पत्र एकान्तररित लगे हुए, नोकदार, किनारे कटे हुए और हरे रंग के होते हैं। इसके फूल पीले रंग के बहुत सुगन्धित होते हैं। रूँएदार बीज होते हैं। यह ईरान, यूरोप में तथा भारत के पंजाब और काश्मीर में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल और फूल

मात्रा—रस २ से ५ तोला, अर्क ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत—वेतस कषाय, कटु, तिक्त रस, स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, कटु विपाक और त्रिदोषहर है। यह मेध्य, दीपन, यकृदुत्तेजक, ग्राही, हृदय, मूत्रजनन, वृष्य एवं कुष्ठघ्न है। ज्वरघ्न एवं दाह प्रशमन है। सिर दर्द और आँखों की सूजन में इस के अर्क का परिषेक करते हैं। यह दाह, शोथ, अर्श, योनिविकार, विसर्प और अश्मरी नाशक है।

आधुनिक मत—इसकी छाल में मोम, गोंद, वसा रहती है। साथ ही साथ Salicine होती है। यह Salicine मुँह में Sliva(लाला रस)के साथ मिलकर Saligeuin और Suger में बदल जाती है। Saligeuin का भी कुछ भाग Salicylicacid में बदल जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० डिमक ने लिखा है कि यह दीपक, उत्तेजक और कामोद्दीपक, है। सिर दर्द और आँखों के रोगों में इसका लेप किया जाता है। इसकी राख रक्त वमन को बन्द करती है। इसको सिरके के साथ पीसकर खूनी बवासीर पर लगाया जाता है। डा० देसाई ने लिखा है कि बुखार की बैचैनी, सिर दर्द, जोड़ों के दर्द और सूजन को मिटाता है।

२६१. जलबेंत

आयुर्वेदीय पर्याय—जलवेतस, निकुंचक, नादेयी यूनानी – बेद सादा

लैटिन – *Salix Tetra Sperma*

विवरण – इसका वृक्ष बेंत से कुछ बड़ा होता है जिसकी लम्बाई ५०.फुट तक हो सकती है। इसकी छाल सफेद और काष्ठ लाल होता है। इसके पत्र ३ से ६ इंच लम्बे, रुयेंदार, गोल और कटे किनारे के होते हैं। पत्र का ऊपरी पृष्ठ हरा और पीछे का सफेद होता है। फूल पीले रंग के मुलायम और गंध वाले होते हैं। यह बसन्त में खिलते हैं। वर्षा में फल आते हैं जो ५ इंच लम्बे होते हैं और उसमें ४-६ बीज निकलते हैं। यह काश्मीर आदि प्रदेशों में होता है।

प्रयोज्य अंग – छाल, फूल, पत्र

मात्रा – पत्तों का रस २ से ५ तोला, अर्क १० से १५ तोला

गुण-कर्म – आयुर्वेदिक ग्रन्थों में जलवेंत के गुण वेंत के समान बताए हैं। किंतु यूनानी ग्रन्थों में इसे कुछ हलका बताया है। गर्मी दूर करता, दिल को शक्ति देने वाला, पेशाब साफ लाता और दर्द दूर करता है। इसके पत्रों पर लेटने से उष्ण प्रकृति वालों के हृदय और यकृत की उष्णता और पित्त और रक्तविकार मिट जाता है। ताजा पत्रों का रस पीने से रक्तातिसार बन्द हो जाते हैं। इसका रस कान में टपकाने से कान के दर्द को मिटाता है। पीलिया, यकृत और प्लीहा की शोथ को दूर करता है। ताजा फूल सूंघने से दिमाग ताजा होता और गर्मी का सिरदर्द मिट जाता है। अर्क पागलपन, गर्मी, तपेदिक और बुखारों को दूर करता है।

आधुनिक मत – इसमें भी बेदमुश्क की तरह Salicin होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

SALVADORACEAE FAMILY पील्वादि वर्ग

पत्र—अभिमुख, अखंड, चर्म सदृश

पुष्प—छोटे, श्वेत या पीत, पुष्प बाह्य कोश के दल ३-५, पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल-४, पुंकेशर-४, स्त्रीकेशर-१

फल—मांसल

२६२. पीलु

आयुर्वेदीय पर्याय — पीलु, गुड़फल, स्रंसी

अंग्रेजी — Tooth Brush Tree लैटिन — *Salvadora Persica*

विवरण — इसका वृक्ष मध्यम प्रमाण का ८-१० फुट ऊँचा होता है। यह बहुत कमजोर होता है और इसकी शाखाएँ झुकी हुई होती हैं। इसमें अण्डाकृति, मांसल पत्र लगते हैं। हरे-पीले रंग के फल शाखाओं के अग्रभाग में लगे रहते हैं। गर्मियों में काली मिर्च सदृश छोटे मांसल फल लगते हैं जो पकने पर लाल रंग के हो जाते हैं और इनमें एक बीज निकलता है। यह भारत, लंका, ईरान, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग — फल, बीज, पत्र, मूलत्वक

मात्रा — फल स्वरस $\frac{1}{2}$ से १ तोला, बीजचूर्ण १-३ माशा

आयुर्वेदिक मत — कटु, तिक्त, मधुर रस, लघु स्निग्ध, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाक है। कफ वातशामक है। यह मलभेदक, गुल्म नाशक होता है।

आधुनिक मत — मूलत्वक् में राल, रंजक द्रव्य होते हैं। इनके अतिरिक्त साल्वाडोरिन (Salvadorine) और ट्राइमेथिल एमिन (Tri-Methyl-Amine) होते हैं। यह रक्तशोधक द्रव्य है। मूत्रल है। चर्म रोगों में मूत्र कृच्छ मे, दुर्वलता में, कास, श्वास में लाभ करता है।

आमवात, अर्श, अर्बुद आदि पर इसके पत्तों को गरम कर बांधते हैं। बीजों का तैल भी अभ्यंग के लिए प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

SANTALACEAE FAMILY चन्दनादि वर्ग

पत्र एकान्तर या अभिमुख प्राय: सादे कम्पित खण्डित

पुष्प – छोटे, बीज कोश–उर्ध्वस्थ, तीन कोष्ठ वाला

बीज – चिकने-चमकीले चित्रित लम्बे गोल

विशेष – इस वर्ग के पौधे तोड़ने से प्राय: दूध निकलता है

२६३. सफेद चन्दन

आयुर्वेदिक मत—श्रीखण्ड, मलयज, गन्धसार **यूनानी**—सन्दले अब्यज

अंग्रेजी—Sondal wood **लैटिन** – *Santalum Album*

विवरण—इसका वृक्ष ३० से ४० फुट ऊँचा और सदैव हरा रहने वाला होता है। वृक्ष की छाल बाहर से धुंधले रंग की कुछ कालापन लिए हुए और भीतर से रक्ताभ होती है। यह जल्दी टूट जाने वाली होती है। उस पर लम्बे धारे लगे होते हैं। बाहरी लकड़ी सफेद और कम गन्ध की तथा भीतरी गूदा धूसर वर्ण का, तेज सुगन्ध वाला होता है। यह सख्त होता है और इसमें से तेल निकाला जाता है। १ से २ इंच लम्बे अण्डाकार नुकीले पत्र होते हैं। वर्षा के बाद इसमें पीलापन लिए हुए बैंगनी रंग के फूल आते हैं। इसके पत्तों और फूलों में गन्ध नहीं होती। गोल सा फल लगता है जो पक जाने पर काले रंग का हो जाता है। यह मैसूर और मालाबार में सबसे ज्यादा होता है।

प्रयोज्य अंग – लकड़ी और तेल

मात्रा – चूर्ण ३ से ६ माशा, तेल ५ से २० बूंद

आयुर्वेदिक मत – तिक्त और मधुर रस, लघु रूक्ष गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफ पित्त शामक है। यह मेध्य और नींद लाने वाला है। प्यास मिटाता है। आमाशय, आंते और जिगर को ताकत देता है। कृमि नाशक है और कब्ज करता है। दिल को ताकत देता, खून साफ करता और कफ निकालता है। यह मूत्रजनन, स्वेदजनन, दाह प्रशमन, कुष्ठघ्न और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषघ्न है। इसका लेप पैत्तिक शिरःशूल, दाह, विसर्प और अन्य त्वचा के रोगों को दूर करता है।

आधुनिक मत—इसकी जड़ और लकड़ी में उड़नशील तेल २ से ५% निकलता है जिसमें Santalol नाम का तत्व ६०% होता है। तेल जड़ में ज्यादा होता है। इसमें टैनिक एसिड भी होता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि चन्दन की लकड़ी तिक्त, शीत व वेदना शामक एवं संकोचक है। तेज बुखार में रोगी के सारे बदन में दर्द रहने पर इसका लेप किया जाता है। गुलाब जल और कपूर के साथ इसका लेप सिर दर्द, जलन और त्वचा की सूजन को दूर करता है।

इसका तैल पैशाब साफ करता, कफ निकालता और उत्तेजना देता है। यह इलायची और वंशलोचन के साथ गनोरिया, खांसी, वृक्क एवं मूत्राशय की शोथ को दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

SAPINDACEAE FAMILY — अरिष्टकादि वर्ग

पत्र — एकान्तर क्वपित अभिमुख, एकाकी या संयुक्त

पुष्प — पुष्प बाह्य कोश एवं पष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४-५, पुंकेशर ५-१०

फल — मांसल

रीठा

आयुर्वेदीय पर्याय — अरिष्टक, मंगल्य, रक्तबीज, गर्भपातन **यूनानी —** बुन्दुक हिन्दी

अंग्रेजी — Soap Nut **लैटिन —** *Sapindus Trifoliata*

विवरण — इसका वृक्ष २५ से ३० फुट ऊँचा होता है। इसमें नीम के पत्तों के समान एक-एक डंठल में ६-६ जोड़े पत्ते लगे रहते हैं। जिसकी पत्तियाँ १ से ६ इंच लम्बी, १ से ४ इंच चौड़ी होती हैं। शरद् ऋतु मे सफेद रंग का फूल आता है। बसन्त आने पर गोल २ फल गुच्छों में आते हैं। यह पकने पर धुंधले रंग के हो जाते हैं। इनमें तीन धाराएं होती हैं। बीज रक्ताभ, कृष्ण होते हैं जिनके अन्दर पीले रंग की मींगीं निकलती है।

प्रयोज्य अंग — फल का छिलका

मात्रा — ५ से १० रत्ती, वमनार्थ ३ से ६ माशे, रेचनार्थ ४ से ८ माशा

आयुर्वेदिक मत — यह तिक्त कटु रस, लघु, स्निग्ध, तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक और वामक प्रभाव वाला होता है। यह त्रिदोष नाशक है। यह वामक, रेचक, कृमिघ्न, रक्त शोधक, कफ निःसारक, गर्भाशय संकोचक, कुष्टघ्न और विषघ्न है। सूजन और दर्द में लेप करते हैं। कुष्ट, कण्डु, गंडमाला, सांप और बिच्छु के काटे हुए स्थान पर लेप करते हैं।

आधुनिक मत — इसके फल ११$\frac{1}{2}$% Saponin, १०% Sugar और कुछ लुआब होता है।

डा० मुड़ीन शरीफ ने लिखा है कि मैंने इसको बहुत प्रयोग किया है और पाया कि यह उत्तम वमनकारक, अर्धावभेदक और श्वास को दूर करने वाला है। अपस्मार में यह कुछ समय के लिए आराम दिखाती है, परन्तु उसे दूर नहीं कर सकता। अफीम के विष को दूर करने में भी यह एक उत्तम औषधि है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

SAPOTACEAE FAMILY — [मधू]कादि वर्ग

पत्र – एकान्तर, सादे, अखंड़, चर्म सदृश, उपपत्र रहित
पुष्प – पत्रकोणोद्भूत, दुग्धवत रस से युक्त
फल – मांसल, विदारी

२६५. मौलसरी

आयुर्वेदीय नाम – वकुल, मधुगन्ध, चिरपुष्प, स्थिरपुष्प
लैटिन – *Mimusops Elengi*

विवरण – मौलश्री के पेड़ बहुत बड़े होते हैं। इसकी त्वचा मटमैली व कुछ सफेदी लिए होती है। पत्र चिकने और जामुन के पत्रों की तरह होते हैं। पत्रवृन्त कुछ मोटे १" लम्बे होते हैं। पत्र प्रान्त तरंगीय होते हैं। पुष्प सफेद व इषीत्पीत अनीदार, चक्राकार छोटे-छोट होते हैं। यह पेड़ दो जातियों का होता हैं। स्त्री-जाति व पुरुष-जाति। पुरुष-जाति में फल नहीं आते। इसके पुष्प कुछ बड़े होते हैं। स्त्री-जाति में फल आते हैं। पुष्पों में कुछ सिन्दूरी पुष्प एक से आते हैं। इसके फल भी सिन्दूरी करौंदे की तरह होते हैं। पकने पर मधुर, कषाय लगता है। लड़के इसे खाते हैं। फूल में महक सूख जाने पर भी बनी रहती है। जरी मौलसरी के भी यही रूप रंग हैं। पुष्प बड़ा होता है। फल के भीतर काले रंग के बीज पाये जाते हैं।

प्रयोज्य अंग – त्वक्, पत्र, पुष्प

मात्रा – त्वक् क्वाथ २ से ५ तोला, पुष्प चूर्ण १ से २ माशे, बीज चूर्ण १ से २ माशे

आयुर्वेदिक मत – कटु कषाय रस, गुरू रूक्ष अनुष्ण वीर्य, कटु विपाक है। कफपित्तनाशक, विषनाशक, श्वित्रनाशक, कृमिनाशक और दन्त रोग नाशक है। यह सुगन्धित और हृदय पदार्थ हैं।

आधुनिक मत – इसकी छाल में कषाय रस, कुछ रबड़, मोम, रंजकद्रव्य, स्टार्च और क्षार होते हैं। पुष्पों में एक उड़नशील तैल होता है। बीजों में एक स्थिर तैल होता है जिसका व्यवहार तंजोर में बहुत होता है। फल मज्जा में शर्करा तथा सैपोनिन होता है

यह प्रदर, हृदय रोग, कृमिरोग, ज्वर में प्रयोग की जाती है। दांतों को मजबूत करती है, पूयदन्त में लाभ करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

SAXIFRAGRACEAE FAMILy पाषाणभेदादि वर्ग

पत्र – एकान्तर अथवा अभिमुख

पुष्प – पुष्प बाह्यकोश के दल ४-८, पुष्प अभ्यन्तर कोश के दल ४-८, पुंकेशर ८-१६

२६६. पथर चूर

आयुर्वेदीय नाम – पाषाणभेद, अश्मघ्न **यूनानी** – पत्थर फोड़ी

लैटिन—*Saxifraga Ligulata*

विवरण—यह पहाड़ों और चट्टानों में दरारें करके बाहर निकलने वाला पौधा है। पत्र गोल, ३" से ५" व्यास के मोटे, कटे हुए किनारों के ऊपर से हरे और निचले भाग में रक्ताभ होते हैं। प्राय: कर एक साथ ३ से ६ पत्र ही होते हैं। इसमें सफेद, नीले या लाल फूल लगते हैं। इसकी जड़ रंग की मोटी लगभग १" की होती है। पहाड़ी स्थानों पर ज्यादा पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग – जड़, पत्र **मात्रा** – १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत – यह रस में कषाय तिक्त, गुण में लघु, स्निग्ध, तीक्ष्ण, शीतवीर्य और कटु विपाक है। इसका प्रभाव अश्मरी भेदन का है। यह त्रिदोष-नाशक, मूत्रल, हृद्य, भेदक है। यह गुल्म, अर्श मूत्रकृच्छ, योनिरोग, प्रमेह, प्लीहाशूल एवं व्रण का नाश करता है। यह अहिफेन के विष का नाश करता है।

आधुनिक मत – इसकी जड़ में टैनिक एसिड, गैलिक एसिड, मोटार्बिन, ग्लुकोश और मिनरल साल्ट होते हैं। यह भूख बढ़ाता, मल का भेदन करता, बल देता, मूत्र संस्थान के अवयवों को शक्ति देता और भेदक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

SCITAMINACEAE FAMILY हरिद्रादि वर्ग

पत्र —एकान्तर,

पुष्प —पुष्प बाह्य कोश और पुष्पाभ्यान्तर कोश के दल २-३
पुँकेशर-१, बीजकोश—अधःस्थ त्रिकोष्ठी,

२६७. अदरक

आयुर्वेदीय पर्याय — आर्द्रक, शृंगवेर, कटुभद्र, यूनानी — जंजबीलतर

अंग्रेजी — Gingerfresh लैटिन — *Zingiber Officinale*

विवरण — इसका पौधा ३-४ फुट तक ऊँचा होता है। इसके पत्ते अग्रभाग में नुकीले होते हैं। इसके बैंगनी रंग के फूल लगते हैं जिसका डंठल २-३ इंच लम्बा होता है। इसमें फल नहीं लगता। इसकी जड़ गाँठों वाली होती है उसे अद्रक कहा जाता है। यह गरम और गीली जमीन में अधिक होता है। बंगाल, मद्रास, ट्रावनकोर, कोचीन में पैदा होता है।

अद्रक के कन्द का छिलका हटा कर सुखा लेते हैं। वह 'सोंठ' कहलाती है। सोंठ को नागर, विश्वा आदि भी कहा जाता है

प्रयोज्य अंग — कन्द।

मात्रा — अदरक का रस $\frac{1}{2}$ तोले से २ तोला, सोंठ का चूर्ण ५ से १० रत्ती

आयुर्वेदिक मत — अदरक एवं सोंठ कटु रस, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक होते हैं, गुणों में अदरक गुरु, रूक्ष और तीक्ष्ण होता है और सोंठ लघु और स्निग्ध होता है। कफवात शामक, रोचन, दीपन, पाचन, वातानुलोमन, तृप्तिघ्न रक्तशोधक, शोथहर, श्वासहर, अर्शोघ्न, वृष्य, बल्य, ज्वरघ्न है। इसका बाह्य प्रयोग शीत प्रशमन, शोथहर एवं वेदना स्थापन है।

विशेष कर अरूचि, अजीर्ण, अफारा, अग्निमन्दता, पीलिया, अर्श, आमवात कास, श्वास और ज्वर का नाश करता है।

आधुनिक मत — इसमें १ से ५% उड़नशील तैल होता है। दो विशेष तत्व और होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० क्षीरी ने इसे वायुनाशक औषध बताया है। उन का कहना है कि पेट का अफारा एवं दर्द दूर करता है। पेचिश को ठीक करता, पाचन ठीक करता और लहसन के रस के साथ खाने से कास, श्वास को दूर करता हैं।

डा० देसाई का कहना है कि यह आन्तों के रोगों के लिए श्रेष्ठ द्रव्य है।

२६८. इलायची छोटी

आयुर्वेदिक मत—एला, सूक्ष्मा, उपकुंचिका, त्रुटि **यूनानी**—हीलबुआ
अंग्रेजी—Lessercardamom **लैटिन**—*Elettaria Cardamomum*

विवरण—इसका पोधा छोटा और पत्तों से भरा हुआ होता है, इसके पत्र खुश्बुदार होते हैं और लम्बाई में १ से २ फुट तथा चौड़ाई में १ से २ इंच होते हैं। इसका पुष्पदंड लम्बा होता है जिसमें बहुत सारे फल लगते हैं। इन्हीं फलों का प्रयोग इलायची के नाम से करते हैं। इनके अन्दर तेज गंध वाले काले रंग के बहुत से बीज निकलते हैं। इलायची गुजरात, मैसूर, ट्रावनकोर कोचीन, लंका और बर्मा में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—फल **मात्रा**—५ से १० रत्ती

आयर्वेदिक मत—कटु एवं मधुर रत, लघु एवं रूक्ष गुण, शीत वीर्य एवं मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोषहर, हृद्य, मूत्रजनन, कफ निःसारक, दाह प्रशमन और बल्य है। यह दीपन, पाचन, रोचन और अनुलोमन है। छर्दि निग्रहण और तृष्णा निग्रहण है। यह कास, श्वास, दाह दूर करता, आध्मान, उदरशूल, वमन को मिटाता है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में स्थिर तेल १०%, उड़नशील तेल ५%, पोटाशियम साल्ट ३%, स्टार्च ३%, मैंगनीज युक्त भस्म ६ से १०% होती है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि इलायची पाचन करती, आध्मान दूर करती, उत्तेजना देती और रोचक होती हैं। रेचक, द्रव्य कभी २ मरोड़ या पेट दर्द पैदा कर देता है, उनके साथ इलायची दी जाए तो ऐसा नहीं होता।

कर्नल चोपड़ा ने छोटी इलायची को अग्निवर्धक और मूत्र निःसारक माना है। इसे बिच्छु के दंष्ट्र स्थान पर भी लगाते हैं।

इलायची बड़ी

आयर्वेदीय नाम—वृहदेला, स्थूला, बहूला, त्रिपुटा **यूनानी**—हील कलाँ
अंग्रेजी—Greater Cardamom **लैटिन**—*Amomum Subulatum*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—पौधा छोटी इलायची की तरह का होता है, इसमें अन्तर इतना रहता है कि पत्र कुछ ब ेऔर फल भी उसकी अपेक्षा बड़े होते हैं। इसमें पीले रंग के फूल वर्षा में लगते हैं और शीत में फल पकते हैं। यह पूर्वी हिमालय में, विशेषकर नेपाल में और लंका में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल मात्रा—५ से १० रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु-तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक है। यह त्रिदोष नाशक है। रोचन, दीपन, पाचन, अनुलोमन, हृदयोत्तेजक, कफ निःसारक, मूत्रल, वेदनास्थापन कर्म करती है। सिर दर्द, कण्डू और त्वचा के रोगों में इस का लेप करते हैं। यह कास, श्वास और ज्वर को दूर करती है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में एक सुगन्धित तैल पाया जाता है जिसमें साइनिओल की बहुत मात्रा होती है।

मद्रास के सर्जन मेजर पारकर का कहना है कि यकृत की विकृति में, विशेष कर जब कि विद्रधि का सन्देह हो यह द्रव्य लाभ करता है।

२६९. कचूर

आयुर्वेदीय नाम—कचूर, वेधमुख्य, द्राविड़ यूनानी—जरम्बाद
अंग्रेजी—Long Zedoaria लैटिन—*Curcuma Zedoria*

विवरण—इसका पौधा हल्दी के समान होता है। जो हल्दी के समान किन्तु सफेद रंग की और कपूर जैसी गंध के कन्द वाला होता है। इसके पत्र एक से २ फुट लम्बे और फूल हल्के पीले रंग के होते हैं। यह हिमालय प्रदेश और दक्षिण भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—कन्द और पत्र

मात्रा—रस एक से दो तोला, चूर्ण एक से दो माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफ वात शामक रोचन, दीपन, अनुलोमन, कृमिघ्न, आर्तवजनन, मूत्रजनन, वाजीकरण और कुष्ठघ्न है। इसका लेप सन्धिवात, शोथ और चर्म रोगनाशक होता है अरुची, अर्श, शोथ, मूत्रघ्न, ज्वर, और कष्टार्तव में प्रयोग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—इसमें एक सुगन्धित तैल, शर्करा और Zedearine नामक क्षार तत्व होता है। आधुनिक वैज्ञानिक मुख्य रूप से कृमिनाशक और क्षुधा वर्धक मानते हैं। कर्नल चोपड़ा का कहना है कि इसकी जड़ शीतल, मूत्रल और सुगन्धित होती है।

२७०. कपूर कचरी

आयुर्वेदीय नाम—शटी, गन्धमूलिका, षड्ग्रन्था, सुव्रता, गन्धारिका

लैटिन—*Hedychiumspicatium*

विवरण—इसका वर्षायु क्षुप हल्दी की तरह होता है जिसकी जड़ लम्बी आलु जैसी, सुगन्धित होती है। जड़ के टुकड़े करके, सुखाकर बाजार में बेचते हैं। इसके पत्र १ फुट लम्बे होते हैं और सफेद रंग का फूल आता है। गोल सा फल लगता है, जिसमें बीज निकलते हैं। ये हिमालय प्रदेश, नेपाल, भूटान और कुमायु में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—१ से ३ माशे

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त-कषाय, रस लघु और तीक्ष्ण गुण उष्ण, वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफ वात शामक, रोचक, दीपन, शूल प्रशामक और संग्राही है। यह रक्तशोधक, कासहर, श्वासहर, त्वग्दोषहर, ज्वरघ्न और हिक्का निग्रहण होता है। इसका लेप करने से जोड़ों की सूजन, पेट का अफारा दूर होता है। इसका मंजन मुख शोधक और दन्त शूल नाशक है। इसका चूर्ण तेल के साथ मिला कर लगाने से गंजापन मिटता है और उसे सूंघने से शिरो-रोग दूर होते हैं।

आधुनिक मत—इसमें स्टार्च, शर्करा एलब्युमिन तेल तथा Methyl Para-cumarin Acetate होते हैं।

कर्नल चोपड़ा ने लिखा हैं कि यह अग्निवर्धक, उदर को शान्ति देने वाली, पौष्टिक और उत्तेजक है। यह सर्पदंश में प्रयोग होती है।

कुलंजन

आयुर्वेदीय नाम—मलयवचा, सुगन्धा, उग्रगंधा **यूनानी**—खुलंजान

अंग्रेजी—Java Galangal **लैटिन**—*Alpihia Galanga*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका पौधा ६-७ फुट ऊँचा होता है जिसकी शाखाओं में पत्र लगे रहते हैं। इसके १ से २ फुट तक लम्बे ४" से ६" तक चौड़े तथा ऊपरी तह चिकनी और नीचे वाला भाग रोमश होता है। हरे, सफेद रंग के छोटे और टेढ़े फूल गर्मियों में निकलते हैं। लाल रंग का गोल नीबू जैसा फल लगता है जिसमें तिकोने हलके, भूरे रंग के चपटे बीज होते हैं। इनकी जड़ आलू जैसी होती है जिसके टुकड़े बाजार में बिकते हैं। सुमात्रा, जावा और बंगाल में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—१ से २ माशे

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु तीक्ष्ण रूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होता है। कफवात शामक, मुखशोधक, रोचक, दीपक और अनुलोमक है। नाड़ियों के लिए बलप्रद और उत्तेजक है। श्वासनलिकाओं को फैलाता और स्वर यन्त्र को ताकत देता है। हृदय अवशादक है, मूत्र की मात्रा घटा देता है, बाजीकरण है और त्वचा की ठण्ड को मिटाने वाला है। त्वचा के रोग और झाई में भी इसका चूर्ण लगाया जाता है।

आधुनिक मत—इसकी जड़ में Camcheride, Galangin और Aepinin पाये जाते हैं। इसके सत का इन्जैक्शन देने से रक्त दबाव कम हो जाता है और श्वासप्रणाली उत्तेजित हो जाती है।

२७१. केला

आयुर्वेदीय नाम—कदली, वारणा, मोचा, अम्बुसार **यूनानी**—मौज

अंग्रेजी—Banana **लैटिन**—*Musasapientum*

विवरण—इसका पौधा ४ से १२ फुट ऊँचा और ४ से ६ फुट लम्बे पत्र से भरा होता है। इसमें लाल रंग के फल पत्रों के बीच से निकलते हैं और फल गुच्छों में लगते हैं। यह समस्त भारत में होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, फूल और काण्ड

मात्रा—रस १ से २ तोला, क्षार ४ से ८ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—मधुर कषाय रस, गुरु स्निग्ध गुण, शीतवीर्य और मधुर विपाक होता है। वात, पित्त शामक, मेध्य, रोचक, ग्राही, विष्टम्भी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफ निःसारक, वृष्य, वृहंण, बल्य है। इसका रस मूत्रल है। उन्माद, अपस्मार नाशक है। रक्त पित्त अतिसार में फूल काम में आते हैं। जले हुए पर फूल या फल का लेप करना लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसके पके हुए फल में शक्कर, स्टार्च तथा लोहा, चूना तथा क्लोरिन पाये जाते हैं, इसमें विटामिन 'सी', 'बी' और 'ए' होते हैं। इसके छिलके में भी कई क्षार उपस्थित रहते हैं।

डा० आर० एन० क्षोरी का कहना है कि केले का फल तर्पक, पोषक होता है, केले की जड़ कृमिनाशक है, रक्त पित्त और रक्त, वमन में केले के डंठल का रस पिलाना चाहिए।

एसग्सन का कहना है कि अमरीका के केले का शर्बत पुरानीखाँसी की एक मात्र दवा है।

२७२. हलदी

आयुर्वेदीय नाम—हरिद्राकाञ्चनी, निशा,गोरी, कृमिघ्ना **यूनानी**—जर्दचोब
अंग्रेजी—Turmeric **लैटिन**—*Curcum Longa*

विवरण—इसका पौधा अदरक जैसा होता है जिसमें १ से १।। फुट लम्बा और चौड़ी पत्तियाँ लगता हैं, जिनमें आम-सी गन्ध आता है। ४-६" लम्बे डण्ठल में हल्दी के रंग के १" लम्बे फूल लगते हैं, फूल वर्षा में आते हैं। गाँठदार गोल और लम्बा फल लगता है जिसका भीतरी भाग पीला होता है। यह सारे भारत में उत्पन्न होता है।

प्रयोज्य अंग—जड़ **मात्रा**—रस १ से २ तोला, चूर्ण १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—तिक्त कटु रस, रूक्ष, लघु गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होता है। त्रिदोषनाशक, वेदना स्थापन, रुचिकारक, अनुलोमक, पित्त-रेचक और कृमिनाशक है, खून बढ़ता, मूत्र का वर्ण ठीक करके उसकी अधिकता को कम करता है। यह कुष्ठ नाशक, दुग्धशोधक और शुक्र शोधक है। प्रमेह, ज्वर, रक्त विकार जलोदर और नाड़ी शूल में लाभ करता। इसका लेप सूजन, दर्द, खारिश और व्रणों को ठीक करता है। इसका धूम्र सूँघने से श्वास,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हिचकी और बेहोशी दूर होती है। इसका धुंआ बिच्छू के काटे हुए स्थान के दर्द को मिटा देता है। पित्त और उर्दद में खिलाते हैं।

आधुनिक मत — इसमें उड़नशील तैल १% Curcumin नामक सत्व और Turmeric Oil पाया जाता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि हल्दी ताकत देती है, पीलिया या पुराने कफ के रोग दूर करती है। यकृत और मूत्र संस्थान सम्बन्धी रोगों में लाभ करती है। बिना दर्द की सूजन को मिटाने के लिए सज्जीक्षार के साथ हल्दी का लेप किया जाता है। घिसी हुई हल्दी को तिल के तेल में मिलाकर लगाने से चर्म रोग दूर होते हैं। बढ़ते हुए खून पर विशेषकर जो जोंक लगने के कारण बहता हो, हल्दी का चूर्ण लगाने से रुक जाता है।

दुखती आँखों में टपकाने के लिए और उसमें कपड़े को तर करके आँखों पर रखने के लिए हल्दी का क्वाथ बनाया जाता है।

डा० देशाई का कहना है कि नजला, ठंड, प्रमेह और प्रदर तथा चर्म रोगों के लिए हल्दी उत्तम द्रव्य है।

○

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

SCROPHULARIACEAE FAMILY तिक्तादि वर्ग

२७३. कुटुकी

आयुर्वेदीय पर्याय—कटुका, तिक्ता, शतपर्वा, चक्रांगी यूनानी—रबरबकेशाह

विवरण—इसका पौधा मूली जैसा होता है। पत्ते २ से ४ इंच लम्बे और किनारों पर दन्तुर होते हैं। सख्त और ऊपर की तरफ ऊठे हुए डण्ठल में ब त सारे फूल लगे होत है। इसकी जड़ ६ से १० इंच लम्बी और उंगली जितनी मोटी हैं। बाजार में इसके १ से २ इंच लम्बे भूरे रंग के मुड़े हुए टुकडे मिलते है। कुटकी हिमालय में, कश्मीर से सिक्कम तक ७ से १४ हजार फुट तक होती है।

प्रयोज्य अंग—जड़

मात्रा—साधारण मात्रा ५ से १० रत्ती और दस्त लाने के लिए २ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रस, रूक्ष लघु गुण, शीत वीर्य और कटु पाक होती है। यह कफ, पित्तहर होती है। थोड़ी मात्रा में रूचिकारक दीपक पित्त-सारक एवं कृमि नाशक है। अधिक मात्रा में दस्तावर है। यह दिल को ताकत देती, खून साफ करती और सूजन मिटाती है। कफ निःसारक, प्रमेह नाशक, कुष्ठ नाशक और दुग्ध शोधक है। विषम ज्वर और दाह युक्त ज्वरों में लाभ करती है।

आधुनिक मत—इसमें Picrorrhigin नामक तत्व १५% होता है और Cothartic Acid $१\frac{1}{3}$% होता है। इससे यह दस्त साफ लाती है। इनके अतिरिक्त मोम और कुछ ग्लुकोज होता है। इसमें कोई विपाक पदार्थ नहीं होता।

डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है कि कुटकी रसायन, पाचक, और पित्त निःसारक है। यह अजीर्ण, संग्रहणी श्वास, पीलिया आदि रोगों में लाभ करती है। यकृत के लिए लाभदायक है। यह विषम ज्वर और बच्चों के कृमिरोग की उत्तम औषधी है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

SOLANCEAE FAMILY कण्टकार्यादि वर्ग

पत्र —एकान्तर, सादे क्वचित विभक्त, उपपत्ररहित

पुष्प —पत्रकोण या शाखाग्र से उदभूत, पुष्प बाह्य कोश स्थायी ५-१० दलयुक्त, पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४ से ५, पुंकेशर ५, स्त्रीकेशर प्रायः १, गर्भाशिय दो खण्डवाला,

फल —गोल व लम्बा अविदारी

२७४. असगंध

आयुर्वेदीय पर्याय—अश्वगन्धा, वारहकर्णी, बलदा, **यूनानी**—मेहेमत वररी
अंग्रेजी – Winter Cherry **लैटिन** – *Withania Somnifra*

विवरण—इसका क्षुप १ से ५ फुट ऊँचा होता है, शाखायें चारों तरफ फैली रहती हैं, पत्ते २ से ४ इंच लम्बे गोलाई लिये और श्वेत रोमश होते हैं। हरे रंग के फूल, चिलम की आकृति के होते हैं और गुच्छों में लगे होते हैं। इस में फल छोटे, गोल रसभरी की तरह खोल में ढका रहता है। बीज चिकने और चपटे होते हैं। इसकी जड़ अंगुली जितनी मोटी १ से १½ फुट तक लम्बी होती होती है। कच्ची जड़ में अश्व (घोड़ा) जैसी गंध आती है, इसी लिये इसे अश्व गंधा कहते हैं। यह भारत में सब जगह पैदा होती है। मालवा में विशेषकर इसकी खेती की जाती है।

प्रयोज्य अंग—जड़, **मात्रा**—३ से ६ माशा,

आयुर्वेदिक मत – मधुर कषाय और तिक्त रस, लघु स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक है। कफ वात शामक, नाड़ी दुर्बलता मूर्छा, और अनिन्द्रा में हितकारक, दीपक, अनुलोमक और कृमिनाशक है। दिल को ताकत देती, खून साफ करती और सूजन को मिटाती है। कुष्ठ, श्वास और प्रदरनाशक है। यह बाजीकरण, रसायन, वृंहण, बल्य और मूत्रल है। इससे सिद्ध तेल की मालिश वातव्यधि नाशक है। इसके पत्ते या जड़ का लेप गलगड़ और कंठमाला में में लाभ करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत — इसमें Somniferin नामक तत्व होता है जो नींद लाता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि असगंध बल्य, रसायन और अवसादक है। बच्चों का सूखा रोग मिटाती है। अर्धांग, वात शूल और दूसरी वात व्यधियों में लाभ करती है। प्लेग की गांठों पर इसकी ताजा जड़ का लेप गांठ को पका कर फोड़ कर ठीक कर देता है।

२७५. खुरासानी अजवायन

आयुर्वेदीय नाम—पारसीक यवानी **यूनानी**—तुख्मबञ्ज

अंग्रेजी—Henbane **लैटिन**—*Hyoscyamus Reticulatus*

विवरण—इसका पौधा अजवायन से कुछ बड़ा होता है। तना छोटा और रोमश होता है। श्याम हरितवर्ण के लम्बे, चौड़े, मोटे और किनारे कटे पत्र होते हैं। फूल अनार जैसे आते हैं। तीन प्रकार के रंग पाए गए हैं, सफेद, लाल और काले। बीज अजवायन से कुछ बड़े, वृक्काकार और भूरे या काले रंग के होते हैं। यह भारत में काश्मीर, गढ़वाल, कुमाऊं में तथा यूरोप, मिश्र, खुरासान एवं साइबेरिया में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग — बीज, पत्र **मात्रा**—चूर्ण २ से ५ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—तिक्त-कटु कषाय रस, गुरू रूक्ष गुण, उष्णवीर्य, कटु विपाक और मादक है। वातकफशामक, रुचिवर्धक, पाचन, कृमिनाशक, शूल प्रशमन, निद्राजनन, धातु शोषक है। इसका लेप शोथ और शूल को मिटाती है। अनिद्रा, प्रलाप और श्वास में लाभ करती है। अतिमात्रा में सेवन करने से भ्रम, उन्माद, सन्यास उत्पन्न करती है।

आधुनिक मत — बीजों में $\frac{1}{4}$ भाग स्थिर तैल होता है। Hyoscine और Hyoscyamine नामक क्षारतत्व होते हैं।

डा० आर० एन० क्षौरी का कहना है कि यह अवसादक, आक्षेपहर, वेदनानिवारक, निद्राजनक है। यह श्वास उच्छवास में सहायक मांस पेशियों में अवसाद उत्पन्न करती और मृत्यु तक हो जाती है।

२७६. कंटेली

आयुर्वेदीय नाम — कण्टकारी, दुःस्पर्शा, क्षुद्रा, व्याघ्री **यूनानी**—बांदजान बर्री

अंग्रेजी — Wild egg plant **लैटिन**—*Solanum Xanthocarpum*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका कण्टकित गुल्म १-४ फुट ऊँचा, चमकीले, हरे रंग का होता है। ४-५ इंच लम्बे व २-२ इंच चौड़े डिम्बाकृति इसके पत्र होते हैं। पत्तियों के पृष्ठ पर तीक्ष्ण काँटे होते हैं। इसके पुष्प नीलवर्ण के होते हैं। फल गोलाकार अण्डे के समान, कच्ची अवस्था में हरितवर्ण और श्वेतरेखांकित तथा पकने पर पीतवर्ण हो जाते हैं। ग्रीष्मकाल में पुष्प और फल आते हैं। इसकी दो जातियाँ होती हैं, नीलपुष्पा और श्वेतपुष्पा। नीलपुष्पा सामान्यतः मिलती है और इसका वर्णन ऊपर किया गया है। श्वेतपुष्पा कण्टकारी कम मिलती है और उसका प्रयोग अनेक वैद्य लक्ष्मणा के स्थान पर करते हैं। इसका क्षुप भी श्वेताभ होता है। अतः चन्द्रपुष्पा, दुर्लभा, श्वेत लक्ष्मणा आदि नामों से इसका व्यवहार होता है। यह विशेषतः बंगाल, आसाम, पंजाब और दक्षिण भारत में प्राप्त होता है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग

आयुर्वेदिक मत—कण्टकारी, दस्तावर, कड़वी, चरपरी, अग्नि को दीपन करने वाली, हल्की, रूखी, गरम, पाचन और कास, श्वास, ज्वर, कफ, वायु, पीनस, पसली पीड़ा, कृमि तथा हृदयरोग नष्ट करने में प्रशस्त हैं। इन दोनों के फल चरपरे, वीर्यरेचक, भेदक, कड़वे, पित्त तथा अग्नि को बढ़ाने वाले, हलके और वात, कफ, खुजली, खाँसी, मेद, कृमि और ज्वर को दूर करने वाले हैं। सफेद मूल की कंटकारी के भी गुण कटेरी के सदृश हैं, विशेषकर गर्भकारक हैं।

आधुनिक मत—इसमें मोम, बसा कुछ अम्ल और सोलेंनिन रहता है। यह घर्मकारक, उष्ण, मूत्रकारक व कफ निःसारक है। ज्वर, कफरोग व मूत्रकृच्छ में व्यवहृत होती है।

२७७. तम्बाकू

आयुर्वेदीय नाम—धूम्रपत्रिका | **यूनानी**—बेहारे भंग

अंग्रेजी—Indian Tobaco | **लैटिन**—*Nicotiane Tobacum*

विवरण—तम्बाकू का क्षुप छोटा होता है जो खेतों में उत्पन्न किया जाता है। इसके पत्र बड़े २ और हरे रंग के होते हैं और पौधे का तना मुलायम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

होता है। वास्तव में तम्बाकू अमेरिका में पैदा होने वाली वनस्पति थी किन्तु अब सारे भारत में भी पैदा की जाती है।

प्रयोज्य अंग—पत्र **मात्रा**—उलटी कराने को ३-६ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक होता है। यह मादक है। कृमिनाशक, मृदुरेचक और आध्मान नाशक है। दाँतों की दुर्गंध, चर्मरोग और बिच्छु के विष में लाभदायक है।

विष प्रभाव—यह मनुष्य शरीर में लाभ के स्थान पर हानि करता है। इसको ज्यादा खाने से स्नायुजाल की शक्ति क्षीण हो जाती है। अग्नि मन्द करता और यकृत पर बुरा कर्म करता है। इससे दिल और दिमाग पर बुरा असर पड़ता है। गर्म मिजाज वालों के लिए यह हानि करता है। इसमें 'निकोटिन' नामक विषतत्व होता है।

कर्नल चोपड़ा का कहना है कि यह कृमिनाशक है। जोड़ों की सूजन और दर्द, चर्मरोग और बिच्छु के विष का नाश करता है।

२७८. धतूरा

आयुर्वेदीय पर्याय—धत्तूर, धुस्तूर, कनक, शिवप्रिय, मातुल, मदन

अंग्रेजी—Thornapple

लैटिन—(कृष्ण) *Daturastramonium* (श्वेत) *Daturafastuosa*

विवरण—धतूरे के पौधे प्रायः सर्वत्र पाये जाते हैं। जिनमें श्वेत धतूरा तो सुलभ है। इसके पुष्प बिल्कुल श्वेत वर्ण के होते हैं। इनकी आकृति घंटे की तरह होती है। पुष्प के अग्रभाग में भीतर की तरफ गंधक वर्ण की रेखा और बाहर की तरफ मामूली बैंगनी रंग के चिन्ह होते हैं। फूल एक ही होता है, पत्र पान के आकार के कुछ नोकदार, अनीदार कड़वे, बड़े तथा कोमल होते हैं। फल गोल सेव की तरह होते हैं किन्तु ऊपर, छोटे २ कोमल कांटे होते हैं। इसके चार भेद हैं—श्वेत, कृष्ण, नील और पीत। कृष्ण धतूरे का रंग काला गाढ़े रंग का, पत्ते, डण्ठल तथा पुष्प सब काले होते हैं; एक २ पुष्प में ३ से ७ तक पुष्प एक के भीतर दूसरा, दूसरे के भीतर तीसरा यों ही ७ तक पाये जाते हैं। यही वर्णन पीत और नील धस्तूर का भी है। इनमें फूलों व पत्तों के रंग पृथक् होते हैं,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बाकी और आकार-प्रकार सब एक से रहते हैं। फूल का आकार बड़ा व लम्बा होता है।

प्रयोज्य अंग — मूल, पत्र, बीज।

मात्रा — मूल २-४ ग्रा० मात्रा — पत्र स्वरस $\frac{1}{2}$ से १ तोला उन्मत्त कुत्ते व शृगाल के दंश पर। अन्यत्र ५ बूंद। बीज २ रत्ती तक।

आयुर्वेदिक मत—धत्तूरा—मदकारक, वर्ण को उत्तम करने वाला, अग्नि तथा वायु को करने वाला, गरम, भारी, कसैला, मधुर, कड़वा, जूं, लीख नष्ट करने वाला और ज्वर, कोढ़, व्रण, कफ, खुजली, कृमि तथा विषनाशक है।

आधुनिक मत—डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है कि धतूरे की पत्तियों में एक क्षारीय डेटुराइन, म्युसिलेज, श्वेतक और भस्म १६ प्रतिशत होता है जिसमें २५ प्रतिशत क्षार (पोटाशियम नाइट्रेट) रहता है। इसके बीज, डटुराइन, राल, म्युसिलेज, प्रोटीड, मैलिक एसिड तथा भस्म ३ प्रतिशत के मिलने से बने हैं।

धतूरा मदकारी व वेदना हरने वाला है। अन्य गुणों में यह 'बलाडोना' की तरह है बल्कि उससे भी तीक्ष्ण है मोटर किम्बा सेन्सरी नाड़ी तन्तुओं पर इसका प्रभाव न दिखाई देकर सिम्पैथटिक नाड़ियों पर ही इसका प्रभाव देखा गया है। पूर्णमात्रा में इसका प्रयोग करने पर यह हृदयक्रियावैषम्य कर देता है एवं भयावह प्रलाप भी प्रारम्भ हो जाता है। एट्रोपीन की तरह यह भी आंख की पुतलियों को फैला देने वाला है। यकृतशूल कंठध्वस व कोरिया एवं गद्गद रोग में धतूर आक्षेप-निवारक रूप से व्यवहृत होता है। यह निडरल्जिया, रजःकृच्छ, स्नायुमंडल के रोग या साइटिका रोग में हितकर है। कामोन्माद एवं आत्मघातेच्छालणयुक्त सूतिकोन्माद में धुस्तूर बहुत लाभदायक है। धस्तूर का धूम्रपान श्वासरोग के लिए हितकर है। धतूर बीज उदद इत्यादि चर्मरोगों में हितकर है। कृमिभक्षित दाँत में भी वेदना निवारक रूप से यह व्यवहृत होता है। धतूरे के रस से पकाया हुआ तैल, शिरः पीड़ा कुरण्ड, स्फोटक एवं अन्यान्य चर्म रोगों में हितकर होता है। धतूरे को पत्र स्वरस अफीम और पुनर्नवामूल के साथ पीस कर लेप करने से वातवेदना एवं हाथ पैर का शोथ दूर हो जाता है। रक्तार्श, गुदक्षत, किंवा, गुह्यद्वार की अन्यान्य पीड़ाओं में बार-बार मल त्याग की प्रवृत्ति होने पर धतूर घटित मलहम को वेदना निवारण के लिए देना चाहिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२७९. बैंगन

आयुर्वेदीय नाम—वृन्ताक, वार्ताकु, भण्टाकी, भाण्टिका।

अंग्रेजी—Bringle लैटिन—*Solanum Melongena*

विवरण—इसका वर्षायु या द्विवर्षायु कंटकित होता है। यह ३-४ फुट ऊँचा होता है। पत्र में भी काँटे होते हैं। पत्तियाँ ३-६ इंच लम्बी, अण्डाकार, विस्तृत और अनेक भागों में विभक्त होती हैं। पुष्प नीलाभ या बैंगनी रंग के होते हैं। फल ३-६ इंच लम्बे, श्वेत, बैंगनी या रक्ताभ होते हैं। फल का प्रयोग शाकार्थ होता है। फल के अनुसार यह कई प्रकार का होता है। फल की आकृति लम्ब-गोल जाति को बैंगन और गोल जाति को भण्टा कहते हैं। वर्णभेद से भी यह श्वेत, बैंगनी और रक्ताभ होता है। गोलाकार श्वेतवर्ण का कोमल भण्टा प्रशस्त माना गया है। यह भारत में सर्वत्र होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, बीज, मूल, पत्र

मात्रा—बीज चूर्ण ५ से १० रत्ती, मूल चूर्ण ५ से १० रत्ती, पत्रस्वरस ४-६ माशे

आयुर्वेदिक मत—बैंगन मधुर, तीक्ष्ण, गरम, पाक में चरपरा, पित्तकारक नहीं, अग्निदीपक, वीर्यवर्धक, हलका, ज्वर, वात तथा कफ को नष्ट करता है। छोटे बैंगन कफ तथा पित्तनाशक और बड़े बैंगन पित्तकारक और भारी हैं। अग्नि में पकाये हुए बैंगन अर्थात बैंगन का भुर्ता किंचित् पित्तकारक है। और ये अग्निदीपक, कफ, मेद, वात तथा आमनाशक हैं। जो इनमें नमक और तेल डाला हो तो बैंगन भारी और स्निग्ध होता है। और एक प्रकार का श्वेत बैंगन मुरगे के अण्डे के सदृश होता है। यह बैंगन अर्शरोग में बहुत फायदा पहुँचाने वाला होता है और काले बैंगन से गुणों में हीन होता है।

आधुनिक मत—आर्द्रफल में ८८·२६ प्रतिशत आर्द्रता होती है। सूखे फल में ईथर एक्सट्रैक्ट ४·२० प्रतिशत, अलब्युमिनायड १६·३७ प्रतिशत, विलेय कार्बोहाइड्रेड ५५·२३ प्रतिशत, काष्ठ सूत्र १७ प्रतिशत और भस्म ७·३० प्रतिशत होते हैं। हरि पत्तियों में विटामिन सी होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२८०. मकोय

आयुर्वेदीय पर्याय—काकमाची, वायसी, ध्वांक्षमाची यूनानी—इनबुस्सालब
अंग्रेजी—Garden Night Shade लैटिन—*Solanum Indicum*

विवरण—इसके क्षुप १ से ३ फुट ऊँचा होता है। पत्र २ से ३ इंच लम्बे और १ से $1\frac{1}{2}$ इंच चौड़े होते हैं। छोटे २ सफेद रंग के फूल आते हैं। फल छोटे चिकने, गोल होते हैं जो गुच्छों में लगे रहते हैं। कच्चे फल हरे रंग के और पकने पर बैंगनी रंग के होते हैं। यह सारे भारत में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—पूरा पौधा, मात्रा—रस १ से २ तोला, चूर्ण १ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—यह तिक्त रस, लघु स्निग्ध गुण, नात्युष्ण शीत वीर्य और कटु विपाक होती है। यह त्रिदोषघ्न है। दीपन, यकृदुत्तेजक, पित्त सारक और रेचन है। रक्त शोधक, शोथहर, श्वासहर, मूत्रल, कुष्टघ्न ज्वरघ्न और विषघ्न है। प्लीहा, आमवात, अर्श, शोथ, कुष्ठ में विशेष उपयोगी है। यह वृष्य और रसायन भी है।

विष प्रभाव—इसका फल अधिक मात्रा में देने से उल्टी, दस्त, प्यास, उदर शूल, भ्रम, प्रलाप, सन्यास हो जाता है।

आधुनिक मत—इसके फल में 'सोलेनिन' नामक तत्व होता है जिसमें शर्करा, सैपोनिन, सोलेनिड़िन होता है। इसके पौधे में Pitroglyclan होता है।

डा० क्षोरी ने लिखा है कि यह रसायन, मूत्रल, शोथहर, कफ नाशक है। यह ज्वर नाशक है। गर्म पत्र बांधने से शोथ एवं शूल निवृत्ती है।

२८१. लाल मिर्च

आयुर्वेदीय नाम—कटुवीरा, यूनानी—फिलफिले अहमर
अंग्रेजी—Red chillies लैटिन—*Capsicum Frutescens*

विवरण—इसका क्षुप छोटा होता है जिसके पत्र लम्बे और आगे के भाग में नुकीले होते हैं। इसके फल कच्ची हालत में हरे और पकने पर लाल-पीले हो जाते हैं। इसकी खेती सारे भारत में की जाती है वैसे यह दूसरे देश से आई है।

प्रयोज्य अंग—फल मात्रा—$\frac{1}{4}$ से $\frac{1}{2}$ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—आयुर्वेद के निघंटुओं में इसका वर्णन उपलब्ध नहीं होता। आत्रेय संहिता में एक सूत्र दिया है। वहाँ लिखा है कि "लाल मिर्च अग्नि वर्धक, कफ नाशक, दाहकारक, अजीर्ण, विसूचिका और व्रणों के लिए हितकारक है। तन्द्रा, मोह, प्रलाप, स्वरभेद व अरुचि नाशक है। यह ऐसे सन्निपात के रोगी को भी बचा देती है जिसकी नाड़ी दुर्बल हो गई हो और बोलने, सुनने और देखने की ताकत न रही हो।"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

STERCULIACEAE FAMILY पिशाचकर्पासादि वर्ग

पत्र —एकांतर, एकाकी या संयुक्त,

पुष्प —पुष्प प्राय: नियताकार पुष्पबाह्य कोश एवं पुष्पान्तर कोश के दल ५ संयुक्त, पुंकेशर ५-२० तक, स्त्रीकेशर २-५, बीजकोश उर्ध्वस्थ तथा संयुक्त

फल —विदारी,

२८२. मुचकुन्द

आयुर्वेदीय नाम — मुचकुन्द, क्षत्रवृक्ष, चित्रक, प्रतिविष्णुक,

विवरण — इसका वृक्ष बड़ा होता है। छाल लम्बाई में फटी होती है और काण्डसार रक्ताभ होता है। शाखायें खूब घनी होती हैं। पत्र छत्राकार, सूक्ष्म लोमयुक्त, कर्कश, अखरोट के समान होते हैं। उनका ऊपरी भाग हरित तथा निचला भाग श्वेत या ईषत्पीत होता है। पुष्प ४-५ इंच लम्बे, रक्तपीताभ और सुगन्धित होते हैं। फल लम्बगोल, काष्टवत् होते हैं जिनके परिपक्व होने में लगभग एक वर्ष का समय लगता है। बीज पक्षयुक्त होते हैं। वसन्त ऋतु में पुष्पोद्गम होता है। भारतवर्ष के जांगल प्रदेश, विशेषत: उड़ीसा, कर्नाटक, वर्मा आदि स्थानों में मिलता है।

प्रयोज्य अंग — पुष्प **मात्रा** — ३ रत्ती से १२ रत्ती तक

आयुर्वेदिक मत — कटु तिक्तरस, रूक्षगुण, ऊष्ण वीर्य, कटु विपाक है। कफ नाशक, विषनाशक, रक्तपित्त शामक एवं व्रणरोपक है। यह सिर दर्द, कास, त्वचा के रोग, शोथ और कण्ठ रोगों में प्रयोग किया जाता है।

आधुनिक मत — इसके पुष्प में एक उड़नशील तैल होता है जिसके कारण इसमें सुगन्ध होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

STYRACEAE FAMILY लोध्रादि वर्ग

पत्र—एकान्तर, सादे-उपपत्र रहित,
पुष्प—गुच्छों में, पुष्प बाह्यकोश के दल ४, पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४, ५
फल—मांसल

२८३. लोबान

अंग्रेजी—Ocibanum लैटिन—*Styrose Benzion*

विरवण—इसका वृक्ष मध्यम ऊँचाई का होता है। जिसकी छाल मुलायम और मैले रंग की होती है। पत्र ३ से ५ इंच लम्बे होते हैं और फूल रक्ताभ, श्वेत रंग के और गुच्छों में होते हैं। फल सख्त, रक्त, चपटे-गोल से होते हैं। हर एक फल में एक बीज होता है। इस वृक्ष में से एक निर्यास निकलता है जो बबूल के गोंद की तरह सफेद रंग का मोती जैसा चमकीला होता है। इस के टुकड़े एक-दूसरे से चिपके रहते हैं। यह श्याम और सुमात्रा में पैदा होता है। श्याम का लोबान साफ और अच्छा होता है। सुमात्रा का कोड़िया लोबान कहलाता है।

प्रयोज्य अंग—निरयास (गोंद)

मात्रा—३ से ८ रत्ती, सत लोबान १ रत्ती

गुण कर्म—आयुर्वेद के ग्रन्थों में वर्णन नहीं है। इसकी मरहम जख्मों को ठीक करती है। दूसरी दवाईयों के साथ इसे उबटन में मिला कर त्वचा को स्वच्छ और सुगन्धित रखने के लिए प्रयोग करते हैं। इसे लगाने और खाने के लिए दिया जाता है। यह कफज रोगों में, आर्दित, अर्धांग और खाँसी, जुकाम और बुखार में लाभ करता है। किसी तैल में मिलाकर कान के दर्द में डालते हैं। यह वाजीकरण होता है। इसका सत्व इससे भी अधिक लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसमें मुख्य रूप से तीन चीजें हैं Benzoic Acid १२ से २०% होता है, Cynamic Acid और Vaniecin होते हैं। साथ में उड़नशील तेल भी होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२८४. लोध

आयुर्वेदीय पर्याय—लोध, तिल्ल, शाबर, मालव **यूनानी**—मुगास
अंग्रेजी—Lodh Tree **लैटिन**—*Symplocos Racemosa*

विवरण—इसका वृक्ष मध्यम ऊँचाई का होता है जिसमें लम्बे गोलाकार पत्र लगते हैं। ये हमेशा हरा रहने वाला वृक्ष है। २ से ४ इंच लम्बे डन्ठल पर पीले सफेद रंग के फूल लगते हैं। फल $\frac{1}{2}$ इंच लम्बा और कड़ा होता है। इस वृक्ष की छाल लाल रंग की होती है। यह उत्तर और पूर्व भारत, मालाबार और बर्मा में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—छाल **मात्रा**—चूर्ण में १ से ३ माशा

आयुर्वेदिकमत—कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, शीत वीर्य, कटु विपाक और कफ पित्त शामक है। यह अतिसार-प्रवाहिका में लाभ करती है। रक्तपित्त शोथ प्रदर, गर्भस्राव और कास, ज्वर, चर्म रोग नाशक है। इसका लेप करने से बहता हुआ रक्त रूक जाता है। शोथ और व्रण ठीक हो जाते हैं।

आधुनिक मत—इसमें Loturine Colloturine Loturidine और Quinovine नामक क्षार तत्व पाये गये है। इसकी राख Sodacarbonate होता है। डा० क्षीरी का मत है कि लोध कषाय और बल्य है। यह बेल और कुचले के साथ दस्त, पेचिश और प्रदर में लाभ करती है। इसका लेप लगने से फोड़े जल्दी पक जाते हैं। चार्ल्स इसे रक्तप्रदर को ठीक करने के लिये प्रयोग करने के लिये कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

T

TAMARISCINAE FAMILY **झाबुकादि वर्ग**

पत्र –एकान्तर, अवृन्त, अखंड और छोटे

पुष्प–छोटे और नियमित, पुष्प बाह्यकोश तथा पुष्पाभ्यान्तर कोश के दल ४ से ५ या १० तक, पुंकेशर-५, स्त्री-केशर–१, गर्भाशय–एक कोशी, अधःस्थ बीजकोश

फल–विदारी

बीज– अनेक

२८५. झाऊ

आयुर्वेदीय नाम – झावुक — यूनानी – तर्फा

अंग्रेजी – Tamarix Gallica — लैटिन – *Tamarisk*

विवरण – इसका झाड़ीनुमा क्षुप ६-८ फुट का होता है। शाखाएँ लाल रंग, बदामी रंग की होती हैं। यह बहुत नरम होती है। इसमें लम्बे, पतले पत्र लगते हैं। इसमें श्वेत रक्ताभ पुष्प लगते हैं। यह गुच्छों में लगते हैं। इसकी शाखाओं पर एक कीड़े के काट जाने पर एक गाँठ-सी बन जाती है। इसे 'माईं' (Tamarix Gall) कहते हैं। इसकी शाखाओं में से एक तरह का मीठा पदार्थ भी निकलता है जो 'गजङ्गबीन' (Tamarix Manna) कहते हैं। यह फारस, अफगानिस्तान, उत्तर भारत और गुजरात में अधिक होता है।

प्रयोज्य अंग – जड़, पत्र, माईं गजंगबीन

मात्रा – रस १ से २ तोला, चूर्ण ३ से ६ माशा, माईं २ से ४ माशा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-कर्म—इसके पत्रों को पीसकर सूजन पर लगाते हैं। इनको उबाल कर उस पानी से कुल्ले कराते हैं ताकि दाँतों का दर्द दूर हो जाए और मसूड़ों में शक्ति आए। झाऊ की धूनी देने से व्रणशोधन हो जाते हैं। विशेषकर चेचक के व्रणों के लिए काम में आता है। इससे अर्शांकर भी नष्ट हो जाते हैं। इसके पत्रों को बारीक पीसकर व्रणों पर लगाया भी जाता है। इसकी जड़ का जोशांदा जैतुन के तैल में मिलाकर पिलाना कुष्ठ में लाभ करता हैं। इस की जड़ और पत्रों के क्वाथ में बिठाने से रक्तप्रदर ठीक होता है। प्लीहा की शोथ के लिए विशेषकर काम में आता है।

जोजऊलतफा के गुण बताते हुए लिखा है कि यह सख्त कब्ज करता और खून के बहने को रोकता है। यह चर्म रोगों को मिटाता है। आमाशय, यकृत और प्लीहा को बल देता है। यह नकसीर में लाभ करता और यह चोट आदि लगने से बहने वाले खून को बन्द करता है। यह सूजन दूर करता है।

आधुनिक मत—कर्नल चोपड़ा का कहना है कि यह मृदु रेचक और कफ निःसारक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

THYMELAEACEAE FAMLIY अगुर्वादि वर्ग

पुष्प—संयुक्त दल, गर्भाशय द्विकोष्ठी
फल —शुष्क और बिदारी

२८६. अगर

आयुर्वेदीय नाम — प्रवर, लौह, मोगज **यूनानी** — ऊंद
अंग्रेजी — Eagle wood **लैटिन** — *Aquilaria Agallocha*

विवरण — इसका हरा-भरा लम्बा वृक्ष होता है। जिसकी छाल कागज जैसी पतली होती है। लकड़ी सफेद मुलायम और गन्ध वाली होती हैं। पुराने वृक्ष में एक प्रकार के कृमि (Fungus) घुस जाते हैं और एक प्रकार का राल या गोंद एकत्रित कर देते हैं। उन पुराने वृक्षों की लकड़ी काले रंग की भारी और शहद जैसी सुगन्ध वाली होती है। इसे ही दवाओं में प्रयोग करते हैं। इसके पत्र पतले, आगे से नुकीले २, ३ इंच लम्बे होते हैं। फूल सफेद गुच्छों में होते हैं जो गर्मियों में लगते हैं। फल १-२ इंच लम्बा मखमल जसा कोमल होता है। यह आसाम, मणिपुर, भूटान बर्मा, सुमात्रा में पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग — लकड़ी **मात्रा** — ५ से १५ रत्ती

आयुर्वेदिक मत — कटु तिक्त रस, लघु रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक है। कफ वात शामक, नाड़ी उत्तेजक, मुख शोधक, दीपक, पाचक और बल्य है। इसका लेप शीत, शोथ और शूल को मिटाता है और दुर्बलता वात-व्याधि और शोथ मूत्र में लाभ करता है।

आधुनिक मत — इसमें एक उड़न शील तैल और राल होती है। डा० क्षौरी ने लिखा है कि यह उत्तेजक और पित्त निःसारक है। नाड़ियों को बल देता और पाचन करता है। आमवात और वमन में दिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

TILIACEAE FAMILY

परूषकादि वर्ग

पत्र—प्रायः एकान्तर, उपपत्रयुक्त, सादे,

पुष्प—नियमित, पुष्प बाह्यकोश तथा पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४–५, पुंकेशर अनेक तथा असंयुक्त, परागकोश दो थैली वाला, उर्ध्वस्थ

फल – विदारी या अष्ठिल

२८७. फालसा

आयुर्वेदीय नाम— परूषक, परूष, परापर यूनानी— फालसा

अंग्रेजी—Asitic Greevia लैटिन—*Greevia Asiatica*

विवरण—इसका वृक्ष २० से २५ फुट ऊँचा होता है। पत्र गोल, दन्तवत्, किनारे की ओर रोमश होते हैं। पीलेरंग तथाछोटे-छोटे फूल आते हैं। फलगोल और छोटे बेर जैसे होते हैं। कच्चा फल हरा और पकने पर बैंगनी रंग का होता है। इस की दो जातियाँ बताई गई हैं। एक ज्यादा रस वाली जिसे यूनानी में 'फालसा शर्बती' कहा है और दूसरे अल्परस वाली जिसे 'फालसा शकरी' कहा जाता है। यह भारत में सब जगह होता है।

प्रयोज्य अंग—फल और छाल मात्रा—रस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर-अम्ल-कषाय रस, लघु-स्निग्ध गुण, शीत वीर्य और मधुर विपाक होता है। यह वात पित्त शामक, रोचक, दीपक, ग्राही और तृष्णा और वमननाशक है। हृद्य, वृष्य, बृंहण, बल्य है। ज्वर, दाह, रक्तपित्त नाशक है। कफ निःसारक है। इसकी छाल मूत्रल है। इसकी छाल का लेप गठिया में फायदा करता तथा फल के काढ़े के गरारे गले को ठीक करते हैं।

आधुनिक मत—इसकी छाल में पिच्छिल द्रव्य और फल में अम्ल व शर्करा रहती है। फल में संकोचक, शीतल और अग्नि वर्धक तत्व रहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

U

UMBELLIFERAE FAMILY मण्डूकपर्ण्यादि वर्ग

पुष्प – श्वेत व पीत, पुष्प विन्यास छत्राकार, पुष्प बाह्यकोश और पुंष्पाभ्यन्तर कोश के दल ५, ५

फल – नीरस

२८८. अजवायन

आयुर्वेदीय नाम—यवानी, उग्रगन्धा यवानिका, दीप्या – यूनानी—नानखाह

अंग्रेजी—Kings Cuwin **लैटिन**—*CuauminCopticum*

विवरण—इसका क्षुप ३ से ४ फुट ऊँचा होता है। और पत्र सोया जैसे होते हैं। इसमें सफेद रंग के फूल छत्तों में लगते हैं। इस पर फूल शीत काल में आते हैं। इसके बीज छोटे पीले से रंग के होते हैं। अजवायन सारे भारत में, ईरान, मिश्र और अफगानिस्तान में होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा**—चूर्ण १ से ३ माशा, सत ½ से १ रत्ती

आयुर्वेदिक मत—कटु-तिक्त रस, लघु-रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक होती है। यह कफ वात शामक, रोचन, दीपक, पाचक, अनुलोमक, शूल नाशक एवं कृमिनाशक है। यह हृदयोत्तेजक एवं श्वासहर है। मूत्रजनन, शुक्र-नाशक, दुग्ध नाशक, और गर्भाशियोत्तेजक है। त्वग रोग नाशक, स्वेदजनन, ज्वर नाशक और विष नाशक है। अजवायन का लेप या इसके तैल की मालिश करने से दर्द और सूजन दूर होती है। बिच्छु के काटनेपर इसका लेप करते हैं। अजवायन पाचन के विकारों, दिल की दुर्बलता, कास, श्वास, कृमिरोग और मूत्राघात में लाभ करती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधुनिक मत—बीजों में एक सुगन्धित तैल होता है जो ठंडक से जम जाता है। इसे 'सत अजवायन' कहते हैं, यह Thymol की तरह का होता है।

अजवायन वायु शामक, आक्षेपनिवारक, कृमिनाशक, विसूचिका नाशक, शूल, अपचन, आध्मान निवारक है।

२८९. अजमोद

आयुर्वेदीय नाम—अजमोदा, खराश्वा, मायूर **यूनानी**—करफ्स हिन्दी

लैटिन—*Carum Roxburghianum*

विवरण—इसका क्षुप अजवायन से कुछ छोटा होता है। इसकी ऊंचाई १-२ फुट होती है। इसके पत्र पक्षाकार होते हैं। फूल गुच्छों में लगे होते हैं। बीज गोल और अजवायन के बीज से बड़े होते हैं। इन पर छोटे २ दाग होते हैं। यह सारे भारत में विशेष कर बम्बई प्रदेश में ज्यादा पैदा होती है।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा**—१ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु रूक्ष-तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होती है। कफ वात शामक, विदाही, दीपन, अनुलोमन, शूलनाशक और कृमिनाशक है। यह हृदयोत्तेजक, गर्भाशयोत्तेजक, मूत्रकारक, कफ नाशक और वाजीकरण है। इसका लेप दर्द को मिटाता है। यह खास कर हिचकी, वमन, आध्मान, कृमिरोग और शूलनाशक है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में एक उड़नशील तैल होता है। यह बलदायक, अफारा मिटाने, पैसाब साफ लाने और मासिक स्राव करने वाली है।

२९०. गाजर

आयुर्वेदीय नाम—गर्जर, गाजर, नारंगवर्णक

अंग्रेजी—Carrot **लैटिन**—*Daucascarota*

विवरण—इसका पौधा ३ से ४ फुट ऊंचा होता है। जिसमें ३ से ४ इंच लम्बे पत्राकार रोमश पत्र लगते हैं। इस म सफेद रंग के फूल आते हैं। जिसमें सफेद रंग के छोटे २ सौंफ के सदृश होता है। समस्त भारत में गाजर उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग—मूल बीज

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—स्वरस २ से ४ तोला, बीज चूर्ण ३से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—मधुर तिक्त रस, लघु-तीक्ष्ण स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य एवं मधुर विपाक होता है। यह त्रिदोष शामक है। यह दीपन, संग्राही, वृष्य, वृहंण होती है। रक्तपित्त, अर्श, संग्रहणी में लाभ करती है। इसके बीज गर्भपात कराने वाले होते हैं।

आधुनिक मत—इसके मूल में कैरोटिन, हाइड्रोकैरोटिन शर्करा, स्टार्च, पक्टिन, मेलिक एसिड, लिगनिन, अलब्युमिन, लवण तथा एक उड़नशील तैल पाया जाता है। इसमें लौह भी प्रर्याप्त मात्रा में होता है।

२९१. जावसीर

लैटिन—*Opopanaxchinanuium*

विवरण—इसका वृक्ष मध्यम ऊँचाई का होता है। इसके पत्र अंजीर के पत्रों के समान किन्तु उनसे छोटे और खुरदरे होते हैं। पेड की शाखाएँ मुलायम और रूएँदार होती है। इसका फूल पीला और सुगन्धित होता है। इसके बीज काले और ऊनी सूत्र के बराबर होते हैं। इसमें एक प्रकार का गोंद लगता है। जिसका रंग बाहर से रक्ताभ हरित और अन्दर से श्वेताभरक्त होता है। इसे पानी में मिलाने से पानी दूध जैसा सफेद हो जाता है। जावसीर ईरान, तुर्कीस्तान और यूनान में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—गोंद **मात्रा**—१ से २ माशा

गुण कर्म—अर्दित, अधांग अपस्मार, कम्पन्न और अन्य मानसिक रोगों में लाभ करता है। नजला, जुकाम, आमाशय की कमजोरी और कब्ज रोगों को मिटाता है। खांसी और श्वास में लाभकारक है। यह जोड़ों को ताकत देता है। अपान वायु निकलता, वायु का दर्द, गर्भाशय की सूजन और पाचन की कमजोरी को दूर करता है, इसका बाहरी प्रयोग करने से सूजन मिटता है। लिंग पर व्रण होने से इसका चूर्ण या इससे बनाई हुई मरहम लगाना अच्छा है, वह गर्भनाशक होता है।

२९२. जीरा

आयुर्वेदीय पर्याय—जीरक, जरण, अजाजी **यूनानी**—कम्मून

अंग्रेजी—Cuimin Seed **लैटिन**—*Cuminum Cyminum*

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका क्षुप सौंफ जैसा १--३ फुट ऊंचा होता है। पत्ते पक्षाकार और छोटे होते हैं। फूल सफेद रंग के होते हैं। फल लम्बे, सफेद मैले रंग के होते हैं। यह सारे भारत में पैदा होता है। विशेष कर पंजाब, राजस्थान में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—फल **मात्रा—३ से ६ माशा**

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक होता है। यह कफवातशामक है। यह रोचक, दीपक, पाचक, अनुलोमक, शूलनाशक, ग्राही और कृमिनाशक है। रक्तशोधक, मूत्रल, वृष्य और स्तन्यजनन है। त्वचा के रोग मिटाता, ज्वर मिटाता और बल देता है। इसका लेप शोथ, शूल कण्डू अर्श में लाभ करता है। प्रसूतावस्था में बहुत लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसमें Thymeve, Carvone होता है।

कर्नल चोपरा का कहना है कि यह अग्निवर्धक, पेट के अफारे को मिटाने वाला, शान्तिदायक और सर्पविष में हितकारक है।

डा० क्षोरी का कहना है कि यह स्वरभंग में हितकारक है।

२९३. जीरा काला

आयुर्वेदीय पर्याय—कृष्णजीरक, सुगन्धी, उद्गारशोधन **यूनानी**—कम्मूनअवस्द

अंग्रेजी—Black Cumin **लैटिन**—*Carum Carvi*

विवरण—इसका पौधा २-३ फुट ऊंचा होता है। पत्ते कटे हुए, लम्बे और सूत्रवत होते हैं। इसमें फूल छत्राकार लगते हैं। इसके बीज काले, सफेद जीरे से छोटे और गन्ध वाले होते हैं। यह काश्मीर, गढ़वाल, सीमाप्रान्त, अफगानिस्तान और ईरान में होता है।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा—१ से ३ माशा**

आयुर्वेदिक मत—कटु रस, लघुरूक्ष गुण, उष्णवीर्य और कटु विपाक है। यह कफवातशामक, रोचक, दीपक, पाचक, संग्राहक और वातानुलोमक है। यह हृद्य और शोथहर है। प्रसूतावस्था में शोधन, स्तन्यजनन और दीपन कर्म के लिए इसे प्रयोग करते हैं। यह पुराने बुखार में प्रयोग होता है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में एक सुगन्धित तैल होता है। डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है कि काला जीरा कीड़े मारता, पेशाब साफ लाता,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दूध बढ़ाता, मासिक स्राव ठीक करता और वायु का नाश करता है। विषमज्वर, संग्रहणी, अग्नि मान्द्य अजीर्ण तथा अतिसार में चित्रक के साथ देना चाहिए। इसका लेप करने से हाथ-पावों की सूजन मिट जाती है।

२६४. धनिया

आयुर्वेदीय पर्याय—धान्यक, धान्य, छत्रा, कुनटी यूनानी—कश्नीज

अंग्रेजी—Coriander लैटिन—*Coriaudrum Sativum*

विवरण—इसका पौधा छोटा सा होता है जिसमें बहुत सी शाखाएँ होती हैं। ऊपर की पत्तियाँ लम्बी और नीचे की गोल होती है। इसके फूल सफेद, बैंगनी रंग के होते हैं। इसके फल गोल होते हैं जिनके भीतर दो कोष्ठ होते हैं। यह सारे भारत में होता है।

प्रयोज्य अंग—फल और पञ्चांग

मात्रा—फल चूर्ण ३ से ६ माशा, रस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—कषाय तिक्त, मधुर कटु रस, लघु स्निग्ध गुण, उष्ण वीर्य और मधुर विपाक होता है। त्रिदोष नाशक हृदय एवं मस्तिक को बलदायक, रोचक, दीपक, पाचक, संग्राहक, कृमिनाशक और तृष्णानाशक है। यह मूत्रजनन और ज्वरनाशक है। हरी पत्तियाँ रक्त, पित्त और दाह को मिटाती है। धनिये का लेप शोथ और शूल नाशक कहा गया है।

आधुनिक मत—इसमें उड़न शील तैल १% और स्थिर तेल १३% जो Coriander Oil कहलाता है। इसमें कोरिएण्ड्रोल, जिरेनिओल, और बोर्निओल नामक तत्त्व होते हैं।

डा० क्षोरी ने लिखा है कि धनिया सुगन्धित, वायुनाशक व पाचक है। इसके पत्तों का जौं के साथ मिला कर लेप करने से सूजन मिट जाती है। इसका तेल उदर पीड़ा, अर्दित, आमवात के दर्दों को मिटाता है।

२६५. मण्डूकपर्णी

आयुर्वेदीय नाम—मण्डूकपर्णी, माण्डूकी

लैटिन—*Hydrocotyle Asiatica*

विवरण—इसकी प्रतानिनी और वर्षायु लता होती है जो कभी २ दो तीन वर्षों तक भी रहती है। इसके तने में गांठें होती हैं। प्रत्येक गांठ में से मूल, पत्र,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्प तथा फल निकलते हैं। पत्र एकान्तर-वृक्काकार एवं किञ्चित सुगन्धित होते हैं। पुष्प नीलाभ श्वेत अथवा रक्तवर्ण के होते हैं। फल बहुत छोटे होते हैं। फल बहुत छोटे होते हैं और २ से ६ तक एक साथ रहते हैं। इसकी जड़ सूत्रवत होती है। भारत एवं लंका में उत्पन्न होती है।

प्रयोज्य अंग—पञ्चांग

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला, मूल चूर्ण ः से १२ रत्ती, पञ्चांग चूर्ण २ से ४ माशा।

आयुर्वेदिक मत—तिक्त रसप्रधान है तथा कषाय एवं मधुर रस अनुरस है। लघु-सर गुण, शीत वीर्य मधुर विपाक एवं मेध्य प्रभाव होता है। यह त्रिदोष शामक है। आयुवर्धक, रसायन, स्वर के लिए हितकारी एवं स्मरण शक्ति बढ़ाती है। यह कुष्ठ, पाण्डु, प्रमेह, रुधिरविकार, कास, शोथ, ज्वर का नाश करती है यह विषनाशक है।

आधुनिक मत—इस में 'ब्राह्मीन' नामक क्षार तत्व होता है। इसकी पत्तियों में ७८% जल तथा कुछ उड़नशील तैल होता है।

डा० आर० एन० क्षीरी ने लिखा है कि मण्डूकपर्णी रसायन, बल्य, मूत्रकारक होती है। मूत्रेन्द्रिय तथा जननेन्द्रिय पर इस की विशेष क्रिया लक्षित होती है। मुलहटी के साथ इसका सेवन कराने से ज्वर व रक्तातिसार में लाभ होता है। इस की जड़ फिरंगज क्षत अथवा कण्डू में, गलगण्ड, गण्डमाला में लाभ करता है।

२९६. सौंफ

आयुर्वेदीय पर्याय—शतपुष्पा, मधुरा, कारवी, मिसि, छत्रा **यूनानी**—बादियान

अंग्रेजी—Fennel **लैटिन**—*Foeniculum Cepillaecam*

विवरण—इसका क्षुप छोटा सा होता है जिस में २ से ४ इंच लम्बे पत्ते लगते हैं। फूल पीलापन लिए सफेद होते हैं। फल लम्बे, हरे और रेखान्वित होते हैं। यह सारे भारत में उत्पन्न होती है। इसकी एक जाति जो मिश्र में उत्पन्न होती थी और अब पंजाब में भी उत्पन्न होने लगी है 'अनीसून' कही जाती है, उसे अंग्रेजी में Anisi और लैटिन में Pimpinella Anisum कहते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोज्य अंग—बीज, जड़, बीज तैल

मात्रा—बीज चूर्ण ३ से ६ माशा, तैल ५ से १० बूंद, अर्क २ से ४ तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर-कटु-तिक्त रस, स्निग्ध-तीक्ष्ण गुण, किंचित उष्ण-और मधुर विपाक होती है। यह वातकफ नाशक, मेध्य, दृष्टिशक्तिवर्धक, दीपक, पाचक, अनुलोमक है। प्यास और वमन मिटाती है। यह हृदय को बल देती, कफ निकालती, मूत्र और मासिक स्राव साफ लाती, पसीना लाती, ज्वर और दाह मिटाती, दूध बढ़ाती और ताकत देती है। इसकी जड़ दस्तावर होती है। विशेषकर अजीर्ण अफारा, पेचिश और अर्श में सौंफ दी जाती है।

आधुनिक मत—इसके बीजों में ३ से ५ प्रतिशत उड़नशील तैल होता है। Anethole नामक तत्व पाया जाता है।

डा० क्षीरी ने लिखा है कि सौंफ का प्रयोग औरतों को गर्भावस्था में वमन, हिचकी, अपचन, अफारा होने में किया जाता है। यह एमिनोरिया (माहावारी का न आना) में लाभ करती है। मेथी के साथ देने से यह दस्त बन्द करती है।

केस और महस्कर ने इसके तेल को 'हुक-वर्म' नाशक कहा है।

२९७. सोया

आयुर्वेदीय पर्याय—मिश्रेपा

अंग्रेजी—Dill **लेटिन—*Peucedanum Groveolens***

विवरण—इसका वर्षायु क्षुप १-२ फुट ऊंचा होता है। पक्षाकार २-३ इंच के पत्ते लगे रहते हैं। पीले रंग के फूल होते हैं। फल छोटे काले रंग के होते हैं। यह सारे भारत में उत्पन्न होता है।

प्रयोज्य अंग—बीज **मात्रा—चूर्ण १ से ३ माशा**

आयुर्वेदिक मत—कटु तिक्त रस, लघु रूक्ष तीक्ष्ण गुण, उष्ण वीर्य एवं कटु विपाक होता है। यह कफवातशामक है। विशेषकर दीपक, पाचक एवं योनिशूल नाशक है। अग्निमान्द्य, हृदय रोग, मल बद्धता, कृमिरोग, कास में लाभ करता है। शेष गुण सौंफ के समान हैं।

आधुनिक मत—इसके बीजों में ३-४ प्रतिशत उड़नशील तैल होता है। डा० डिमक ने लिखा है कि यह गर्भवती स्त्रियों को ताकत के लिए दिया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२९८. हींग

आयुर्वेदीय नाम — हिंगु, सहस्रवेधि, जतुक, रामठ यूनानी — हिल्तीत
अंग्रेजी — Asafoetida लैटिन — *Ferula Narthex*

विवरण — इसका वृक्ष छोटा लगभग ६ से ८ फुट ऊँचा होता है। पत्र कोमल और रोमश होते हैं। पत्तों के किनारे फटे हुए होते हैं। इसका फल $\frac{1}{3}$ इंच लम्बा और $\frac{1}{4}$ इंच चौड़ा होता है जो 'अञ्जुदान' कहलाता है। इस वृक्ष का दूध जमकर गोंद जैसा हो जाता है जो 'हींग' कहलाता है। यह पारस, बल्ख, इराब, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान, पेशावर में पैदा होते हैं सफेद वृक्ष और कृष्ण जाति का वृक्ष दो प्रकार का होता है। सफेद का 'हींग हीरा' कहलाता है और काले का 'हींगड़ा' होता है।

बाजार में भिन्न २ स्थान का और भिन्न २ विधि से एकत्रित किया हुआ होने से हींग कई प्रकार का मिलता है। कुछ में बाहरी चीजें मिला दी जाती हैं, इसलिए पहिचान करके लेना चाहिए। प्रमुख रूप से जो हींग सारा ही पानी में घुल जाए और पानी का दूधिया कर देवे। तथा जलाने पर पूरा का पूरा जल जाए वह असली होता है।

प्रयोज्य अंग — दूध का गोंद (निर्यास) मात्रा — १ से ४ रत्ती

आयुर्वेदिक मत — कटु रस, लघु, स्निग्ध, तीक्ष्ण, सर गुण, उष्ण वीर्य और कटु विपाक है। यह कफ वात शामक है। यह उत्तेजना देता, दर्द मिटाता और आक्षेप दूर करता है। यह दीपक, पाचक, अनुलोमक, शूल प्रशमन और क्रृमिनाशक है। यह हृदय को बल देता है। कफ निकालता, मूत्र साफ लाता, मासिक स्राव साफ लाता और वाजीकरण होता है। यह बल और ज्वर का नाश करता है। पक्षाघात, अर्दित, आक्षेपक, अपतंत्रक, आध्मान, उदरशूल, हृदय शूल एवं बस्ति शूल, रजः कष्ट में लाभ करता है। इसका लेप पेड़ू के अफारे को मिटाता और ध्वजभंग में लाभ करता है।

आधुनिक मत — इसमें उडनशील तैल ६-७०% तक होता है जिसमें रसौन तैल Allyl Persulphide, होता है। इसके साथ Ferualic acid, Acetic acid, Malic acid, Forrnic acid, Valerianic acid होते हैं। डा० क्षीरी ने लिखा है कि हींग अत्यन्त वीर्यवान, यकृत, फुफ्फुस, नाड़ी और रक्तसंस्थान को बल देने वाला है। यह आक्षेप निवारक, मृदुरेचक, मूत्रल, रजः प्रवर्तक और क्रृमिनाशक है।

मेजर वसु और कीर्तिकार ने इसे हिस्टिरिया, दमा, हूपिंग कफ, हृदय-शूल, कॉलिक शूल नाशक बताया है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

URTICACEAE FAMILY वटादि वर्ग

पत्र —एकातन्र, उपपत्र युक्त
पुष्प—छोटे और कणिका भीतर एकत्र, बीजकोष—एक कोष्ठी

२९९. अञ्जीर

आयुर्वेदीय पर्याय — फल्गु, राजोदुम्बर
अंग्रेजी — Fig **लैटिन** — *Ficus Carica*

विवरण — इसका वृक्ष मध्यम प्रमाण का फैला हुआ होता है। इसके पत्र ...के पत्रों जितने किन्तु रूक्ष होते हैं। फल गूलर के समान होते हैं। इसकी कई जातियाँ होती हैं। तुर्की, अरब, ईरान, अफगानिस्तान, पंजाब, काश्मीर, बम्बई और मद्रास में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग — फल मात्रा — २ से ३ दाने

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, गुरु स्निग्ध गुण, शीतवीर्य मधुर विपाक होता है। वातपित्तशामक है। यह बृहंण, विष्टम्भी और तर्पण कर्म करता है।

आधुनिक मत—इसके फल में ६२% द्राक्षा शर्करा होती है, निर्यास वसा और लवण पाए जाते हैं। अलब्युमिन होता है एवं लवण होते हैं।

...यूनानी चिकित्सक इसे ज्वर, विष, शोथ, अश्मरी, अर्दित, तृष्णा, प्लीहोदर व वक्षगत रोगों मे प्रयोग किया जाता है। इसे पौष्टिक पदार्थ माना जाता है। प्रदर में इससे लाभ होता है, ऐसा भी कहा जाता हैं।

३००. कटहल

आयुर्वेदीय पर्याय—पनस, कण्टकी फल, अति बृहत फल, आमाशय फल
अंग्रेजी—Indian Jack Fruit **लैटिन**—*Artocarpus Integrifolia*

विवरण—इसका वृक्ष ५० से ६० फुट ऊंचा होता है। इसके पत्र तिसोड़े के सदृश किन्तु चमड़े की तरह स्थूल व कर्कश होते हैं, इनमें तीन सिराएें होती हैं। इसमें लम्बे, गोल, मोटे फल लगते हैं जो ऊपर से हरे रंग के होते हैं और कोमल कांटों से पूर्ण होता है। यह फल बहुत भारी एवं बृहताकार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भी हो सकते हैं। यह वृक्ष के शाखाओं, डालियों एवं जड़ तक में भी लग जाते हैं। भारत में सर्वत्र पाया जाता है, विशेष कर दक्षिण भारत में होता है।

प्रयोज्य अंग—फल, पत्र, मूल, बीज

मात्रा—क्वाथ ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत—मधुर कषाय रस, गुरु-स्निग्ध गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक होता है। वातपित्त शामक हैं। तपण, वृहंग, स्वादिष्ट, मांस वर्धक, कफ वर्धक, पुष्टिकारक, वीर्य वर्धक होता है। यह रक्त पित्त क्षत् और व्रण नाशक होता है। कच्चा फल ग्राही, वातकारक, कषैला, भारी, दाहकारक, बलदायक, कफ तथा मद को बढ़ाने वाला है। कटहल के बीज वीर्य वर्धक, मधुर, भारी, मलबद्ध करने वाले, मूत्रल होते हैं। कटहल की मज्जा बल वर्धक, त्रिदोष शामक होती है। गुल्मी व उदर रोगों को कटहल हानि करता है।

आधुनिक मत—पके फल में ६९·२०% आर्द्रता, ईथर एकस्ट्रेक्ट, अलब्युमिनॉयड आदि होते हैं। बीजों में स्टार्च और एक तैल होता है।

३०१. गूलर

आयुर्वेदीय पर्याय—उदुम्बर, जन्तुफल, यक्षांग, हेमदुग्धक

अंग्रेजी—Country Fig लैटिन—*Ficus Glomerata*

विवरण—इसके वृक्ष बृहदाकार होते हैं जिसका काण्ड मोटा, त्वचा श्वेत हरित वर्ण की होती है और उसे काटने पर दुग्ध निकलता है। इसमें छोटे कोमल पत्र होते हैं। गोल से फल लगते हैं, कच्चे फल हरे रंग के और पक्व फल लाल रंग के होते हैं। इनके अन्दर उड़ने वाले कीड़े निकलते हैं जिनकी पूंछ लम्बी होती है। यह समस्त भारत में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—त्वक्, फल, क्षीर

मात्रा—चूर्ण ३ से ६ माशा, क्वाथ ५-१० तोला, क्षीर १०-२० बूंद

आयुर्वेदिक मत—कषाय, मधुर रस, गुरु, शीत वीर्य, कटु विपाक होता है। वर्ण को उत्तम करने वाला, व्रण शोधक एवं व्रणरोपक होता है। पित्त कफ का शमन करता है और रक्तज विकारों को शान्त करता है। मूर्छा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दाह, तृष्णा का नाश करता और कृमि उत्पन्न करता है। यह गर्भ का पोषण करता है।

आधुनिक मत—इसमें टैनिन, मोम, काउचूक (रबड़) तथा भस्म होती है। भस्म में सिलिका और फास्फरिक एसिड होते हैं।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि गूलर, कषाय, वायुनाशक एवं पाचक है। यह रक्तप्रदर, रक्त वमनादि में हितकारक है। इसके मूल का रस, चीनी, काला जीरा मिला कर सुजाक में दिया जाता है। इसका दूध रसायन है, बलदायक है। सन्धिगत वातजन्य, शोथ, कर्ण मूलादि में इसके दूध को रूई के अन्दर रखकर चिपका देते हैं।

३०२. पिलखन

आयुर्वेदीय नाम—प्लक्ष, पर्कटी

लैटिन—*Ficus Licor*

विवरण—यह भी एक क्षीरी वृक्ष है जिसकी छाल हरिताभ घूसर होती है। पत्र गूलर के सदृश किन्तु उससे कुछ छोटे होते हैं। श्वेत वर्ण के गोलाकार छोटे २ फल लगते हैं। समस्त भारत में उत्पन्न होता है।

प्रयोज्य अंग—त्वक् **मात्रा**—क्वाथ ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत—कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, शीतवीर्य, कटु विपाक होता है। यह कफ पित्त शामक है।

३०३. पीपल

आयुर्वेदीय नाम—अश्वत्थ, पिप्पल, चलपत्र, बोधिद्रु

अंग्रेजी—Sacred Fig **लैटिन**—*Ficuse Religiosa*

विवरण—यह एक प्रसिद्ध वृक्ष है जिसके पत्र पतले, चिकने, हृदयाकृति और अग्रभाग पर नोकीले होते हैं। इसमें गोलाकार, छोटे फल लगते हैं जो कच्चे में हरे और पकने पर लाल हो जाते हैं। हिन्दु लोग इसे धार्मिक दृष्टि से बहुत महत्व देते हैं। यह सर्वत्र पाया जाता है।

मात्रा—स्वरस १ से २ तोला, क्वाथ ५ से १० तोला, चूर्ण १-३ माशा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक मत—कषाय रस, गुरु रूक्ष गुण, शीत वीर्य, कटु विपाक होता है। यह कफ पित्त शामक है। यह देर में पाचन को प्राप्त होता है। व्रण रोपक एवं रक्त विचार नाशक है। योनि शोधक एवं वर्णकारक होता है। वात रक्त एव दाह में लाभ करता है।

आधुनिक मत—इसकी छाल मे टैनिन, रबड़ और मोम होता है।

डा० आर० एन० क्षौरी ने लिखा है कि बच्चों के ओष्ठ, जिह्वा, तालु, श्वेत मुखपाक व साधारण मुख के क्षत में छाल के चूर्ण को मधु मे मिलाकर लेप करते हैं। इसके फल के बीजों का चूर्ण श्वास रोग मे लाभ करता है। अश्वत्थ क्वाथ के साथ पकाया तैल प्रदर तथा आमातिसार, रक्तातिसार में अनुवासन के काम आता है। इसके क्वाथ से क्षेत आदि को धोया जाता है।

३०४. बड़

आयुर्वेदीय पर्याय—वट, रक्तफल, न्यग्रोध, शुङ्गी, क्षीरी, बहुपाद

अंग्रेजी—Banyan Tree **लैटिन**—*Ficus Bengalensis*

विवरण—इसका बड़ा वृक्ष होता है और शाखाएँ चारो तरफ फैली रहती हैं। इसकी छाल श्वेत, धूसर तथा मोटी होती हैं। इसके पत्र मोटे, गोलाकार, अण्डाकार होते हैं। फल गोल होते हैं, पकने पर लाल रग के हो जाते हैं। यह समस्त भारत में होता है।

प्रयोज्य अंग—त्वक्, क्षीर, पत्र, जटा, फल

मात्रा—क्वाथ ५ से १० तोला, चूर्ण ३ से ६ माशा

आयुर्वेदिक मत—कषाय रस, गुरू, रूक्ष गुण, शीतवीर्य, कटु विपाक होती है। यह कफ पित्तशामक है। व्रणरोपक, वर्णकारक, विसर्पनाशक, दाहनाशक, योनिदोषनाशक है। तृष्णा, मूर्च्छा, छर्दि, रक्त पित्त नाशक है। यह गर्भदायक होता है। इसके अंकुरों को पीसकर लेप करने से व्यंग का नाश होता है।

आधुनिक मत—छाल और शुंग में १०% टैनिन होती है। मोम और कांउचुक (रबड़)होता है। फल में तैल, अलब्युमिनॉयड, कार्बोहाइड्रेट होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डा० क्षौरी ने लिखा है कि यह बल्य है। सोमरोग, आम-रक्तातिसार, रक्तार्श, सुजाक, शुक्र-क्षीणता में लाभ करता है, हाथ, पैरों के फटने में इसके दूध का प्रलेप करते हैं। दन्त शूल में लाभ करता है।

३०५. बड़हर

आयुर्वेदीय पर्याय — लकुच, ग्रन्थि फल, पीतनाश

अंग्रेजी — Monkey Fruit **लैटिन** — *Artocarpus Lakoocha*

विवरण — इसका वृक्ष २५ से ३० फुट ऊँचा होता है जिसकी छाल खुरदरी और सख्त होती है। पत्र अण्डाकृति और रूक्ष होते हैं। इसमें गोल, गाँठदार होते हैं,कच्चा फल हरा और पकने पर पीले रंग के होते हैं। फल सफेद रंग के अनेक लम्बे बीज होते हैं। यह भारत में सर्वत्र पाया जाता है।

प्रयोज्य अंग — फल, त्वक् **मात्रा** — त्वक् क्वाथ ५ से १० तोला

आयुर्वेदिक मत — कच्चा फल स्निग्ध, गुरु, ग्राही, मधुर, अम्ल तथा उष्ण होता है। तीनों दोष तथा रुधिर को दुष्ट करने वाला, वीर्य तथा अग्नि को नष्ट करने वाला और नेत्रों को नुकसान देने वाला है। पका फल मधुर, अम्ल, वात तथा पित्तनाशक, कफ तथा अग्नि करने वाला, रुचिकारक, वीर्यवर्धक और विष्टम्भकारक है।

३०६. शहतूत

आयुर्वेदीय नाम — तूद, तूत, क्रमुक, मधु, पिप्पली

अंग्रेजी — White Mulberry **लैटिन** — *Morus Indica*

विवरण — इसका मध्यम प्रमाण का वृक्ष होता है। काण्डत्वक्-रक्ताभ या पीताभ धूसर होती है। इसके पत्र २-४ इंच लम्बे, अण्डकार, दन्तुकार होते हैं तथा मूल भाग में तीन सिरायें स्पष्ट होती हैं। पत्रवृन्त १-२ इंच लम्बा होता है। पुष्प एकलिंगी, सूक्ष्म, श्वेत वर्ण होते हैं। फल लम्बा या लम्बगोल होता है। शीतऋतु में पुष्प तथा वसन्त में फल लगते हैं। यह समस्त भारत में होता है। हिमालय की तराई में यह जंगली होता है।

प्रयोज्य अंग — त्वक्, फल

मात्रा — त्वक् क्वाथ ५ से १० तोला, फल स्वरस २ से ५ तोला

आयुर्वेदिक मत—पक्का शहतूत भारी, स्वादिष्ट, शीत, पित्त तथा वात-नाशक है। कच्चा शहतूत भारी,दस्तावर,खट्टा,गर्म व रक्त पित्त करने वाला है।

आधुनिक मत—फल में शर्करा, पेक्टिन, साइट्रेट, मैलेट आदि होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

V

VALERIANACEAE FMILY मांस्यादि वर्ग

पत्र —अभिमुख, उपपत्र रहित

पुष्प—गुच्छों में, शाखाग्रोद्भुत

३०७. जटामांसी

आयुर्वेदीय पर्याय – जटामांसी, भूत जटा, तपस्विनी, सुलोमशा, नलदा

अंग्रेजी – Jatamansi **लैटिन**—*Nordostachys Jatamansi*

विवरण—इसका क्षुप १ से २ हाथ ऊंचा, बहुवर्षायु होता है। इसका मूल रोमश और सुगन्धित होता है। पत्र पतले, लम्बे लगभग १ इंच चौड़े और ६-७ इंच लम्बे होते हैं। इसके पुष्प गुलाबी, गुच्छेदार होते हैं। फल रोमश होते हैं। यह ६ से १७ हजार फीट की ऊंचाई पर काश्मीर, नैपाल आदि के जलप्राय: स्थानों में होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल **मात्रा** – १ से ३ माशे

आयुर्वेदिक मत – यह तिक्त,कषैली,बुद्धिवर्द्धक,कान्ति तथा बलदायक,मधुर, शीतल तथा त्रिदोष, रक्तविकार, दाह, विसर्प और कुष्ठ को दूर करती है।

आधुनिक मत – इसमें मुख्य सत्व के रूप में एक उड़नशील तैल १ प्रतिशत होता है। यह तैल हरिताभ, पीतवर्ण का, जल से हल्का, हवा में जमने वाला, कपूर-गन्धि और कटु-तिक्त होता है। इसके अतिरिक्त काला राल सदृश पदार्थ ६% कपूर और गोंद ९%, सुगन्धित अम्ल द्रव्य और जल विलेप पदार्थ १२% होते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३०८. तगर

आयुर्वेदीय पर्याय – तगर, नत, वक्र, कुटिल, नहुष

अंग्रेजी – Indian Valerian **लैटिन** – *Valerina Wallichii*

विवरण – इसका बहुवर्षायु क्षुप होता है। कांड छोटा और गुच्छेदार होता है। इसके पत्र चौड़े, लोमश और पत्रवृन्त २ से ३ इंच लम्बा होता है। इसके पुष्प श्वेतवर्ण या गुलाबी पुष्पदण्ड लम्बा लोमविशिष्ट होता है। फल केशयुक्त होता है। फूल जुलाई मास मे तथा फल सितम्बर-अक्तूबर में लगते हैं। मूल १ से $\frac{1}{2}$ इंच लम्बा, ग्रन्थियुक्त, भंगुर, वक्र और उग्रगन्ध होता है। निघण्टुओं में 'तगर' और 'पिण्डतगर' दो जातियों का उल्लेख मिलता है। पिंडतगर कुछ गोलाकार और कम गन्ध वाला माना जाता है। यह फ्रांस, रोम, अफ्रीका, श्याम, अफगानिस्तान, फारस में होता है। इसकी एक जाति भारत में हिमालय प्रदेश में काश्मीर से भूटान तक ५ से १० हजार फीट की ऊँचाई तक होती है।

प्रयोज्य अंग – मूल **मात्रा** – १ से ३ माशे

आयुर्वेदिक मत—तगर-गर्म, मधुर, स्निग्ध, हल्का और विषरोग मृगी-शूल, नेत्ररोग तथा वात पित्त कफ तीनों दोषों को हरने वाली है।

आधुनिक मत—यह मस्तिष्क के लिए बलप्रद तथा ज्वर में पित्तकारी है। यह मूत्रल, ऋतुस्त्राव का करने वाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

VERHENACEAE FAMILY निर्गुण्ड्यादि वर्ग

पत्र —अभिमुख, एकाकी,

पुष्प —छोटे, गुच्छों में, पुष्प बाह्यकोश नलिकाकार और स्थायी पुंकेशर-४ (दो बड़े और दो छोटे)

फल —एकवीजी, बहुवीजी या मांसल

३०९. अरनी

आयुर्वेदीय नाम—अग्निमंथ, जय, श्रीपर्णी, गणिकारिका, जया, जयन्ती, तर्कारी, नार्दयी, वैजयन्तिका।

लैटिन—क्लेरोडेण्ड्रोन फ्लाओइडिस *Clerodendrou phlomoidas*

विवरण—अरणी सर्वज्ञात वृक्ष है, सब जगह पैदा होता है। इसके पेड़ काफी ऊँचे होते हैं। पत्ते गोल २ किंचित नोकीले और अत्यन्त कोमल होते हैं। पुष्प सफेद और गुच्छेदार होते हैं, इनमें बहुत सुगन्ध निकला करती है। बसन्त ऋतु में इन पर पुष्प आते हैं। कुछ दिनों बाद इन पर फल छोटे २ करौंदे की तरह लग जाते है, पत्तों से भी एक सुन्दर मोहक गन्ध आती है, डालियाँ नीचे की तरफ झुकी रहती है। इसकी लकड़ी में पीलापन अधिक पाया जाता है, इस की दो लकड़ियों को रगड़ने से आग निकलती है अतः इसका नाम अग्निमंथ है यह दशमूल की एक प्रधान ओषधि है। गर्मी को बढ़ा देना इसका खास लक्षण है। यदि इसका अर्क जीर्ण ज्वर में दिया जाए तो तापक्रम (Temperature) बढ़ जाया करता है।

प्रयोज्य अंग—पत्र, मूल, त्वक् **मात्रा**—५ से १० रत्ती, स्वरस १ से २ तोला

आयुर्वेदिक मत—कटु, तिक्त, कषाय, मधर रस, रूक्ष, लघु गुण युक्त, उष्ण वीर्य, कटु विपाक। वात कफ शामक, शोथ नाशक, पाण्डू नाशक, अग्नि प्रदीपक तथा विषघ्न होता है।

३१०. गम्भारी

आयुर्वेदीय पर्याय—गम्भारी, भद्रपर्णी, श्रीपर्णी, काश्मीरी, हीरा, काश्यर्य पीतरोहिणी, कृष्णवृन्ता, मधुरसा, मधुपर्णिका,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लैटिन—जी मेलीइना आर्वोरिया *Gimelina Arborea*

विवरण—गम्भारी बहुशाख, व विशाल छायातरू हैं। सर्वत्र तथा सुलभ नहीं है, इसके काण्ड दीर्घ, स्थूल, शुभ्रवर्ण के होते हैं। पत्रवृन्त दीर्घ, पत्राग्र, सूक्ष्म, वृत्तसन्निधानस्थ पर पत्र भाग क्रमशः अप्रशस्त होता है। इस स्थान पर दो, तीन या ५ ग्रन्थियां रहती हैं। पत्रोदर मसृण पत्रपृष्ठ श्वेत मानो चूने से प्रलेपित होता है।

पुष्पों के दल मिले हुए पीले वर्ण के; बीच २ में ताम्र वर्ण के चिन्हों द्वारा चिन्हित, ह्रस्ववृन्तवाले, छोटे से पुष्प दण्ड में लगे रहते हैं। पुष्पदण्ड ताम्रवर्ण के सूक्ष्म रोमों द्वारा व्याप्त रहते हैं। पुंकेशर ४ होते हैं उनमें दो छोटे, दो बड़े होते हैं। पुष्पनाल बहुत उठा रहता है। फल बकुलफल के बराबर बड़ा तथा आकृति में अलाबु की तरह कुछ लम्बा होता है। पके हुए फल का वर्ण पीला होता है। स्वाद में अम्ल मधुर रहता है तथा इसकी गुठली बादाम सी रहती है। रावस वर्ग का कहना है कि तीन वर्ष तक गम्भारी की लकड़ी जल में रहने पर भी किसी विकार को प्राप्त नहीं हुई।

प्रयोज्य अंग—त्वक्, पत्र, पुष्प, फल, फल मज्जा,

मात्रा—फलस्वरस १ से २ तोला, फल व त्वक्क्वाथ ५ से १० तोला, पुष्प चूर्ण ४ माशे से १ तोला।

आयुर्वेदिक मत—गंभारी कसैली, कड़वी, उष्ण वीर्य, मधुर, गुरु, दीपन, पाचन, बुद्धि को हितकारी, भेदक, और भ्रम, शोष, तृषा, आम, शूल, बवासीर विष, दाह तथा ज्वर को नष्ट करने वाली है। गम्भारी फल—वीर्यवर्द्धक, बलदायक, भारी केशों को हितकारी, रसायन, पाक में मधुर, शीतल, स्निग्ध, कषैला, खट्टा, कोष्ठ को शुद्ध करने वाला और वात पित्त, तृष्णा, रुधिर विकार क्षय, मूत्र, विवन्ध, दाह, रक्तपित तथा क्षतक्षय को शमन करने वाला है।

आधुनिक मत—डा० आर० एन० क्षोरी ने लिखा है कि गम्भारी कई एक पीले वर्ण के चमकीले तेल, राल, एक क्षारीय वस्तु लोहवान के तेजाब के मिश्रण से बना है। इसमें खनिज नहीं होता। फल में व्युट्रिक अम्ल, क्षार, शर्करा, सत्व, राल तथा कुछ टैनिन के सम्मिश्रण पाए जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कार्य तथा प्रयोग—गम्भारी स्निग्ध पाचक,बल्य, श्रमहर व मृदुरेचक होता है। इसका मूल त्वक्, ज्वर,अजीर्ण व गंभीर शोथ में सेव्य है। मुलहठी के साथ यह दुग्ध वर्धनार्थ सेवित होता है पत्र स्वरस स्निग्ध होता है तथा सुजाक में सेव्य है। अन्य गुणो में गम्भारी अरणी के तुल्य है। फल ज्वर व दाह में सेव्य है। यह कुछ तिक्त होता है। वृक्षत्वक् ताड़ी के निष्कासनार्थ व्यवहृत होती है। इस के काष्ट कृत्रिम श्रंग व स्टेथसकोप इत्यादि निर्माणार्थ प्रयुक्त होते हैं।

३११. बरना

आयुर्वेदीय नाम—वरुण, वरण, सेतु, तिक्तशाक, कुमारक।

लैटिन—क्रेटिवा रिलिजि ओसा (*Cratalva Religiosa*)

अंग्रेजी—थ्रीलीव्ड केपर (Three-leaved Caper)

विवरण—इसका बड़ा वृक्ष २५-३० फुट ऊंचा होता है, छाल धूसर वर्ण और तिक्त होती है तथा उसपर अनुप्रस्थ दिशा में चीरे होते हैं। इसके पत्र लगभग ६ इंच लम्बे, बेलपत्र के सदृश्य त्रिपत्रक होते हैं। पत्रक अंडाकार, तीक्ष्णाग्र होते हैं तथा उनको मसलने से एक प्रकार की तीक्ष्ण गंध निकलती है। पुष्प २-३ इंच लम्बे, नीलाभश्वेत, सुगन्धित होते हैं। फल--नींबू के सदृश, फल मज्जा पीताभ तथा बीज छोटे होते है। फल पकने पर लाल हो जाते हैं। इसमें पुष्प बसंत में आते हैं। यह भारत में सर्वत्र विशेषतः मध्य भारत, बंगाल, आसाम और मलाबार में होता है।

प्रयोज्य अंग—मूल,त्वक्,पत्र मात्रा—क्वाथ ५ से १० तोले, स्वरस १ से २ तो.

आयुर्वेदिक मत—मधुर, तिक्त रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य, कटु विपाक, भेदक होता है, वातकफ शामक, पित्त वर्धक है। गुल्म, वातरक्त, कृमि-नाशक है, रक्त दोषो का नाश करता है, गण्डमाला में लाभ करता है, ये दीपक एवं अनुलोमक होता है।

३१२. भारंगी

आयुर्वेदीय नाम—भार्ङ्गी, ब्राह्मणयष्टिका, खरशाक, पद्मा

लैटिन—क्लेरोडेण्ड्रॉन सिरेटम (*Clrodendron Serratom*)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विवरण—इसका क्षुप प्रायः ५ से ८ फुट ऊँचा और शाखा-रहित होता है, पत्र ७-८ इंच लम्बे और १--२ इंच चौड़े खर और तीक्ष्ण होते हैं। पुष्प शिखर पर गुच्छों में श्वेत वर्ण और सुगन्धित आते हैं। फल गोलाकार, पकने पर नील वर्ण के हो जाते हैं। इसका मूल स्थूल और ग्रन्थीयुक्त होता है। ग्रीष्म ऋतु में पुष्प और वर्षा में फल आते हैं।

यह हिमालय की तराई में विशेषतः नेपाल, कुमायूं, बंगाल और बिहार में होता है। दक्षिण भारत में भी मिलता है।

प्रयोज्य अंग—मूल **मात्रा**—१ से ३ माशा

आयुर्वेदिक मत—कटु-तिक्त, कषाय रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य, कटु-विपाक, वातकफ शामक, रोचक, पाचक, दीपक, एवं कृमिनाशक होता है। गुल्म, रक्तज विकार, शोथ, कास-श्वास, पीनस, ज्वर, दाह एवं व्रण नाशक होता है।

आधुनिक मत—इसके मूल में Starch राल, वसा, तथा एक क्षार तत्व होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

VIOLACAE FAMILY — बनपशादि वर्ग

स्वरूप—क्षुप जाति

पत्र —एकान्तर, वृक्काकार

पुष्प —रंगीन, सुगंधित, अनियमित, पुष्प बाह्य कोश एवं पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ५, छोटे-बड़े पुंकेशर-५

३१३. बनफ्शा

अंग्रेजी — Sweet Violet लैटिन — *Viola Odorata*

विवरण — मखजनउलअद्विया और 'बोस्ताने उल अद्विया' के लेखकों के मत में इसका क्षुप एक बालिश्त ऊंचा होता है। इसके पत्र गोल, हृदयाकार और रोमश होते हैं। इनकी आकृति ब्राह्मी के पत्रों से मिलती है। इसके फूल नीले बैंगनी रंग के गुच्छों में आते हैं जो बहुत सुगंधित होते हैं। कोई २ फूल सफेद भी होते हैं। इसकी जड़ बांकी, टेढ़ी, गाँठदार १ से २ इंच तक लम्बी, फीके पीले रंग की और बारीक तन्तुओं वाली होती है। इसकी एक जड़ से दूसरी जड़ फूट निकलती है और नया क्षुप बनाती है।

बनफ्सा काश्मीर और हिमालय में ५ से ६ हजार फीट की ऊंचाई पर नील गिरि पहाड़ और नेपाल में पैदा होता है। यह ईरान से भी मंगाया जाता है। उत्तर भारत में इसकी जगह दो वनस्पतियाँ जिन्हें वायोला साइवेरिया (Violo cineria) और वायोला सर्पेन्स (Viola Serpens) कहा जाता है, प्रयोग की जाती है। परन्तु असली बनफ्शा वही है जिसमें नीले रंग से फूल आते हों और सुगन्ध हों।

प्रयोज्य अंग — पंचांग 'बनफ्शा' के नाम से फूल 'गूल बनफ्शा' के नाम और जड़ 'बीखे बनफ्शा' के नाम से प्रयोग होती है। **मात्रा** — ५ से ७ माशे

गुणकर्म—यह यूनानी चिकित्सा का प्रमुख द्रव्य है। रक्त को शुद्ध कर नवीन रक्त निर्माण करता है। आमाशय यकृत के लिए लाभप्रद है। दस्त लाता है। पित्त विकारों को ठीक करता है। प्यास, सूजन और पेशाब की रुकावट को दूर करता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बन्फशा गर्मी से पैदा होने वाली खुजली, सिरदर्द, आँखों का दर्द, जलन को दूर करता है। इसके ताजे फूल सूंघने से नींद आने लगती है। इसके ताजे फूल विष को दूर करते हैं। इससे जुकाम, खांसी, बुखार दूर होते हैं। बहता ..न रोकता है। बनफ्शा को ज्यादा उबालने से इसकी शक्ति कम हो जाती है। चेचक, गर्भावस्था और दस्तों में इसे नहीं दिया जाता है। इसके अधिक प्रयोग से हृदय कमजोर हो जाता है। वमन आने लगती है। भूख घट जाती है। ऐसी हालत में गुलाब के फूल और अनीसून देते हैं।

यूनानी नुस्खे—शर्बत बनफ्शा; खमीरा बनाफ्शा; जौशान्दा; बनफ्शा का तैल।

प्राचीन आयुर्वेदिक साहित्य में बनफ्शा का कहीं स्पष्ट वर्णन नहीं मिलता, कुछ वैद्य इसे ब्राह्मी मण्डूकपर्णी का भेद बताते हैं।

आधुनिक मत—इसके फूल और जड़ में 'वायोलिन' Violine नामक एक वामक तत्व होता है जिसके गुण इमेटिन जैसे होते हैं। इसके अतिरिक्त फूल में उडने वाले तैल; एक पीली चीज जिसे Viola Quercitrin कहते हैं होती है। और कुछ चीनी तथा Methyl Salicylic ester नाम का एक ग्लुकोसाइड होता है।

चोपड़ा आदि वैज्ञानिकों के मत में यह बुखार दूर करने वाला, पसीना लाने वाला है। इसके फूल के पत्रों के विकार और पित्त के विकारों को दूर करते हैं। इसकी पत्ती का शर्बत बच्चों के लिए बहुत लाभ करता है। इसकी जड़ वमन कराने वाली है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

VITACEAE FAMILY द्राक्षादि वर्ग

पत्र—एकान्तर, एकाकी, कोणयुक्त क्वचित संयुक्त

पुष्प—पुष्प रहित, छोटे, गुच्छों में पुष्प बाह्यकोश और पुष्पाभ्यन्तर कोश के दल ४–५, पुंकेशर ४–५

फल—मांसल

३१४. अंगूर

आयुर्वेदीय नाम— द्राक्षा, मृद्विका, गोरतनी

अंग्रेजी—Grape **लैटिन**—*Vitisvinifera*

विवरण—इसकी आरोही लता होती है। इसका पत्र देखने में करेले जैसा और रोमयुक्त होता है। पत्तियों के मध्य में ४ से ५ जोड़ी सिरायें होती हैं। इसका पुष्प हरित वर्ण,सुगन्धि और गुच्छों में लगते हैं। फल गोस्तनाकार होते हैं जिनमें ३-५ बीज होते हैं। बसन्त में पुष्प और ग्रीष्म में फल आते हैं। शीत प्रदेशों में शरद् ऋतु तक फल होते हैं। यह उत्तर पश्चिम भारत, पंजाब, काश्मीर तथा बलूचिस्तान और अफगानिस्तान में होता है।

प्रयोज्य अंग—फल। **मात्रा**—पाचन-शक्ति के अनुसार

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस,स्निग्ध, गुरु, मृदु गुण, शीत वीर्य, मधुर विपाक होता है। वात पित्त शामक है। सारक,चक्षुष्य, वृंहणी, वृष्य पुष्टि कारक होता है। यह संतर्पक और रुचिकारक है। तृष्णा, दाह, ज्वर, श्वास, रक्तपित्त क्षत, क्षय, स्वर भेद, मदात्य, कास, मुखशोष, कामला आदि का शमन करता है।

आधुनिक मत—फलों में द्राक्षशर्करा, गोंद, कषाय द्रव्य, टार्टटिर, साइट्रिक, रैसमिक और मैलिक अम्ल, सोडियम और पोटाशियम क्लोराइड, पोटाशियम सल्फेट, टार्टरेट ऑफ लाइम, मैग्नीशियम, फिटकिरी, लौह, कुछ अल्ब्युमिन और एसिड टार्टरेट ऑफ पोटाशियम रहते हैं। टाटरिक एसिड फलों में मुख्यतः होता है किन्तु कच्चे फलों में ऑक्जलिक एसिड भी होता है। मुनक्के में कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटाशियम, फॉस्फोरस और लौह होते हैं। इसके अतिरिक्त गोंद और शर्करा भी होती है। बीजों में स्थिर तैल कषायाम्ल ५% होता है। ऊपर के छिलके में टैनिन तथा लता और पल्लव में टंकणाम्ल होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३१५. काकजंघा

आयुर्वेदीय नाम—काकजंघा, नदीकान्ता, काकतिक्ता, सुलोमशा, पारावतपदी

लैटिन—*Leeahirta Roxb*

विवरण—काकजंघा के क्षुप इतस्ततः जंगलों तथा ऊंचे टीलों पर अधिक देखे जाते हैं। किन्तु अधिकतर ये आर्द्र भूमि या जलसन्निकटवर्ती भूमि में अधिक होते हैं। अतएव इसे 'नदीकान्ता' कहा गया है। इसकी शाखाएँ ग्रन्थियुक्त, ऐंठी हुई वा कर्कश होती हैं वा इनकी आकृति ठीक काकजंघा की-सी होती है। अतः 'काकजंघा' कहा गया है। इसके पत्र दीर्घ पत्र प्रांत चीरित होते है अतः आचार्यों ने इसका नाम 'पारावत पदी' रखा है। पत्रों में विशेषकर पत्र पृष्ठ में रोवां होने के कारण इसे 'लोमशा' नाम दिया है। पुरुष छोटे-छोटे बैंगनी रंग के वा कृष्ण रंग के होते हैं जिनकी आकृति जौ की तरह पतली होती है। इसका पुष्पकाल वर्षा वा शीतकाल है। इसके पक्वफल कृष्णवर्ण के चपटे वा षट्-कोण होते हैं। सूखने पर छः चिन्हों से युक्त होते हैं।

प्रयोज्य अंग—समग्र क्षुप, विशेषतः मूल

मात्रा—मूलकल्क १ से २ माशे, क्वाथ ५ से १० तोले

आयुर्वेदिक मत—यह शीतल, कड़वी, कसैली और कफपित्त, ज्वर, रुधिर विकार, खुजली, विष तथा कृमि को नष्ट करने वाली है।

३१६. हड़जोड़ा

आयुर्वेदीय नाम—अस्थि-श्रृंखला, अस्थिसंहारी, वज्रवल्ली, ग्रन्थिमान

लैटिन—*Vitisguadrangularis*

विवरण—इसकी ग्रन्थि युक्त लम्बी लता होती है। इसका कांड हरा, चतुष्कोण और बीच-बीच में ग्रन्थि युक्त होता है जिससे देखने में श्रृंखला के सदृश मालूम होता है। पत्र अल्प, हृदयाकृति ३ से ५ भागों में विभक्त तथा दन्तुधार होते हैं। पुष्प छोटे श्वेत वर्ण रोमश होते हैं। फल गोल, रक्तावर्ण, रस युक्त तथा मटर के बराबर होत हैं। लता की ग्रन्थि जमीन में देने पर लता उग आती है। लंका तथा दक्षिण भारत में इसके काण्ड का शाक बनाकर खाते हैं। यह उष्ण प्रदेशों में होता है।

प्रयोज्य अंग—काण्ड, पत्र मात्रा—स्वरस १ से २ माशा

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस, लघु रूक्ष गुण, उष्ण वीर्य, मधुर विपाक, वात कफ शामक, सारक, वृष्य, पाचन होता है। अस्थिसंधान करता है अरश, अजीर्ण, वात रक्त, अस्थि भग्न में प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Z

ZYGOPHYLLACAEAE FAMILY गोक्षुरादि वर्ग

पत्र —संयुक्त, संपुखपत्र

पुष्प —उभय लिंगी, पुष्प बाह्य कोश और पुष्पाभ्यान्तर कोश के दल—४--५, असंयुक्त और आच्छादित, पुंकेशर—८--१०, गर्भाशय—४--५ विच्छेदयुक्त

३१७. गोखरू

आयुर्वेदीय पर्याय—गोक्षुर, क्षुरक, त्रिकंटक **यूनानी**—खरेखशक
अंग्रेजी—Small Caltrops **लैटिन**—*Tribuls Terrestris* (छोटा) *Pedalium Murex* (बड़ा)—यह *Pedaliaceae Family* का पौधा है।

विवरण—गोखरू के पौधे प्रायः वर्षा ऋतु में बहुत पैदा होते हैं। इस की दो जातियाँ होती हैं। एक छोटा गोखरू और दूसरा बड़ा। छोटे गोखरू जमीन के ऊपर छत्राकार फैले हुए रहते हैं। इसमें पत्ते चने के पत्तों के समान किन्तु कुछ बड़े होते हैं। इसमें पीले रंग के फूल लगते हैं। इसके फल में तीन कांटे होते हैं और दो २ फल एक साथ जुड़े रहते हैं। छोटा गोखरू बिहार, राजपूताना और मद्रास में पाया जाता है।

बड़े गोखरू के पौधे बरसात में बहुत पैदा होते हैं। यह एक फुट से डेढ़ फुट तक ऊँचे होते हैं। इसकी डालियाँ गोल होती हैं और जमीन पर झुकी हुई रहती हैं। इसके पत्ते इमली के पत्तों से कुछ छोटे होते हैं। फूल पीले रंग के और फल ३ अथवा ५ कांटों वाले होते हैं। इसके क्षुप पिच्छिल होते हैं और

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इसकी जड केसरिया होती हैं। यह गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना, मध्यभारत में खेतों के किनारे और रेतीली जमीन में ज्यादा होते हैं।

प्रयोज्य अंग—आम तौर पर इसके फल प्रयोग में आते हैं, साथ ही साथ इस का सारा पौधा (पञ्चांग) भी काम में लिया जाता है।

मात्रा—फल चूर्ण ३ से ६ माशे, क्वाथ (काढ़ा) ५ से १० तोला

नोट—क्वाथ में जड या पञ्चांग प्रयोग करते हैं।

आयुर्वेदिक मत—मधुर रस; गुरू एवं स्निग्ध गुण, शीत वीर्य तथा मधुर विपाक माना गया है। यह वात पित्त शामक, शोथहर, हृद्य, मूत्रल; अश्मरीनाशक बलकारक है।

आधुनिक मत—आधुनिक विज्ञान ने इसके फल में क्षार तत्व, स्थिर तैल, राल, सुगन्धित तैल और नाइट्रेट बताए हैं। इनका कहना है कि नाइट्रेट और सुगन्धित तैल होने से ही यह मूत्रल है।

३१८. धमासा

आयुर्वेदीय पर्याय—दुरालभा, गान्धारी, कच्छुरा. यूनानी—बादावर्द
अंग्रेजी—Khorasanthorn लैटिन—*Fagonia Arabica*

विवरण—इसका क्षुप फीके हरे रंग का १ से ३ फुट ऊंचा होता है। इसकी डालियाँ बहुत होती हैं। इसके पत्र १ से $1\frac{1}{2}$ इंच लम्बे सनाय की पत्ती की तरह के होते हैं। प्रत्येक पत्र के पास दो तीखे कांटे होते हैं। फूल हलके लाल रंग के होते हैं तथा शरद ऋतु में निकलते हैं। फल पांच कोण वाले होते हैं जिस पर लम्बा कांटा होता है। इसकी एक विशेषता यह है कि शाखाओं में दो पत्र, चार कांटे और एक फूल गोलाई में दिखाई देते हैं। यह अरब, अफगानिस्तान; खुरासन आदि देशों में तथा भारत के सिंध, पंजाब और राजस्थान में पैदा होता है।

प्रयोज्य अंग—इसका पञ्चांग प्रयोग होता है

मात्रा—चूर्ण $\frac{1}{2}$ से १ तोला, क्वाथ ४ से ८ तोला

आयुर्वेदिक मत—कषाय, मधुर, तिक्त रस, लघु और रूक्ष गुण, शीत वीर्य और कटु विपाक होता है। कफ पित्त शामक, दाह प्रशमन, व्रण रोपण, रक्त स्तम्भक, मूत्रल, त्वक् दोषहर, ज्वरघ्न है। भ्रम, मूर्च्छा, रक्तपित्त, श्वास, मूत्रकृच्छ, अतिसार में प्रयोग किया जाता है।

आयुर्वेदिक योग—दुरालभादि क्वाथ, दुरालभादिककषाय।

आधुनिक मत—क्षौरी ने बताया है कि इसमें विशेष तत्व 'मैन्ना' होता है जिसमें 'मैनाइट' और 'ईख की शक्कर' होती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जांगम द्रव्य

दुग्ध वर्ग

आयुर्वेदीय पर्याय—दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, बालजीवन **फारसी**—शीरे
अंग्रेजी—Milk **लैटिन**—*Lactus*

गुण—दुग्ध मधुर, स्निग्ध, वात तथा पित्तशामक, दस्तावर, वीर्य को शीघ्र उत्पन्न करने वाला, शीतल, सर्व प्राणियों को अनुकूल, जीवनरूप, पुष्टिकारक, बलदायक, बुद्धि को उत्तम करने वाला, अत्यन्त वाजीकरण, आयु को स्थापन करने वाला, आयुष्य, संधानकारक, रसायन और विरेचन, वमन क्रिया तथा वस्ति क्रिया के अनुकूल एवं ओजवर्द्धक है। जीर्णज्वर, मानसिक रोग, उन्माद, शोष मूर्च्छा, भ्रम, संग्रहणी, दाह, तृष्णा, हृदयरोग, शूल, उदावर्त, गुल्म, वस्तिरोग, बवासीर, रक्तपित्त, अतिसार, योनि रोग, परिश्रम, ग्लानि और गर्भ-स्राव इनमें हितकारी है ऐसा मुनियों ने कहा है। जो बालक, वृद्ध, क्षतवाला, क्षीण हुआ, भूख से दुर्बल अथवा मैथुन से दुर्बल हो उसको दुध अत्यन्त हितकारी है।

गाय का दूध—यह विशेषकर रस तथा पाक में मधुर, शीतल, दूध को बढ़ाने वाला, वात, पित्त और रक्तविकार को भी नष्ट करता है। दोष, धातु, मल तथा नाड़ियों को कुछ आर्द्र करने वाला, भारी तथा सदैव सेवन करने वाले के सर्व प्रकार के रोग तथा वृद्धता को नष्ट करता है।

काली गाय का दूध—वातनाशक और अधिक गुण वाला है।

पीली गाय का दूध—पित्त और वात को नाश करने वाला होता है।

सफेद गाय का दूध—भारी होता है।

लाल तथा चितकबरी गाय का दूध—वात को विनाश करने वाला होता है।

सद्यः प्रसूता और बच्चा रहित गाय के दूध के गुण—छोटे बछड़े वाली तथा बिना बच्चे वाली गाय का दूध त्रिदोष को करने वाला होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बाखरी गाय का दूध—तीनों दोषों को नाश करने वाला तथा तृप्तिकारक और बल को भी देने वाला होता है।

देश विशेष से गाय के दूध के गुण—जांगल प्रदेश अनूपदेश और पर्वतों में चरने वाली गायों का दूध क्रमशः एक से एक अधिक भारी है और जिस वस्तु का गायें आहार करती हैं उसी वस्तु के अनुसार दूध में स्निग्धता होती है।

आहार के विशेष से गाय के दूध के गुण—थोड़े अन्न खाने वाली गायों का दूध भारी, कफ को करने वाला, बलवर्द्धक, अत्यन्त वृष्य और नीरोग मनुष्यों के लिए गुणदायी होता है। जो पलाल, करबी घास, बिनौला इत्यदि खाती हैं उनका दूध अत्यन्त हितकारी जानना चाहिए।

भैंस का दूध—यह गाय के दूध की अपेक्षा अधिक मीठा स्निग्ध वीर्य को बढ़ाने वाला भारी निद्रा लाने वाला क्षुधावर्धक और शीतल होता है।

बकरी का दूध—कसैला, मधुर, शीतल, ग्राही, हलका और रक्तपित्त, अतिसार, क्षय, खाँसी तथा ज्वर को नाश करने वाला है। बकरी छोटे शरीर वाली होती है। चरपरे तथा कड़वे आदि पदार्थों को खाती है। पानी थोड़ा पीती है और घूमने फिरने का अधिक काम करती है। इस कारण से बकरी का दूध सम्पूर्ण रोगों को दूर करने वाला है।

हिरनी का दूध—जंगल में उत्पन्न हुई हिरनी आदि का दूध बकरी के दूध के समान ही गुण वाला होता है।

भेड़ का दूध—खारी, स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम, पथरी को नष्ट करने वाला, हृदय को अप्रिय, तृप्ति दायक, वृष्य, वीर्य, कफ तथा पित्तकारक, वात से उत्पन्न हुई खाँसी तथा वातरोग में हितकारी होता है।

घोड़ी का दूध—रूखा, गरम, बलदायक, शोथ तथा वात को नाश करने वाला, खट्टा, खारी तथा हलका और स्वादिष्ट है। एक खुर वाले सभी पशुओं के दूध का गुण ऐसा ही होता है।

ऊँटनी का दूध—हलका, मधुर, खारा, अग्नि, उत्तेजक, दस्तावर और कृमि, कोढ़, कफ, अफारा, सूजन तथा उदर सम्बन्धी रोगों को दूर करने वाला है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हस्तिनी का दूध—पुष्टिकारक, मधुर, कसैला, भारी वृष्य, बल को लाने वाला, शीतल, स्निग्ध, नेत्रों के लिए हितकारी और दृढ़ता को करने वाला होता है।

स्त्री का दूध—हलका, शीतल, अग्निवर्द्धक, और वात पित्त नेत्रों का शूल तथा अभिघात नाशक है। और नस्य देने में तथा आश्चोतन कार्य में उत्तम होता है।

(गाय का धारोष्ण दूध—बल को देने वाला, शीतल, हल्का अमृत के समान अग्निवर्द्धक और तीनों दोषों को नाश करने वाला है। गाय का दूध दुह लेने पर ठंडा हो गया हो तो पीने के योग्य नहीं। जो गाय का दूध धारोष्ण हो और भैंस का दूध लेने पर शीतल हो गया हो, वही प्रशंसनीय होता है। भेड़का दूध गरम और बकरी का दूध औटा कर शीतल हुआ पथ्य है। कच्चा दूध अभिष्यन्दि, भारी, कफ तथा आमवर्द्धक है। इस कारण गाय के तथा भैंस के दूध को छोड़कर सभी कच्चे दूध अपथ्य जानना चाहिए। स्त्री का दूध तो कच्चा ही हितकारा है। परन्तु गरम किया हुआ दूध कफ तथा वातनाशक और गरम करके शीतल किया हुआ दूध पित्तनाशक होता है। दूध में आधा जल डालकर उसे औटावे जब केवल दूध ही शेष रह जाय तब वह दूध कच्चे से भी हल्का होता है। जल रहित दूध जितनाअधिक पकाये उतना ही भारी, स्निग्ध, वृष्य और बलवर्द्धक होता है।

खीस, खोआ, इत्यादि के लक्षण तथा गुण

तत्काल प्रसूता गाय—भैंस के दूध को पीयूष अर्थात् खीस कहते हैं। जो दूध जलकर नष्ट हो गया हो, पिंड बन गया हो उसको किलाट अथवा खोआ कहते हैं। जो दूध कच्चा ही जमकर खोए के समान हो गया हो उसको क्षीर शाक कहते हैं। दूध को दही या छाछ से जमाकर स्वच्छ जल में बांध उसके जल को निकालने से जो पिण्ड बंध जाता है, उसमें यदि जल अंश न हो तो तक्रपिन्ड कहाता है। फट जाने पर दूध में से जल निकलता है, उसको मोरट कहते हैं। ऐसा जेज्जट आचार्य कहते हैं।)

गुण—पीयूष, किलाट, क्षीर शाक और तक्रपिंड ये सब वृष्य, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, भारा, कफ कारक, हृदय को प्रिय, वात तथा विद्रधि रोग वाले को

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बहुत उत्तम है। बूरा साहित मोरट हलका, बलदायक, रुचिवर्द्धक और मुख-शोधक, तृष्णा, दाह, रक्त पित्त तथा ज्वरनाशक है।

मलाई—भारी, शीतल, वृष्य, पित्त, रक्तविकार, वातनाशक, तृप्तिकारक तथा ज्वर नाशक है।

खाँड पड़ा हुआ दूध—कफ कारक और वातनाशक है। बूरा अथवा मिश्री पड़ा हुआ दूध वीर्य वर्द्धक और त्रिदोष नाशक है। गुड़ पड़ा हुआ दूध मूत्र कृच्छ नाशक और पित्त तथा कफ को अत्यन्त बढ़ाने वाला होता है।

प्रभात आदि समय का दूध—रात्रि में चन्द्रमा के गुण अधिक होने से और चलने फिरने का परिश्रम न होने से प्रभात काल का दूध अधिक करके सन्ध्या काल के दूध से भारी और शीतल है। दिन में सूर्य की किरणों का ताप होने से और परिश्रम तथा वायु का सेवन होने से सन्ध्या का दूध प्रभात के दूध से हलका और वात तथा कफ को नष्ट करने वाला है।

दूध सेवन के समय से विशेष गुण

पूर्वान्ह काल में दूध पीना—वृष्य, पुष्टिकारक और अग्निप्रदीपक है।

मध्यान्ह काल में दूध का सेवन—बल वर्द्धक, कफ तथा पित्तनाशक और अग्नि को दीपन करने वाला है।

रात्रि के समय दूध का सेवन—बालकों को वृद्धिकारक, क्षय का नाश करने वाला, वृद्ध लोगों को वीर्य वर्द्धक, अत्यन्त पथ्य, अनेके दोषों को शान्त करने वाला और नेत्रों के लिए हितकारी है। रात्रि में केवल दूध ही पीना चाहिए। उसके साथ भोजन अधिक न करे। इस प्रकार से भी कोई-कोई कहते हैं। रात्रि में दूध के साथ भोजन करने से अजीर्ण होता है। और निद्रा नहीं आती। पीने के लिए पात्र में लिया हुआ दूध सभी पी जावे, किन्तु उसमें से छोड़े नहीं। दिन में जो दाहकारक अन्न आदि सेवन किया जाता है, उसमें पैदा हुए दाह के शान्त्यर्थ रात्रि को दूध हमेशा पीना चाहिए। जिनकी अग्नि दीप्त है, उनको, दुर्बल शरीर वालों को, बाल, युवा तथा वृद्ध के लिए दूध अत्यन्त हितकारी पथ्य और तत्काल वीर्यवर्द्धक है।

मथे हुए दूध के गुण—गाय अथवा बकरी का दूध रई से मथकर किंचित् गरम करके पीये तो हलका, वृष्य, ज्वरनाशक और वात, पित्त तथा कफनाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गाय अथवा बकरी के दूध के झाग—त्रिदोषनाशक, रुचिकारक, बल-वर्द्धक अग्नि प्रदीपक, वृष्य, शीघ्र तृप्ति, कारक और हल्का है। यह फेन अति-सार में, अग्नि की मंदता में तथा जीर्णज्वर में बहुत उत्तम है।

निन्दित दूध—जो दूध, विवर्ण, विरस, खट्टा, दुर्गन्धित, फटा हुआ, अम्ल पदार्थ अथवा खारी पदार्थ युक्त हो उसको त्याग दे। क्योंकि इससे कुष्ठ आदि रोग होते हैं।

दधि वर्ग

आयुर्वेदीय नाम--दधि, दही। **अंग्रेजी**—Curdled Miik

फारसी—दोग

गुण—दही गरम, अग्नि को दीप्त करने वाला, स्निग्ध, किंचित् कसैला-भारी, पाक में खट्टा और श्वास, पित्त, रक्तविकार, सूजन, मेद तथा कफ-कारक होता है। यह दही मूत्र कृच्छ, जुकाम, शीत, विषमज्वर, अरूचि और दुर्बलता, इन सभी रोगों को हितकारी और बल वीर्य वर्द्धक है।

दही के भेद—मन्द, स्वादु, स्वाद्वम्ल, अम्ल, अत्यम्ल के भेद से पाँच प्रकार है।

१. मन्द दही के लक्षण—जो दही दूध के सदृश, अव्यक्त रस वाला और किंचित् घन हो उसको मन्द जानना।

गुण—मन्द दही पैखाने और पेशाब को प्रवर्त्तन करने वाला तथा त्रिदोष और दाह को उत्पन्न करता हे।

२. स्वादु दही के लक्षण तथा गुण—जो दही भली भाँति गाढ़ा हो, स्वादिष्ट अमृत रस रहित होऐसे दही को विद्वान् स्वादु नाम का दही कहते हैं। यह अत्यन्त अभिष्यन्दि, मैथुन शक्ति को बढ़ाने वाला, मेद तथा कफ, वर्द्धक, वातनाशक, पाक में मधुर और रक्तपित्त को स्वच्छ करने वाला है।

३. स्वाद्वम्ल दही के लक्षण तथा गुण--जो दही खट्टा, मीठा और गाढ़ा कषाय रस युक्त होता है, उसको स्वाद्वम्ल नाम का दही कहते हैं। इस दही का गुण सामान्य दही के समान जानना चाहिए।

४. अम्ल दही के लक्षण और गुण—जिस दही में मिठास न हो और खट्टा हो उसको अम्ल के नाम से जानना चाहिये। अग्नि प्रदीपक और पित्त, रक्त और कफ वर्द्धक होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

५. अत्यम्ल दही के लक्षण तथा गुण—जिस दही को खाने से दाँत हर्षित हो जायं, रोमांच होय और कण्ठ आदि में दाह हो उसको अत्यम्ल कहते हैं। यह अग्नि प्रदीपक और रक्तविकार, वात तथा पित को अत्यन्त उत्पन्न करता है।

गाय का दही—विशेष कर मीठा, खट्टा, रुचिकारक, पवित्र, अग्निप्रदीपक हृदय को प्रिय, पुष्टिकारक और वातनाशक है। सम्पूर्ण दहियों की अपेक्षा गाय का अधिक गुण वाला होता है।

भैंस का दही—यह बहुत स्निग्ध, कफकारक, वात या पित्त नाशक, पाक में मीठा, अभिष्यन्दि, वृष्य, भारी और रक्त को दूषित करने वाला है।

बकरी का दही—यह गरम, ग्राही, हल्का, त्रिदोषनाशक, अग्निप्रदीपक और श्वास, खाँसी, बवासीर, क्षय तथा दुर्बलता में हितकारी है।

पक्के दूध की दही—यह रुचिकारक, स्निग्ध, उत्तम गुण वाला, पित्त तथा वात नाशक और सम्पूर्ण धातुओं के तथा अग्नि के बल को बढ़ाने वाला है।

नि:सार दूध का दही—यह ग्राही, शीतल, वातकारक, हल्का, विष्टम्भि अग्निप्रदीपक, रुचिकारक और संग्रहणी रोग को नाश करने वाला है।

गलित दही—यह स्निग्ध, वातनाशक, कफकारक, भारी बलवर्द्धक पुष्टि-कारक, रुचिकारी मधुर और अत्यन्त पित को करने वाला है।

बूरा पड़ा हुआ दही—यह श्रेष्ठ और तृषा, पित्त, रक्तविकार तथा दाह-नाशक है। गड़ पड़ा हुआ दही वातनाशक, वृष्य, पुष्टिकारक, तृप्तिदायक और भारी है।

रात्रि को दहीं खाना निषिद्ध—रात्रि में दही नहीं खाना चाहिए। यदि खाय भी तो बिना घृत और शक्कर के, बिना मूंग की दाल के, बिना शहद के, बिना गर्म किये हुऐ और बिना आवलों के नहीं खावे। घी, बूरा युक्त दही रात्रि में भी खा लेनी चाहिए। कहा है कि रात्रि में दही खाना उत्तम नहीं है। यदि आवश्यकता हो तो घी तथा पानी डालकर खाना चाहिये। रक्तपित तथा कफ सम्बन्धी विकारों में घी तथा पानी की दही नहीं खायें।

ऋतु के विशेष से विधि—हेमन्त, शिशिर और वर्षा, इन ऋतुओं में दही का भक्षण करना उत्तम है। शरद्, ग्रीष्म और वसन्त ऋतु में प्रायः दही खाना उतम नहीं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिना विधि से दही सेवन अवगुण—ज्वर, रक्तविकार, विसर्प, कु पाण्डुरोग, भ्रम और भयंकर कामला रोग को प्राप्त होता है। जो विधि क छोड़कर दही का प्रेम करता है अर्थात दही खाता है।

सर तथा मस्तु के लक्षण और गुण

१. सर के लक्षण और गुण—दही के ऊपर जो चिकना और घन पदार्थ होत है वह सर कहलाता है। यह मधुर, भारी, वृष्य तथा अग्नि को नष्ट करने वाल तथा खट्टा, वस्तिरोग के लिए शान्तिकारक और पित्त तथा कफवर्द्धक है

२. मस्तु के लक्षण तथा गुण—दही मण्ड अर्थात पानी को मस्तु कह हैं ग्लानिनाशक, बलकारक हल्का अन्न की इच्छा करने वाला नाड़ियों को शुद्ध करने वाला आनन्द दायक कफ तृषा तथा वातनाशक वृष्य गुण रहित शी तृप्ति कारक और मल के संचय को तोड़ने वाला है।

तक्र वर्ग

आयुर्वेदीय पर्याय—तक्र, छाच्छिका।

अंग्रेजी—वाटर मिल्क Water milk

विवरण—आयुर्वेद में तक्र के पाँच भेद बताए हैं—वे निम्न हैं— (१) घोल—दही मे बिना पानी डाले मलाई सहित मथने पर तैयार होता है। (२) मथित—ऊपर की मलाई निकाल कर बिना पानी का जो दही मथने पर बनता है। (३) तक्र—जो दही में चौथाई जल डाल कर मथकर बनाय जाता है। (४) उदश्वित्—आधा पानी डालकर मथा हुआ दही उदश्वि कहलाता है। (५) छाच्छिका—दही में अधिक पानी डालकर जो मक्ख निकाल कर द्रव्य तैयार होता है वह छाच्छिका कहलाता है।

गुण कर्म :—घोल—बूरा डालकर सेवन किया हुआ घोल आमफल समान गुण करता है।

मथित—वात-पित्तनाशक, हृदय को प्रिय होता है।

तक्र—ग्राही, कसैला, खट्टा, पाक में तथा रस में मीठा, हल्का, उष्णवी अग्निप्रदीपक, वृष्य, प्रीणन, वातनाशक एवं ग्रहणी आदि रोगों लाभ करता है।

000061

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection